जैन मित्र मंडल ट्रैक्ट नम्बर १४३

प्रकाशित जैन साहित्य

संयोजक

श्री पन्नालाल जैन अग्रवाल

सम्पादक

श्री ज्योतिप्रसाद जैन

एम ए., एल एल. बी (पी. एच. डी.)

प्रकाशक

जैन मित्र मंडल, दिल्ली

प्रथमावृत्ति १००० प्रति | आषाढ वीर सं० २४८४, वि० सं० २०१५ जून १९५८ | मूल्य २)

विषयानुक्रम

प्रकाशकीय वक्तव्य

आज से ४३ वर्ष पूर्व समाज के कुछ नवयुवको के हृदय मे जैन धर्म के सिद्धान्तो के प्रचार की भावना जागृत हुई। उन्होने ३० मार्च १९१५ को इस संस्था की नीव 'जैन मित्र मण्डल' के नाम से देहली मे डाली। जैन मित्र मण्डल ने अब तक केवल एक ही उद्देश्य रखा है और वह है 'जैन धर्म का साहित्य द्वारा प्रचार'। मण्डल का सारा कार्य, मण्डल की सारी लगन और उसकी—सारी चिन्ताए इसी दिशा मे लगी रही हैं।

२ मण्डल ने अपने शै ाव काल के ६ वर्षों मे ही जैन धर्म तथा साहित्य-प्रचार मे इतना अधिक कार्य किया कि सन १९२१ की सरकारी जनगणना census मे इसको भारत की 'Chief jain literary Society 'प्रमुख साहित्यिक संस्था' घोषित किया गया।

३. जैन मित्र मण्डल जिस समय दो वर्षो का ही था इसने भारत—प्रसिद्ध देहली शास्त्रार्थ "ईश्वर-कर्तृत्व और तीर्थ कर सर्वज्ञ हो सकते है या नही" इस विषय पर 'आर्यकुमारसभा' से देहली मे किया।

४. अभी मण्डल इस कार्य से निबटा ही था कि डाक्टर गौडने 'हिन्दू कोड" 'Hindu Code' नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमे जैन धर्म तथा जैनो के विषय मे बहुत सी गलत बातें लिख डाली। यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा मान्यता दी जाने को ही थी कि मण्डल ने इस विषय मे आन्दोलन चलाया और एक पृथक 'जैन कोड' बनाने का विचार किया। डाक्टर गौड के आ-क्षेपो का करारा उत्तर दिया। दो पुस्तकें 'Jainism and Hindu Code' और 'Jains of India and Dr. H. S Gour' प्रकाशित की। इस सबके फलस्वरूप डा० गौड ने अपनी पुस्तक की दूसरी आवृत्ति मे अपनी गलतियो को ठीक किया।

५. मण्डल ने, अपनी स्थापना के १० वर्ष पश्चात् यह कटु अनुभव किया

कि जहाँ देश मे अन्य सर्व धर्मों के प्रवर्तको के-भगवान कृष्ण, राम, मोहम्मद, ईसा, गुरु नानक के–जन्म उत्सव बडी धूमधाम से मनाये जाते हैं वहाँ जैन धर्म के किसी भी तीर्थ कर का जन्म उत्सव नही मनाया जाता, इसी भावना से ओत प्रोत होकर जैन मित्र मण्डल ने सर्व प्रथम सन् १९२५ मे 'महावीर जयन्ती महोत्सव' देहली मे मनाया जिसमे मौलाना मोहम्मद अली, महात्मा भगवानदीन, प० अर्जुनलाल सेठी जैसे विद्वानो के भाषण हुए। समाज मै इस प्रकार के उत्सव मनाने पर विरोध भी हुआ, मडल के कर्मठ सैनिकों को आक्षेप भी सहने पडे, परन्तु उत्सव की उपयोगिता तथा उसकी सफलता नै उनके उत्साह को बढाया और उसके बाद ३३ वर्षो मे मडल ने महावीर जयन्ती को एक बहुत ही प्रभावशाली, सुन्दर आकर्षक तथा सार्वजमिक रूप दे दिया।

आज मण्डल को इस बात का गौरव है कि समस्त भारत मे महावीर-जयन्ती मनाने तथा मनवाने का श्रेय इसी संस्था को है।

महावीर जयन्ती को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के हेतु मडल कविसम्मेलन, सगीतसम्मेलन, उर्दु मुशायरा तथा व्याख्यानो का बडा ही सुन्दर तथा रोचक प्रोग्राम रखता है। इस अवसर पर मडल भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मत्री, विदेशो के राजदूत, भारतसघ के मन्त्रीगण, भारत राज्य के राज्यपालो तथा अन्य सभी जाति तथा धर्म के नेताओ को आमन्त्रित करता है और उनसे इस आयोजन के विषय मे तथा भगवान महावीर के सिद्धान्तों व आजके युग मे उनकी आवश्यकता पर सुन्दर तथा प्रभावशाली लेख तथा सन्देश मगाता है और उन्हे सहस्रो की सख्या मे प्रकाशित कर देश तथा बिदेशों मे वितरण करता है।

६. जैन मित्र मडल देहली जैन समाज मे पुस्तक प्रकाशन में एक अद्वितीय स्थान रखता है। मडल नै अपना उद्देश्य जैन धर्म के शास्त्रो के प्रकाशन का नही रखा बल्कि इसने अंग्रेजी नागरी तथा उर्दू मे नये प्रकार के सहित्य का निर्माण कराया। आज के युग मे [illegible] इतना भी समय

नहीं है कि वह अपने धर्म के मोटे मोटे शास्त्रों को पढ सके, आज का युग चाहता है छोटी छोटी पुस्तकें जो कि वह अवकाश के समय सुगमता से पढ सकें। मंडल ने अपनी कार्य पद्धति इसी ओर रखी। उसने समाज के प्रकाण्ड विद्वानो से, जैन ही नही किन्तु अजैनो से भी जैनधर्म तथा इसके सिद्धान्तो पर छोटे छोटे ट्रैक्ट लिखवाए, जिनको हजारो की सख्या मे प्रकाशित कर बिना मूल्य देश-विदेशो तथा जैन व अजैन जनता मे वितरण किया। ससार का कोई भी देश ऐसा नही होगा जहाँ जैन मित्र मडल के ट्रैक्ट न पहुचे हो। इस प्रकार का १४२ पुस्तके मडल प्रकाशित कर चुका है। शायद कोई ही दूसरी ऐसी जैन सस्था होगी कि जो इतने 'पुष्प' अबतक प्रकाशित कर सकी हो।

७ पिछले वर्ष साहित्य प्रचार मे जैन मित्र मडल ने एक बहुत ही बडा कदम उठाया। ससार को चकित कर देने वाला राष्ट्रपति द्वारा कहा गया 'ससार का आठवाँ आश्चर्य' ७१८ भाषामयी ग्रन्थराज 'भूवलय' के प्रकाशन का कार्य इस सस्था ने उठाया। और गत वर्ष 'इसका मगल प्राभृत' 'इसके कतिपय सारगर्भित श्लोक' तथा इसमे अन्तर्गत 'भगवद्गीता' नाम की तीन पुस्तके प्रकाशित की जिनका उदघाटन काँग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष श्री ढेबर भाई ने आचार्य श्री १०८ देशभूषण जी महाराज की उपस्थिति मे किया।

८. मण्डल के पास सदैव 'जैनसाहित्य' के विषय मे परिप्रश्नात्मक पत्र आते रहते है और जैन धर्म जानने तथा जैन साहित्य के पढने के इच्छुक सदैव जैन साहित्य की माँग जैन मित्र मडल मे करते रहते है। अब तक 'दिगम्बर जैन समाज' मे इस प्रकार की कोई पुस्तक या सूची नहीं थी कि जिससे प्रकाशित जैन साहित्य का पता चल सकता हो। इसी कमी को दृष्टि मे रखते हुए जैन समाज के सर्व अधिक 'मूक' तथा ठोस सेवक ला० पन्नालाल जी अग्रवाल देहली द्वारा सयोजित तथा प्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक डा० ज्योति-प्रसाद जी लखनऊ द्वारा सम्पादित 'प्रकाशित जैन साहित्य'की सन् १९४५ तक की यह सूची प्रकाशित करते हुए हमे बडा हर्ष हो रहा है। हम इन दोनो ही के बहुत कृतज्ञ हैं कि उन्होने इसमे अपना अमूल्य समय देकर यह पुस्तक

सम्पादित की है। साथ ही हम आचार्य श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार अधिष्टता वीरसेवामन्दिर, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प्रोफेसर बनारस विश्व-विद्यालय तथा डा० हीरालाल जी अध्यक्ष प्राकृत विद्यापीठ मुजफ्फरपुर (बिहार) के भी बहुत आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के प्रास्ताविक, प्राक्कथन, प्राथमिक लिखकर इस पुस्तक की उपयोगिता को बहुत बढ़ा दिया है। श्री पं० परमानन्द जी तथा श्री मुनीन्द्रकुमार जी ने इस पुस्तक के कुछ प्रूफ देखे हैं, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं

हम श्री रामचद्र जैन भारत सरकार **valuation officer**, पुन-र्निवास मत्रालय तथा श्री अ०-ल भा० दिगम्बर जैनकेन्द्रीय महासमिति देहली के आभारी हैं जिन्होने इस पुस्तक के प्रकाशन मे १३१ क्रमश. तथा ५१) दान देकर इस पुस्तक की उपयोगिता को अपनाया है।

हमे आशा है कि पुस्तक की उपयोगिता मे जनता प्रभावित होकर इस पुस्तक को अपनायेगी।

अजितप्रसाद जैन ठेकेदार सभापति
महतावसिंह जैन महामन्त्री

आदीश्वरप्रसाद जैन मंत्री
पन्नालाल जैन मंत्री
जैन मित्र मण्डल, धर्मपुरा, देहली

प्राथमिक

जैन संस्कृति की धारा बहुत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण है। किन्तु दुर्भाग्यतः जैन धर्मानुयायी अपनी वस्तु को स्थिर रूप देने व उसे संसार के सम्मुख उपस्थित करने मे बहुत शिथिल और दीर्घसूत्री रहे हैं। उदाहरणार्थ, जबकि वैदिक परम्परा के ग्र थ कम से कम चार हजार वर्ष पुराने पाये जाते हैं, तब महावीर भगवान से पूर्व का कोई जैन साहित्य सुरक्षित नही है। भगवान महावीर की वाणी को उनके शिष्यो ने उन्ही के जीवन-काल मे द्वादशांग रूप रच लिया था, ऐसी जैन श्रुत-परम्परा है। किन्तु इसे कोई एक हजार वर्ष तक लिखित रूप नही दिया जा सका। दिगम्बर परम्परानुसार तो वह समस्त द्वादशांग श्रुत कोई छह सातसो वर्षो मे ही क्रमशः विस्मृत और विलुप्त हो गया, और जो रहा उसके आधार पर नये सिरे से षट्खडादि ग्र थो की रचना की गई। श्वेताम्बर परम्परा म महावीर निर्वाण से लगभग एक हजार वर्ष पश्चात् उसके बचे खुचे ग्र शो का सकलन कर उन्हें पुस्तको का रूप देने का प्रयत्न किया गया।

चीन देश मे ग्र थो के मुद्रण का कार्य नौवी शती मे प्रारम्भ हो गया था। यूरोप मे मुद्रण कार्य पन्द्रहवी शती मे तथा भारत में सोलहवी शती में आरम्भ हुआ। किन्तु जैन ग्र थो का प्रकाशन सन १८५० से पूर्व का कोई नही पाया जाता। अभी अभी तक धार्मिक ग्र थो के मुद्रण का समाज में विरोध भी होता रहा है। आज सभ्य ससार का उपलब्ध प्राचीन साहित्य प्रायः समस्त ही प्रकाशित हो चुका है और उसके प्रमुख भाग अन्य भाषाओ में भी अनुदित हो गये हैं। किन्तु एक जैन साहित्य ही ऐसा है जिसका अति प्रचुर भाग, नष्ट होते होते जो कुछ बचा है, वह अभी भी शास्त्र भडारो की अधेरी कोठरियो मे बन्द पडा है। यह दशा आज सभ्यता के विकास की दृष्टि से नितान्त शोचनीय है। हमारी साहित्यिक निधि का लेखा-जोखा लगाने मे और

दशा सुधारने मे प्रस्तुत पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी, इसमे सन्देह नही।

श्रीयुत पन्नालाल जैन अग्रवाल जैन साहित्य की बहुत कुछ सेवा कर चुके हैं और उन्हें जैन साहित्य प्रकाशन का खासा परिचय है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने जैन साहित्य की प्रकाशित हिन्दी, सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषा की रचनाओ की अकारादि क्रम से सक्षिप्त सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इसके आधार से साहित्यक विद्वान जैन प्रकाशन की गति-विधि का पता लगा सकेंगे। जिन्हे ग्रंथ-सग्रह करना है वे इसके द्वारा अपने पुस्तकालय को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। और जिन्हें यह समझना है कि अभी भी कितना साहित्य प्रकाशित होना शेष है, वे इस सूची मे उल्लिखित आधुनिक रचनाओ के अतिरिक्त प्राचीन सस्कृत की केवल १८०, प्राकृत की ४४, अपभ्रंश की १८ और प्राचीन हिन्दी की २७५ पुस्तकों को डा० वेलणकर कृत 'जैन रत्न कोश' तथा विविध जैन भडारो की नई सूचियो आदि से मिलान कर देखे, तो उन्हे पता चलेगा कि अभी भी सैकडो नही सहस्रो प्राचीन जैन रचनाये अधेरे मे पडी हुई हैं। इस सूची की भूमिका रूप जो 'जैनियों की साहित्य सेवा और प्रकाशित जैन साहित्य" शीर्षक निबन्ध सम्पादक द्वारा प्रस्तुत है वह अपने विषयगत बहुत महत्वपूर्ण सामग्री को लिए हुए है।

मैं इस ग्रथ का हृदय से स्वागत करता हू और उसके सयोजक, सम्पादक तथा प्रकाशक और साथ ही वीर सेवा मन्दिर को, जिसके तत्त्वावधान मे सम्पादन का सब कार्य सम्पन्न हुआ है, विशेष धन्यवाद देता हुआ यह आशा करता हूँ कि इसके द्वारा भविष्य मे जैन साहित्य के प्रकाशन और प्रसार का मार्ग अधिक प्रशस्त बनेगा।

१४-२-१९५८ हीरालाल जैन

मुजफ्फरपुर डायरेक्टर 'प्राकृत जैन विद्यापीठ'

प्राक्कथन

श्री पन्नालाल जैन की इस छोटी किन्तु उपयोगी पुस्तक का मैं स्वागत करता हूँ। इसमे जैन वाङ्मय के क्षेत्र मे अब तक के साहित्यिक कार्य का अच्छा परिचय दिया गया है। उस वर्णन मे पर्याप्त जानकारी का सग्रह है। श्री पन्नालालजी ने अध्यवसाय पूर्वक अपने आप को उस विभाग से अद्यावधिक अवगत रक्खा है। जहाँ तक भारतीय सस्कृति और वाङ्मय का सम्बन्ध है हम उसके अखड स्वरूप की आराधना करते हैं। ब्राह्मण और श्रमण दोनों धाराओ से उसका स्वरूप सम्पादित हुआ है। श्रमण सस्कृति के अतर्गत जैन संस्कृति साहित्य, धर्म, दर्शन, कला इन चार क्षेत्रो में अति समृद्ध सामग्री प्रस्तुत करती है। नई दृष्टि से उसका अध्ययन और प्रकाशन आवश्यक है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि जैन विद्वान् निष्ठा के साथ इस कार्य में लगे हैं। उनके प्रयत्न उत्तरोत्तर फलवान् हो रहे हैं। प्राकृत और अपभ्र श भाषाओं की सामग्री मे तो अब प्राय देश के सभी विद्वानो की अभिरुचि बढ रही है।

वह समय परिपक्क है जब इन ग्रथो को नए ढंग से सशोधित रूप में सम्पादित करके प्रकाशित किया जाय। जो कार्य अब तक हुआ है उसका एक लेखा-जोखा जान लेने पर नवीन कार्य की प्रेरणा प्राप्त हुआ करती है। इस दृष्टि से यह वृत्तान्त उपयोगी है। इसके अन्त मे जैन भडारों और पुस्तकालयों की एक सूची जोड दी जाय तो और अच्छा रहेगा। हमे यह देखकर आनन्द होता है कि सरस्वती भंडारो के स्वामी और प्रबन्धक अब प्राय उदार दृष्टिकोण अपनाने लगे हैं। सम्पादन और प्रकाशन के लोकहितकारी कार्यो मे उन से मिलने वाले सहयोग की मात्रा बढ रही है। इस महती शताब्दी के उत्तरार्ध मे जैन साहित्य के समुचित प्रकाशन की धारा और अधिक वेगवती बन सकेगी, ऐसी आशा होती है। अनेक केन्द्रों से वितत कार्य के सूत्रो का सम्मिलित पट और सुन्दर बनेगा, ऐसे शुभ लक्षण प्रकट हो रहे हैं। इस समय जो विद्वान

और जो संस्थाए इस पुनीत कार्य मे सलग्न हैं उनकी नामावली ग्रथ के प्रारम्भिक भाग मे आ गई है उन–उन विशिष्ट मित्रो के यशस्वितम परिश्रम को दृष्टि पथ मे लाते हुए मन आश्वस्त होता है कि इस वाङ्मय रूपी कल्प वृक्ष का अगले पचास वर्षों मे शतश. सहस्रश: विस्तार सम्भव हो सकेगा।

यद्यपि प्राचीन आगम साहित्य प्रकाशित हो चुका है, किन्तु उसको निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका आदि के साथ अभिनव रूप मे भूमिका, टिप्पणी, शब्दानुक्रमणी आदि के साथ पुन. प्रकाशित करने के कार्य शेष ही है। जब वे इस रूप मे उपलब्ध होगे तभी उनसे सास्कृतिक सामग्री के दोहन का कार्य पूरा किया जा सकेगा। इस युग का महनीय उद्देश्य तो भारतीय राष्ट्र का सर्वांग पूर्ण सांस्कृतिक इतिहास है। यह कितना विशाल कार्य और कैसा उदात्त लक्ष्य है इसकी कल्पना सहसा मन मे नही आती। किन्तु अभी तो कार्य का आरम्भ मात्र है। सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण की कला अभी विकसित होने लगी है। यह महान् कार्य अनेक सकल्पवान् साधको की अपेक्षा रखता है। एक-एक शब्द का मूल्य मणिमुक्ता की भाँति चतुराई से परखना होगा, उसके सूत्रो को बौद्ध साहित्य, सस्कृत साहित्य एव प्रादेशिक भाषाओ के साहित्य मे ढूढना होगा। तब सब की सम्मिलित आभा से ऐतिहासिक के मन मे अर्थों का पूरा आलोक प्रकट हो सकेगा। इसकी कल्पना से ही रोमाञ्च होता है। भारत के भावी इतिहासकारो के लिए सास्कृतिक सामग्री के सुमेरू स्तब्ध खड़े हैं, जिनकी परिक्रमा लगानी होगी। हम जिस दृष्टि कोण की कल्पना कर रहे है उसमे इतिहास, साहित्य, सस्कृति, कला, धर्म, दर्शन और जीवन-परम्परा–इन सात सूत्रो को एक साथ मिलाकर भारती महाप्रजा के राष्ट्रीय पुरावृत्त का दिव्य इन्द्रायुधाम्बर सम्पन्न करना होगा। यहाँ अभेद, समन्वय, सप्रीति का दृष्टिकोण मुख्य है। काल के प्रवाह मे जो कुछ बचा रह गया है वह मात्रा मे कितना विस्तृत है इसकी टकसाली साक्षी जैन शास्त्र भडारो में उपलब्ध ग्रथ राशि से प्राप्त हुई है। श्री वेलणकर द्वारा संगृहीत 'जिनरत्नकोश' इस क्षेत्र का भव्य प्रयत्न है। यह

जानकर प्रसन्नता होती है कि वीर सेवा मंदिर दिल्ली की ओर से लगभग ६००० अप्रकाशित ग्रन्थों की एक सूची तैयार कराई गई है। राजस्थान के भंडारों की छान बीन श्री कस्तूरचन्द्र कासलीवाल और श्री अगरचन्द नाहटा बराबर आगे बढा रहे हैं। आशा है अगले बीस वर्षों में भंडारों के पर्यवेक्षण का कार्य पूरा कर लिया जायगा। और तदनुसार प्रकाशन की शक्तिशाली योजनाए भी राष्ट्र मे बन जाएंगी।

इस पुस्तक मे प्रकाशित जैन साहित्य की एक अकारादि क्रम से नाम सूची संग्रहीत की गई है। इसमे लगभग २७०० पुस्तको का संक्षिप्त परिचय दिया है। तैयार यादी की भाति यह सूची पाठकों के लिये उपयोगी रहेगी। जो ग्रंथ इस सूची मे छूट गए हों उनके नाम भी अपनी जानकारी के अनुसार जोड़ लिए जा सकते हैं। श्री पन्नालाल जी का यह उत्साहमय प्रयत्न बहुत अच्छा है।

काशी विश्वविद्यालय — **वासुदेवशरण अग्रवाल**

फाल्गुन शुक्ल १२, स० २०१४
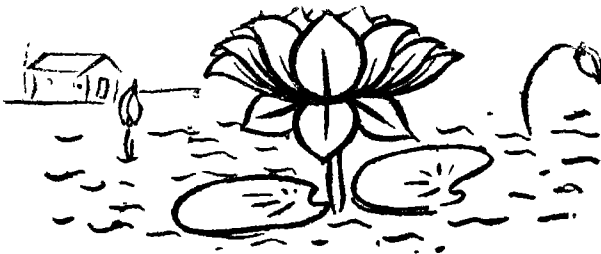
संकेत-सूची

अनु०=अनुवाद-अनुवादक
अप०=अपभ्रंश
अं०=अंग्रेजी
आ०=आवृत्ति, आचार्य
ई०=ईस्वी
का० ती०=काव्यतीर्थ
गु०=गुजराती
जि०=जिला
टी०=टीका-टीकाकार
डा०=डाक्टर
दा० वी०=दानवीर
दि० दिगम्बर
न०=नम्बर
न्या०आ०=न्यायाचार्य
न्या० ती०=न्यायतीर्थ
न्या० ल०=न्यायालंकार
प०=पंडित
पृ०=पृष्ठ
प्र०=प्रकाशक-प्रकाशित
प्रा०=प्राकृत
प्रो०=प्रोफेसर
बा०=बाबू
ब्र०=ब्रह्मचारी
भा०=भाषा
म० र०=महिलारत्न
मा०=मास्टर
मि०=मिस्टर
मु०=मुन्शी
मू०=मूल्य
ले०=लेखक-लेखिका
व०=वर्ष
वा०=वार्षिक
वि० र०=विद्यारत्न
स० भ०=सत्यभक्त
सं०=संस्कृत, संपादक
संक०=संकलनकर्ता
संग्र०=संग्रहकर्ता
संपा०=संपादक-संपादिका
संशो०=संशोधक
सा० आ०=साहित्याचार्य
सा० र०=साहित्यरत्न
सि०=सिद्धांत
सि० च०=सिद्धांत चक्रवर्ती
सि० शा०=सिद्धांत शास्त्री
से०=सेठ
स्व०=स्वर्गीय
हि०=हिन्दी
Ed = Editor , Edited
Trad = Translated
Pub = Publisher
Tr = Translator
Dj.= Digambar jain
C.R.= Champat Rai
J.L.= jagmander lal
G.R.= Ghasi Ram

प्रास्ताविक

इस पुस्तकके सयोजक बा० पन्नालालजी जैन अग्रवाल अपने चिर-परिचित मित्र हैं। आप बडे ही सेवाभावी और साहित्य-प्रेमी सज्जन हैं— साहित्य-सेवियो को अपनी सेवाए प्रदान करनेमे सदा ही उदार एव परिश्रम-शील रहा करते है। कई वर्ष तक आप वीर-सेवा-मन्दिरके मंत्री रह चुके हैं। इस पुस्तक का आयोजन भी आपके उक्त मन्त्रित्व-कालमे ही हुआ है। पुस्तक के आयोजनादि-सम्बन्धकी कुछ रोचक-कथा इस प्रकार है, जिसे उन पत्रोम जाना जाता है जिन्हे सयोजकजीने अपने पास सुरक्षित रख छोडा है —

डा० माताप्रसादजी गुप्त एम० ए० प्रयाग सन् १९४३ मे 'हिन्दी पुस्तक-साहित्य' नामकी एक ग्रन्थसूची लिख रहे थे, जिसमे हिन्दीकी चुनी हुई पुस्तकोका परिचय उन्हें देना था और वह भी सन् १८६७ से १९४३ तक १०० वर्ष के भीतर प्रकाशित पुस्तकोका—लिखितका नही। नवम्बर १९४३ मे डा० साहब के तीन पत्र बा० पन्नालालजी (संयोजकजी) को प्राप्त हुए, जिनमे यह इच्छा व्यक्त की गई कि यदि हिन्दीके जैन ग्रन्थोकी कोई अभीष्ट सूची उनके पास तय्यार हो या वे तय्यार कराके दे सकें तो उसका उपयोग उक्त सूची में किया जा सकता है। इन पत्रो पर से सयोजक-जीको हिन्दी जैन ग्रन्थोकी एक ऐसी सूची तय्यार करनेकी प्रेरणा मिली जिसमे वे ग्रन्थ भी शामिल थे जो मूलत भले ही सस्कृत-प्राकृतादि भाषाओ में हो परन्तु उनके अनुवादादिक हिन्दी भाषामे लिखे गये हो। तदनुसार उन्होने हिन्दी जैन ग्रन्थो की एक सूची तय्यार की और उसे देखने-जाँचने के लिये मेरे पास सरसावा वीर-सेवा-मन्दिर मे भेज दिया। यह सूची अपने को जनवरी १९४४ के अंतमे प्राप्त हुई और उसे सस्था के विद्वान प० परमा-नन्दजीको जाँच आदि के लिये सुपुर्द कर दिया गया। प० परमानंद जीने

जाँचने, सुधारने और कितने ही नये ग्रंथो की उसमे वृद्धि करने के बाद उसे फर्वरी के अन्त मे वापिस कर दिया और वह दूसरी मार्चको डा० सा० के पास प्रयाग भी पहुच गई, जिसकी पहुच देते हुए डा० मा० ने सूची को बड़े ही परिश्रमसे तैयार हुई बतलाया और अपनी सूची के प्रेस चले जाने की सूचना करते हुए यह परामर्श दिया कि यदि विषयो के अनुसार वर्गीकृत होकर वह अनेकान्त (मासिक) मे प्रकाशित हो जावे तो बड़ा अच्छा हो। साथ ही उसी पत्र तथा २० मार्च के पत्र मे यह आश्वासन भी दिया कि वे यथा समव उस सूची का उपयोग करके उसे वापिस लौटा देंगे। १६ अप्रेल १९४५ से पहले तक यह सूची वापिस नही लौटी, २२ जुलाई तथा २ नवम्बर के पत्र मे सूची के उपयोग-सम्ब ध मे इतनी ही सूचना की गई—'सूची जरा देर से प्राप्त हुई थी इस कारण उसमे पूरा लाभ नही उठा सका। आपकी सूची के प्राचीन ग्रथो म नितान्त अपरिचित होने के कारण कुछ को चुनना और शेष को छोड़ना ठीक नही लगा। आधुनिक ग्र थो मे से जो महत्व पूर्ण हैं उनमे स अधिकाश मेरी सूची मे पहले से थे। जैनधर्मका परिचय कराने वाले आधुनिक ग्र थ एकाध आपकी सूची से भी मिलगए हैं।'

डा० माताप्रसादजी की उक्त सूची 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नाम से अप्रेल १९४५ मे प्रकाशित हो गई, उसे देख कर हमारे सयोजक जी को प्रकाशित जैन ग्र थो की एक बड़ी सूची तय्यार करने की विशेष प्रेरणा मिली। फलत: उन्होने हिन्दी के अतिरिक्त सस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश भाषा के ग्र थो की भी एक सूची सकलित की और उसे आरा के जैन सिद्धान्तभास्कर (त्रैमासिक) में छपाना चाहा, परन्तु वहाँ क्रमश. प्रकाशित करने की बात उठी, जो उचित नही जँची। तदन तर भारतीय ज्ञान पीठ के प्रधान विद्वान न्यायाचार्य प० महेन्द्र कुमार जी से इसके विषय मे पत्र व्यवहार हुआ और वह मार्च १९४६ मे उनके पास बनारस भेज दी गई। न्यायाचार्य जीने उसे देखकर ८ अप्रेल के पत्र में लिखा कि "इस (सूची) में बहुत परिश्रम करनेकी आवश्यकता है तब कही यह छपने योग्य होगी। अभी हमारे यहा छपाई का सिलसिला भी ठीक नहीं हो सका है"। इस बीच मे संयोजकजीने बा० ज्योतिप्रसादजी

एम० ए० लखनऊसे भी पत्रव्यवहार किया, जिन्हे हाल मे पी एच० डी० की उपाधि भी प्राप्त हो गई है, और उन्हें सूचीके सम्पादन की प्रेरणा का, जिसके उत्तर मे उन्होने अपने ४ अप्रेल १९४६ के पत्र मे लिखा कि "हिन्दी सूची भी मैं सम्पादन करदूँगा आप मगालें।" इस स्वीकृति के अनुसार वह सूची उन्हे बनारस से भिजवादी गई और उन्हें ११ अप्रेल को मिल गई, जिसकी पहुँच के पत्र तथा बाद के भी कुछ पत्रो मे उन्होने सूची के सम्पादन की कुछ कठिनाइयो तथा अपने इकले की असमर्थतादि का उल्लेख करते हुए मुझ स परामर्श करने तथा वीरसेवामन्दिर की मार्फत इस कार्य के सम्पन्न होने आदि का सुझाव रक्खा। फलतः इस ग्रंथसूची परउस वक्त तक कोई खास काम नही हो सका जब तक कि श्री ज्योतिप्रसादजी की नियुक्ति १ ली अक्तूबर १९४६ को वीरसेवामन्दिर मे नही हो गई।

मुझे उक्त सूची की स्थिति आदि का पहले से कोई विशेष परिचय नही था, और इस लिये यह समझ लिया गया था कि बा० ज्योतिप्रसाद जी, जिन्होने सूचीका सम्पादन स्वीकार किया है, अपने अवकाशके समयो मे उस काम को भी करते रहगे, तदनुसार ही उन्हें उसकी यादहिहानी करा दी गई; परन्तु वैसा कुछ नही हो सका। साथ ही, यह मालूम पडा कि सूची में कितना ही सशोधन, परिवर्तन और परिवर्द्धन किया जाने को है। अतः आफिस वर्क के रूप मे इस कार्य सम्पादन के लिए बाबू ज्योतिप्रसाद जी की खास तौर से योजना की गई और कार्य की रूप-रेखा भी प्राय निर्धारित कर दी गई। उस वक्त तक वह सूची कोष्ठको के रूप मे थी, अकारादि क्रम से ग्रथ उसमे जरूर दिये थे परन्तु वह क्रम बहुधा कोश-क्रम के अनुसार ठीक नही था—कितने ही ग्रन्थ आगे पीछे लिखे हुए थे, कुछ दोबारा तिबारा प्रविष्ट हो गये थे, बहुत से ग्रन्थ लिखने से छूट गये थे और कुछ ग्रथो का परिचय भी कही कही त्रुटित तथा गलत हो रहा था। इन सब दोषोको दूर करते हुए प्रत्येक ग्रन्थके परिचयको जिनरत्नकोशादि की तरह धाराप्रवाह (running) रूप मे एक साथ देने की व्यवस्था की गई और

यह भी निश्चय किया गया कि जैनियोकी साहित्य-सेवाको प्रदर्शित करने-वाली एक अच्छी प्रभावक भूमिका भी साथ में रहे, जिससे इस पुस्तक की उपयोगिता बढ जाय। तदनुसार ही वीरसेवामन्दिर मे उक्त सूची पर नये-कार्डीकरणादि द्वारा सम्पादन-कार्य हुआ, जिसके फल स्वरूप उसे वर्त्तमान रूप प्राप्त हुआ है और उसमें सामयिक पत्रो तथा भाषणो के अतिरिक्त लगभग साढे छह सौ ग्रन्थो का नई वृद्धि हुई है—उर्दू, मराठी, गुजराती, बगला और अंग्रेजी की तो सभी पुस्तके नई प्रविष्ट की गई है।

बा० ज्योतिप्रसाद जी का कार्य-काल वीरसेवामन्दिर में ३१ जुलाई १९४७ तक रहा। अपने इस दस महीने के कार्यकाल मे उनका अधिकांश समय प्रस्तुत सूची के सम्पादन मे ही व्यतीत हुआ, जिसे ६-७ महीने का पूरा समय कहा जा सकता है। जुलाई के अन्त मे जैसे-तैसे भूमिका का कार्य पूरा होकर सूची का सम्पादन-कार्य समाप्त हुआ। अपने इस सम्पादन कार्य मे, जिसमें वीरसेवामन्दिर के दूसरे विद्वानो प० परमानन्द जी शास्त्री तथा न्यायाचार्य प० दरबारी लालजी का भी कुछ सहयोग प्राप्त होता रहा है, सम्पादक जी कहाँ तक सफल रहे उसे विज्ञपाठक स्वय समझ सकते है।

सूची का सम्पादन समाप्त होनेसे पहले ही सयोजक जी को उसके शीघ्र छपाने की चिन्ता थी, जिसके लिये उन्होंने अनेक पुस्तक प्रकाशको से पत्र व्यवहार किया—बडौदा के ओरियटल इंस्टिट्यूट, इलाहाबाद लाजर्नल कम्पनी, डा० माताप्रसाद जी गुप्त और इलाहाबाद के रायसाहब रामदयाल जी अग्रवाल तक को पुस्तक-प्रकाशन के लिये प्रेरणा की गई, परन्तु कही से भी सफलता प्राप्त नही हुई—सभी ने अपनी अपनी परिस्थितियो के वश छपाने मे असमर्थता व्यक्त की। उस समय कागज का भी बडा अकाल था, सारे देश मे उसका सकट व्याप्त था और कागज के सरकारी कोटे की भारी झझट थी, इसी से प० नाथूराम जी प्रेमी ने उन्हे बम्बई से लिखा था कि 'प्रकाशित करने के लिए मै किसे बताऊँ ! इस समय तो शायद ही कोई छापने को तय्यार हो।" वीरसेवामन्दिर को कागज का कोटा बहुत ही कम प्राप्त

था और कोटे से अधिक कागज दूसरे मार्ग से भी खरीद कर नही लगाया जा सकता था, यह बडी दिक्कत दरपेश थी और इसलिये मैंने संयोजकजी को लिख दिया था कि 'ऐसी हालत में यदि आप किसी दूसरे प्रकाशक से इसे प्रकाशित करना चाहें तो उसमे अपने को कोई खास आपत्ति नही हो सकती।'

इस तरह प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन जो उस समय रुका तो वह अनेक परिस्थितियों के वश अर्से तक रूका ही पड़ा रहा। वीरशासनसंघ कलकत्ता के मंत्री बा० छोटे लाल जी के पास भी यह दो एक वर्ष प्रकाशन की बाट जोहता हुआ पडा रहा। कलकत्ता से ग्रन्थ की प्रेस कापी वापिस आने पर संयोजक जी जैनमित्रमडल दिल्ली के मंत्रियो बा० महतावसिंहजी बी० ए० और बा० आदीश्वरप्रसाद जी एम० ए० से इस ग्रंथ को मडल से छपाने की अनुमति प्राप्त करने मे ही नही किन्तु उसे प्रेस को दे देने मे भी सफल हो गये, और इस तरह इस ग्रंथ के दुर्भाग्य का उदय समाप्त हुआ, यह बडी खुशी की बात है और इसके लिये जैन मित्र मंडल और उसके उक्त दोनो मंत्री विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। बा० पन्नालालजी का सम्बन्ध जैन मित्र मडल से बहुत पुराना है, आप कई वर्ष तक उसके सहायक मंत्री रहे है और आप के उस मंत्रित्व-काल मे जैनमित्रमडल चमक उठा था। ऐसी स्थिति मे आपकी एक उपयोगी कृति चिरकाल तक यो ही पडी रहे यह उसे कहाँ तक सहन हो सकता था आखिर काल-लब्धि आई और उसे ही उस पुस्तक को छपाने के लिये विवश होना पडा, जिसके छपाने मे वह भी पहले उपेक्षा-भाव दर्शा चुका था।

यह है इस पुस्तकके आयोजनादि-सम्बन्धी की कुछ रोचक कथा।

मुझे इस पुस्तक के प्रेस मे जाने का हाल उस समय मालूम पडा जब कि ५-७ फार्म ही छपने को बाकी रह गये थे। यदि प्रेसमे जानेसे पहले मुझसे इस विषय मे परामर्श कर लिया गया होता तो उसमे कितना ही सुधार हो जाता—कम से कम मुद्रणकला की जो खटकने वाली त्रुटियां पाई जाती है

वे ता न रहने पाती, और छपाने मे भी इतनी अशुद्धियाँ न रहती। अस्तु, जैसी कुछ भी है यह पुस्तक अब पाठकों के सामने उपस्थित है और अपने उस उद्देश्य को पूरा करने में बहुत कुछ समर्थ है जिसे लेकर यह प्रस्तुत की गई है। जिस पुस्तक के पीछे वीरसेवामन्दिर की भारी शक्ति लगी हो और कितना ही अर्थ-व्यय हुआ हो उसे इतने वर्षों के बाद पाठकों के हाथोमे जाता हुआ देखकर मेरी प्रसन्नताका होना स्वा- भाविक है।

अन्त मे यह जान कर मुझे बडी प्रसन्नता हुई कि डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और डा० हीरालालजी जैसे प्रमुख विद्वानोंने अपने अपने वक्तव्यो (प्राथमिक, प्राक्कथन) मे इस पुस्तक का अभिनन्दन किया है, और इसके लिए मैं दोनो ही विद्वानो का हृदय से आभारी हूँ।

आशा है समाज की सभी संस्थाएँ और साहित्य-प्रेमी सज्जन इससे इधर-उधर बिखरे हुए अपने अज्ञात साहित्यका एकत्र परिचय प्राप्त कर उससे यथेष्ट लाभ उठाने मे समर्थ हो सकेंगे।

वीर सेवा मन्दिर
२१ दरियागज, दिल्ली
ज्येष्ठ वदि ३, स० २०१५

जुगलकिशोर मुख्तार

जैनियों की साहित्य सेवा
और
प्रकाशित जैन साहित्य

किसी भी देश अथवा जाति के सांस्कृतिक विकास का मापदण्ड उसका साहित्य होता है। जातीय साहित्य की विपुलता, विविधता और उत्कृष्टता ही जातीय संस्कृति की उन्नतावस्था की द्योतक होती है। भारतीय संस्कृति की श्रमणधारा की प्रधान एवं सर्व प्राचीन प्रतिनिधि जैन संस्कृति विशुद्ध भारतीय होने के साथ ही साथ प्रायः सर्व देशव्यापी भी रही है। जैनधर्म का सम्बन्ध कभी भी देश के किसी एक ही भाग विशेष अथवा जाति या वर्ग विशेष से नहीं रहा वरन सदैव से ही न्यूनाधिक अंश में यह धर्म सम्पूर्ण देशव्यापी रहता चला आया है और प्रायः प्रत्येक जाति तथा वर्ग के व्यक्ति इसके अनुयायी रहे हैं। एक प्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ के कथनानुसार तो सम्पूर्ण भारतवर्ष में शायद एक भी ऐसा स्थान नहीं मिल सकता जिसे केन्द्र बना कर यदि बारह मील व्यास का एक काल्पनिक वृत्त खींचा जाय तो उसके भीतर एक या अधिक जैन मन्दिर, तीर्थ, बस्ती या पुराना अवशेष न मिले।

वर्तमान में जैन धर्मानुयायियों की संख्या यद्यपि अत्यल्प-लगभग २५-३० लाख रह गई है, तथापि आज भी वे देश में सर्वत्र फैले हुए हैं और विभिन्न प्रान्तों, जातियों, वर्गों और श्रेणियों के व्यक्ति उनमें सम्मिलित हैं। साथ ही वर्तमान जैन समाज प्रधानतया वर्तमान भारतीय समाज के समुन्नत, सुशिक्षित एवं समृद्ध भाग का ही एक महत्त्वपूर्ण अंश है। वह प्रगतिमान है और अपने लोकोपयोगी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। उसके अगणित तीर्थ, देवालय,

शास्त्र भंडार तथा अन्य साहित्यिक एव लोकोपकारी सस्थाए सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से सचालित है। धर्म वैशिष्ट्य और सस्कृति वैशिष्ट्य के रहते हुए भी जैन समाज ने सदैव से अपने आपको अखिल भारतीय समाज एव भारतीय राष्ट्र का अविभाज्य अ ग समझा है और आज भी समझती है। जैन हिन्दू हैं या नही इस सम्बन्ध मे जो मतभेद है उनका कारण धर्म वैभिन्य ही है। धार्मिक एव तत्सबधित सास्कृतिक परम्परा की दृष्टि से जैन अवश्य ही हिन्दू नही हैं किन्तु राष्ट्रीयता एवं भारतीयता की दृष्टि से वे हिन्दू ही है इसमे कोई सदेह नही। उनका धर्म, सस्कृति और वे स्वय प्राचीन काल से भारत के ही मूलत. शुद्ध अधिवासी रहे है। वे यही जन्मे और फले फूले है। वे भारत के ही है और भारत उनका है।

जैन साहित्य–एक अत्यन्त प्राचीन काल से चली आई देश व्यापी संस्कृति के रूप मे जैन सस्कृति ने अखिल भारतीय सस्कृति की धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान, राजनीति, समाज-व्यवस्था, रीति रिवाज एव आचार-विचार इत्यादि विविध शाखाओ को अनगिनत, अमूल्य एव स्थायी महत्त्व की देनें प्रदान की हैं। ज्ञान सवर्द्धन एव साहित्य निर्माण के क्षेत्र मे ही जैनो ने प्राचीन व अर्वाचीन विभिन्न भारतीय भाषाओ मे विविध विषयक विपुल साहित्य का सृजन करके, भारती के भडार को सुसमृद्ध एव समलकृत किया है। सस्कृत साहित्य को जैन विद्वानो की देने साधारण नही है, किन्तु उन्होने प्राचीन काल से प्राकृत एव तत्पश्चात् अपभ्र श जैसी अपने-अपने समय की लोक भाषाओ को विशेषकर इसी कारण अपनाया और साहित्य का माध्यम बनाया जिससे कि सर्व साधारण उक्त रचनाओ का लाभ उठा सके। इसी उद्देश्य को लक्ष्य बनाते हुए उन्होने विभिन्न प्रान्तीय, देसी भाषाओ मे ग्र थ रचनाए करके उक्त भाषाओ के विकास मे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योग दान दिया। तामिल भाषा के प्राचीन 'सगम' साहित्य का पर्याप्त एव श्रेष्ठतर भाग जैन विद्वानो की ही कृति है, और कनाडी भाषा का तो तीन चौथाई से अधिक साहित्य जैनो द्वारा ही निर्मित हुआ है। गुजराती एव राजस्थानी भाषाओ के साहित्य की जैनो द्वारा

महती अभिवृद्धि हुई और तैलगु, मलयालम्, मराठी, उडिया, बगाली, बिहारी गुरुमुखी आदि प्राय प्रत्येक प्रान्तीय भाषा मे अल्पाधिक जन साहित्य उपलब्ध है। आधुनिक देसी भाषाओ की जननी अपभ्र श पर तो जैनो का प्राय स्वाधिकार सा रहा ही था, हिन्दी की भी प्राचीनतम ज्ञात एव उपलब्ध रचनाए' जैनो की ही प्रतीत होती हैं। पुरातन हिन्दी के गद्य-पद्य साहित्य का एक बड़ा अ ंश जैन प्रणीत है, और वह कोई साधारण अथवा उपेक्षणीय कोटि का भी नही है। व्यापार की प्रधान सकेत लिपि 'मु ंडिया' मे एकमात्र साहित्यिक रचना अभी जैनो की ही उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त उर्दू, फारसी, अ ंगरेजी, जर्मन, फ्रेन्च, इटालियन आदि भाषाओ मे भी जैन साहित्य विद्यमान है।

जहा तक लेखन शैली का प्रश्न है, जैन साहित्यकारो ने विभिन्न भाषाओ की गद्य पद्यमयी अनेक नवीन शैलियो का आविष्कार किया और प्राय. सर्व ही प्रचलित शैलियो को अपनाया एव विकसित किया। मुक्तक एव स्फुट काव्य, खण्ड काव्य, महा काव्य, नाटक, चम्पू, आख्यान उपाख्यान, चारित्र पुराण, ऐतिहासिक कल्पित, घटनात्मक, नीत्यात्मक, वर्णनात्मक अथवा भावात्मक, सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, निर्यु क्ति, चूर्णि, टीका टिप्पणि, भाष्य व्याख्या, वैज्ञानिक विवेचन, से युक्त निबध प्रबध, रासा विलास, ढमाल चौपई, स्तुति स्तोत्र, पद भजन प्राय सर्व ही प्राचीन अर्वाचीन शैलियो मे रचनाए की तथा विभिन्न प्रचलित एव नवीन छन्दो, रस अलकार आदि का सफल प्रयोग किया। आधुनिक जैन साहित्यकार भी वर्तमान मे प्रचलित सभी शैलियो का सफल प्रयोग कर रहे है। यद्यपि जैन साहित्य की सृष्टि मे प्रधानतया धार्मिक प्रकृति ही कार्य करती रही है तथापि उसके सृजको ने उसे लोकरजक एव लोकोपयोगी बनाने का भी यथाशक्य प्रयत्न किया और वे इसमे सफल भी हुए। भाषा एव शैली के सुचारू एव उपयुक्त चुनाव के द्वारा उन्होने अत्यन्त शुष्क एव नीरस विषयो और प्रसगो को भी रुचिकर, पठनीय, सुबोध एव सर्व ग्राह्य बनाने का प्रयत्न किया।

जैन श्रमण सस्कृति निवृत्ति प्रधान है, अतएव स्वभावत उसके साधको एव उपासको द्वारा निर्मित साहित्य सामान्यत वैराग्यमयी, चारित्र प्रवण और

शान्त रस प्रधान रहा, तथापि प्राय प्रत्येक लोकोपयोगी एव समयापयुक्त विषय पर इन विद्वानो ने अपनी प्रमाणीक लेखनी का चमत्कार दिखलाया। धर्म-शास्त्र, तत्व ज्ञान, आचार शास्त्र, पुराण चारित्र, पूजा प्रतिष्ठा पाठ, स्तुति स्तोत्र आदि विविध धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त काव्य, नाटक, चम्पू, कथा साहित्य, जीवन चरित्र, आत्म चरित्र, इतिहास, राजनीति, नीत्योपदेश, समाज शास्त्र, दर्शन, अध्यात्म, न्याय, तर्क, छन्द, व्याकरण, अलकार, काव्य शास्त्र, कोष, भाषाविज्ञान, मन्त्र शास्त्र, ज्योतिष, सामुद्रिक, वैद्यक, पशु चिकित्सा, स्थापत्य मूर्तकला एव वास्तु विज्ञान, गणित, सामान्य विज्ञान, रसायन, भौतिक, जन्तु विज्ञान, भूगोल, खगोल, रत्न परीक्षा, भ्रमण वृत्तान्त, स्थान परिचय इत्यादि प्राय सब ही विषयो पर ग्रन्थ रचना की। इन बातो का विस्तृत परिचयात्मक विवेचन साहित्यिक इतिहास का विषय है। तथापि जैन साहित्य की विपुलता, विविधता और महत्व का बहुत कुछ अनुमान केन्द्रिय, प्रान्तीय तथा रियासती सरकारो द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज सम्बधी विभिन्न विवरण पत्रिकाओ, म्यूजियम रिपोर्टो, पुरातन पुस्तक भडारो तथा सार्वजनिक एव व्यक्तिगत सग्रहालयो के सूची पत्रो, विभिन्न स्थानीय दिगम्बर श्वेताम्बर जैन ग्र थ भण्डारो की उपलब्ध सूचियो तथा जैन पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित तत्सम्बधी फुटकर लेखादिको से हो जाता है। इस प्रकार ऐसे बीसियो सहस्त्र जैन ग्रन्थो का पता चलता है जो उपलब्ध है। जिसपर अनेक प्राचीन जैन ग्रन्थ भडार, विशेषकर दिगम्बर सम्प्रदाय के, अभी तक बन्द ही पडे हुए है। उनमे कितने, कैसे और क्या-क्या साहित्य रत्न छिपे पडे है यह कहा भी नही जा सकता। जो भडार खुल गये है उनमे से भी कितनो की ही कोई व्यवस्थित सूची निर्मित एव प्रकाशित नही हो पाई है। वैसे तो प्राय प्रत्येक नगर, कस्बे और ग्राम मे जहा जैनियो की थोडी बहुत भी आबादी है तथा देश भर मे यत्र तत्र फैले हुए बहुसख्यक जैन तीर्थो मे से प्रत्येक पर एक वा अधिक जिन मन्दिर प्राय अवश्य ही विद्यमान है और प्राय प्रत्येक जिनालय अथवा उपाश्रय आदि मे छोटा बडा एक शास्त्र भडार भी अवश्य ही होता है जिसमे कि ताडपत्रीय, भोजपत्रीय अथवा कागज आदि अल्पाधिक प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो का ही सग्रह प्राय.

रहता है । कितने ही जैन कुटुम्ब भी ऐसे है जिनके पूर्वजो मे साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले विद्वान होते रहे है और उक्त विद्वानो द्वारा सग्रहीत लिखित अथवा रचित कितने ही ग्रथ बपौती के रूप मे चले आये उनके वशजो के पास आज भी सुरक्षित है, और जिनका सदुपयोग वे लोग चाहे भले ही न कर सके, किन्तु किसी अन्य को देना क्या कभी भी दिखाने मे भी सकोच करते है। इस प्रकार के असख्य फुटकर जैन शास्त्र भडारो का कोई व्यवस्थित या अव्यवस्थित भी अन्वेषण अभी तक हुआ ही नही और उनमे एक अकस्मात् दर्शक को बहुधा कितनी ही महत्वपूर्ण एव अलभ्य साहित्यिक सामग्री का दर्शन हो जाता है। अभी हाल मे ही काशी नागरी प्रचारणी सभा के अन्वेषक श्री दौलतराम जुआल के प्रसग मे लखनऊ के केवल एक ही दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भडार के कुछ मात्र हिन्दी हस्तलिखित ग्रथो का निरीक्षण करने का सुयोग मिला था। परिणाम स्वरूप कई एक अधुना अज्ञात हिन्दी के प्राचीन जैन साहित्यकारो और उनकी कृतियो का पता चला तथा कई एक अन्य ज्ञात प्राचीन साहित्यिको के ऐतिह्य पर महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाश पडा।

ग्रन्थ सूची–जैन ग्रथो की 'वृहत्टिप्पणिका' नामक एक प्राचीन ग्रथसूची पहिले से ही विद्यमान थी और आधुनिक युग मे भी कई स्वतन्त्र ग्रथसूचिये प्रकाशित हो चुकी है। जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स ने 'जैन ग्रथ नामावली' नामक एक सूची प्रकाशित की थी और पाटन, जैसलमेर, सूरत, अहमदाबाद, लीबडी आदि स्थानो के श्वेताम्बर ग्रथ भडारो की व्यवस्थित सूचिये प्रकाशित हो चुकी है। दिगम्बर सूचियो मे सर्व प्रथम ग्रथ सूची जयपुर निवासी बाबा दुलीचन्द श्रावक के अपने मन्दिर मे स्थित शास्त्र भडार की थी। जिसे उन्होने 'जैन शास्त्र माला' के नाम से सन् १८९५ ई० मे प्रकाशित किया था। सन् १९०१ मे लाहौर निवासी बा० ज्ञान चन्द्र जैनी ने 'दिगम्बर जैन भाषा ग्रथ नामावली' नाम से एक अन्य सूची प्रकाशित की। सन् १९०५ मे फ्रान्सीसी विद्वान डाक्टर ए० गिरनोट ने अपनी 'जैना बिबलियोग्रेफिका' (फ्रान्सीसी भाषा मे लिखित) मे ज्ञात बहुसख्यक जैन ग्रथो की सूची दी। ऐलक

पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई, की सन् १६२३ से १६३२ तक प्रकाशित ६ वार्षिक रिपोर्टो मे उक्त भडार मे सगृहीत हस्तलिखित ग्रथो की परिचयात्मक सूचिये प्रकाशित हुई। इसी भवन की झालरापाटन स्थित शाखा की ग्रथ सूची भी 'ग्रथ नामावली' के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। वीर सेवा मन्दिर, सरसावा से प्रकाशित मासिक अनेकान्त की विभिन्न किरणो मे दिल्ली के कई बडे बडे ग्रथ भडारो की सूचिये तथा सोनीपत, इन्दौर, नागौर आदि के भी कुछ भडारो की सूचिये मे प्रकाशित हो चुकी है। उपरोक्त वीर सेवा मन्दिर मे कई एक दिगम्बर ग्रथ भडारो के लगभग ६००० अप्रकाशित तथा अन्य सूचीयो मे न दिये हुए हस्तलिखित ग्रथो की प्रमाणिक परिचयात्मक सूची के प्रकाशन की योजना चल रही है। अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी तीर्थक्षेत्र कमेटी, जयपुर ने आमेर (जयपुर) के प्रसिद्ध प्राचीन भडार की तथा स्वय महावीर जी क्षेत्र (चाँदन गाँव, जयपुर) के भडार की सयुक्त ग्रथ सूची पुस्तकाकार प्रकाशित की है। इतना ही नही किन्तु महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से श्री प० कस्तूर चद काशलीवाल एम० ए० ने जयपुर के शास्त्रभडारो से दो ग्रन्थ सूचिये तैयार की और एक जैन ग्रन्थ प्रशास्ति सग्रह तैयार किया जो उस क्षेत्र कमेटी के द्वारा प्रकाशित हो चुके है। आगे और भी ग्रथ भडारो की सूचियो के निर्माण का कार्य चालू हो रहा है। इसके सिवा धर्मपुरा, दिल्ली, नये मन्दिर के सचालको की ओर से प परमानन्द शास्त्री उक्त मन्दिर के शास्त्र भडार की सूची बना रहे है जो प्राय तय्यारी के लगभग है, उसका प्रकाशन भी जल्दी ही होगा। दक्षिण कर्णाटकस्थ मूडबद्री आदि के वृहत् जैन भडारो मे सग्रहीत कन्नडी ग्रथो की श्री प० के० भुजबलि शास्त्री द्वारा सुसम्पादित एक वृहत्सूची भारतीय ज्ञान पीठ, काशी से प्रकाशित हुई है। यत्र तत्र अन्य भडारो की सूचिये प्रकाशित करने की ओर भी लोगो का ध्यान आकर्षित हो रहा है। किन्तु इस दिशा मे अब तक का सर्वाधिक महत्व-पूर्ण एव प्रमाणीक प्रयत्न विल्सन कालिज, बम्बई के विद्वान प्रोफेसर डा० हरि दामोदर वेलङ्कर द्वारा सम्पादित "जिनरत्न कोष" है। इस ग्रथ का प्रका-

शन सन् १९४४ ई० मे भडारकर ओरियंटल रिसर्च इस्टीट्यूट, पूना द्वारा 'गवर्नमेंट ओरियटल सीरीज, क्लास 'सी' न० ४ के रूप मे हुआ है । इस ग्रथ मे जो कि लीपजिग (जर्मनी) से प्रकाशित टी० आफ्रेक्ट के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'कैटेलोगस कैटेलोगोरम' की शैली पर निर्मित हुआ है, विद्वान सम्पादक ने १२१ विभिन्न रिपोर्टों, ग्रथ सूचियो, सूचीपत्रो आदि के आधार पर लगभग दस हजार जैन ग्रथो का तथा उनकी विभिन्न ज्ञात प्रतियो का सक्षिप्त परिचय अकारादि क्रम से दिया है । इस कोष मे दिगम्बर, श्वेताम्बर व उभय सम्प्रदायो के ग्रथो को समान रूप से समाविष्ट किया गया है । किन्तु जैसा कि विद्वान सम्पादक ने ग्रथ के प्राक्कथन मे स्वय स्वीकार किया है, वे दिगम्बर साधन सामग्री का अत्यल्प उपयोग ही कर पाये । इसी कारण से उक्त कोष मे समाविष्ट दिगम्बर ग्रथ सख्या मे भी कम है, उनकी विवेचित प्रतिये भी न्यूनतर है और उनका परिचय अपेक्षाकृत अधिक न्यूनतर होने के साथ ही साथ कही कही त्रुटित एव दोषपूर्ण भी है ।

प्रशस्ति आदि—उपरोक्त ग्रन्थ सूचियो के अतिरिक्त, जैन ग्रन्थो के आदि अथवा अन्त मे पाई जानेवाली उनके रचियताओ, टीकाकारो, अतिलेखको, दातारो आदि की प्रशस्तियो के भी कई सग्रह प्रकाशित हो चुके है, यथा मुनि श्री जिनविजय द्वारा सम्पादित 'जैन पुस्तक प्रशस्ति सग्रह,' जैन सिद्धान्त भवन आरा से प्रकाशित 'प्रशस्ति सग्रह,' तथा वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली द्वारा निर्मित दो जैन ग्रन्थ प्रशस्ति सग्रह जिनमे से एक मे सस्कृत प्राकृत ग्रन्थो की प्रशस्तिये सकलित हैं और दूसरे मे अपभ्रश ग्रन्थो की । श्री महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी (जयपुर) भी आमेर भडार के ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियो का एक सग्रह प्रकाशित करा रही है । किन्तु अभी तक हिन्दी जैन ग्रन्थो की प्रशस्तियो का सकलन करने की ओर किसी का ध्यान नही गया है । मेरे स्वय के अवलोकन मे अबतक लगभग ५०-६० ऐसी प्रशस्तिये आ चुकी है जिनके प्रकाशन से न केवल हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास पर ही वरन मध्य कालीन भारत के राजनैतिक एव सास्कृतिक इतिहास पर भी अच्छा प्रकाश पड़ने की

पर्याप्त सभावना है। अपने ऐतिहासिक महत्त्व के अतिरिक्त ये ग्रन्थ प्रशस्तिये तत्तद ग्रन्थो, उनके कर्त्ताओ, उक्त ग्रन्थो की प्रतियो आदि से सम्बन्धित जानकारी के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती है।

साहित्यिक इतिहास—जैन साहित्य की अतीत कालीन प्रगति और इतिहास पर अभी तक कोई भी एक पूर्ण एव प्रमाणिक ग्रन्थ निर्मित नही हुआ है। भारतीय साहित्य के सामान्य इतिहास मे, हिन्दी सस्कृत आदि भाषाओ के साहित्य से सम्बधित अथवा दर्शन, कला, विज्ञान आदि विविध विषयक साहित्य के इतिहास ग्रन्थो मे, किसी भी कारण से क्यो न हो, प्राय जैन साहित्य की उपेक्षा ही की जाती रही है। प्रथम तो इन पुस्तको मे जैन साहित्य का कोई उल्लेख ही नही रहता, और यदि किसी किसी मे रहता भी है तो अत्यल्प, सक्षिप्त, गौण और बहुधा त्रुटिपूर्ण भी। उसे कोई महत्त्व भी नही दिया जाता और न साहित्यक विकास मे उसके उपयुक्त स्थान पर कोई प्रकाश डाला जाता है। किन्तु विभिन्न भाषाओ मे रचित जैन साहित्य के इतिहास पर जो कुछ थोडा बहुत साहित्य अब तक प्रकाशित हो चुका है वही पढकर उसके वास्तविक महत्त्व तथा भारतीय साहित्य मे उसके सम्माननीय स्थान का बहुत कुछ अनुमान हो जाता है। जैन साहित्य के इतिहास विषय पर निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है—प० नाथूराम प्रेमीकृत 'दिगम्बर जैन ग्रन्थ कर्त्ता और उनके ग्रन्थ,' 'हिन्दी जैन साहित्य का सक्षिप्त इतिहास,' 'कर्णाटक जैन कवि,' 'जैन साहित्य और इतिहास'। श्रीयुत आर-नरसिहाचार्य कृत 'कर्नाटक कवि चरिते' श्री मोहनलाल देसाई कृत 'गुर्जर कवि'-२ भाग, प्रो० ए० सी० चक्रवर्ती कृत 'जैन लिटरेचर इन तामिल'। श्री मूलचन्द वत्सल कृत जैन कवियो का इतिहास,' बाबू कामताप्रसाद कृत 'हिन्दी जैन साहित्य का सक्षिप्त इतिहास। राजस्थानी भाषा के जैन साहित्य पर श्री अगरचन्द नाहटा ने अच्छा कार्य किया है। हिन्दी के पुरातन जैन गद्य साहित्य पर हम स्वय एक पुस्तक लिख रहे है। इन पुस्तको के अतिरिक्त सुयोग विद्वानो द्वारा सम्पादित प्राचीन ग्रन्थो के आधुनिक सस्करणो की विद्वत्ता पूर्ण

विस्तृत प्रस्तावनाओ मे, गत वर्षों मे प्रकाशित विभिन्न जैन अभिनन्दन ग्रन्थों मे, जैन हितैषी, जैन साहित्य सशोधक, जैन विद्या आदि भूत कालीन सामायिक पत्रो की फाइलो मे तथा जैन सिद्धान्त भास्कर, अनेकान्त, जैन सत्यप्रकाश, वीरवाणी आदि वर्तमान पत्र पत्रिकाओ मे फुटकर लेखो के रूप मे जैन साहित्य और उसके इतिहास से सम्बन्धित विपुल सामग्री बिखरी पडी है। अग्रेजी प्रभृति विदेशी भाषाओ मे जैन सम्बधी साहित्य के स्वरूप एव प्रगति का ज्ञान डा० ए० गिरनोट (Dr A. Guirnot) कृत 'जैना बिबलियोग्रेफिका,' रा० बाबू पारसदास द्वारा सम्पादित 'जैन बिबलियोग्रेफी,' न० १ तथा बाबू छोटेलाल जी कृत 'जैन बिबलियोग्रेफी' से हो सकता है। किन्तु इन पुस्तको मे सन् १६२५ के उपरान्त का विवरण नही है। जैन कथा साहित्य पर डा० जे० हर्टल का कार्य श्लाघनीय है।

साहित्य के इतिहास और प्राचीन ग्रन्थो तथा ग्रन्थ प्रतियो के परिचय से जहाँ वर्तमान युग की बहुज्ञता बढती है तथा विद्वानो एव अन्वेषको को अपने कार्य मे भारी सहायता मिलती है वहाँ उनके कारण वर्तमान प्रकाशन प्रगति को भी भारी प्रोत्साहन मिलता है। साहित्यक क्षेत्र को समुन्नत एव प्रगतिशील बनाने के लिए युगानुसारी मौलिक ग्रन्थ रचना और उनका प्रकाशन तो आवश्यक है ही, प्राचीन अप्रकाशित ग्रन्थ रत्नो के आवश्यक अनुवादादि सहित सुसम्पादित सस्करणो का प्रकाशन भी अतीव आवश्यक एव वाञ्छनीय है। जो साहित्य शताब्दियो और सहस्त्राब्दियो से कराल काल को चुनौती देता हुआ अपने लोक हितकारी अथवा लोकरजक रूप और स्थायी महत्त्व के कारण अक्षुण्ण रहता चला आया है, अपनी इस अत्यन्त मूल्यवान बपौती का सरक्षण, प्रचार, प्रसार एव सदुपयोग करना वर्तमान सन्तति का प्रधान कर्तव्य है। इस प्रकार न केवल तत्तद सस्कृति की धारा अनवरोध रूप से प्रवाहित होती चली जायगी वरन उसके पुनीत जल मे निमज्जन करते रहने से मानव समाज सदैव अपना कल्याण करता रहेगा, उसे नव स्फूर्ति प्राप्त होती रहेगी और उसे अपना जीवन पथ-प्रशस्त रखने मे सहायता मिलेगी।

मुद्रण कला का प्रभाव–अस्तु छापेखाने के प्रचार के पश्चात् भारतवर्ष मे जब से साहित्य का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है, विशेषकर जैन समाज मे तब ही से प्राचीन ग्रन्थो के प्रकाशन का ही बाहुल्य रहा है। उत्तरोत्तर उत्कृष्टत्तर यान्त्रिक अविष्कारो को प्रसूत करने वाले इस यन्त्र प्रधान युग मे साहित्य का मुद्रण एव प्रकाशन भी अधिकाधिक शीघ्रता एव विपुलता के साथ वृद्धि को प्राप्त होता रहा है। विविध प्रकार के बहुसख्यक शिक्षालयो की स्थापना के साथ साथ मुद्रित ग्रथो के अल्प मूल्य मे सहज सुलभ होने के कारण साक्षरता, शिक्षा, बहुविज्ञता एव पठनाभिरुचि अधिकाधिक व्यापक होती जा रही है। विभिन्न प्रकार के असख्य पुस्तकालयो तथा अनगिनत सामयिक पत्र पत्रिकाओ के द्वारा उन्हे भारी प्रोत्साहन मिल रहा है। आज यह समस्या नही है कि 'पुस्तके तो है ही नही, पढे क्या और कैसे ? आज तो वास्तविक कठिनाई यह है कि पुस्तके तो प्रत्येक स्थान मे सहज सुलभ है, और बहुसख्या मे, उन सब ही को पढ लेना असभव सा है, और आवश्यक अथवा उपयोगी भी नही है। तब अपने लिए उनका किस प्रकार चुनाव करे, उनमे से कौन-कौन सी को पढे और किस-किस को न पढे ? मनुष्यो के बढते हुए ज्ञान, शिक्षा एव साहित्यिक सस्थाओ की सख्या वृद्धि शिक्षा प्रणाली के द्रुत विकास तथा मानव जीवन की अत्यन्त वेग के साथ वृद्धि, को प्राप्त होती हुई आवश्यकताओ और विषमताओ के कारण साहित्यगत विषय भी सख्यातीत होते जा रहे है। अपनी-अपनी रुचि, आवश्यकता एव साधनो के अनुसार पृथक-पृथक विषय मे विशेषज्ञता प्राप्त करना आवश्यक होता चला जा रहा है।

पुस्तक सूची की आवश्यकता–इन सब कारणो से आज मुद्रित प्रकाशित पुस्तको की परिचयात्मक सूचियो की आवश्यकता एव उपयोगिता बहुत अधिक हो गई है। प्रगतिशील पाश्चात्य भाषाओ के साहित्य के सबध मे ऐसी अनेक सूचिये विद्यमान है और निर्मित होती रहती हैं। दूसरे उनके प्रकाशको के सूची पत्र भी इतने सारपूर्ण और प्रमाणीक होते है–विषय विशेष सम्बन्धी

साहित्य के प्रकाशक भी बहुधा प्रथक-प्रथक है—कि उक्त व्यवसायिक सूचीपत्रो से ही तत्सम्बन्धी आवश्यकता की अधिकाश पूर्ति हो जाती है। किन्तु भारतवर्ष के और विशेषकर हिन्दी के प्रकाशको की अवस्था इससे नितान्त भिन्न है। यहाँ विशेषज्ञता को कोई महत्त्व नही दिया जाता, प्रकाशक अनगिनत हैं किन्तु उनमे सुव्यवस्था और सगठन का सर्वथा अभाव है। उनके सूचीपत्र मात्र व्यवसायिक दृष्टि से प्रेरित सस्ती विज्ञापन बाजी के नमूने भर होते है अत. पर्याप्त दोष पूर्ण भी होते है। उनसे पुस्तक विशेष का वास्तविक, ठीक-ठीक तथा पूर्ण परिचय प्राप्त नही होता। ऐसे सब ही प्रकाशित सूचीपत्रो का प्राप्त करना भी दुष्कर है, हिन्दी की सभी प्रकाशित पुस्तको की यथार्थ जानकारी भी उनसे नही हो सकती। अतएव हिन्दी की पुस्तको की एक ऐसी सार्वजनिक सूची की आवश्यकता थी जिससे हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशन के स्वरूप, प्रगति, इतिहास, त्रुटियो और आवश्यकताओ का ज्ञान हो सके। इस अभाव की पूर्ति अनेक अशो मे प्रयाग विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा० माता प्रसाद जी गुप्त द्वारा सम्पादित तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग द्वारा हाल मे ही प्रकाशित 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक ग्रन्थ से हो जाती है। इस पुस्तक मे विद्वान सम्पादक ने एक विस्तृत महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना के अतिरिक्त लगभग ५,५०० मुद्रित प्रकाशित हिन्दी पुस्तको की सक्षिप्त परिचयात्मक अनुक्रमणिका दी है, जिसमे प्राचीन अर्वाचीन, मौलिक एव टीका अनुवादादि, धार्मिक, सम्प्रदायिक (अधिकाशत: वैदिक परम्परा के ही हिन्दू समाजगत विभिन्न सम्प्रदायो से सम्बन्धित), लौकिक विविध विषयक, छोटी-बडी, महत्त्वपूर्ण तथा अति सामान्य कोटि की साधारण-प्राय सर्व ही हिन्दी सस्कृत पुस्तके सम्मिलित है। स्कूली पाठ्यक्रम की साधारण पुस्तके, पारसी थ्येटर कम्पनियो मे खेले जाने वाले सस्ते नाटक, सिनेमा के गायन आदि की पुस्तके, पुराने ढग के साग, ख्याल, नौटकी, आल्हा, आदि की पुस्तके तथा फुटकर वा अज्ञात ट्रैक्ट आदि छोड दिये गये है। साथ मे युग-विभाजनगत विषयानुसार पुस्तकानुक्रमणिका तथा लेखकानुक्रमणिका से पुस्तक की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है।

किन्तु एक सहृदय साहित्यिक विज्ञान के द्वारा रचित साहित्यिक विज्ञान सबधी ऐसी निर्देशात्मक पुस्तक के अवलोकन से जिस बात पर साश्चर्य खेद हुआ वह यह है कि इस पुस्तक मे भी जैन साहित्य की उपेक्षा ही की गई है और उसके प्रति अन्याय भी हुआ है। पुस्तक मे निर्देशित लगभग ४,५०० लेखको मे से केवल ५० लेखक जैन है जिनमे २० ऐसे हैं जिन्होने जैन सबधी कुछ नही लिखा, और यदि उनमे से किसी की कोई जैन रचना है भी तो उनका उल्लेख नही किया गया, शेष ३० लेखको मे दो हजार वर्ष प्राचीन आचार्य कुन्दकुन्द से लेकर आधुनिक काल के अति गौण लेखक तक सम्मिलित है। कुल ७०-७५ जैन पुस्तको का उल्लेख है जिनमे सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश एव हिन्दी के मौलिक तथा टीका अनुवादादिक और कथा कहानी, पूजा पाठ, पद भजन, अध्यात्म, तत्वज्ञान, निमित्त शास्त्र आदि कितने ही विषयो के दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानक वासी सभी सम्प्रदायो के एक-एक दो-दो ग्रन्थ बानगी के लिए दे दिये गये हे। इन गिने चुने लेखको और उनकी कृतियो के परिचय भी बहुधा दोष पूर्ण एव भ्रामक है, उदाहरणार्थ, कुन्दकुन्दाचार्य कृत 'समयसार' को नाटक लिखना, 'बारह मासा नेमिनाथ' पुस्तक को केवल बारह मासा लिखकर उसके लेखक के रूप मे नेमिनाथ को लिखना, 'जैन रामायण' के कर्त्ता का नाम रामचन्द्र के स्थान पर हेमचन्द्र लिखना, कवि वृन्दावन दास कृत 'अर्हत पाशा केवलि' नामक शकुन शास्त्र को प्राचीन युग का एक जीवन चरित्र(!) लिखना। 'जाति की फेहरिस्त' और 'अग्रवालो की उत्पत्ति' जैसी पुस्तको को 'धर्म-तत्कालीन' विषय के अन्तर्गत तथा 'जैन स्तवनावली' और 'जैनग्रन्थ सग्रह' जैसे प्रकीर्णकस्फुट पाठ सग्रहो को 'साहित्य का इतिहास-तत्कालीन' विषयके अन्तर्गत देना, इत्यादि। और यह तब जबकि सम्पादक महोदय को जैन साहित्य की पूर्वोल्लिखित इतिहास पुस्तके और ग्रन्थ सूचिये आदि तथा कम से कम प० नाथूराम प्रेमी के जैन ग्रन्थ कार्यालय के बृहत्सूचीपत्र के अतिरिक्त, जोकि सब सहज सुलभ थे, किसी भी अच्छी जैन साहित्यिक सस्था अथवा प्रकाशन सस्था या एक वा अधिक जैन साहित्यिको से ही पत्र व्यवहार द्वारा प्रकाशित जैन

साहित्य के सम्बन्ध मे बहुत कुछ जानकारी सरलता से प्राप्त हो सकती थी। स्वय लाला पन्नालाल जी अग्रवाल देहली निवासी ने जो कि ऐसे कार्यों मे सदैव अत्यधिक उत्साह रखते है और अपना पूर्ण सहयोग देने मे तत्पर रहते हैं, डा० माता प्रसाद जी की इस पुस्तक के लिए लगभग चार सौ मुद्रित जैन पुस्तको की एक परिचयात्मक सूची तैयार करके उनके पास भेजी थी। किन्तु सभवतया कुछ विलम्ब से प्राप्त होने के कारण, या क्या, डाक्टर साहब ने पन्नालाल जी की सूची का भी उपयोग नही किया। डाक्टर गुप्त की इस जैन साहित्य सबधी उदासीनता का जो कि भारत के बहुभाग अजैन विद्वानो और साहित्यिको मे आज इस बीसवी शताब्दी के मध्य मे भी पाई जाती है बहुत कुछ अनुमान प्रस्तुत पुस्तक के अवलोकन से तथा गुप्त जी की पुस्तक के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन करने से हो जायगा। इसमे सदेह नही है कि किसी जैन पुस्तक का मात्र मुखपृष्ठ देखकर अथवा किसी सूचीपत्र मे उसका नाम मात्र पढकर जैन साहित्य से अनभिज्ञ एक अजैन विद्वान के लिए उसका यथोचित परिचय देना बहुधा दुष्कर है। स्वय काशी नागरी प्रचारिणी सभा की हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज सम्बधी विवरण पत्रिका मे जैन साहित्य विषयक अनेक उल्लेख सदोष एव भ्रान्तिपूर्ण है, जिनका एक लेख के रूप मे सशोधन करके मैने अभी हाल मे ही सभा के अन्वेषक श्री दौलतराम जुआल द्वारा प्रकाशनार्थ सभा को प्रेषित किया है। किन्तु ये कठिनाइयाँ जैन विद्वानो के सहज सुलभ सहयोग से सरलता से दूर की जा सकती है। गत वर्ष मे सभा के अन्वेषक महोदय ने लखनऊ के जैन शास्त्र भडारो मे सग्रहीत लगभग एक सौ हिन्दी ग्रन्थो के विवरण लिये, इस कार्य मे उन्हे मेरा पूर्ण सहयोग प्राप्त था, अपने लिये हुए विवरणो को वे मुझ से पूर्ण तथा सशोधित करवाकर ही भेजते थे, अतएव उक्त विवरणो मे कोई भारी या खटकने वाली भूले रह जाने की तनिक भी सभावना नही है।

जैन प्रकाशनो की दशा—हिन्दी प्रकाशन कार्य की जिस कुव्यवस्था का उल्लेख ऊपर किया गया है, किंतु पुस्तक प्रकाशन की दशा उससे भी बुरी है।

सामान्य भारतीय तथा हिन्दी पुस्तक प्रकाशन के प्राय सर्व दोष तो इसमे बढे चढे रूप मे पाये ही जाते, उनके अतिरिक्त कई एक अन्य त्रुटियाँ भी हैं। जैन पुस्तक प्रकाशन अभी तक एक लाभदायक व्यवसाय नहीं बन पाया है। उसके यथोचित सुविकसित एव सुव्यवस्थित होने मे अनेक बाधक कारण रहे है। जैन सस्कृति जैसी सर्वांगीण है, उसके दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान जैसे सुविकसित, उत्कृष्ट और व्यापक है, उनके विशेषाध्ययन, शोध खोज एव अनुसधान के लिए एक केन्द्रीय जैन विश्व विद्यालय का होना अत्यन्त आवश्यक था। ऐसे एक विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए कई बार कुछ आन्दोलन भी चले, लगभग २५–३० वर्ष पूर्व वर्णीत्रय-पूज्य प० गणेश प्रसाद जी वर्णी, स्व० बाबा भागीरथ जी वर्णी तथा स्व० प० दीपचद्र जी वर्णी ने जैन विश्वविद्यालय की स्थापना का बीडा उठाया था, किन्तु समाज से उपयुक्त सहायता सहयोग न मिलने के कारण असफल रहे। भारतवष के विद्यमान विश्व-विद्यालयो मे भी जैनाध्ययन की कोई साधन सुविधाए नही है। बनारस के जैन कलचरल रिसर्च इन्स्टीटयूट द्वारा श्वेताम्बर बन्धु गत दो तीन वर्षो से इनमे से कुछ विश्व विद्यालयो मे जैन रिसर्च फेलोशिप स्थापित करने की ओर प्रयत्न शील हैं, किन्तु इस कार्य मे उन्हे दिगम्बर समाज का प्राय कोई सहयोग प्राप्त नहीं है। ज्ञानोदय मासिक मे एकाध बार इस योजना का समर्थन तो किया गया, किन्तु सेठ शान्ति प्रसाद जी द्वारा साहित्यिक कार्यो के लिए स्थापित ट्रस्ट के प्रबधको ने भी कोई सक्रिय उपक्रम इस दशा मे अभी तक नही किया, यद्यपि यह उनके लिए सहज था। कोई ऐसा उत्कृष्ट जैन कालिज भी विद्यमान नही है जिसमे जैनालॉजी का एक पृथक विभाग हो और जैनाध्ययन की समुचित साधन सुविधाए हो। जैन कालिजो और स्कूलो की सख्या भी कुछ कम नही है, किन्तु वे नाम मात्र के लिए ही जैन हैं, अर्थात् वे केवल इसी कारण जैन नामाकित है क्योकि वे जैनो द्वारा उन्ही के धन से स्थापित और उन्ही के उद्योग से सचालित है। किन्तु उनके पाठ्यक्रम मे जैन साहित्य और सस्कृति का किसी प्रकार का कोई स्थान नही है। इसके अध्ययन अध्यापन के लिए उनमे कोई साधन सुविधाए नही है। उनके पुस्तकालयो मे बिना मूल्य, भेट,

या दानादि द्वारा जैन पुस्तके और पत्र पत्रिकाए भले ही आ जाय किन्तु उनके ऊपर कुछ व्यय करने की अथवा उनका सग्रह करने की कोई प्रवृत्ति नही है और न कोई आवश्यकता ही समझी जाती है। उनमे अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की जैन साहित्यादि के अध्ययन मे अभिरुचि और आकर्षण तो तब हो जबकि उनके अध्यापको मे से भी कुछ की हो। यही दशा जैन छात्रावासो–जैन बोर्डिग हाउसो और होस्टलो की है।

यह ठीक है कि वर्तमान युग धर्म स्वातन्त्र्य और असाम्प्रदायिकता का है अतएव सार्वजनिक लौकिक शिक्षा मे किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय विशेष की धार्मिक शिक्षा का सम्मिलित किया जाना उचित नही समझा जाता, वरन् न्याय विधान द्वारा उत्तरोत्तर वर्जित किया जा रहा है। किन्तु किसी सस्कृति और तत्सम्बधित लोकोपयोगी साहित्य एव विचार धारा का अध्ययन साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक कदापि नही कहला सकता। जब वेदो, उपनिषदो, हिन्दू धर्म शास्त्रो और पुराणो का, वैदिक परम्परा के न्याय, मीमासा, साख्य वैशेषिक आदि षट् दर्शनो का, निर्गुण सगुण सम्प्रदायो और मध्यकाल के विभिन्न सन्त-मतो का तथा धर्म सुधार आन्दोलनो का, बौद्ध दर्शन और सस्कृति का, इस्लाम के इतिहास और परम्परा का, क्रिश्चियन थियोलाजी का अध्ययन अध्यापन जो कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयो मे स्वीकृत है, साम्प्रदायिक धार्मिक नही समझा जाता तो फिर जैनोलाजी का, जैन सस्कृति–दर्शन, साहित्य और इतिहास का अध्ययन अध्यापन साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक क्यो समझा जाय और भारत के सास्कृतिक अध्ययन मे उसी की उपेक्षा क्यो की जाय। अवश्य ही उसे अनिवार्य विषय न बनाकर ऐच्छिक या वैकल्पिक विषय बनाया जा सकता है।

उपरोक्त जैन कालिजो, स्कूलो, छात्रालयो आदि के लिए जिन स्थानो मे ये सस्थाए स्थित होती है, उनकी स्थानीय जैन समाज से तो भरसक द्रव्य एकत्रित किया ही जाता है, देश के अन्य विभिन्न प्रान्तो और स्थानो की जैन समाज से भी पर्याप्त द्रव्य सग्रह किया जाता है। इस द्रव्य प्राप्ति के लिए समाज से जो लिखित अथवा मौखिक अपीले की जाती है उनमे सर्वाधिक बल इसी बात

पर दिया जाता है कि विकसित जैन सस्था जैनत्व की प्रभावना के लिए ही विद्यमान है, जैन धर्म, सस्कृति और साहित्य की अथक सेवा करना ही उनका व्रत है अत जैनो का कर्तव्य है कि उसके लिए यथा शक्य द्रव्य दान देकर विद्या दान का पुण्य लूटें। किन्तु यह सब वाग्जाल और धोका है, इन सस्थाओ मे से प्राय किसी ने भी अब तक कम से कम अपनी ओर से जैन साहित्य और सस्कृति की कुछ भी सेवा नही की है। उनसे जैन साहित्य के लौकिक अ श के भी पठन पाठन और प्रकाशन को कोई प्रोत्साहन नही मिला है।

जो जैन सस्कृत विद्यालय है उनसे भी जैन साहित्य के सवर्धन मे विशेष सहायता नही मिल रही है, उनके कुछ फुटकर स्नातक व्यक्तिगत रूप से जैन साहित्य की अवश्य ही प्रशसनीय सेवा कर रहे है, पर वह अति सीमित और एकाँगी ही है। जैन समाज मे कई एक परीक्षा बोर्ड है, किन्तु उनके पठन-क्रम बहुत सीमित और रूढ है, उनके वैकल्पिक विषय अत्यल्प सख्यक है, इतिहास पुरातत्त्व और सस्कृति जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय भी उनमे सम्मिलित नही है, तुलनात्मक अध्ययन की कोई व्यवस्था नही है। इसके अतिरिक्त उनके अधिकारीगण जो जैसी पुस्तके उपलब्ध है उन्ही को अपने पठनक्रम मे रखकर सतोष कर लेते है। पठनक्रम के उपयुक्त नवीन पुस्तको के निर्माण कराने मे वे प्रवृत्त ही नही होते।

जैन साहित्य का बाह्य जैनेतर समाज मे सम्यक् प्रचार करने की जैनो की दिली प्रवृत्ति ही प्रतीत नही होती अतएव उसके लिए उपयुक्त साधन भी नही जुटाये जाते। कितना ही सुन्दर, लोकोपयोगी या लोकरजक तथा प्रमाणीक प्रकाशन हो, सार्वजनिक पत्र पत्रिकाओ मे उसके विज्ञापन, समालोचनाएं आदि निकलवाने की ओर कोई ध्यान नही दिया जाता। अजैन उसे एक साम्प्रदायिक रचना मान कर उपेक्षणीय समझते है और जैन उसे दूसरो को दिखाने की आवश्यकता नही समझते।

देश मे यत्र तत्र अनेक सार्वजनिक जैन पुस्तकालय एव वाचनालय भी खुलते जा रहे हैं, किन्तु उनमे भी जैन कालिजो और स्कूलो आदि की भांति

जैन पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं को क्रय करके संग्रह करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती, बल्कि सस्ते, जासूसी, ऐयारी, घटना प्रधान अथवा रोमांचक उपन्यास कहानियों के ही संग्रह को विशेष महत्त्व दिया जाता है ।

जैन साहित्य के स्वरूप का सम्यक् प्रचार न होने से नवयुवक विद्यार्थी वर्ग तथा पठनाभिरुचि रखने वाले वयस्क व्यक्ति भी पहले से ही यह मान बैठे हैं कि पठन क्रमान्तर्गत विषयो की दृष्टि से, लौकिक ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से, जीवन सम्बधी दैनिक आवश्यकताओ की दृष्टि से अथवा मनोरंजन की दृष्टि से जैन साहित्य एक निरर्थक-बेकार की वस्तु है, उसका यदि कोई मूल्य है तो केवल धार्मिक है सो भी श्रद्धालुओ के लिये ही । और एक औसत व्यक्ति वास्तव मे इस दृष्टि को कोई विशेष महत्त्व नही देता, जो कुछ महत्त्व देता है वह रिवाजन या लिहाजन अथवा नाम और पुण्य दोनों एक साथ कमाने की ही नियत से देता है । किन्तु वास्तविकता तो यह है कि जैन साहित्य मे किसी भी अन्य साम्प्रदायिक साहित्य की अपेक्षा-और पुरातन भारतीय साहित्य का अधिकाश किसी न किसी सम्प्रदाय से ही सम्बन्धित है—उपरोक्त लोकतत्त्वो का बाहुल्य ही पाया जाता है । उसकी सहायता से पठनक्रमान्तर्गत अधिकाश विषयो को भी सवर्द्धित किया जा सकता है । यहा तक कि उसके गूढ सैद्धान्तिक एव दार्शनिक मन्तव्यो की भी कैसी समयानुसारी, लौकिक एव व्यावहार्य व्याख्या की जा सकती है यह बात भारतीय ज्ञानपीठ, काशी से हाल मे ही प्रकाशित तथा काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर महेन्द्रकुमार जी द्वारा लिखित तत्त्वार्थवृत्ति की प्रस्तावना मे 'सम्यग्दर्शन' के विवेचन से सहज अनुमानित की जा सकती है। किन्तु जैन साहित्य के लोकरूप का अभी प्रचार ही नही हुआ, यद्यपि वर्तमान जैन पत्र-पत्रिकाओ तथा नव प्रकाशित जैन साहित्य मे पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध हैं, पर उसे खरीद कर पढ़नेवालो का अभाव है । जैन समाज में अनेको श्रीमान ऐसे हैं जिनके यहाँ बहुभाग जैन पत्र-पत्रिकाएं पहुंचती रहती है प्रकाशित जैन पुस्तकें भी पर्याप्त मात्रा मे आ जाती हैं, उन

सबका मूल्य प्रायः धर्मादे की रकम मे से दे दिया जाता है । किंतु इन पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं में से अल्पांश का भी कोई उपयोग वे श्रीमान अथवा उनके परिवार का कोई व्यक्ति शायद ही करता हो । ये चीजे प्रायः कालतूमद और रद्दी की टोकरी के उपयुक्त समझ ली जाती हैं—उन्हें बिना देखे और पढे ही, हजार हजार, और दो दो हजार की जैन जनसख्या वाले स्थानो में भी दो चार से अधिक ऐसे व्यक्ति न मिलेंगे जो मूल्य देकर जैन पत्र पत्रिकाएं और जैन साहित्य मगाते हों । कितनी भी उच्च कोटि की पुस्तक हो अधिक से अधिक एक हजार छपती हैं और वही सस्करण वर्षों के लिये पर्याप्त होता है, दूसरे सस्करण की नौबत ही नही आती । अत्यन्त उच्चकोटि की पत्रिकाए निकल रही है किंतु पाच छ सौ से अधिक किसी की भी ग्राहक सख्या शायद नही है । साप्ताहिक पत्रो मे से दो एक की एक हजार से कुछ ऊपर भले ही हो । इसमे दोष प्रकाशकों और पत्र सम्पादको आदि का भी है । वे स्वय अपने साहित्य और पत्रों के व्यापक प्रचार के लिये प्राय कुछ भी सुव्यवस्थित उद्योग नही करते ।

इन्ही सब कारणो से जैन पुस्तक प्रकाशन, जैन पुस्तक विक्रय तथा जैन सामयिक पत्रो का व्यवसाय बहुत ही कम सफल और लाभदायक हो पाता है । अतएव व्यावसायिक जैन प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता और पत्रकार अत्यल्प सख्यक है ।

जैन लेखकों की दशा :—जैन लेखको की दशा और भी बुरी है । जैन समाज मे विद्वानो, और अच्छे उच्चकोटि के लेखको की भी कोई कमी नही है, किंतु उपरोक्त परिस्थितियो मे कोई भी जैन विद्वान या लेखक निराकुलता पूर्वक साहित्य साधना नही कर सकता और न उसके द्वारा अपना और अपने परिवार का निर्वाह ही कर सकता है । अधिकतर लेखक तो अपनी कृतियो के लिए किसी प्रकार के पारिश्रमिक को प्राप्त करने का विचार ही नही करते, और यदि कोई कोई वैसा विचार भी रखते हैं और उसकी आवश्यकता अनुभव करते हैं तो वे उन्हें प्रकट करने का अथवा पारिश्रमिक की माग

करने का साहस ही नहीं रखते, वैसा करने में बहुधा लज्जा और संकोच अनुभव करते हैं, परिणाम स्वरूप भले ही वह अपनी साहित्य साधना को त्याग दें, गौण अथवा शिथिल कर दें । बहुभाग जैन लेखक अपनी साहित्यिक अभिरुचि, साहित्य अथवा समाज सेवा की लगन या धार्मिक श्रद्धा के वश होकर अथवा केवल स्वान्त सुखाय ही लिखते हैं । उनकी साहित्य साधना मे कोई आर्थिक प्रयोजन प्राय. रहता ही नही, विशेषकर इसी कारण से क्योंकि वह दुष्कर है, लोकमत उसके अनुकूल नही है और क्योकि वैसा करने में अपनी मान हानि के सिवायं और कोई लाभ नही दीखता । इन जैन लेखकों का कोई सगठन नही है, कोई आवाज नही है । वे जो कुछ लिखते हैं उसके लिये बदले मे कुछ इच्छा या आकाक्षा न रखते हुए भी उसका प्रकाशन कराने में भी बडी कठिनाई का सामना करना पडता है । एक व्यक्ति अपने जीवकोपार्जन के प्रयत्न को बाधा पहुचा कर अथवा उसके समय मे से ही जो कुछ अवकाश मिले उसमे तथा अपने स्वास्थ्य की परवाह न करके और आराम को तिलाँजली देकर, स्वय ही सर्व साधन सामग्री जुटाये और परिश्रम तथा आवश्यक द्रव्यादि व्यय करके कोई पुस्तक लेखादि तैयार करे और फिर सामर्थ्य हो तो स्वय ही उसे प्रकाशित भी कराये तथा हो सके तो अमूल्य ही वितरण भी करदे, वर्न अपनी पांडुलिपि को देख देख कर खुश हुआ करे । अथवा वह किसी व्यवसायिक प्रकाशक या साहित्यिक सस्था, किसी धार्मिक या सामाजिक सभा सोसाइटी, अथवा किसी धनी मित्र अथवा रिश्तेदार की खुशामद करे । सम्भव है कि इस प्रकार उसकी रचना प्रकाशित हो जाय और यह भी सम्भव है कि सर्व प्रयत्नो के बावजूद भी वह प्रकाशित न हो । प्रकाशित होने पर उसे पुरस्कार या पारिश्रमिक मिलने की बात तो दूर है, यदि प्रोत्साहन और प्रशसा के दो शब्द तथा सूखा धन्यवाद मिल जाय तो बहुत है । जैन पत्रकार किसी भी लेखक के लेख का मूल्य, चाहे वह लेख किसी कोटि का क्यो न हो, अधिक से अधिक अपने पत्र के उस अंक [illegible] हुआ है, एक प्रति समझते हैं [illegible]

का एहसास ही करते हैं। चाहे कितना ही महत्त्व पूर्ण लेख हो उसकी अति-रिक्त प्रतियाँ लेखक को प्रदान करने की तो प्रथा ही नही है, लेख की पहुच या स्वीकृति की सूचना देने अथवा अस्वीकृत होने पर उसे लौटा देने की तो आवश्यकता ही नही समझी जाती। आर्थिक प्रतिदान की आशा न होने से लेखक व्यय साध्य सामग्री के सकलन एव उपयोग द्वारा अपनी रचनाओ को यथोचित प्रमाणीक, उपयोगी एव आकर्षक भी नही बना पाता। जैन समाज मे साहित्य की शोध, खोज एव निर्माण करने कराने वाली कई एक अच्छी सस्थाए भी विद्यमान हैं जो प्रायः सार्वजनिक अथवा सामाजिक द्रव्य की सहायता से संचालित हो रही हैं और जिनके सचालन मे कोई आर्थिक अथवा व्यवसायिक प्रयोजन नही है। किन्तु क्योकि वे स्वय इस दृष्टि से शून्य सी हैं अत जिन विद्वानों से वे साहित्य सृजन कराती है उन्हे भी स्वत. इस दृष्टि से शून्य ही मान लेती हैं। ऐसी अवस्था मे सुलेखको का पर्याप्त सख्या मे सद्भाव होना और उच्च कोटि के साहित्य की सृष्टि करना दुष्कर व दुस्साध्य है, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

तथापि जब प्रकाशित हो चुके तथा हो रहे जैन साहित्य पर दृष्टि जाती है तो वह किसी भी अन्य भारतीय सम्प्रदाय अथवा समाज के साहित्य की अपेक्षा मात्रा मे भी कम नही है और किसी अंश मे भी निम्नतर कोटि का नही है तथा लोकतत्त्व की प्रचुरता भी उसमे अपेक्षाकृत पर्याप्त मात्रा में है। इसका कारण यह है कि जैन समाज मे साक्षरो और शिक्षितो की सख्या एक पारसी समाज को छोड कर सर्वाधिक है, और उसकी सामान्य दशा भी इतनी समृद्ध अवश्य है कि नितान्त भूखे और दरिद्री इसमे बहुत थोड़े है। धार्मिक साहित्य सृजन अधिकतर धार्मिक भावना के वश ही किया और कराया जाता है। व्यवसायिक प्रकाशको और पुस्तक विक्रेताओ के अतिरिक्त अनेक अव्यवसायिक साहित्यिक सस्थाए, ग्रन्थ मालाए, ट्रस्ट आदि तथा स्थानीय पचायतें, धार्मिक सामाजिक [illegible] पुरुष जो ज्ञानदान वा शास्त्रदान [illegible] रूप से भी पुस्तके प्रका-

शित करते कराते रहते हैं। कुछ उच्च कोटि की संस्थाओं में तो सवैतनिक विद्वान भी साहित्यिक शोध खोज एव निर्माण कार्य करने लगे हैं। कभी-कभी पुरस्कार अथवा पारिश्रमिक देकर ठेके पर भी ये कार्य कराये जाने लगे हैं— यद्यपि ऐसे दोनो प्रकार के उदाहरण अभी अत्यल्प सख्यक ही हैं। कितने ही लेखक श्रेष्ठ विद्वान होने के साथ-साथ सुसमृद्ध भी है और वे निस्वार्थ भाव से उच्च कोटि के साहित्य सृजन मे पर्याप्त योगदान देते रहे है। ऐसे भी कितने ही उदाहरण हैं जबकि उक्त विद्वानों ने स्वयं लिखा, अच्छा लिखा और बहुत लिखा और फिर अपनी सर्व या अधिकाँश कृतियों को स्वद्रव्य से स्वयं ही प्रकाशित करवाया अथवा अपने प्रभाव से एक या अधिक धनी व्यक्तियों द्वारा प्रकाशित करवाया। त्यागी साधु महात्माओं के स्वप्रयत्न अथवा प्रभाव और प्रेरणा से भी बहुत सा साहित्य निर्मित और प्रकाशित होता रहता है।

वास्तव मे जैन समाज प्रधानतया दिगम्बर और श्वेताम्बर नामक दो सम्प्रदायो मे विभक्त है। लेखकों और प्रकाशको आदि की जिस दशा का वर्णन ऊपर किया गया है वह यद्यपि सामान्यत समस्त जैनसमाज पर लागू होती है तथापि ये दोष दिगम्बर समाज मे विशेष रूप से बढे चढे मिलते है। श्वेताम्बर जैनसमाज मे ग्रन्थ प्रकाशन व्यवस्था अपेक्षाकृत अधिक सुव्यवस्थित एव सुसगठित है। उनके विद्वानो और लेखको की दशा भी पारिश्रमिक, पुरस्कारादिक की दृष्टि से बहुत अच्छी है। स्व साहित्य का बाह्य समाज मे प्रचार करने की श्रेयस्कर प्रवृत्ति भी उनमे रही है। उनका साधु समाज साहित्यिक कार्य मे यथाशक्य योग दान देता है किन्तु उनके साथ जो कमी है वह यह है कि इन बातों की ओर से श्वेताम्बर गृहस्थ, दिगम्बर गृहस्थ की अपेक्षा कही अधिक उदासीन एव अयोग्य हैं। उनमे सुविज्ञ विद्वान् एव सुलेखक सख्या मे अत्यल्प है, अतएव साहित्यिक सस्थाओ, निर्मित साहित्य की उत्कृष्टता एव विपुलता तथा सामयिक पत्र पत्रिकाओं की दृष्टि से दिगम्बर समाज श्वेताम्बर समाज की अपेक्षा कुछ आगे ही है।

अस्तु, यदि जैन समाज को समय की गति के साथ-साथ सजीव रूप में

उन्नति पथ पर अग्रसर होना है, सभ्य ससार की दृष्टि में उसे अपने आप को ऊंचा उठाना है और स्वय उस ऊंचाई के उपयुक्त बनना है तो उसे अपने साहित्य को प्रगतिशील एव समुन्नत बनाना ही होगा, अपने प्राचीन साहित्य रत्नो को ढग से ससार के सामने प्रस्तुत करके उनका तथा उनकी जननी जैन संस्कृति का महत्त्व प्रदर्शित करना और मूल्य अंकवाना होगा, लोक हितार्थ एव ज्ञान वर्द्धन के लिए उसका उपयुक्त सदुपयोग कराना होगा, उसका अधिकाधिक प्रचार एव प्रसार करना होगा, समाज के स्त्री पुरुष आबालवृद्ध में सर्व व्यापी पठनाभिरुचि–पुस्तक आदि क्रय करके पढने और अध्ययन करने की प्रवृत्ति जागृत करनी होगी, जो व्यक्ति तनिक भी प्रतिभा सम्पन्न एव साहित्यिक अभिरुचि वाला हो उसे सर्व प्रकार प्रोत्साहन, जिसमे समुचित पुरस्कार पारिश्रमिक अत्यावश्यक है, प्रदान करके उस व्यक्ति मे जो सर्वोत्तम तथ्य है उसे साहित्य के रूप मे ससार को प्रतिदान कराने की सुचारु योजना करनी होगी और साहित्यिक अनुसधान, निर्माण एव प्रकाशन कर्त्री सस्थाओ, परीक्षा बोर्डों, विद्या केन्द्रों, सामयिक पत्र पत्रिकाओ तथा व्यक्तिगत विद्वानो और लेखकों का केन्द्रीकरण नही तो कम से कम एक सूत्रीकरण करके उन्हे सुव्यवस्थित रूप से सुसंगठित करना होगा, साहित्यगत अथवा सस्कृतिजन्य विविध विषयो का सुचारु विभाजन करके विषय विशेषो मे विशेषज्ञता प्राप्ति के प्रयत्नो को प्रोत्साहन देना भी वाञ्छनीय होगा। यह सब किये बिना इस द्रुत वेग से प्रगतिशील सघर्ष प्रधान युग मे जबकि न किसी व्यक्ति को अनावश्यक अवकाश है, न व्यर्थ के शौक पूरा करने की रुचि और साधन है और न धार्मिक श्रद्धा जीवन का कोई वास्तविक महत्वपूर्ण अ ग रहती जाती है, प्रत्युत परिगुणित होती हुई मान्वी इच्छाए, वासनाए और आवश्यकताए तथा जीविकोपार्जन की जटिल समस्या एव स्वार्थ परता प्रत्येक व्यक्ति का गला बेतरह दबाये हुए है, किसी समाज और उस समाज की सस्कृति के लिए, चाहे वह कितनी भी महत्व पूर्ण क्यो न हो, उन्नति पथ पर अग्रसर होते रहना तो दूर की बात है, जीवित रहना भी अत्यन्त कठिन है।

ऐसी परिस्थितियो मे, प्रकाशित साहित्य का एक प्रकार का लेखा-जोखा और विवरण इसलिये परम आवश्यक हो जाता है कि इसके द्वारा जहा एक ओर लोक की तत्सम्बधी अनभिज्ञता दूर होकर उसे समाज विशेष अथवा वर्ग विशेष द्वारा किये गये योगदान का परिचय प्राप्त हो जाता है, राष्ट्र अथवा विश्व के भी साहित्य मे उसका उचित स्थान एव प्रगति निश्चित करने में सुभीता हो जाता है, तथा उसके समुचित सदुपयोग द्वारा मानव की ज्ञानवृद्धि होती है उसकी ज्ञान साधना को नवीन साधन सहायता आदि मिलती है, वहा दूसरी ओर तत्तद समाज को भी यह ज्ञात हो जाता है कि उसके साहित्य की क्या स्थिति है, उसकी प्रगति की क्या अवस्था है, तथा उनमे कहाँ क्या त्रुटिये और दोष हैं, उसकी क्या आवश्यकताये हैं, जिनसे कि उक्त दोषों का निवारण और आवश्यकताओ की पूर्ती का प्रयत्न किया जा सके। विद्वानो अन्वेषकों, पाठको, शिक्षको और सग्रह कर्ताओ, लेखको और प्रकाशको सभी को इस प्रकार के विवरण से अपने अपने कार्य मे पर्याप्त सुविधा हो जाती है। दूसरे, जैन साहित्य प्रकाशन की जिस दुरवस्था का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, उसकी अवस्थिति मे सभी प्रकाशित जैन पुस्तको का परिचय किसी भी व्यक्ति को सरलता से प्राप्त होना अत्यन्त कठिन है। अत॰ प्रकाशित जैन पुस्तकों के एक यथासभव पूर्ण तथा सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण की आवश्यता एवं उपयोगिता स्पष्ट ही है। श्वेताम्बर जैन साहित्य के सम्बध मे ऐसी दो-एक सूचिये पहिले ही प्रकाशित हो चुकी है, यथा अध्यात्म ज्ञान भडार प्रसारक मडल, पादरा (गुजरात) द्वारा प्रकाशित 'मुद्रित जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ नामावली', तथा श्री आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर द्वारा प्रकाशित 'श्री जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ गाइड' जिनमे कि उक्त समाज की मुद्रित प्रकाशित पुस्तकों का विषयानुसार परिचय दिया गया है। इन दोनो सूचियो मे प्रथम सूची अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, प्रसिद्ध श्वेताम्बर पुस्तक विक्रेता—सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथीखाना, रतन पोल, अहमदाबाद के सूची पत्र में प्रायः सब ही प्रकाशित श्वेताम्बर जैन पुस्तकें दी हुई हैं। इन सूचियो की अवस्थिति मे तथा

शोधन एव समय के अभाव के कारण प्रस्तुत पुस्तक मे श्वेताम्बर साहित्य को सम्मिलित नही किया गया और प्रधानतया दिगम्बर समाज की ही मुद्रित प्रकाशित पुस्तको का विवरण दिया गया है।

मुद्रण कला का इतिहास--प्राचीन साहित्य की खोज करने वाले प्रसिद्ध विद्वान काका कालेलकर जी के शब्दो मे "यह बात बिल्कुल सही है कि जैसे लेखन कला के प्रचार से ज्ञान प्राप्ति का मार्ग सुलभ हुआ है वैसे ही छापने की कला के प्रचार से यह मार्ग सहस्र गुना अधिक सुलभ और विस्तृत हो गया है।" × जहा तक लेखन कला के प्रारभ का प्रश्न है वह सर्व प्रथम भारतवर्ष मे ही हुआ प्रतीत होता है। जैन अनुश्रुति के अनुसार कर्मयुग के आदि मे आदि पुरुष महा मानव ऋषभदेव ने अपनी प्रिय पुत्री ब्राह्मी के उपलक्ष से सर्व प्रथम मानवी लिपि का आविष्कार किया था। सिन्धु पुरातत्त्व मे उपलब्ध मुद्रालेख भी पाच छ हजार वर्ष प्राचीन है और उनसे अधिक प्राचीन लेख ससार के किसी अन्य भाग मे अभी तक प्राप्त नही हुए हैं। लेखन-कला के सर्व प्राचीन उदाहरण पाषाण आदि पर ही अकित मिलते है। तत्पश्चात् ताम्रपत्र आदि धात्वी साधनो का भी उपयोग होने लगा। फिर ताडपत्र, भुर्जपत्र आदि वानस्पतिक पत्रो पर लिखाई आरभ हुई। अन्ततः सन् ईस्वी प्रथम सहस्त्राब्द के मध्य के लगभग कागज का प्रयोग आरभ हुआ।

छापे खाने का सर्व प्रथम आविष्कार चीन देश मे हुआ, और सर्व प्रथम ज्ञात मुद्रित चीनी पुस्तक की मुद्रण तिथि ११ मई सन् ८६८ ई० है। इस पुस्तक की छपाई ब्लाक प्रिन्टिग मे हुई थी, किन्तु अलग अलग बने टाइपो से छापने की कला का आविष्कार चीन देश मे ही पो० शेग नामक व्यक्ति के द्वारा सन् १०४१–४६ के मध्य हुआ। यूरोप मे मुद्रण का प्रारभ जर्मनी देश के निवासी जॉन गटेनबर्ग नामक व्यक्ति ने १५ वी शताब्दी ई० के मध्य मे किया था।

× प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० १६७,

भारतवर्ष मे छापेखाने का प्रथम प्रवेश पुर्तगाली उपनिवेश गोआ के सेंट पॉल कालिज मे, जेसुइट पादरियों की अध्यक्षता मे जुआन बुस्टामान्टे नामक मुद्रक द्वारा सन् १५५६ ई० मे हुआ। और भारत मे मुद्रित सर्व प्रथम पुस्तक लातीनी भाषा की 'कनक्लूसोस फिलोसोफिकास' नामक दार्शनिक पुस्तक थी जो उसी वर्ष उक्त छापेखाने में छपी थी। यह पुस्तक तथा इसके बाद छपने वाली दूसरी पुस्तक भी अब उपलब्ध नही हैं। भारतवर्ष मे मुद्रित सर्व प्रथम उपलब्ध पुस्तक उसी मुद्रणालय मे सन् १५६० मे छपी 'कोम्पेंदिपु स्पिरितु आलद व्हिद क्रिस्तां' है जो न्यूयार्क (अमेरिका) के राष्ट्रीय सार्वजनिक पुस्तकालय मे विद्यमान है।

इसके कुछ काल पश्चात् गोआ प्रदेश के अन्तर्गत ही रायतूर नामक स्थान के सेंट इग्नेशस कालिज मे एक अन्य मुद्रणालय चालू हुआ जिसमें भारतीय भाषाओ मे भी पुस्तके छपने लगी। इस छापेखाने मे मुद्रित भारतीय भाषा की सर्व प्रथम ज्ञात पुस्तक फादर थॉमस स्टीफेन्स कृत 'क्राइस्ट पुराण' थी। यह पुस्तक मराठी भाषा मे ओवी नामक छन्द विशेष मे लिखी गई थी किन्तु रोमन लिपि मे थी, और यह सन् १६१६ ई० मे मुद्रित हुई थी। चालीस वर्ष के बीच मे इसके क्रमश तीन सस्करण प्रकाशित हुए थे, किन्तु उनकी एक भी प्रति आज उपलब्ध नही है, यद्यपि उसकी रोमन, कन्नडी, देवनागरी लिपियो में निबद्ध अनेक हस्तलिखित प्रतिया विद्यमान है उसी छापेखाने से सन् १६२२ मे मुद्रित 'खिस्ती धर्म सिद्धान्त' नामक मराठी भाषा और रोमन लिपि की पुस्तक आज भी उपलब्ध है। इसके उपरान्त डेनिश मिशनरियो और फिर अग्रेज पादारियो ने इस दिशा मे प्रयत्नशील होकर छापेखाने के प्रचार मे योग दिया।

देवनागरी अक्षरों मे ब्लाक प्रिंटिग से छपा सर्व प्रथम लेख सन् १६७८ ई० का है। सन् १७९६ ई० मे लिथोग्रफी का आविष्कार हुआ। उनमे टाइप बनाने की कठिनाई न होने के कारण शीघ्र ही उसका अत्यधिक प्रचार हो गया और १९ वी शताब्दी मे तो देशी भाषाओ के अनेक प्राचीन ग्रथ लिथो से छपे। १८ वी शताब्दी के अन्त के लगभग ही बम्बई और बगाल मे सर्व

प्रथम एक-एक मुद्रणालय स्थापित हुआ। भारतीय मुद्रणकला के इतिहास में सीरामपुर (बगाल) के मुद्रणालय, मुद्रणकला विशारद सर चार्ल्स विल्किन्स, उनके सहयोगी शिष्य पचानन और ग्रहस्थ मिशनरी डा० विलियम कैरी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उक्त सीरामपुर छापेखाने से १६ वी शताब्दी के पूर्वार्ध मे विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं मे बाइबिल के अनुवाद धडाधड प्रकाशित हुए। धीरे-धीरे भारतीय पुस्तके भी देशी भाषाओं मे छपने लगी। नागरी लिपि की सर्व प्रथम मुद्रित पुस्तकें कुरियर प्रेस, बम्बई द्वारा प्रकाशित 'विदुर नीति (१८२३ ई०) और 'सिंहासन बत्तीसी' (१८२४ ई०) हैं, किन्तु इन दोनो की भाषा मराठी है। हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की सर्व प्रथम पुस्तक इग्लैंड मे छपी थी और १६ वी शताब्दी के मध्य से वे भारतवर्ष मे भी छपने लगी।

जैन प्रकाशन का इतिहास—जैन साहित्य मे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की सर्व प्रथम पुस्तक प्रसिद्ध दिगम्बर विद्वान प० बनारसीदास (१७ वीं शताब्दी) कृत 'साधु बन्दना' थी जो सन् १८५० मे आगरा नगर मे छपी थी। अतएव जैन पुस्तक साहित्य का अथवा उसके मुद्रण व प्रकाशन का प्रारम्भ सन् १८५० ई० से ही मानना उचित है।

वैसे तो, जहाँ तक पाश्चात्य जगत का प्रश्न है, यूरोपीय विद्वानो और प्राच्यविदो ने तो १६ शताब्दी के प्रारभ से जैन धर्म और सस्कृति मे दिलचस्पी लेनी प्रारभ करदी थी। सन् १७६६ ई० मे लेफ्टिनेन्ट विल्फ्रेड का 'त्रिलोक दर्पण' नामक जैन ग्रथ की एक प्रति हाथ लग गई। उनके स्वय के कथनानुसार ब्राह्मण पडितो ने साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण उस पर कुछ भी प्रकाश डालने से साफ इन्कार कर दिया। × अतएव विल्फ्रेड साहब स्वय ही उस ग्रन्थ पर से जैनो के सम्बन्ध में जो कुछ जान सके वह उन्होने 'एशियाटिक रिसर्चेज' भाग तीन पृष्ठ १६२ पर प्रकाशित कर दिया। विदेशी भ्रमणार्थियों

× विलफ्रेड आन दी एन्टीपेथी आफ दी ब्राह्मिन्स टू दी जेन्स—एशियाटिक रिसर्चेज भा० ३ पृ० ५१.

के द्वारा किये उल्लेखों को छोड़कर पाश्चात्य विद्वानो द्वारा लिखित सर्व प्रथम जैन सम्बन्धी रचना यही है। सन् १८०६ में कर्नल मेकेञ्जी का निबन्ध 'ऐन एकाउन्ट आफ दी जेन्स' और एच० टी० कोलब्रुक का निबन्ध 'आबजरवेशन्स आन दी जेन्स' कलकत्ते के एशियाटिक रिसर्चेज (जिल्द ६, पृ० २४३-२८६) में प्रकाशित हुए। सन् १८२५ मे पादरी जे० ए० डुबाइ के संस्मरण पेरिस (फ्रान्स) से प्रकाशित हुए जिनमे जैन धर्म और जैन जाति के विषय मे बहुत कुछ लिखा है उसी वर्ष ए० स्टरलिंग ने 'उडीसा की जैन गुफाओं' पर अपना लेख प्रकाशित किया। सन् १८२७ मे फ्रेन्कलिन, हैमिल्टन, डेलमेन आदि विद्वानो ने जैन विषयक लेख लिखे। तदुपरान्त उक्त शताब्दी के मध्य पर्यन्त एच० एच० विल्सन, जेम्स टाड, जे० स्टीवेन्सन, जे० प्रिन्सेप, जे० फर्गुसन आदि विद्वानो ने अपने लेखों द्वारा जैन सम्बधी लोक ज्ञान की अभिवृद्धि की। किन्तु जैनधर्म सस्कृति साहित्य पुरातत्त्व और इतिहास पर व्यवस्थित शोध खोज और साहित्य सृजन सन् १८५० के पश्चात् ही प्रारभ हुए और इस दिशा मे पिशेल, होर्नले, फर्लांग, पुल्ले, ब्हूलर, जैकोबी, बेबर, लेसन, फलीट, राइस ड्रय, टामस, लूडर्स, बर्गेस, कीलहार्न, गिरनाट, स्मिथ, हुल्टज्श, क्लैट, ओल्डन वर्ग, किटेल, कनिंगहम हर्टले, मोनियर, विलियम्स, विन्टर निट्ज, पीटरसन, ल्यूमेन आदि विभिन्न जातीय प्रसिद्ध यूरोपिय प्राच्यविदो तथा भगवान लाल इन्द्र जी आर० जी० भडारकर, भाऊदजी, के० बी० पाठक, ध्रुव, तैलग, राजेन्द्र लाल मित्र, सतीश चन्द्र विद्याभूषण, टी० के० लड्डू, के० पी० जायसवाल आदि प्रख्यात भारतीय विद्वानों ने प्रशसनीय कार्य किया। किन्तु इस शताब्दी के प्रारंभ से ही इस कार्य मे कुछ शिथिलता आने लगी। प्रथम विश्व युद्ध के समय से तो उपरोक्त प्रकार के स्वतत्र प्रकाड यूरोपीय विद्वानों का इस क्षेत्र मे प्राय: अभाव ही हो गया। केवल पुरातत्त्वादि विभागों से सम्बधित कतिपय राजकाय अधिकारी ही प्रसगवश कुछ कार्य करते रहे। किन्तु साथ ही साथ यह सतोष है कि अनेक जैनाजैन भारतीय विद्वान इन कार्यों के सम्पादन में लगे हुए है।

यद्यपि प्रथम जैन पुस्तक दिगम्बर सम्प्रदाय द्वारा ही सन् १८५० मे मुद्रित कराई गई थी, किन्तु प्रारभ में रूढिग्रस्थ अन्धश्रद्धालु जैन समाज ने छापे का अत्यन्त विरोध किया। एक जैन समाज ने ही क्या, प्रारभ मे हिन्दू समाज ने भी उनका तीव्र विरोध किया। सन् १८६३ मे प्रकाशित श्री गोविन्द नारायण माडगावकर कृत 'मुम्बई वर्णन' नामक पुस्तक के पृ० २४८ पर लिखा है कि—
"हमारे कुछ भोले व नैष्ठिक ब्राह्मण छपे कागज का स्पर्श करते डरते थे और आज भी डरते हैं। बम्बई में और बम्बई के बाहर भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो छपी हुई पुस्तक को पढना तो दूर रहा, छपे कागज को स्पर्श तक नही करते हैं।"

यही दशा, बल्कि इससे भी कुछ बुरी दशा जैन समाज की थी। जैनी लोग अपने मन्दिरों के शास्त्र भडारों मे सग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थों को देव प्रतिमा तुल्य पवित्र और पूज्यनीय मानते थे और उनका विधिवत् दर्शन पूजन करना ही अलम् समझते थे। यदि किसी साधु या विद्वान् पडित आदि का समागम हुआ तो पुन· स्नानादि द्वारा शरीर शुद्धि करके मन्दिर मे रखे शुद्ध वस्त्रो को पहन कर दरी आदि के फर्श पर भी चटाई बिछाकर और शास्त्र जी को चौकी पर विराजमान करके बडी विनय पूर्वक उनका वाचन कर श्रद्धालु जनता को सुनाया जाता जाता था। शास्त्र सभा का डिसप्लिन बडा भक्ति और विनय पूर्ण होता था, और प्राय अब तक यही प्रथा है। जिन गृहस्थो को शास्त्र स्वाध्याय का नियम होता वे भी शरीर शुद्ध कर पूजादि के उपयुक्त शुद्ध वस्त्र धोती दुपट्टा आदि पहन मन्दिर के स्वाध्याय भवन मे ही बैठकर विनय पूर्वक उक्त ग्रन्थो का स्वाध्याय कर सकते थे। सामान्य दैनिक वस्त्र चाहे वे कितने भी शुद्ध क्यो न हो उन्हे पहने हुए शास्त्र जी को स्पर्श भी नही किया जा सकता था। शूद्रो का तो मन्दिर में या शास्त्र भडार में प्रवेश भी नही हो सकता था और स्त्रियाँ भी शास्त्रों को नही छू सकती थी। अन्य धर्मावलम्बी सवर्ण व्यक्तियों को भी ये शास्त्र इसलिए नही दिखाये जाते थे कि वे लोग मिथ्याश्रद्धानी होने कारण हमारी देव गुरु के समकक्ष पूज्य जिनवाणी की

विनय, निन्दादि करेंगे । तब फिर उनके छपाने में जो जिसमें कि किसी भी जाति का कोई भी व्यक्ति कैसी भी अपवित्र अवस्था मे, चमड़े के जूते आदि पहने हुए ही उन्हें छूएगा, कहीं भी पटक या डाल देगा, छापे की स्याही में चर्बी आदि महा अपवित्र पदार्थों के होने की संभावना और छापे के विकास के साथ साथ अविष्कृत मशीन से बने महा अशुद्ध कागज पर उनका छपना, छपने के पश्चात् भी उनकी पूर्ववत विनय बनाये रखना असभव होना आदि सर्व प्रकार उन परम पूज्य शास्त्रो की अविनय और विडम्बना ही होगी जो कि एक महापाप होगा । यह सब उस समय की रूढिभक्त और आधुनिक प्रकाश की दृष्टि से अविकसित श्रद्धालू समाज जिसके लिए उक्त शास्त्रो का महत्व केवल धार्मिक ही था, कैसे सहन कर सकती थी । उसकी दृष्टि मे तो यत्न पूर्वक वेष्ठनो मे लिपटे हुए और देव मन्दिरो के सरस्वती भडारो मे विराजमान वे सब ग्रन्थ बिला लिहाज भाषा, भाव, विषय, कर्ता, प्राचीनता, प्रमाणीकता आदि के समान रूप से पूजनीय एव माननीय थे । उनका अन्य कोई महत्त्व या मूल्य उसकी दृष्टि मे था ही नही ।

छापे के इस प्रबल विरोध का बहुत कुछ आभास दिगम्बर जैन महासभा के मुख पत्र हिन्दी जैन गजट वर्ष २ अक १४ (८ मार्च सन् १८९७ ई०) के पृष्ट १३ पर प्रकाशित निम्नलिखित समाचार से हो जाता है—"**जैन शास्त्रों का छपना**—ता० २४ जनवरी सन् १८९७ को जैनोन्नति कारक सभा प्रयाग का १७ वा समागम हुआ । यह समागम इस विषय पर विचार करने के लिये किया था कि '**जैन शास्त्र छपने चाहियें या नहीं** ।' सभा के नियतानुसार स्थानिक जैनियो को इस विषय की सूचना दी गई थी । लाला बच्चूलाल ने जो इस विषय के व्याख्यान दाता नियत किये गये थे बड़े जोर शोर से एक घटे तक जैन शास्त्रो के छपने के निषेध मे बहुत कुछ कहा । उनके पश्चात् बहुत से भाइयो ने उनकी बात को पुष्ट किया किन्तु उनके विपक्ष में किसी ने कुछ भी नही कहा । और उपस्थित महाशयो मे से सबने एक मत होकर इस बात को स्वीकार किया कि हम छपे हुए ग्रथ न लेंगे न पढेंगे न पढ़ावेंगे और इसके प्रचार को यथा शक्ति रोकेंगे ।

जो कि आजकल इस विषय का बहुत कोलाहल है इस वास्ते इस सभा ने प्रयागस्थ जैनियो की अनुमति सर्व साधारण पर प्रकाशित करने के अभिप्राय से इस लेख को मुद्रित कराना आवश्यक समझा।—सभा की आज्ञानुसार सुमतिचन्द्र मन्त्री जैनोन्नति कारक सभा, प्रयाग।

लाला बच्चू लाल जी तथा इनके सहयोगियों के छापा विरोधी कितने ही लेख भी जैन गजट आदि पत्रो मे प्रकाशित हुए थे और अन्य कितने ही स्थानो की जैन पचायतो ने भी उपरोक्त जैसे प्रस्ताव पास किये थे। ता० १७ जनवरी सन् १८९८ के जैन गजट मे प्रकाशित अपने एक लेख मे इन्ही बच्चू लाल ने स्पष्ट लिखा था कि "जैन शास्त्रो का छपाना महान अविनय है अत भयङ्कर पाप बध का कारण है, और जो जैन शास्त्र अजैनो के हाथ मे पहुचे भी हैं वे श्वेताम्बर आम्नाय के ही पहुचे। दिगम्बरो को ऐसी मूर्खता नही करनी चाहिए, उन्हे अपने शास्त्र कदापि नही छपाने चाहिये और न दूसरों के हाथ मे देने की भूल करनी चाहिये।"

इसमे सन्देह नही कि उनके धर्म भीरु और अदूरदर्शी साधर्मियो ने इन सदुपदेशो पर आचरण करने का अथक प्रयत्न किया। अभी १०-१२ वर्ष पूर्व ही जब धवलादि दिगम्बर आगम ग्रन्थो का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ हो रहा था तो कई एक अनेक पदवियो एव उपाधियों से अलकृत दिग्गज जैन पण्डितो ने आगम ग्रथो के छपाये जाने और गृहस्थो द्वारा उनका पठन पाठन किये जाने का भारी विरोध किया था। आज सन् १९५० मे भी यत्र तत्र ऐसे धर्म भीरु श्रीमान मिल ही जाते हैं। जो छपे शास्त्रो का पढना तो दूर रहा उन्हे छूने मे भी पाप समझते हैं और परम पूज्य जिन वाणी की इस दुर्दशा पर आसू बहाया करते हैं।

किन्तु, समाज मे अब ऐसे विवेकशील व्यक्ति भी उत्पन्न होने लगे जिन्होंने नवीन प्रणाली के अनुसार शिक्षा प्राप्त की थी और जिन्हे पाश्चात्य विचार धाराओ के सम्पर्क में आने का सुयोग मिला था। शनै शनैः उनकी सख्या बढ़ने लगी। ये नव युवक समय के साथ-साथ चलना चाहते थे, प्रगति शील

युग की प्रगति से पिछड़ जाने के लिए तैयार नही थे, वे नवीन सभ्यता के मिल्य प्रकाश मे आने वाले आविष्कारो को अपनाना अन्य समाजों के उन्नतिशील वर्गों की भाति ही अपनी समाज के लिए भी परम आवश्यक समझते थे। उनका विश्वास था कि अब अन्धकार को भेद कर बाहर प्रकाश में आने का युग है, अतएव उन्होंने इरादा कर लिया कि अपने अमूल्य साहित्यिक रत्नों को मुद्रण कला की सहायता से बहुलता के साथ प्रकाश मे लाकर स्वय उनसे अधिकाधिक लाभ उठावें ही, साथ ही दूसरे जिज्ञासुओं को भी अपने धर्म, साहित्य और संस्कृति के अध्ययन करने का तथा महत्व समझने का सुयोग प्रदान करें।

फलस्वरूप १९वी शताब्दी के मध्य के लगभग छापे के पक्ष मे आन्दोलन आरम्भ हुआ। प्रथम पच्चीस वर्षों मे वह कुछ प्रगति न कर पाया किन्तु सन् १८५७ के पश्चात् इस आन्दोलन ने उग्ररूप धारण किया। उधर इस आन्दोलन के बढते हुए बल के साथ-साथ स्थिति पालकों का विरोध भी अधिकाधिक जोर पकडने लगा। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ तक यह द्वन्द बडे सघर्ष के साथ चला। आन्दोलन कर्त्ताओं को धमकिये दी गई, पीटा गया, जाति से बहिष्कृत किया गया, उनका मन्दिर में आना बन्द किया गया, स्थान स्थान मे इस प्रश्न को लेकर दल बन्दिये हो गई। हमारे नगर मेरठ का ही एक दिलचस्प उदाहरण है। एक महाशय एम० ए० एल० एल० बी० वकील थे और वे उस युग के एम० ए० थे जब प्रान्त भर मे दर्जन दो दर्जन से अधिक एम० ए० नहीं थे। किन्तु वे इतने कट्टर स्थिति पालक थे और धर्म ग्रन्थो की छपाई के तथा छपी पुस्तकों को मन्दिर मे लाने के इतने भारी विरोधी थे कि एक बार जब कुछ नवयुवक आन्दोलन कर्त्ताओं ने देव पूजन को उपयुक्त शुद्ध वस्त्रादि पहन और सामग्री लेकर एक छपी पुस्तक की सहायता से पूजन करने का इरादा किया तो जिस वेदी में देव प्रतिमाएँ विराजमान थी, वे महाशय उक्त वेदी के सामने दोनों हाथों से दुपट्टे का पर्दा तानकर और वेदी को ढक कर खडे हो गये और यह कहा कि किसी प्रकार भी छपी पुस्तक से पूजन

नहीं करने देंगे । जवतक वे पूजोद्यत नवयुवक वेदी गृह मे रहे ये महाशय अपने स्थान से तनिक भी टस से मस न हुए। इसी प्रकार की छापा विरोधी विविध घटनाएं स्थान स्थान मे हुई । तथापि अन्तत. २०वी शताब्दी के प्रथम दसक मे आन्दोलन सफल हो गया और विरोध शिथिल प्राय हो गया ।

इसमें भी सन्देह नही कि उक्त आन्दोलन मे श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने कुछ शीघ्र ही सफलता प्राप्त करली थी । श्वेताम्बर समाज में धार्मिक विषयो में उनके बहु संख्यक साधु वर्ग का ही प्रभुत्व रहता आया है, उनके निर्णयो और आदेशो को गृहस्थ जन 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' मानते हैं और इस प्रसग में उनकी यह प्रवृत्ति सुफलदायी ही हुई । इन साधुओ मे से कुछ दूरदर्शी महात्माओ को यह सुबुद्धि शीघ्र ही उत्पन्न हो गई कि जब छापा देश मे आ ही चुका है और देर सवेर इसे अपनाना ही होगा तो क्यो न धर्म ग्रन्थो की छपाई पर से शीघ्र ही प्रतिबन्ध हटा दिया जाय । फल यह हुआ कि दिगम्बर साहित्य की अपेक्षा श्वेताम्बर साहित्य बहुत पहिले छपने लगा और सन् १८७० से १८९० के बीच सैकडो श्वेताम्बर ग्रन्थ प्रकाश मे आ गये । सौभाग्य से यह समय ऐसा था जब दर्जनो उच्च कोटि के पाश्चात्य विद्वान् और प्राच्यविद भारतीय धर्मों, दर्शनो, सस्कृति, पुरातन साहित्य एव कला, पुरातत्त्व, जातियों के इतिहास आदि विविध विषयो के अध्ययन मे गहरी दिलचस्पी ले रहे थे । छापे के समर्थक उक्त श्वेताम्बर साधुओं और गृहस्थो ने इन विद्वानो के लिए अपना साहित्य सुलभ कर दिया और उनके द्वारा उसके उपयोग मे किसी प्रकार की रुकावट डालने के स्थान मे उल्टा उन्हे भरसक प्रोत्साहन, सहयोग और सुविधा प्रदान की ।

परिणामस्वरूप, जबकि १९ वी शताब्दी के मध्य तक बाह्य जगत के विषयो मे साधारण जीर्ण रुचि रखने वाले विद्वानो को जैन विषयक जो कुछ टूटी फूटी अल्प जानकारी जैनेतर भारतीय साहित्य से जैन समाज के किसी अ ग विशेष बाह्य सम्पर्क के कारण, अथवा शीघ्र ही ध्यान को आकर्षित कर लेने वाले किसी जैन पुरातत्त्व से हुई थी तथा उसी से सतोष कर इन विद्वानो

मे इस धर्म और समाज के विषय मे अपनी अपनी धारणायें बनाती और प्रकट करती थीं, अब उसी शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में इस दिशा में कार्य करने वाले प्रतिभाशाली विशेषज्ञों को स्वयं जैन साहित्य और जैनों का ही सहयोग प्राप्त हो गया। उन्हें यह भी बताया गया कि वास्तविक, मौलिक, सर्वप्राचीन और अधिकांश जैन साहित्य यही (श्वेताम्बर आम्नायि) है। ऐसा बताये जाने पर उसे वैसा ही न मानने का उनके लिए कोई कारण भी न था। अतएव उक्त विशेषज्ञो और उनके अनुकर्ता भारतीय विद्वानो का जैनाध्ययन तथा उनके तत्संबंधी अधिकाश निर्णय उसी साहित्य के आधार पर आधारित हुए, और इस कारण वे कुछ सदोष रहे तथा अशतः ही सत्य हो सके। किन्तु इसके लिए न वे जैनेतर विद्वान ही दोषी हैं और न दूर दर्शी श्वेताम्बर साधु और उनके गृहस्थ अनुयायी ही। यदि कोई दोषी है तो वे दिगम्बर जैन पडित और श्रीमान है जो अपनी समाज मे बहु सख्यक शिक्षितों और अनेक श्रेष्ठ विद्वानो के होते हुए भी परस्पर की तनातनी और आन्दोलन के पक्ष विपक्ष मे पड़कर इतनी दूर तक देख ही नही सके और सभवतया आज भी इस दिशा मे उपयुक्त दृष्टि प्राप्त करने मे सफल नही हो सके।

अस्तु, जैन पुस्तक साहित्य के इतिहास का प्रारभ सन् १८५० अथवा विक्रम सवत् १९०० के लगभग से होता है। आधुनिक शैली मे व्यवस्थित जैनाध्ययन का प्रारंभ और हिन्दी जैन साहित्य के आधुनिक युग का प्रारंभ भी इसी समय से होता है। स्वय अखिल भारतीय दृष्टि से भी राष्ट्रीयता का उदय, सांस्कृति अध्ययन का प्रारंभ और हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग भी सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर के उपरान्त ही सन् १८६० से अथवा वि० सं० १९२० के लगभग से ही माना जाता है।

युग विभाजन—की दृष्टि से, विशेषकर दिगम्बर जैन साहित्य के मुद्रण प्रकाशन के इतिहास को तीन युगो मे विभाजित किया जा सकता है—(१) आन्दोलन युग सन् १८५०–१९०० ई०, (२) प्रगति युग सन् १९००–१९२५, और (३) वर्तमान युग—१९२५ के उपरात।

(१) आन्दोलन युग (१८५०-१९००)—जैन साहित्य प्रकाशन के इस प्रथम युग में धार्मिक साहित्य के मुद्रण प्रकाशन का आन्दोलन आरंभ हुआ। प्रथम पचीस वर्षों (१८५०-७५) मे इस आन्दोलन ने प्रायः कोई प्रगति नहीं की और इस बीच मे दो चार पुस्तके छपी हो तो छपी हो, किन्तु उनके विषयमें कुछ ज्ञात नही। सन् १८७५ और १९०० के बीच आन्दोलन ने वास्तविक जोर पकड़ा और प्रवल विरोध के होते हुए भी पुस्तकें छपने लगी। यह समय भी आन्दोलन के अत्यन्त अनुकूल पडा। देश की तत्कालीन जैन समाज की बाह्य परिस्थितिये भी. चाहे परोक्ष रूप से ही सही, उसकी प्रगति और सफलता में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई। सन् १८५७ के स्वातत्र्य समर के उपरान्त दस पाँच वर्ष तो उक्त असफल महान राजनैतिक क्रान्ति से उत्पन्न व्यापक आतंक के शान्त होने में लगे, किन्तु धीरे धीरे महारानी विक्टोरिया की, कम से कम बाह्यत उदार नीति के कारण तथा युद्ध, विद्रोह, दगे आदि के अभाव में १९ वी शताब्दी का शेष उत्तरार्ध भारतीय प्रजा के लिए विदेशी शासन के अंतर्गत सर्वाधिक शान्ति पूर्ण रहा। समय की आवश्यकता और राज्य के प्रोत्साहन से शिक्षा का भी प्रचार बढा, विश्व विद्यालय स्थापित होने लगे, स्थान स्थान मे स्कूल कालिज खुलने लगे। अंगरेजी मे ही नही भारतीय भाषाओ मे भी समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। यूरोप आदि समुद्र पार विदेशो मे भी कितने ही उत्साही एव निर्भीक भारतीय गमनागमन करने लगे। रेल पथ की स्थपना और डाक तार आदि की द्रुत व्यवस्था, जन साधारण को कूप मडूकता से बाहर निकालने लगी। अंगरेजी शासन मे भारत वर्ष की सनातन एकता प्रत्यक्ष होने लगा, सम्पूर्ण देश और समाज की राष्ट्रीय तथा सामाजिक उन्नति के इच्छुक और उनके लिये प्रयत्न शील नेता भी उत्पन्न होने लगे। सन् १८८६ मे राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस की स्थापना हुई जिससे एक प्रकार के राष्ट्रीय राजनैतिक आन्दोलन का भी श्रीगणेश हो गया। पाश्चात्य विचार धाराओ की निरन्तर लगने वाली टक्करो और बढ़ती हुई बहुज्ञता के फल-स्वरूप भारतीयो के सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टिकोणो मे भी विवेक, उदारता

और विशालता लाने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। धार्मिक, अन्धविश्वास अशिक्षा अथवा कुशिक्षा जन्य नाना प्रकार के वहम, जातिपाति, छुआछूत, रूढ़ि पालकता, स्त्री जाति के प्रति अन्याय, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज आदि विनाशकारी कुरीतियाँ एवं कुप्रथाएं देश और समाज के भक्तों को बुरी तरह व्याकुल करने लगी। फलस्वरूप राजा राममोहनराय तथा महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर आदि सुधारकों ने बंग प्रदेश में उत्कट सुधारवादी ब्राह्म समाज की स्थापना की, किन्तु यह संस्था बगाली समाज में ही सीमित रही। ब्राह्म समाज से कहीं अधिक व्यापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का आर्य समाज आन्दोलन रहा। आर्य समाज ने जहाँ भोले हिन्दू समाज के ईसाई मिशनरियों और मुसलमान गु डो के प्रयत्नो के कारण दिन प्रति दिन क्षीणतर होते जाने मे सफल रोक लगाई, जहा उसने सनातन हिन्दू धर्म में आ घुसे अनेक वहमों, अन्धविश्वासो, पोपडम आदि के प्रति उसे सजग किया, और उसकी अनेक कुरीतियां छुडाईं, वहाँ मिथ्या धार्मिक दम्भावेश मे और जान बूझ कर अनभिज्ञ रहते हुए वैदिक एव हिन्दू धर्म के चिर कालीन सगी सम्बधी जैनादि धर्मों का कुत्सित परिहास और खडन भी किया तथा उनके विषय मे मिथ्या एव भ्रान्ति पूर्ण धारणाएं फैलाई।

तथापि आर्य समाज और उसके नेताओ की इस प्रवृति का परिणाम जैन समाज के हक मे अच्छा ही हुआ। वह भी सचेत हो गया और उसके सुधारवादी नेताओ को अपने पक्ष मे एक और प्रबल युक्ति मिल गई। अब जैन धर्म और समाज की रक्षार्थ आर्य समाज के आक्षेपो का सयुक्तिक परिहार करना आवश्यक था, उन्हें समुचित प्रत्युत्तर देने थे, और अपने साहित्य को प्रकाश मे लाकर उनके तथा उनके द्वारा फैलाये गये भ्रमों एव मिथ्या कथनो का निराकरण करना था। अतएव आर्य समाज द्वारा किये गये आक्षेपों को लेकर जैनों द्वारा भी उस युग की शैली मे अनेक खंडन मंडनात्मक पुस्तकें लिखी गईं और प्रकाशित की गईं। प्रारभ में फर्रुखनगर निवासी ज्योतिषी वैद्य पं०

[illegible] जैनी ने इस आर्य जैन द्वन्द्व का नेतृत्व किया, उन्होंने स्वयं आर्य समाज के मन्तव्यों के विरोध में कई पुस्तकें लिखी, आर्य समाजी विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किये, जैन ज्योतिष का भी प्रचार किया तथा जैन पञ्चांग का प्रकाशन आरंभ किया, और सन् १८८४ मे 'जैन प्रकाश' नामक एक समाचार पत्र निकाला जोकि जैन समाज का सर्व प्रथम सामयिक पत्र था। देवबंद निवासी स्व० बा० सूरजभान जी वकील ने, जोकि जैन छापा आन्दोलन के प्राण थे, इस परिस्थिति से पूरा पूरा लाभ उठाया। सामाजिक अत्याचार, बहिष्कार, अपमान, लाञ्छना आदि अनेक विघ्न-बाधाओ और अड़चनों की अवहेलना करते हुए वे सफलता प्राप्त करते ही चले गये। आर्य समाज के प्रति खडन मडन मे भी उन्होने पर्याप्त भाग लिया। शनै.-शनै. उनके सहयोगियों की संख्या पर्याप्त हो गई, जिनमे कि प० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटाया, प० जुगलकिशोर मुख्तार सरसावा, प० मगलसेन जैन वेद विशारद, मा० बिहारीलाल चैतन्य बुलन्दशहरी, ला० शिब्बा मल, अम्बाला छावनी, ला०ज्योति प्रशाद प्रेमी, देवबन्द विशेष उल्लेखनीय है। इस खडन मडन के लिए अपने आर्ष ग्रन्थो में निबद्ध जैन सिद्धात के वास्तविक रहस्य को जानने और समझने की भी आवश्यकता थी और इस त्रुटि की पूर्ती स्व० गुरुवर्य प० गोपाल दास जी बरैया ने की, जोकि अपने समय के सर्व श्रेष्ठ जैन सिद्धात पारगामी एव दार्शनिक तो थे ही साथ ही साथ उदार विचारक एव सुधारवादी विद्वान भी थे। उन्होंने स्वय भी आर्य समाजी विद्वानो के साथ कई शास्त्रार्थों मे भाग लिया। उनके सहयोग से आर्य समाज विरोधी और छापा प्रचार सम्बधी दोनो ही आन्दोलनों को भारी बल मिला। धीरे धीरे जैन आर्य द्वन्द शिथिल होने लगा, अब थोड़े से ही विद्वान उनके लिए पर्याप्त थे, जिनके प्रयत्नो के फलस्वरूप और विशेष कर ला० शिब्बामल के उत्साह पूर्ण सहयोग से आगे चलकर अम्बाला दिगम्बर जैन शास्त्रार्थ सघ की स्थापना हुई। कई दशक पर्यन्त इस संघ के विशेषज्ञ विद्वानो और वादियो ने आर्य समाज से खूब लोहा लिया। कुछ समय के उपरात इसकी भी आवश्यकता नही रह गई। फलस्वरूप उक्त सघ ने अब

[illegible] नाम, उद्देश्य, स्थान और कार्य क्षेत्र सभी में परिवर्तन कर [illegible] है।

गदर के बाद नवीन शासन व्यवस्था की स्थापना के साथ ही साथ ब्राह्मण जैन विद्वेष एक अन्य दिशा मे भी चरितार्थ हुआ। विदेशी शासकों की अनभिज्ञता का अनुचित लाभ उठाकर सनातनी हिन्दुओं ने स्थान स्थान में जैन रथोत्सव और मन्दिर निर्माण का भी विरोध किया और ,जैनी दण्डिनम्' जैसी अत्यन्त आक्षेपपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की। उभय पक्ष मे मुकदमे बाजियाँ भी हुई, और तत्सम्बधी खडन मडनात्मक साहित्य भी प्रकाशित हुआ। किन्तु तत्कालीन सरकार ने सर्व धर्म स्वातन्त्र्य तथा किसी के धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप न करने की अपनी नीति स्पष्ट घोषित करदी थी जिसके फलस्वरूप जैनी इस आक्रमण से भी अपने धार्मिक सत्वो की रक्षा करने मे सफल हुए।

बा० सूरज भान जी वकील को जैन समाज का दादा भाई नौरोजी ठीक ही कहा जाता है। उनकी समाज सेवा का काल इस युग मे सर्वाधिक दीर्घ होने के साथ ही सर्वतोमुखी भी रहा है। उन्होने अपने उत्साही सहयोगियों के साथ समाज मे शिक्षा प्रचार करने का, विशेषकर स्त्रियो और बालिकाओं की शिक्षा का, जिसका कि विरोध स्थिति पालक दल छापे की भांति ही दृढता के साथ कर रहा था, बीड़ा उठाया। स्थान-स्थान में जाकर प्रचार करना, व्याख्यान देना, शास्त्र का पठन और स्वाध्याय प्रेम बढ़ाना, बाल एवं कन्या पाठशालायें खुलवाना, छोटे २ सरल ट्रैक्टों तथा व्याख्यान मालाओं द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न करना आदि अनेक समयोपयोगी प्रोग्राम इन्होने अपनाये। बा० सूरजभान जी ने स्वय अपने सम्पादकत्व में 'जैन ज्ञान प्रकाश' (हिन्दी) 'जैन हित उपदेशक' (उर्दू) जैसे समाचार पत्र निकाले। सन् १८६६ में पं० चुन्नीलाल, मुन्शी मुकन्दलाल व पं० प्यारे लाल आदि के सहयोग से मथुरा में दिगम्बर जैन महा सभा की स्थापना हुई और सन् १८६४ से उक्त सभा ने [illegible] पत्र 'जैन गजट' (हिन्दी) निकालना प्रारंभ

किया। कालान्तर मे सभा की नीति से मतभेद होने के कारण कुछ अधिक सुधारवादी सज्जनों ने जैन यंग मेन्स एसोसियेशन (भारत जैन महा मण्डल) की स्थापना की, जिसने जैन गजट नाम से ही अग्रेजी भाषा मे अपना एक मासिक पत्र निकालना प्रारभ किया। हिन्दी जैन गजट अभी तक महा सभा की ओर से ही निकल रहा है। सन् १८९७ के अत मे महा सभा ने अपने एक अधिवेशनमे बालिका-शिक्षाके पक्षमे भी प्रस्ताव पास कर दिया था। महासभा के प्रचारक ग्राम २ मे पहुचे। उदाहरणार्थ लेखक के मातामह स्व० ला० शिताबराय जी ने, जो जिला मेरठ की तहसील बागपत, परगना बडौत के सुदूरस्थ ग्राम ख्वाजा नगला के निवासी थे और महासभा के एक उत्साही सदस्य और कार्यकर्त्ता थे, आस पास के कितने ही ग्रामो के जैनियो मे शिक्षा प्रचार का स्तुत्य प्रयत्न किया था और कई एक जाट, बढई आदि अजैनो को जैनी बनाया, जो कि आजन्म इस धर्म के भक्त रहे।

इसी युग मे शोलापुर के प्रसिद्ध समाज सेवी सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने समय की आवश्यकता का अनुभव करते हुए, सितम्बर सन् १८८४ ई० मे 'जैन बोधक' नामक मराठी-हिन्दी-गुजराती पत्र की स्थापना की थी। सन् १८९३ मे दि० जैन महासभा के मथुरा मे होने वाले चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन मे जब छापे के प्रश्न को लेकर घोर वादविवाद हुआ तो उक्त राव जी ने छापे का जोरदार समर्थन किया था और उसी समय से उन्होने अपने जैन बोधक मे शास्त्रीय प्रमाणो और युक्तियो के द्वारा छापा आन्दोलन को अत्यधिक प्रोत्साहन देना प्रारम्भ कर दिया। महासभा के इसी अधिवेशन मे प्रबल विरोध के रहते हुए भी छापे के पक्ष मे प्रस्ताव पास हो गया तथा महासभा के मुख पत्र जैन गजट के निकाले जाने की योजना हुई।

इसी समय प्राचीन आर्ष सैद्धान्तिक ग्रन्थो के अध्ययन की प्रवृत्ति भी चल पड़ी जिसमे पं० गोपालदास जी बरैया विशेष सहायक हुए। अभी तक दिगम्बर आम्नाय मे आगम के रूप में ग्रन्थराज गोमट्टसार की ही प्रसिद्धि और प्रचलन था, किन्तु अब यह बात सुस्पष्ट रूप से प्रकाश मे आई कि गोमट्ट-

सारादि के भी आधार भूत अति प्राचीन एवं विशालकाय ग्रन्थ धवलादि हैं जिनकी एक मात्र ताडपत्रीय प्रति मैसूर राज्य के अन्तर्गत मूडबद्री के प्राचीन शास्त्र भण्डार मे सुरक्षित है। अतएव उक्त राव जी ने उन महान आगम ग्रन्थों के उद्धार का प्रयत्न चालू कर दिया। इस कार्य में उन्हे उन्ही जैसे धर्म प्राण समाज सेवी धनिक आरा निवासी स्व० बा० देवकुमार जी तथा बम्बई के दानवीर सेठ माणिकचन्द्र जी जौहरी जे० पी० आदि सज्जनो का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। इन महानुभावों के २५-३० वर्ष पर्यन्त सतत् उद्योग करते रहने के फलस्वरूप धवलादि ग्रन्थो की प्रतिलिपिया मूडबद्री के भण्डार की सीमा के बाहर निकल आई। बा० देवकुमार जी ने आरा मे जैन सिद्धान्त भवन (दी सैन्ट्रल जैना ओरियटल लाईब्रेरी) नामक महत्त्वपूर्ण जैन पुस्तकालय एव सग्रहालय की स्थापना करके साहित्यिक शोध खोज एव ग्रन्थ प्रकाशन के कार्य को और भी प्रगति दी। दान वीर सेठ माणिकचन्द के उद्योग से अखिल-भारतीय जैनो के विवरण से युक्त एक जैन डायरेक्टरी प्रकाशित हुई। माणिकचन्द्र दि० जैन० ग्रन्थ माला तथा माणिकचन्द्र दि० जैन परीक्षा बोर्ड बम्बई की स्थापना का श्रेय भी इन्हे ही है, और दि० जैन महासभा की बम्बई प्रान्तीय शाखा के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी यही थे।

साहित्य प्रचार और छापे के भारी समर्थक बाल ब्रह्मचारी प० पन्नालाल जी बाकलीवाल ने काशी मे दिगम्बर जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था की स्थापना की और उसके अपने ही प्रेस मे जयपुर आदि मे हाथ से बने शुद्ध स्वदेशी कागज पर शास्त्राकार खुले पन्नो मे, अपने यहाँ ही तैयार की गई स्याही से सवर्ण कर्मचारियो की सहायता द्वारा धार्मिक ग्रन्थो का मुद्रण प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस योजना द्वारा उन्होने स्थिति पालक दल के विरोध की तीव्रता को अत्यन्त शिथिल कर दिया। काशी में थोड़े ही काल रहने के उपरान्त यह सस्था कलकत्ते को स्थानान्तरित करदी गई। संस्था को वहां चालू करके बाकलीवाल जी बम्बई चले गये जहाँ उन्होंने 'देश-हितैशी पुस्तकालय' नामक एक सार्वजनिक हिन्दी प्रकाशन संस्था

को जन्म दिया और 'जैन हितैषी' नामक पत्र भी निकालना आरम्भ किया। थोड़े समय के उपरान्त उन्होंने इन दोनों को जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय और जैन हितैषी (मासिक) के रूप में परिवर्तित कर दिया। आगे चलकर उपरोक्त सस्था की ही एक शाखा 'हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई के नाम से प्रसिद्ध हुई। बाकलीवाल जी ने ही सर्व प्रथम बंगाली समाज मे जैन धर्म का प्रचार करने का विचार किया और उसके हेतु बगला भाषा मे 'जैन धर्मेर किंचित परिचय' तथा 'जैन सिद्धान्त दिग्दर्शन' नामक पुस्तकें सन् १९१० मे निर्माण की। बगला पत्र 'जिनवाणी' के जन्मदाता भी यही थे।

इस प्रकार इस युग के अन्त तक छापा आन्दोलन प्रायः सफल हो गया था। विरोध उसके पश्चात् भी दसियो वर्ष चलता रहा किन्तु वह पर्याप्त शिथिल ही गया था। इस युग के प्रकाशनो मे निम्नोक्त तीन प्रकार की पुस्तकों का ही बाहुल्य था–(१) धार्मिक खण्डन मण्डनात्मक, विशेषकर आर्य समाज के आक्षेपों को लक्ष्य मे रखकर, (२) मोटी मोटी सामाजिक कुरीतियो के निवारणार्थ लिखे गये छोटे छोटे ट्रैक्ट आदि, (३) पूजा पाठ, भजन विनती, व्रत कथाएं, कतिपय पुराण चारित्र आदि ग्रन्थ।

इस युग मे पुस्तक प्रकाशन का कार्य विभिन्न व्यक्तियो द्वारा स्वतन्त्र रूप से प्राय. निस्वार्थ एव धर्मार्थ भाव से ही अधिक चला। लाहौर के हकीम ज्ञानचन्द्र जैनी तथा देवबन्द-सहारनपुर के ला० जैनीलाल ने विशेषकर तीसरे प्रकार की छोटी छोटी पस्तकें बहु सख्या मे प्रकाशित की। खण्डन–मडनात्मक साहित्य विशेषकर फर्रुखनगर, इटावे, अलीगढ़ और सहारनपुर से प्रकाशित हुआ।

इन सबके अतिरिक्त, इसी युग मे हिन्दी भाषा और साहित्य के आधुनिक युग का प्रारम्भ हुआ। लोक भाषा और लोक साहित्य के रूप मे उसकी स्वतन्त्र सत्ता को प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न चालू हुए। आधुनिक खड़ी बोली की नवीन गद्य पद्य शैलियों का सूत्रपात हुआ। हिन्दी के पुस्तक प्रकाशन और सामयिक

पत्र सचालन का प्रारम्भ हुआ ; और इस सार्व-हिन्दी आन्दोलन का प्रवर्तन एवं प्रधान नेतृत्व किया राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द सी०एस०आई० ने । राजा शिवप्रसाद जी जैन सज्जन थे और सरकारी शिक्षा विभाग के एक उच्च पदाधिकारी थे । ये हिन्दी के भारी समर्थक, प्रचारक और पक्षपाती थे । उर्दू और अंग्रेजी के पक्षपातियो के तीव्र विरोध को चुनौती देकर उन्होंने हिन्दी की अकाल मरण से रक्षा की और शिक्षा विभाग मे उसकी सत्ता को अक्षुण्ण बना दिया । उन्होंने हिन्दी मे शिक्षा सम्बन्धी एव लोकोपयोगी कितनी ही पुस्तके स्वयं लिखी तथा दूसरो से लिखाई । उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'इतिहास तिमिर नाशक' की कोई दिन बड़ी ख्याति रही । एक प्रकार से आ-धुनिक खड़ी बोली के आप जन्मदाता ही समझे जाते हैं । स्वय भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र इन्हे अपना गुरु मानते थे, और उन्होने अपना 'मुद्राराक्षस नाटक इन्हे ही समर्पित किया था ।

इलाहबाद निवासी, खण्डेलवाल जैन बा० रतनचन्द्र वकील भी हिन्दी के इस युग के अच्छे लेखक थे । उनका 'नूतन चरित्र' इण्डियन प्रेस, प्रयाग ने प्रकाशित किया था । न्याय सभा नाटक, भ्रमजाल नाटक, चातुर्यार्णव, वीरनारायण, इन्दिरा, हिन्दी उर्दू नाटक आदि उनकी कई अन्य रचनायें भी, जिनमे से कुछ मौलिक कुछ अंग्रेजी आदि से अनूदित तथा कुछ आधार लेकर लिखी गई थी, मुद्रित प्रकाशित हुई ।

आरा के जमीदार अग्रवाल जैनी बा० जैनेन्द्र किशोर, आरा की नागरी प्रचारिणी सभा तथा प्राचीन समालोचक सभा के उत्साही कार्यकर्ता थे । ये हिन्दी के सुलेखक और सुकवि थे । उनके द्वारा रचित खगोल विज्ञान, कमलि-नी, मनोरमा उपन्यास आदि कई पुस्तके तथा जैन कथाओ के आधार से लिखे हुए सोमासती प्रभृति कई नाटक प्रहसनादि छपे थे । इन्होने हिन्दी जैन गजट का भी कई वर्ष सम्पादन किया और आरे की नागरी हितैषिणी पत्रिका मे इनका जीवन चरित्र भी प्रकाशित हुआ ।

श्री [illegible] मि० जैन वैद्य जयपुर के निवासी थे । ये राजवैद्य

एशियाटिक सोसाइटी तथा थियोसीफिकल सोसाइटी के भी सदस्य थे। कई देशीय भाषाओ पर इनका अधिकार था किन्तु हिन्दी के ये बड़े प्रेमी थे और नागरी के प्रचार मे सदैव प्रयत्नशील रहते थे। आपने हिन्दी के कई समाचार-पत्र निकाले जिनमें सर्वप्रसिद्ध 'समालोचक' था जिसे आपने बड़े परिश्रम और अर्थ व्यय से चार वर्ष तक निकाला। इस पत्र मे बडे मार्के के लेख निकलते थे। इसके कारण हिन्दी ससार मे आपकी बडी ख्याति हुई। नागरी प्रचारिणी सभा के बडे सहायक थे और जयपुर मे एक 'नागरी भवन' नामक श्रेष्ठ पुस्तकालय स्थापित किया। कमल मोहिनी भँवरसिंह नाटक, व्याख्यान प्रबोधक और ज्ञान वर्णमाला, ये तीन पुस्तक उन्होंने स्वय लिखी थी तथा 'सस्कृत कवि पचक' आदि हिन्दी के कई अच्छे ग्रथ इन्होने अपने ही खर्चे से प्रकाशन कराये थे।

इस प्रकार, जैन साहित्य प्रकाशन के इस प्रथम युग मे भी जैन समाज ने सर्वतोमुखी योग दान किया।

२. प्रगति युग (सन् १९००---१९२५ ई०):—

पच्चीस वर्ष का यह काल जैन प्रकाशन का प्रगति युग कहा जा सकता है। इस युग मे अन्य मतो के खडन मडन का कार्य, जैसा कि ऊपर सकेत किया जा चुका है, सीमित, संकुचित एव शिथिल होता चला गया। तथापि, उसी के कारण जो कितने ही जैन अनेक सनातनी हिन्दुओ की भाँति, स्वधर्म की वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण धर्म त्याग करते चले जा रहे थे उस मे भारी रोक थाम हो गई। प्रत्युत कुँवर दिग्विजयसिंह, बाबा भागीरथ जी वर्णी, पं० गणेश प्रसाद जी, मु० कृष्ण लाल वर्मा, महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन, प्रो० धर्मचन्द्र, स्वामी कर्मानन्द जी आदि अनेक कट्टर जैन विरोधी जैनेतर विद्वान भी जैन धर्म के परम भक्त और उत्कट प्रचारक हो गये।

अब समाजगत मोटी मोटी कुरीतियों की ओर सकेत मात्र करना पर्याप्त नही रह गया। सामाजिक सगठन को दृढ़ करने और विवाह संस्था सम्बन्धी विभिन्न धार्मिक सामाजिक प्रश्नों की विशद मीमासा करने की आवश्यकता

हुई। बाल विवाह वृद्ध विवाह बहु विवाह आदि का विरोध अन्तर्जातीय विवाह और विधवा विवाह का समर्थन, विवाह आदि में फिजूल खर्ची पर प्रतिबन्ध, वेश्या नृत्य, भडवे, नक्कालो आदि का नाच गाना और कन्या विक्रय की बन्दी, दहेज मे कमी, जैनविधि से सस्कारो का किया जाना, आदि सुधारों का प्रचार किया जाने लगा। स्त्री शिक्षा, दस्सा पूजाधिकार तथा शुद्धि आन्दोलन उठाये गये देवबन्द के एक जैनी वकील जो मुसलमान हो गये थे उन्हें बा० सूरजभान जी और उनके साथियों ने तीव्र विरोध की उपेक्षा करके फिर से जैनी बनाया और समाज मे शामिल किया। दस्सो के पूजाधिकार को लेकर मेरठ मे एक युगान्तरकारी मुकद्दमे बाजी भी हुई जिसमे प० गोपाल दास जी बरैया ने भी दस्सा पूजाधिकार का ही समर्थन किया। श्राविकाश्रम, विधवा-श्रम, अनाथालय, गुरुकुल, छात्रालय आदि खोले गये। और अखिल भारतीय जैन समाज के विभिन्न उपसम्प्रदायो के बीच सद्भाव एव सामञ्जस्य स्थापित करने के प्रयत्न चालू हुए। किन्तु साथ ही तीर्थों को लेकर उभय सम्प्रदायों के मध्य मुकद्दमेबाजी भी खूब चल निकली। इन कार्यों मे भी प्राय बा० सूरज भान जी ही अग्रणी थे, उनके कई एक साथियो ने अपनी शुद्ध साहित्यिक अभि-रुचि के कारण प्रचार कार्य मे धीरे धीरे उनका साथ छोड दिया, किन्तु उनके स्थान मे उन्हे कितने ही अन्य उत्साही साथी प्राप्त होते गये, और उपरोक्त विषयो एव समस्याओ पर भी पर्याप्त साहित्य प्रकाशित हुआ।

समाज सुधार के अतिरिक्त इस युग की दूसरी प्रवृति धर्म प्रचार थी। आर्य समाज के बढते हुए प्रचार से प्रभावित होकर जैन नेताओं ने भी वाह्य जनता मे स्वधर्म प्रचार करना प्रारम्भ किया। इस कार्य का श्रीगणेश वस्तुत. पंजाबी स्थानकवासी (बाद को श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी) साधु स्वामी आत्मा-राम जी ने किया था। उन्होने अन्य जैन नेताओ के साथ साथ आर्य समाज के विरोध का दृढता से मुकाबला किया, जैनियों का स्थितिकरण किया और कई एक अग्रेजो को भी जैन बनाया। उन्होंने स्वयं कई पुस्तकें लिखी तथा उनकी स्मृति मे स्थापित आत्माराम जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला से अनेक उपयोगी

हुई कुछ प्रचारार्थ प्रकाशित हुए। जिस प्रकार स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रतिभाशाली शिष्य स्वामी विवेकानन्द अमेरिका आदि देशो में हिन्दू धर्म का प्रचार करने के लिये गये थे, उसी प्रकार और लगभग उसी समय स्वामी आत्माराम के सुयोग्य शिष्य स्व० वीरचन्द राघव जी गांधी भी स्वगुरु की प्रेरणा से यूरोप अमेरिका आदि मे जैन धर्म के प्रचारार्थ गये और उन्होने शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन में भी महत्त्व पूर्ण भाग लिया। उनके पश्चात् स्व० बैरिस्टर, जगमन्दर लाल जैनी, चीफ जज इन्दौर ने तो यूरोप मे जैन धर्म प्रचार को अपने जीवन का व्रत ही बना लिया था। उन्होने कई बार विदेश यात्रा की और इग्लैंड मे तो वे पर्याप्त समय तक रहे भी। कितने ही अंगरेजो को उन्होने जैनी बनाया जिनमे श्री हर्बर्ट वारेन, जे० गौर्डन उनकी पत्नी आदि उल्लेखनीय है। इन जे० एल० जैनी ने ही लन्दन मे 'ऋषभ जैन फ्री लैन्डिंग लायब्रेरी' नामक पुस्तकालय तथा जैन केन्द्र की स्थापना की, जैन धर्म पर अंग्रेजी मे स्वय कई स्वतन्त्र पुस्तके लिखी तथा तत्त्वार्थ सूत्रादि प्राचीन ग्रन्थों के अनुवादादि तैयार करके प्रकाशित कराये, वर्षो पर्यन्त अंगरेजी जैन गज़ट का योग्यता के साथ सुसम्पादन किया, और मृत्यु के समय अपनी समस्त सम्पत्ति का इन्ही उद्देश्यो मे उपयोग किये जाने के लिये एक ट्रस्ट कर गये। उन्ही की भाँति स्व० बैरिस्टर चम्पतराय जी ने भी विदेशो मे जैन धर्म प्रचार को ही अपना लक्ष्य बनाया, इसी उद्देश्य से अनेक बार यूरोप और अमेरिका की यात्रा की और कितने ही यूरपियन स्त्री पुरुषो को जैन धर्म मे दीक्षित किया। जैन धर्म पर अंगरेजी मे जो स्वतन्त्र पुस्तके लिखी गई उनमे बैरिस्टर साहब की कृतिये ही सर्वाधिक है। इन्होने अपने पिता की स्मृति मे देहली मे 'सोहन लाल बाँकेराय जैन एकेडेमी' की स्थापना की और अपनी समस्त सम्पत्ति को विदेशो मे जैन धर्म का प्रचार करने के लिये दान कर दिया। वाड़ीलाल मोतीलाल शाह, ऋषभदास वकील, पारसदास खजानची, रा० ब० लट्ठे, पूर्णचन्द्र नाहर, मुन्शी लाल एम० ए०, डा० बनारसी दास, ब्रा० अजित प्रसाद ब्र० शीतल प्रसाद आदि सज्जनों ने भी अंगरेजी पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित

निबन्धो तथा स्वतन्त्र पुस्तकों के रूप में अंगरेजी जैन साहित्य का निर्माण किया।

जे० एल० जैनी, पं० अर्जुनलाल सेठी, महात्मा भगवान दीन, मा० चेतनदास, बा० अजित प्रसाद आदि महानुभावों की जो भारत जैन महामंडल को लेकर एक बुहद् टीम बन गई थी उसके वास्तविक प्राण थे। आरा निवासी कुमार देवेन्द्र प्रसाद, ये महा उद्यमी, निस्वार्थ एवं सच्चे 'स्वयं सेवक' थे और हिन्दी के भी सुलेखक थे। स्याद्वाद विद्यालय काशी के सन् १९१४ के वार्षिकोत्सव जैसे कई महत्त्व पूर्ण आयोजन इन्होंने किये जिनमें उच्च कोटि के संसार प्रसिद्ध देशी विदेशी अजैन विद्वानों यथा डा० हर्मन जैकोबी डा० वान ग्लेजनेप, प्रो० जे हर्टेल, डा० एनी बेसैन्ट, म० म० डाक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण, डा० टी० के लड्डू, म० म० प्रो० राममिश्र, महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन इत्यादि को निमन्त्रित करके जैन धर्म पर उनके महत्त्व पूर्ण ऐतिहासिक भाषण कराये और जैन साहित्य एवं कला की प्रदर्शनिये की। इन आयोजनों के परिणाम स्वरूप जैनधर्म के विषय मे कम से कम जैनेतर विद्वत्समाज की अभिज्ञता तो बहुत बढ़ गई, उनके अनेक भ्रम दूर हो गये और यह धर्म तथा इसकी सस्कृति सम्मान पूर्ण अध्ययन की वस्तु समझे जाने लगे। कुमार देवेन्द्र प्रसाद जी के ही प्रयत्नो से 'सेन्ट्रल जैन पब्लिशिग हाउस, की स्थापना हुई और उससे 'सेक्रेड बुक्स आफ दी जेन्स' सीरीज का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसमे कि पंचास्तिकाय, समय सार, तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्य संग्रह, गोमट्टसार, परमात्म प्रकाश, नियमसार आदि कितने ही प्राचीन दिगम्बर जैन आर्ष ग्रन्थों के अंगरेजी अनुवादादि सहित उच्चकोटि के जैनाजैन विद्वानों द्वारा सुसम्पादित संस्करण प्रकाश में आये। मडल का मुख पत्र अंगरेजी जैन गजट भी बड़े उपयोगी एवं आकर्षक रूप मे निकलता रहा। मद्रासी, दक्षिणी, बंगाली, पजाबी-विभिन्न प्रान्तीय अनेक जैनाजैन विद्वानों ने इन कार्यों मे महत्त्व पूर्ण योग दान दिया।

इसी युग में जैन धर्म के सच्चे मिशनरी और त्यागी सेवक स्वर्गीय ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी थे। वे धर्म प्रचार और समाजोन्नति के लिये तडपते हुए हृदय को लिये हुए देश के कोने कोने में—बर्मा, स्याम और लङ्का तक गये और स्थान स्थान मे सार्वजनिक सभाएं कराकर जैन धर्म की ओर सर्वसाधा-

रण को आकृष्ट किया। जैन मित्र आदि कई पत्रों का योग्यता पूर्वक सम्पादन किया' तथा अनेक व्यक्तियों को प्रोत्साहन दे देकर अच्छा खासा लेखक बना दिया। स्वय अकेले उन्होंने सर्व प्रकार की, मौलिक, टीका अनुवादादि, सकलन सग्रह, फुट कर लेख निबन्ध, धार्मिक, ऐतिहासिक, शिक्षा एवं समाज सुधार विषयक छोटी बड़ी रचनाएँ संख्या एव मात्रा मे निर्माण की और छपा कर प्रकाशित करदी उतनी शायद छापे के आरम्भ से आज पर्यन्त कोई दूसरा व्यक्ति नही कर पाया। ब्रह्मचारी जी के जीवन का प्रत्येक क्षण जैन धर्म और साहित्य के प्रकाशन प्रचार मे ही व्यीतत हुआ। रेल मे यात्रा करते हुए तथा रोग की दशा मे भी वे लिखते रहते थे। विधवा विवाह के प्रचार के लिये उन्होंने 'सनातन जैन समाज' तथा 'सनातन जैन' पत्र की स्थापना की। मध्य काल के एक जैन संत तारण स्वामी द्वारा प्रस्थापित तारण समाज और उसके पुरातन साहित्य को प्रकाश मे लाने का श्रेय भी ब्रह्मचारी जी को ही है। साथ ही वे उत्कट देश भक्त भी थे और काग्रेस के प्राय. सब ही अधिवेशनो मे सम्मिलित हुए। जैन समाज मे वे निरन्तर देशभक्ति की भावना को फूकते रहते थे।

तत्कालीन नेताओ ने शिक्षा प्रचार की ओर भी विशेष ध्यान दिया। बाल और कन्या पाठशालाएं तो स्थान स्थान मे खुलनी प्रारभ हो गईं थी अब बड़े-बड़े जैन सस्कृत विद्यालय भी खुलने लगे। बनारस, इन्दौर, सहारनपुर, कारजा, सागर, मुरैना, मथुरा आदि स्थानो मे ये विद्यालय स्थापित किये गये। पं० गोपाल दास जी बरैया की कृपा से जैन सिद्धात एव दर्शन के परिज्ञाता सस्कृतज्ञ युवक विद्वानों का एक अच्छा दल तैयार हो गया था। अतएव उन विद्यालयो के लिये योग्य अध्यापको की कमी न रही। समाज के श्रीमानो और सेठों ने द्रव्य से सहायता की। इन विद्यागवो मे जैन दर्शन, न्याय, सिद्धात, साहित्य आदि के अतिरिक्त कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा क्वीन्स संस्कृत कालिज बनारस की परिक्षाओं के लिए भी विद्यार्थी तैयार किये जाने लगे। दि० जैन महासभा ने जैनशास्त्री आदि परिक्षाओ के निमित्त अपना एक परीक्षा

बोर्ड स्थापित किया और उत्कट शिक्षा प्रेमी सेठ माणिक चंद्र बम्बई वालों ने भी एक 'माणिक चंद्र' दि० जैन परीक्षा बोर्ड स्थापित किया । उक्त विद्यालयों में अध्ययन करके सैकड़ों विद्यार्थी प्रतिवर्ष इन परीक्षा बोर्डों की परिक्षायें पास करने लगे । परीक्षा बोर्डो द्वारा निर्धारित पाठ्य क्रमो के लिए उपयुक्त पाठ्य पुस्तको की आवश्यकता हुई जिसकी पूर्त्ति के प्रयत्न से भी जैन पुस्तक प्रकाशन को अच्छी प्रगति मिली । जैन बाल पाठशालाओ मे धार्मिक शिक्षा देने की ओर विशेष ध्यान रक्खा गया और उसके लिये बाल बोध जैन धर्म जैसी अनेक छोटी २ बालकोपयोगी पुस्तको का निर्माण हुआ ।

किन्तु नित्य प्रति वृद्धि को प्राप्त होता हुआ आधुनिक अंग्रेजी प्रणाली से शिक्षित समुदाय इन बाल पाठशालाओ और सस्कृत विद्यालयो से ही सन्तुष्ट न रह सका, उसकी दृष्टि मे जैन बोर्डिंग हाउस, स्कूलो और कालिजो का उपयुक्त केन्द्रो मे स्थापित किया जाना समय की परम आवश्यकता थी। सेठ माणिक चन्द्र ने तो स्थान स्थान में जाकर जैन छात्रालय स्थापित कराने का बीड़ा ही उठा लिया था । अनेक स्थानो मे जैन हाई स्कूल खुले और दो-एक जैन कालिज भी स्थापित हुए । कुछ एक महाप्राण जैन नेताओ की यह भी उत्कट अभिलाषा थी कि एक जैन विश्व विद्यालय स्थापित हो जाय । इसके लिए प० गणेश प्रसाद जी, पं० दीप चन्द्र जी और बाबा भागीरथ जी—ये वर्णीमय प्रयत्न शील भी हुए, किन्तु समाज के श्रीमानो की ओर से कोई सहयोग न मिलने के कारण असफल रहे और आजतक भी जैन विश्व विद्यालय की स्थापना न हो पाई । इसी समय कुछ नेताओं का यह विचार हुआ कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाणी किन्ही अंशों मे उपयोगी होते हुए भी सांस्कृतिक नैतिक एव राष्ट्रीय दृष्टि से अति दोष पूर्ण एव हानिकर है, अतएव ऐसे गुरुकुल स्थापित किये जाय जिनमे भारतीय एव पश्चिमी शिक्षा प्रणालियो का समन्वय करते हुए नवीन सन्तति को धार्मिक, चारित्रधान, देश भक्त एवं सुशिक्षित बनाया जा सके । फल स्वरूप सन् १९११ में बा० सूरजभान जी के प्रबन्ध और देश भक्त महात्मा भगवान दीन जी के अधिष्ठा तृत्य में हस्तिनागपुर

(मेरठ) की प्राचीन पवित्र भूमि पर श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम नामक प्रथम जैन गुरुकुल की स्थापना हुई। प्रारंभ में इस संस्था को देश भर के श्रीमानों, विद्वानों एव समाज सेवियो की सहायता और स्नेह प्राप्त हुआ, किन्तु प्रबन्धकों में शीघ्र ही मतभेद हो जाने के कारण वह अपने मूल स्थान, मौलिक रूप एवं उच्च आदर्शों पर तीन चार वर्ष से अधिक स्थिर न रह सका, वैसे दि० जैन संघ के प्रबन्ध मे मथुरा में वह अभी तक विद्यमान है। उपरोक्त जैन छात्रावासों, स्कूलों, कालिजो के विद्यार्थियो को धार्मिक शिक्षा देने के लिए भी साहित्य प्रकाशित हुआ। तत्त्वार्थसूत्र, रत्न करंड श्रावकाचार, पुरुषार्थ सिद्धयुपाय, द्रव्य सग्रह, छहढाला आदि प्राचीन मौलिक ग्रन्थो के शब्दार्थ भावार्थ टिप्पणि आदि सहित विद्यार्थियोपयोगी सक्षिप्त सस्करण निकले।

जैन स्त्री समाज मे शिक्षा प्रचार का व्यवस्थित कार्य महिलारत्न स्व० मगनबेन, पडिता ललिता बाई व पडिता चन्दा बाई जी आदि विदुषियो ने अपने हाथ मे लिया। बम्बई और आरा मे आदर्श जैन बाला विश्राम स्थापित हुए, जैन महिला परिषद बनी और महिलाओ द्वारा ही सुसम्पादित, सञ्चालित 'जैन महिलादर्श' नामक मासिक पत्रिका चालू हुई।

इस युग मे व्यवसायिक दोनो ही प्रकार के कई एक प्रकाशको का अविर्भाव हुआ। हिंदी के कई मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा मराठी, गुजराती, कन्नडी, अ ग्रेजी और उर्दू के भी कई अच्छे जैन सामयिक पत्र निकलने लगे। माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थ माला, मुनि अनन्तकीर्ति दि० जैन ग्रन्थ माला, रायचन्द्र जैन शास्त्रमाला सनातन जैन ग्रथ माला आदि कई एक उच्च कोटि की अव्यवसायिक ग्रथ मालाएँ चालू हुई। इनके द्वारा प्राचीन जैन ग्रथ मूल रूप में ही सुसम्पादित होकर अथवा टीका अनुवादादि सहित प्रकाशित होने लगे और प्राय. सर्व ही महत्त्वपूर्ण एव उपलब्ध ग्रथ जैसे तैसे प्रकाश मे आ गये। प० जुगलकिशोर मुख्तार, प० नाथूराम प्रेमी आदि कई योग्य विद्वान इस नव प्रकाशित प्राचीन साहित्य के साहित्यक एव ऐतिहासिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन मे जुट गये। फलस्वरूप अनेक ग्रथो की समीक्षा परीक्षाएँ प्रकाशित

हुई । इस प्रकार के विश्लेषण से नाम साम्य के कारण विभिन्न आचार्यों की रचनाओं को उसी नाम के किसी एक ही प्रसिद्ध आचार्य की कृति समझ लेना जैसी सर्व प्रचलित भ्रान्तियों का निराकरण हुआ । ग्रंथकार आचार्यों के समय, इतिवृत्त एवं कार्य कलापों पर प्रकाश पड़ा, विशेष सैद्धान्तिक विषयों पर विभिन्न आचार्यों की विभिन्न मान्यतायें रही हैं, ऐसी बातें भी प्रकाश में आईं । विशेष रूप से 'जैनहितैषी' मासिक ने इन प्रवृत्तियों में पर्याप्त एवं सफल दान दिया । और इस प्रकार सुव्यवस्थित जैनाध्ययन का बीजारोपण हुआ तथा जैन धार्मिक एवं साहित्यक इतिहास की सामग्री, फुटकर एवं असम्बद्ध रूप में ही सही, शनैः शनैः एकत्रित होने लगी ।

सस्थाओं का भी प्रसार हुआ । दि० जैन महासभा की बम्बई आदि प्रान्तों में शालाएं खुलीं । भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी तथा प्रान्तीय और स्थानीय तीर्थ क्षेत्र कमेटियों की स्थापना हुई । भारत जैन महामण्डल, जैन पोलिटिकल कान्फ्रेंस, दि० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला, जीव दया प्रचारिणी सभा आगरा, जैन मित्र मंडल देहली, भारत वर्षीय दि० जैन अनाथ रक्षक सोसाइटी देहली, और अन्त मे महासभा की नीति से मतभेद होने के कारण उसके कतिपय सदस्यो द्वारा सन् १९२३ मे अखिल भारत वर्षीय दि० जैन परिषद, इत्यादि सस्थाओ की स्थापना हुई । इन सभी सस्थाओ ने अपने२ कार्य क्रम के अनुकूल साहित्य के निर्माण और प्रकाशन मे पर्याप्त सहयोग दिया ।

जहाँ तक हिन्दी की सामान्य उन्नति का प्रश्न है जैनों नें उस में भी स्तुत्य योग दान किया । हिन्दी के तत्कालीन सार्वजनिक पत्रो में मि० जैन वैद्य का सुप्रसिद्ध 'समालोचक', देहली के सेठ माठूलाल का साप्ताहिक 'हिन्दी समाचार', देहरादून के ला०गुलशनराय का 'भारत हितैषी' इन्दौर के बा० सुख सम्पत्तिराय भडारी के 'मल्हारि मार्तण्ड विजय' आदि और बम्बई से प० पन्नालाल बाकलीवाल का 'हिन्दी हितैषी' श्रेष्ठ कोटि के पत्र थे । बम्बई हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय और हिन्दी गौरव ग्रन्थ माला के स्वामी व संचालक जैनी थे । झालरा पाटण की राजपूताना हिन्दी साहित्य समिति का लगभग बारह हजार रुपये

का स्थायी फंड श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के उद्योग से केवल जैनों द्वारा प्रदत्त था और इससे हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थ केवल लागत मूल्य से बेचे जाने की योजना थी। इन्दौर की मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति को भी जैनों से कई हजार रुपया प्राप्त हुआ था। खण्डवे की हिन्दी ग्रन्थ प्रसारक मण्डली के उत्साही संचालक एक बा. माणिकचन्द्र जैनी वकील थे और आरा की नागरी प्रचारिणी सभा के प्राण बा. जैनेन्द्र किशोर थे, इत्यादि। हिन्दी जैन साहित्य के प्रकाशन मे वम्बई के जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय तथा रामचन्द्र जैन शास्त्रमाला ने प्रमुख भाग लिया। धार्मिक से अतिरिक्त विषयो पर लिखने वाले लगभग दो दर्जन जैन सुलेखक विद्यमान थे और उनकी सख्या मे निरन्तर वृद्धि हो रही थी।

इस प्रकार इस युग मे निम्नोक्त विविध प्रकार का साहित्य प्रकाश मे आया—

(१) प्राचीन सस्कृत प्राकृत ग्रन्थों के सम्पादित सस्करण:- मूल मात्र अथवा टीका अनुवादादि सहित। उल्लेखनीय सम्पादक अनुवादक टीकाकार आदि—बा० सूरजभान, प० पन्नालाल बाकलीवाल, प० पन्नालाल सोनी, उदयलाल काशलीवाल, प० वशीधर शास्त्री, प० खूबचन्द शास्त्री, पं० लालाराम शास्त्री, प० मनोहर लाल, प० गजाधर लाल, जे एल. जैनी, बा० ऋषभदास वकील, ला मुन्शी लाल, मुनि माणिक जी, प्रो ए सी चक्रवर्ती, ब्र. शीतल प्रसाद, शरच्चन्द्र घोषाल, प० नाथूराम प्रेमी इत्यादि। पुरातन हिंदी जैन साहित्य को प्रकाश मे लाने का अधिकतर श्रेय बाकली वाल जी और प्रेमी जी को है। प्रेमी जी ने तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जबलपुर मे होने वाले सप्तम अधिवेशन मे 'हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास' शीर्षक एक विस्तृत निबन्ध भी पढ़ा था जो जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से सन् १९१७ में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।

(२) प्राचीन ग्रन्थों की समीक्षा परीक्षा:- साहित्यक, सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण सम्बन्धी साहित्य। उल्लेखनीय लेखक—पं० जुगल-किशोर मुख्तार, बा० सूरजभान वकील, प० नाथूराम प्रेमी।

(३) जैन इतिहास सम्बन्धी स्वतन्त्र पुस्तके तथा ऐतिहासिक सामग्री के संकलन ग्रन्थ यथा विज्ञप्ति संग्रह, प्रशस्ति संग्रह, शिला-लेख संग्रह आदि—उल्लेखनीय लेखक—डा. ए. गिरनाट, रा. ब. पारसदास, पूर्णचन्द्र नाहर, मुनि जिन विजय जी, उमराव सिह टक, पद्मराज रानीवाले, प. नाथूराम प्रेमी, ब्र. शीतलप्रसाद, डा. बनारसीदास, बिहारीलाल चैतन्य, प्रभुदयाल तहसीलदार, बा. सूरजमल, प्रो. आयगर, प्रो शेशागिरि राव, रा ब नरसिंहमाचर आदि ।

(४) जैन धर्म और उसके अहिंसा आदि सिद्धान्तों तथा उपदेश को आधुनिक भाषा और शैली में स्वतन्त्र रूप से प्रस्तुत करने वाली पुस्तके:—उल्लेखनीय लेखक—प. गोपालदास बरैया (मुरैना विद्यालय तथा जैन मित्र पत्र के सस्थापक और प्रथम सम्पादक) बा ऋषभदास वकील (मेरठ), जे एल. जैनी, श्री लट्ठे, पूर्णचन्द नाहर, ब्र. शीतल प्रसाद, चम्पतराय बैरि-स्टर, बा सूरजभान वकील, प. पन्नालाल बाकलीवाल, ला मुन्शीलाल, बा माणिक चन्द, प. दरयाब सिह सोधिया, मुनि शान्ति विजय, प जुगल-किशोर मुख्तार आदि ।

(५) समाज सुधार एव शिक्षा प्रचार सम्बन्धी पुस्तके—उल्लेखनीय लेखक बा सूरजभान, प जुगल किशोर, ज्योतिप्रसाद प्रेमी, दयाचन्द गोयलीय, प. पन्नालाल बाकलीवाल, आदि ।

(६) पाठ्य पुस्तके—उल्लेखनीय लेखक—प. पन्नालाल बाकलीवाल, बा. दयाचन्द गोयलीय, ब्र. शीतल प्रसाद, प गोपालदास बरैया, लाला मुन्शी-लाल आदि ।

(७) उपन्यास नाटक कहानी आदि—उल्लेखनीय लेखक—प. गोपाल दास बरैया (सुशीला उपन्यास), बा सूरजभान, प अर्जुनलाल सेठी, ला. मुन्शी-लाल, बा. माणिक चन्द, बा कन्हैयालाल, ला. न्यामतसिंह हिसार (इनके नाटकों और भजनों की बड़ी धूम रही), बा. कृष्णलाल वर्मा, पं. नाथूराम प्रेमी आदि।

(८) हिन्दी के सार्वजनिक पत्रों में फुटकर लेख तथा स्वतंत्र अमूदित सामयिक लेख निबन्ध चरित्र आदि—उल्लेखनीय लेखक—मि० जैन वैद्य, ला० मुन्शीलाल, बा० दयाचन्द्र गोयलीय, वाडीलाल मोतीलाल शाह, बा० सुपार्श्वदास गुप्त (इनका पार्लमेंट नामक ग्रन्थ ४०० पृष्ठ का था), बा० मोतीलाल, डा० वेणीप्रसाद, बा० मणिकचन्द्र, खूबचन्द सौंधिया, बा० निहालकरण सेठी, बालचन्द्राचार्य, सुखसम्पत्ति राय भंडारी, पं० नाथूराम प्रेमी, आदि।

(९) इस युग की स्फुट तथा फुटकर रचनाओं में जुगलकिशोर मुख्तार, नाथूराम प्रेमी, ज्योति प्रसाद प्रेमी आदि की हिन्दी कविताए, मुं० द्वारका प्रसाद के तीर्थ यात्रा विवरण, ब्र० शीतल प्रसाद व बैरिस्टर चम्पतराय के अन्य धर्मों के साथ जैन धर्म के तुलनात्मक अध्ययन, इत्यादि।

(१०) दरख्शा, माईल, पैकाँ, ऋषभदास, सूरजभान, ज्योतिप्रसाद मामचन्दराय, सुमेरचन्द्र, ओसवाल, शिवव्रतलाल, नत्थूराम, चन्दूलाल अख्तर, आदि की उर्दू जैन रचनाएं उल्लेखनीय हैं। अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में जैन साहित्य अथवा जैन सम्बन्धी साहित्योल्लेखों का विवरण रा० ब० पारसदास व बा० छोटेलाल की बिबलियोग्रेफियों और जैन गजट (अंग्रेजी) की फाईलों से प्राप्त हो सकता हैं।

इस युग के जैन साहित्य प्रकाशन मे विशेष योग देनेवाली सस्थाएं, प्रकाशक तथा व्यक्ति निम्नलिखित हैं—बम्बई की माणिकचन्द्र दि० जै० ग्रन्थमाला, मुनि अनन्तकीर्ति दि० जैन ग्रन्थमाला, जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय, जैन मित्र कार्यालय, कलकत्ते की सनातन जैन ग्रन्थमाला, जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था, जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, और सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस आरा (अब लखनऊ), जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा, जैनेन्द्र प्रेस कोल्हापुर, दि० जैन पुस्तकालय सूरत, जैन मित्र मंडल देहली, हीरालाल पन्नालाल जैन बुक सेलर्स देहली, दि० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला,

जैनीलाल जैनी देवबन्द, ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, न्यामत सिंह जैनी हिसार, ला० जौहरीमल सर्राफ देहली (विशेष रूप से उत्कट समाज सुधार विषय के साहित्य के लिये), सेठ हीराचन्द व सखाराम नेमचन्द दोशी शोलापुर, सेठ गांधी नाथारग अाकलूज, गोपाल अम्बादास चवरे कारंजा—इन तीनों श्रीमानो ने प्राचीन ग्रन्थो के प्रकाशन मे भारी हिस्सा लिया। इनके अतिरिक्त जयपुर निवासी बा० दुलीचन्द श्रावक, मु० अमनसिह, मु० सुमेरचन्द, बैरि० चम्पतराय, कुमार देवेन्द्रप्रसाद, ला० देवीसहाय (फीरोजपुर) उम्मेदसिह मुसद्दीलाल (अमृतसर) बुद्धिलाल श्रावक, मु० नाथूराम लमेचू आदि उल्लेखनीय है। मद्रास मे सी० मल्लिनाथ, प्रो० चक्रवर्ती आदि सज्जनो ने जैन साहित्य प्रकाशन का कार्य किया।

३. वर्तमान युग :—सन् १९२५ के उपरान्त जैन साहित्य प्रकाशन के वर्तमान युग का प्रारम्भ होता है।

अब विभिन्न मतो के द्वारा धार्मिक दृष्टि से किये जानेवाले विद्वेषपूर्ण खडन मडनो का समय नही रह गया था। आर्य जैन द्वन्द प्राय समाप्त हो गया था। किसी भी धर्म के मन्तव्यो एव मान्यताओं का मखौल उड़ाने, उसे तुच्छ, नीचा, नास्तिक या मिथ्या सिद्ध करने के प्रयत्न निन्दनीय समझे जाने लगे और सर्वधर्म समभाव स्थापित करने की चेष्टाएं की जाने लगी। किंतु साथ ही एक नवीन प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होने लगी। अनेक जैनेतर विद्वान अपनी साहित्यिक, दार्शनिक एव ऐतिहासिक रचनाओं में जैन धर्म दर्शन, सस्कृति, आदि की प्राचीनता, इतिहास और मूल्यवान देनों की अज्ञान अथवा प्रमाद के वश होकर उपेक्षा तथा उनके सम्बन्ध मे भ्रमपूर्ण एव मिथ्या कथन भी करने लगे। फलस्वरूप उन विज्ञाओ के साथ तो अन्याय होता ही है साथ ही जैन धर्मावलम्बियों के स्वाभिमान को भी ठेस पहुंचती है और उन्हें क्षोभ होता है। स्वातन्त्र्य प्राप्ति और सर्वतंत्र जनतन्त्र की स्थापना के उपरान्त बहुसंख्यक हिन्दू धर्मानुयायियो के द्वारा जिनका कि राजनैतिक आदि क्षेत्रो में बाहुल्य है, यह प्रवृत्ति और अधिक चरितार्थ

होने लगी। राष्ट्रीयता के नाम पर जैन धर्म और संस्कृति की स्वतन्त्र सत्ता का निषेध किया जाने लगा है और हिन्दू धर्म तथा संस्कृति द्वारा केवल अल्प सख्यक होने के कारण ही जैन धर्म और सस्कृति को हड़प लिये जाने की नवीन चेष्टाए प्रारम्भ हो रही हैं। किंतु जिन अर्थों मे एक सामान्य हिन्दू विशुद्ध भारतीय है उन्ही अर्थों में एक जैनी भी वैसा ही विशुद्ध भारतीय है। हिन्दू धर्म के नाम से अभिप्रेत वैदिक परम्परा के जिन अनेक सम्प्रदायो और मत मतान्तरो का समुदाय जितना प्राचीन और भारत का अपना है उससे शायद कही अधिक प्राचीन और भारत की अपनी ही श्रमण परम्परा का प्रतिनिधि जैन धर्म और उसकी सस्कृति है। ये धार्मिक अथवा सास्कृतिक भेद किसी व्यक्ति की राष्ट्रीयता, नागरिकता अथवा भारतीयता मे बाधक नही हो सकते। फिर ऐसे विवादास्पद शब्द (अर्थात् हिन्दू) का इतना मोह क्यो जबकि वह एक परम्परा विशेष के अनुयायियो के लिये ही प्रयुक्त होते चले आने के कारण समग्र राष्ट्र का सूचक होने के लिए उपयुक्त नही है और जिसके उक्त रूप मे प्रयोग करने से सदैव भारी भ्रान्ति उत्पन्न होते रहने की सभावना है। जब जैन धर्म और सस्कृति की पृथक एवं स्वतत्र सत्ता है, उसकी परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, उसका अपना अति स्वर्णिम इतिहास है और वह शुद्ध स्वदेशीय हैं तब उनके अपने आपको हिन्दू न कहने से या हिन्दूधर्म और सस्कृति का अ ग न मानने से तो कोई वे विदेशी, अभारतीय, राष्ट्र के प्रतिविद्रोही या उसके लिए अजनबी हो नही जाते। वे भारत के हैं और भारत उनका है यह तथ्य निर्विवाद है। जहाँ तक जैनाध्ययन के जिसमे कि जैन सस्कृति की सभी विविध शाखाओ के अध्ययन का समावेश है, महत्त्व और प्रगति का बहुत कुछ अनुमान इसी पुस्तक के अन्त मे प्रकाशित स्वतन्त्र लेख से हो सकता है। जैन ही नही अनेक उद्भट अजैन विद्वान भी अब सहृदय एव शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से जैनाध्ययन मे दिलचस्पी ले रहे हैं और भारत के सांस्कृतिक विकास का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न विश्वविद्यालयो मे जैनाध्ययन को एक विशेष

अध्ययनीय विषय बनाकर उसके सम्बध मे सुव्यवस्थित शोध खोज अनुसधानादि चालू किये कराये जांय ।

अजैन लेखको की उपरोक्त प्रकार की भ्रान्त धारणाओं और मिथ्या वा अन्यथा कथनों के परिहार एवं निराकरण के उद्देश्य से भी बहुत कुछ साहित्य प्रकाशित होने लगा है, किन्तु इस आवश्यकता की पूर्त्ति जैसे सुचारु सुव्यवस्थित ढंग पर होनी चाहिये थी वैसी अभी नही हो पारही है ।

जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायो के बीच समन्वय तथा ऐक्य के जो प्रयत्न पिछले युग में प्रारभ हुए थे वे इस युग मे शिथिल प्राय होते गये । और जिस प्रकार भारतीय राजनैतिक क्षेत्र मे हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के प्रयत्नो का परिणाम अतिकटु एव विनाशकारी सिद्ध हुआ उसी प्रकार दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदायों मे सद्भाव एव एक-सूत्रीकरण के प्रयत्न भी उभय सम्प्रदायो के बीच की खाई को और अधिक विस्तृत एव गहरी करते दीख पड रहे है । विभिन्न तीर्थों के प्रश्न को लेकर होने वाली चिरकालीन मुकदमेबाजी के अतिरिक्त नवीन साहित्यिक शोध खोज का लाभ उठा कर दोनो ओर के कितने ही विद्वान प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उभय सम्प्रदायो के साहित्यिक सैद्धान्तिक ऐतिहासिक आदि मतभेदो को और अधिक सूक्ष्मता के साथ पुष्ट करने लगे हैं । जो इने गिने नेता इतने पर भी समन्वय के प्रयत्न में लगे हुए है वे भी कुछ ऐसा भ्रमपूर्ण ढग अख्त्यार किये हुए हैं कि जिससे वे सद्भाव उत्पन्न करनें के बजाय शंका और द्वेष की पुष्टि करने मे ही सफल हो रहे हैं । तथापि ऐसे उदाराशय विद्वानो का भी अब अभाव नही है जो कि अपनी दृष्टि की विशालता के कारण अनेकान्त मूलक सहिष्णुता के साथ सभी मतभेदो को गौण करते हैं तथा एक उपरिम समस्तर से ही विचार करते हैं । इस दिशा में ऐसे ही महानुभावों से कुछ आशा है ।

सामाजिक संगठन की दृष्टि से भी जैन समाज कुछ आगे नही बढ़ा । पिछले युग के नेता सख्या में तो थोड़े थे किन्तु प्रायः सर्व ही सामाजिक क्षेत्रों पर उनका अधिकार था, उनमें परस्पर सहयोग और एक सूत्रता थी, वे अपना

बहुमूल्य समय देकर अनेक कष्ट लाञ्छना अपमानादि सहन कर, अपनी जेब से ही आवश्यक द्रव्य भी व्यय करके पूरी लगन और तत्परता के साथ समाजोन्नति के विविध कार्यक्रमो मे जुटे रहते थे। सस्थाए भी थोड़ी थी पर वे ऐसे कर्मठ, निस्वार्थ एव कर्त्तव्य शील नेताओ की अध्यक्षता मे बहुत कुछ ठोस कार्य कर रही थी। किन्तु अब आये दिन नई-नई सस्थाओ का जन्म होने लगा, उन्हे व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति का साधन बनाया जाने लगा, छोटी-छोटी व्यापारिक कम्पनियो जैसी उनकी स्थिति हो गई। उनके नेताओ और कार्यकर्ताओ म या तो पद और मान के लोलुपी अदीमुल फुर्सत बडे-बड़े श्रीमान होने लगे या फिर वैतनिक अथवा नाम मात्र के लिए अवैतनिक ऐसे व्यक्ति होने लगे जो प्राय: करके न स्वल्प सतोषी ही होते हैं और न जीवन निर्वाह सम्बधी द्रव्योपार्जन की चिन्ता से मुक्त ही। लोभ एवं अधिकार मोह के कारण बरसाती मेढकों की भाँति नित्य प्रति बढती जाने वाली इन सस्थाओ मे परस्पर सहयोग, सद्भाव और एक सूत्रीकरण नही हो पाता। फलस्वरूप समाज की शक्ति और द्रव्य का तो पर्याप्त व्यय होता है किन्तु किसी दशा मे भी वाञ्छनीय इष्ट सिद्धि नही हो पा रही है। इन संस्थाओ के अधिवेशन अवश्य ही बडी धूम धाम और शान के साथ होते हैं, उनके प्रचारक भी स्थान-स्थान मे घूमते हैं, कई एक संस्थाओ के अपने मुखपत्र भी हैं, पुस्तकादि के रूप मे भी साहित्य प्रकाशित होता है, किन्तु उपरोक्त दोषो के कारण तथा निस्वार्थ कर्त्तव्यशीलता के अभाव मे न इन सस्थाओ का और न इनसे सबधित व्यक्तियो का समाज पर कोई प्रभाव पडता है। वार्षिक कार्य विवरण आकर्षक रिपोर्टों के रूप मे प्रकाशित होते है किन्तु ठोसकार्य कुछ भी होता नही दीखता। समस्याए बढ़ती चली जाती हैं पर किसी समाज की समस्या का भी सन्तोषजनक समाधान नहीं होता। समाज सुधार शिक्षा, राजनैतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक किसी भी क्षेत्र में जो जो आवश्यकताए' हैं वे इन्ही की पूर्ती के लिए स्थापित इतनी सारी संस्थाओं सैकड़ो नेताओ, सैकड़ो ही विद्वानो और सौ के ही लगभग सामयिक पत्रोंके होते हुए भी प्राय कुछ भी पूरी नही हो पा रही हैं। गत बीस वर्षों मे कई एक उच्च

कोटि की साहित्यिक शोध खोज निर्माण प्रकाशन आदि सम्बंधी संस्थाओ का जन्म हो चुका है। किन्तु उनमे भी प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से अन्य सामान्य जैन सस्थाओ के ही अनेक दोष हैं। पृथक-पृथक उन सबकी शक्ति सीमित और अल्प है और व्यक्तिगत स्वार्थों अथवा ईर्ष्या द्वेषादि के कारण उनमे परस्पर सहयोग और एकसूत्रता नही हो पाती। फलस्वरूप साहित्य निर्माण और प्रकाशन प्रगति मे भी जितना योगदान वे कर सकती थी उसका अल्पांश मात्र ही हो रहा है।

फिर भी इस युग मे साहित्यिक, ऐतिहासिक, सास्कृतिक एव दार्शनिक खोज शोध का कार्य तथा ग्रन्थो का सम्पादन प्रकाशन बहुत कुछ व्यवस्थित एव प्रमाणीक ढग पर होने लगा है। विभिन्न उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियो का मिलान करके, विविक्षित विषय सम्बन्धी पूर्वापर साहित्य के साथ तुलना पूर्वक सावधानी के साथ पाठ सशोधन, अनुवाद, व्याख्या, आवश्यक टिप्पणादि और विद्वत्तापूर्ण विस्तृत विवेचनात्मक प्रस्तावनाओ सहित महत्त्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थों के सुसम्पादित सस्करण प्रकाशित होने लगे है। दिगम्बरो के प्राचीनतम् आगम साहित्य-धवलादि टीकाओ सहित षटखडागम, कषाय पाहुड, महाबन्ध आदि ग्रन्थराजो के भी उपरोक्त प्रकार सुसम्पादित सस्करण प्रकाश मे आ रहे हैं। प्राचीन जैन अपभ्रश साहित्य का भी उद्धार हो रहा है। कितने ही अपभ्रश ग्रन्थ प्रकाश मे आ गये हैं, जिससे कि हिन्दी भाषा के विकास और इतिहास सम्बन्धी विचारों मे भारी क्रान्ति उत्पन्न हो गई है। हिन्दी के पुरातन जैन कवियो और लेखकों का साहित्य भी प्रकाश मे आ रहा है। जैन धर्म, जैन दर्शन, जैन सघ, जैन साहित्य, राजनीति मे जैन नेतृत्व आदि विषयो पर विविध भाषाओं मे स्वतन्त्र ऐतिहासिक ग्रन्थ, शिला लेख संग्रह, प्रशस्ति संग्रह विज्ञप्ति पत्रसग्रह, ग्रन्थसूचियें, ग्रन्थ कोष, उद्धरण कोष आदि तथा मूर्ति विज्ञान, स्थापत्य, चित्रकला आदि विविध कलाओं और गणित ज्योतिष चिकित्सा विज्ञान आदि विविध विज्ञानों तथा सामान्यतया जैन सांस्कृतिक देनों

के सम्बन्ध मे भी उत्तम कोटि की पुस्तकें प्रकाशित होने लगी हैं । पिछले युगों मे ये कार्य प्राय करके अंग्रेज, जर्मन, फ्रासीसी आदि विदेशी तथा कतिपय जैनेतर भारतीय विद्वानो द्वारा ही सम्पादित हो रहा था, किन्तु अब इस क्षेत्र मे शायद ही कोई विदेशी विद्वान कार्य कर रहा हो, और इस दिशा मे प्रयत्नशील उच्चकोटि के भारतीय विद्वानो मे स्वयं जैन विद्वानों की सख्या भी कम नही है तथा उसमे दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है । कई एक यूनीवर्सिटियो मे भी, विशेषकर श्वेताम्बर समाज के उद्योग से कुछ विद्वान जैन रिसर्च का कार्य कर रहे हैं । मौलिक कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, प्रहसन, निबन्ध, साहित्यिक आलोचन आदि शुद्ध साहित्यिक विषयो के भी अनेक श्रेष्ठ लेखक और कलाकार जैनो मे विद्यमान हैं । किन्तु जैसा कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के करॉची अधिवेशन मे साहित्य परिषद के अध्यक्ष आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने अभिभाषण मे कहा था कि 'अजैन विद्वानो को यह शिकायत अभी तक है कि जैनियो का साहित्य महत्त्वपूर्ण एव विपुल मात्रा मे होते हुए भी अभी तक उसके ऐसे अनुवादित सम्पादित सस्करण प्रकाश मे नही आ पाये जो जैनेतर विद्वत्समाज द्वारा ग्राह्य हो ।' पर वास्तव मे बात बिलकुल ऐसी ही नही है । अनेक जैन ग्रन्थो के वैसे सस्करण प्रकट भी हो चुके है । हॉ जैनो ने उन्हें अजैन जनता और विद्वानो तक पहुचाने का उपयुक्त प्रयत्न नही किया और अजैन विद्वानो ने उन्हे स्वय प्राप्त करके अध्ययन करने मे उदासीनता भी दिखलाई है । कई वर्षों से निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी सार्व सस्था ने हिन्दी जैन साहित्य को अपने पाठ्यक्रम आदि में सम्मिलित करने मे उपेक्षा ही बरती है । अधिकाश विश्वविद्यालय प्रेरणा करने पर भी जैन रिसर्च को अपने यहाँ स्थान देने मे स्वत तैयार नही होते । राजकीय अथवा अखिल भारतीय साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि परिषदो और सस्थानो मे भी उसकी उपेक्षा ही की जाती है । ऐसी परिस्थिति मे जैनों का ही प्रथम कर्त्तव्य है कि वे इन दिशाओ मे दृढ निश्चय के साथ अग्रसर हों,

उक्त विश्वविद्यालय आदि की तथा जैनेतर विद्वानों को जैनाध्ययन की ओर आकृष्ट करें और अपने साहित्य रत्नो को बाह्य समाज के लिये सुलभ कर दें, उनका यथोचित उपयोग किये जाने मे प्रोत्साहन एवं सुविधाएं प्रदान करें तथा सभी महत्त्वपूर्ण पुरातन ग्रन्थों के ऐसे संस्करण भी प्रकाशित कर दें जो सर्वग्राह्य हों।

इस युग के प्रारम्भ के पूर्व से ही देश सार्वजनिक राष्ट्रीयता के प्रभाव से ओत प्रोत रहा है। सतत् आन्दोलनों और भीषण संघर्षों के पश्चात तथा अनेक त्याग और कष्ट सहन करके अब एक प्रकार से पराधीनता के पाश से मुक्त होकर स्वतत्र वायुमडल मे सास ले सका है। इस राष्ट्रीय आन्दोलन मे भी जैन समाज ने अपनी सख्या के अनुपात से कहीं अधिक सहर्ष योगदान दिया, और धन एव जन के यथेष्ठ बलिदान द्वारा स्वातत्र आन्दोलन को सफल बनाने मे पूर्ण सहयोग और सहायता दी। राष्ट्रीयता के रग मे डूबा हुआ साहित्य भी निर्माण किया। और आज भी प्रायः समग्र जैन समाज तन मन धन से राष्ट्रीय महासभा तथा राष्ट्र के सर्वमान्य कर्णधारो के साथ है। राष्ट्र की समस्त राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रगतियो मे वह अभिन्न रूप से उनके साथ है, अपनी स्वतत्र धार्मिक एवं सास्कृतिक सत्ता रखते हुये भी अखिल भारतीय राष्ट्र का अभिन्न एव अविभाज्य अ ग है।

सामयिक पत्र पत्रिकाएं

भारतवर्ष मे छापेखाने के प्रारम्भ और इतिहास पर पीछे प्रकाश डाला जा चुका है। छापेखाने की स्थापना होने पर समाचार पत्रो का प्रकाशन स्वाभाविक था। अस्तु श्री बृजेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय लिखित 'देशीय सामयिक पत्रेर इतिहास, 'खड १' के अनुसार भारत का सर्व प्रथम समाचारपत्र २६ जनवरी सन् १७८० ई० को 'बंगाल गजट' के नाम से अ गरेजी भाषा मे प्रकाशित हुआ। यह पत्र साप्ताहिक था, हिकि साहब इसके

संस्थापक थे और यह दो वर्ष तक चला । इसके पश्चात इन्डिया गज़ट, कलकत्ता गजट, आदि अंग्रेजी पत्र निकले । सन् १७९९ मे भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने अखबारो पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया जो सन् १८१८ मे लार्ड हेस्टिंग्ज द्वारा हटाया गया, और उसके स्थान मे कुछ नियम बना दिये गये । अत इस बीच मे पुराने पत्रो का प्रकाशन और नवीन पत्रो की स्थापना प्राय बन्द ही रही । सन् १८१८ के उपरान्त फिर से नवीन पत्र निकलने लगे । बगला भाषा का सर्व प्रथम पत्र 'दिग्दर्शन' श्रीरामपुर मिशन द्वारा अप्रेल सन् १८१८ मे निकाला गया । मई सन् १८१८ मे बगला का 'समाचार दर्पण' और तत्पश्चात् 'बगला गजट' निकले । उर्दू का सर्व प्रथम पत्र 'जाम इ जहान् नूमा' २८ मार्च सन् १८२२ को और फारसी का 'मीरातुल अखवार १२ अप्रेल सन् १८२२ को निकले । ७अक्तूबर सन् १८२२ को समाचार पत्रो पर फिर से कडे प्रतिबन्ध लगा दिये गये अप्रेल सन् १८२३ मे प्रथम भारतीय प्रेस कानून बना जिसके अनुसार पत्रो के प्रकाशन के लिये सरकार की अनुमति लेना अनिवार्य थी । ४ दिसम्बर सन् १८२७ से यह कानून अ शत रद्द हो गया और सन् १८३५ मे बिलकुल हटा दिया गया, किन्तु सन् १८५७ से वह फिर से लागू कर दिया गया ।

उन्ही बनर्जी महोदय के एक दूसरे लेख 'हिन्दी का सर्व प्रथम समाचार-पत्र' (विशाल भारत, फर्वरी सन् १९३१) से विदित होता है कि हिन्दी का सर्व प्रथम पत्र, जैसा कि प्राय समझा जाता था, सन् १८४५ मे स्थापित 'बनारस अखवार' नही था, वरन् ३० मई सन् १८२६ को कानपुर निवासी प० जुगलकिशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ते से निकाला जाने वाला साप्ताहिक 'उदन्त मार्त्तण्ड' था, जिसका वार्षिक मूल्य दो रुपये था, और जो प्रत्येक मगलवार को ३७, आमडा तल्ला गली कोलू टोला, कलकत्ता से प्रकाशित होता था । इसके पश्चात् ९ मई सन् १८२९ को राजा राममोहन राय द्वारा दूसरा हिन्दी पत्र 'बगदूत' प्रकाशित हुआ और अन्त में सन् १८४५ मे बनारस से 'बनारस अखबार' निकला । मराठी के 'कल्प-

सह आंग्ल आनंदवृत्त' सन् १८६७ में और 'केसरी' सन् १८८० में निकले।

जैन सामयिक पत्रों मे सर्व प्रथम सम्भवतया गुजराती मासिक 'जैन दिवाकर' था जो 'जैन श्वेताम्बर ग्रन्थ गाइड' तथा 'जैन साहित्यनो-संक्षिप्त इतिहास' के अनुसार अहमदाबाद से श्री छगनलाल उमेदचन्द द्वारा वि० स० १९३२ (सन् १८७५ ई०) मे प्रकाशित किया गया था और लगभग दश वर्ष चला सन् १८७६ में केशवलाल शिवराम द्वारा गुजराती 'जैन सुधारस' निकला जो एक वर्ष चलकर ही बन्द हो गया।

दिगम्बर समाज का सर्व प्रथम सामयिक पत्र सन् १८८४ के प्रारम्भ में प० जीयालाल जैन ज्योतिषी द्वारा फर्रुखनगर (उ० प्र०) से प्रकाशित साप्ताहिक 'जैन' था। इसका वार्षिक मूल्य ढाई रुपये था, और यह हिन्दी भाषा का भी सर्व प्रथम जैन पत्र था, दश बारह वर्ष पर्यन्त चला भी। इन्ही पं० जीयालाल ने उसके कुछ ही समय पश्चात् उर्दू मे 'जीयालाल प्रकाश' भी निकालना आरम्भ किया जो कि उर्दू का सर्वप्रथम जैनपत्र था। सितम्बर सन् १८८४ मे शोलापुर से स्वर्गीय सेठ रावजी हीराचन्द नेमचन्द दोशी ने मराठी-गुजराती-हिन्दी का मासिक 'जैन बोधक' निकालना शुरू किया। यह पत्र मराठी का तो सर्व प्रथम जैन पत्र था ही, अब तक जीवित रहने के कारण वर्तमान जैन पत्रो मे भी सर्व प्राचीन है और इने गिने सर्वाधिकजीवी भारतीय पत्रो मे से एक है। इसके पश्चात् सन् १८८४ में ही जैनधर्म प्रवर्तक सभा अहमदाबाद से डाह्या भाई धोलशा जी के निरीक्षण में गुजराती 'स्याद्वाद सुधा' अप्रेल सन् १८८५ मे जैन हितेच्छुसभा भावनगर द्वारा 'जन हितेच्छु' और इसी वर्ष अहमदाबाद से गुजराती में श्वेताम्बर 'जैन धर्म प्रकाश' निकले, जिसमे से अन्तिम पत्र अभी तक चालू रहने के कारण वर्तमान श्वेताम्बर पत्रो मे सर्व प्राचीन है।

इसके पश्चात् तो जैन सामयिक पत्र हिन्दी, गुजराती, मराठी, उर्दू, अंग्रेजी, कन्नडी आदि भाषाओ मे दनादन निकलने लगे। केवल दिगम्बर

समाज के द्वारा ही निम्नोक्त अनेक पत्र कुछ ही वर्षों के भीतर प्रकाश मे आये—सन् १८६२ मे मराठी मासिक 'जन विद्यादानोपदेश प्रकाश; सन् १८६३ मे बगलौर से सेठ पद्मराज द्वारा हिन्दी 'काव्याम्बुधि', सन् १८६३-६४ मे बम्बई से पं० पन्नालाल बाकलीवाल द्वारा 'जैन हितैषी' मासिक जिसका सम्पादन प्रकाशन सन् १६०४ से प० नाथूराम प्रेमी ने किया, प० जुगल किशोर मुख्तार भी कुछ समय तक इसके सपादक रहे। यह पत्र अपने समय का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी जैन मासिक रहा है। सन् १८६४ मे ही दि० जैन महासभा का हिन्दी साप्ताहिक 'जैनगजट' चालू हुआ और बाबू सूरजभान बकील ने उर्दू का जैनहितउपदेशक' नामक पत्र भी निकाला। सन् १८६५ मे हिन्दी मासिक 'जैन प्रभाकर' निकला, १८६६ मे हिन्दी साप्ताहिक 'जैनमार्त्तण्ड' और १८६७ मे बाबू सूरजभान द्वारा ज्ञान प्रकाशक' नामक मासिक पत्रिका, बाबू ज्ञानचन्द जैनी लाहौर द्वारा 'जैन पत्रिका' तथा पडित पन्नालाल बाकलीवाल द्वारा वर्धा से 'जैन भास्कर' निकले। सन् १८६८ मे बम्बई प्रान्तिक दि० जैन सभा की ओर से पडित गोपालदास जी बरैया ने हिन्दी साप्ताहिक 'जैन मित्र' की अपने ही सम्पादन मे स्थापना की। ब्र० शीतल प्रसाद जी ने बहुत काल तक इसका सम्पादन किया। यह पत्र अभी तक चालू है और सूरत से प्रकाशित होता है। सन् १८६६ मे हिन्दी मासिक 'जैनी' और १६०० मे हिन्दी त्रैमासिक 'जैनेतिहास सार' निकले। सन् १६०२ मे मराठी कन्नडी मिश्रित 'प्रगति आणि जिनविजय' निकला और सन् १६०४ मे अग्रेजी 'जैन गजट' का प्रारम्भ हुआ। यह पत्र वर्तमान मे अजिताश्रम लखनऊ से बाबू अजितप्रसाद जी के सम्पादन काल मे निकलता है। इसके कुछ ही समय पश्चात कन्नडी का 'विवेकाभ्युदय' निकला और सन् १६०७ मे सूरत से हिन्दी गुजराती मिश्रित मासिक 'दिगम्बर जैन'। सन् १६२१ से ब्र० पंडिता चन्दा बाई आरा द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक 'जैन महिलादर्श' निकल रहा है, और सन् १६२३ मे पडित बाकलीवाल द्वारा एक बगला पत्र

'जिनवाणी' निकला जो कुछ समय तक चलकर बन्द हो गया । मुनि जिन विजय जी द्वारा सम्पादित हिन्दी गुजराती अग्रेजी का श्वेताम्बर 'जैन साहित्य संशोधक' त्रैमासिक भी अत्यधिक महत्वपूर्ण पत्र था जो कुछ वर्ष चलकर बन्द हो गया । पडित दरबारीलाल सत्यभक्त के सम्पादन में बम्बई का 'जैन जगत' भी कई वर्ष बहुत अच्छा निकला था । उपरोक्त पत्रो के अतिरिक्त और भी अनेक पत्र पत्रिकाए, विशेष रूप से सन् १६२० के पश्चात चालू हुई, जिनमे से अधिकतर अल्पाधिक काल तक चलकर बन्द हो गई । इस प्रकार छापे के प्रारम्भ से अब तक लगभग ढाई सौ जैन सामायिक पत्र पत्रिकाएं निकल चुकी हैं जिनमे से लगभग डेढ़सौ तो अस्तगत हो चुकी और एक सौ के लगभग अभी भी चालू है । प्रारम्भ से अब तक लगभग एक दर्जन सार्वजनिक पत्र पत्रिकाओ का सञ्चालन अथवा सम्पादन भी जैनो द्वारा हुआ है ।

विवरण सूची का संक्षिप्त सार

प्रस्तुत पुस्तक जैन मुद्रित प्रकाशित पुस्तको, सामायिक पत्रो, साहित्यिक सस्थाओं, प्रकाशकों और लेखकों आदि की उस सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण सूची की पूर्व पीठिका है जो कि हमने जुलाई सन् १६४७ मे तैयार की थी और जिसे इस पुस्तक के दूसरे भाग के रूप मे प्रकाशित करने की योजना है । उक्त विवरण सूची मे सकलित तथ्यो से जो निष्कर्ष प्राप्त होते है वे निम्न प्रकार है —

उक्त विवरण सूची मे २६८० पुस्तकों का उल्लेख है जिन्हें भाषा की अपेक्षा ६ विभागों मे विभाजित किया गया है ।

(१) प्रथम विभाग हिन्दी का है जिसमे संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भी सम्मिलित है । इसमे कुल २०५२ पुस्तके जिनमें से--सस्कृत की १८०, प्राकृत की ४४, अपभ्रंश १८, हिन्दी प्राचीन (सन् १८५० अथवा सं० १६२० के पूर्व निर्मित)--२७५,—प्राचीन ग्रन्थों के अर्वाचीन टीका अनुवादादि–३७७.

आधुनिक हिन्दी मौलिक—१११३, और जैन धर्म के सम्बंध में प्रकाशित महत्त्व पूर्ण हिन्दी भाषण व्याख्यानादि—४५.

(२) मराठी की ४८ जिनमें से मौलिक १३ और अनुवाद ३५ हैं।

(३) गुजराती की ७० जिनमें मौलिक ४७ और अनुवाद २३ हैं।

(४) बगला की ५२ जिनमें मौलिक ४२ और अनुवाद १० हैं।

(५) उर्दू की १६८ जिनमे मौलिक १५१ और अनुवाद १७ हैं।

(६) अ गरेजी आदि यूरोपिय भाषाओं में २६० जिनमें से मौलिक २३० और अनुवादादि ६० हैं। इनमे पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित लेख निबन्ध आदि सम्मिलित नहीं है।

पुस्तक निर्माता—उपरोक्त साहित्य के निर्माताओ की दृष्टि से जिनका पूर्णयोग १३०३ है—सस्कृत ग्रन्थों के मूल लेखक १०७, टीकाकार ३८, योग १४५, प्राकृत ग्रन्थो के मूल लेखक १८, टीकाकार २, योग २० अपभ्रंश ग्रन्थो के लेखक ७

हिन्दी प्राचीन पद्य लेखक ४०, गद्य लेखक १३, योग ५३. (बाद की शोध खोज से हमे हिन्दी पुरातन गद्य के ५० से अधिक लेखको और उनकी सवासौ के लगभग गद्य कृतियों का पता चला है). आधुनिक हिन्दी के मौलिक लेखक (गद्य पद्य दोनों के)—-२९५, टीकाकार ४८, अनुवादक ९१, सम्पादक आदि ११८, सग्रह या सकलन कर्त्ता २४, और १९५ ग्रंथ ऐसे हैं जिनके लेखक आदि अज्ञात हैं। मराठी के मौलिक लेखक ७, और अनुवादक १४, अज्ञात ६. गुजराती के मौलिक लेखक २३, और अनुवादक १५, अज्ञात ७. बंगला के मौलिक लेखक १५, अनुवादक ५, और अज्ञात १. उर्दू के मौलिक लेखक ५३ और अनुवादक १२ अ गरेजी आदि के मौलिक लेखक १०३, अनुवादक ३५, और अज्ञात ८.

प्रकाशक—-इन पुस्तकों के निर्माण कराने और प्रकाशित करने में जिन जिन सस्थाओ तथा व्यक्तियो ने भाग लिया है उनकी संख्या निम्न प्रकार है।

(१) साहित्यिक शोध, खोज, निर्माण, प्रकाशन, प्रचार आदि उद्देश्यों को लेकर सामाजिक द्रव्य से अथवा व्यक्तिगत ट्रस्ट आदि के द्वारा स्थापित एवं सञ्चालित जैन साहित्यिक सस्थाएं और ग्रन्थ-माला समितियें–३९.

(२) अन्य विविध धार्मिक सामाजिक जैन सस्थाएं—–९१.

(३) जैन व्यवसायी प्रकाशन और पुस्तक विक्रेता—३१.

(४) जैन स्त्री पुरुष, व्यक्तिगत रूप से–२६०

(५) अजैन सज्जन, सस्थाएं और प्रकाशक–२६.

पूर्णयोग ४४७.

विषय विभाजन—की दृष्टि से उक्त पुस्तकों की सख्या निम्न प्रकार है—

(१) धर्म २७५, (२) सिद्धात एव तत्त्व ज्ञान १२२.

(३) अध्यात्मिक ग्रन्थ १५९, (४) दर्शन एव न्याय शास्त्र ६४

(५) आचार शास्त्र १५२, (६) पुराण चारित्र ११९, (७) प्राचीन कथा साहित्य ७८, स्तोत्र स्तुति पद-भजनादि सग्रह—२११,

(९) पूजा प्रतिष्ठापाठ और तीर्थमहात्म्यादि १३९, (१०) मन्त्र तन्त्रादि ७. (११) नीति सुभाषितादि १९, (१२) तुलनात्मक अध्ययन, समीक्षा परीक्षा, खडन मडनादि १६५, (१३) साहित्य व्याकरण छन्द अलकार कोषादि ५७, (१४) विज्ञान गणित ज्योतिष निमित्त शास्त्र, वैद्यक, रत्न परीक्षा, वास्तुसार आदि १८,

(१५) इतिहास पुरातत्त्व राजनीति, जीवन चरित्र आदि १९५,

(१६) भूगोल खगोल, यात्रा विवरण, स्थान परिचयादि ५५,

(१७) काव्य नाटक उपन्यास कहानी आदि २२८,

(१८) समाज सुधार व शिक्षा (१९) स्त्री व बालकोपयोगी ७५,

(२०) महत्त्वपूर्ण भाषण व्याख्यानादि ५०, (२१) शेष विविध १०१.
इस विषय विभाजन में अंगरेजी पुस्तके सम्मिलित नही की गई हैं।

सामयिक पत्र पत्रिकाएं—अब तक लगभग अढ़ाई सौ जैन साम-

सिक पत्र पत्रिकाएं विभिन्न भाषाओ तथा साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रिमासिक, षाठमासिक आदि विविध रूपो मे निकल चुकी हैं। इनमें से जिनके विषय मे कुछ ज्ञात हो चुका है ऐसी १६६ पत्र पत्रिकाएं (६० दिगम्बर और ६६ श्वेताम्बर आदि) तो अल्पाधिक समय तक चल कर बन्द हो चुकी हैं।

वर्तमान मे ज्ञात चालू जैन पत्रो की सख्या ८४ है जिनमे से लगभग ५० दिगम्बर, २६ श्वेताम्बर और ८ स्थानक वासी है। इनमे से हिन्दी के ५० मराठी ३, गुजराती १६, कन्नडी २, उर्दू १, अ गरेजी २, हिन्दी गुजराती मिश्रित ७, हिन्दी मराठी १, हिन्दी उर्दू १, हिन्दी अ गरेजी १ हैं। इन पत्रो मे षाठमासिक २, त्रैमासिक ५, मासिक ४५, पाक्षिक १६ और साप्ताहिक १६ है। दैनिक कोई नही है।

सम्पादन प्रकाशन की उत्तमता तथा साहित्यिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से निम्नलिखित वर्तमान जैन पत्र पत्रिकाएँ पर्याप्त महत्त्व पूर्ण हैं—अनेकान्त (देहली), जैन सिद्धान्तभास्कर (आरा), दी जैना एटीक्वेरी (आरा), ज्ञानोदय (बनारस), श्री जैन सत्य प्रकाश (अहमदाबाद), जैन भारती (कलकत्ता), जैन गजट अ गरेजी (लखनऊ), आत्मधर्म (सोनागढ), जैन महिलादर्श (सूरत) जैन मित्र (सूरत), दिगम्बर जैन (सूरत), जैन सन्देश (आगरा), वीर वाणी (जयपुर), जैन जगत (वर्धा), सगम (वर्धा), वीर (देहली), श्रमण (बनारस), जैन बोधक (शोलापुर), प्रगति अणि जिन विजय (बेल गाँव), तारण सदेश (दमोह), जैन प्रचारक (देहली) जैन प्रकाश (बम्बई), प्रबुद्ध जैन (बम्बई), जिनवाणी (भोपालगढ), तरुण जैन (कलकत्ता), वीर लोकाशाह (जोधपुर) श्वेताम्बर जैन (आगरा), जैन (भाव नगर) इत्यादि।

जैन सामयिक पत्रो के सम्बन्ध मे जैन मित्र (कार्तिक सुदी ८, वी० स० २४६४, पु० ११-१२) में 'दिगम्बर जैन समाज के भूत और वर्तमान कालीन पत्र' शीर्षक से श्री शान्ति कुमार जैन ठवली, नागपुर ने ४८ भूतकालीन और २६ चालू पत्रो की सूची प्रकाशित की थी। उसके पश्चात श्रीयुत अगर चन्द्र नाहटा ने ओस वाल नवयुवक वर्ष ८ संख्या १, मई सन् १९३७ के अङ्क मे

पृष्ठ ४२ पर 'जैन समाज के वर्तमान सामयिक पत्र' लेख में उस समय चालू ५६ पत्रो की संक्षिप्त परिचयात्मक सूची दी थी तथा जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ५ किरण १, पृ० ३६ पर प्रकाशित अपने लेख 'भूतकालीन जैन साम-यिक पत्र' में समाचार पत्रो के इतिहास पर संक्षित प्रकाश डालते हुए १०५ भूतकालीन तथा ६६ चालू पत्रों की नाम सूची दी थी। और जैन मित्र वर्ष ५१, अङ्क ७ (ता० २२ दिसम्बर सन् १६४६) में जैन समाज के समाचार पत्र शीर्षक के अन्तर्गत ५७ चालू पत्रो को जिनसे ३३ दिगम्बर और २४ श्वेताम्बर हैं तथा ६२ भूतकालीन पत्रों की जिनमे ६८ दिगम्बर और २४ श्वेताम्बर हैं एक सूची दी है।

उपरोक्त विभिन्न सूचियों मे से किसी मे भी वे लगभग एक दर्जन सार्वजनिक पत्र सम्मिलित नही हैं जिनका सम्पादन, प्रकाशन अथवा संचालन जैनों द्वारा किया गया है और जिनमें से कई पत्र पर्याप्त लोक प्रिय भी रहे हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामयिक पत्रों और पत्र कला की दृष्टि से भी अल्प सख्यक जैन समाज ने पर्याप्त उन्नति की है और वह किसी से पीछे नहीं है। यदि इसमें कोई दोष है तो यही कि जिन पत्रो की सख्या आवश्यकता से अधिक है, उनका पठन प्राय जैन समाज के भीतर ही सीमित होने से एक भी पत्र की ग्राहक सख्या उसे स्वनिर्भर करने के लिये पर्याप्त नहीं है। फल स्वरूप लेखकों और पत्रकारो की भी अत्यधिक दुर्दशा है।

जहाँ तक पुस्तक साहित्य का सम्बन्ध है, उपरोक्त विवरण सूची मे जो २६८० पुस्तकें उल्लिखित हुई हैं उनके अतिरिक्त भी कम से कम दो ढ़ाई सौ ऐसी पुस्तके अवश्य निकल आयेंगी जिनका कि साधनाभाव अथवा ज्ञात न हो सकने के कारण कोई उल्लेख नही किया जा सका। गत तीन वर्षों मे भी (अर्थात् उक्त सूची के निर्माण करने के बाद से) लगभग एक सौ पुस्तके और प्रकाशित हो चुकी है जिनमे से अधिकाश हिन्दी की है और जिनमे से एक दर्जन से अधिक पर्याप्त उच्च कोटि के विशालकाय ग्रन्थ हैं। साथ ही उपरोक्त लग-भग ३००० पुस्तकें प्राय करके केवल दिगम्बर समाज द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

ही है और उनमे भी कन्नडी, तामिल, तेलगू, मलयालम आदि भाषाओं में प्रकाशित जैन पुस्तको का समावेश नही है। दो ढाई हजार के लगभग पुस्तकें श्वेताम्बर तथा स्थानकवासी आदि अन्य जैन सम्प्रदायों द्वारा भी प्रकाशित हो चुकी है।

अस्तु डा० माता प्रसाद गुप्त की पूर्वोल्लिखित 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में दी हुई लगभग ५५०० पुस्तको और लगभग ४५०० लेखको के प्राय. बराबर ही समग्र मुद्रित प्रकाशित जैन पुस्तक साहित्य और उसके निर्माता आदि हैं। यदि केवल हिन्दी जैन पुस्तको को ही लिया जाय तो वे भी समग्र हिन्दी पुस्तकों के दो तिहाई से अधिक अवश्य हैं, और भाषा, शैली, विषय महत्त्व और लोकोपयोगिता की दृष्टि से भी सामान्यत उनकी अपेक्षा निम्नकोटि की नही है।

साराश यह है कि स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्र, भारत के सास्कृतिक विकास और साहित्यिक प्रगति के लिये यह परम आवश्यक है कि देश के साहित्यिक और विद्वान जैन साहित्य को भी समग्र भारतीय साहित्य का अभिन्न अविभाज्य अङ्ग मानकर निष्पक्ष एव सहृदय दृष्टि से ज्ञान की विविध शाखाओ मे उसका अध्ययन मनन और उपयोग करे। उनकी दृष्टि मे वह उपनिषद जैन आगम और बौद्ध त्रिपिटक, पाणिनी और पूज्यपाद, पातञ्जलि अश्वघोष व्यास और कुन्द कुन्द व समन्तभद्र, चरक सुश्रुत उग्रादित्य और नागार्जुन, शकर धर्मकीर्ति और अकलक, कालिदास और जिनसेन, योगीन्दु सरहपा कबीर और दादू, तुलसीदास और बनारसीदास इत्यादि महापुरुषों और उनके विचारो एव रचनाओं का समान महत्त्व होना चाहिये। बिना किसी भेद भाव के इन सभी महान पूर्व पुरुषो का सम्मान एव अध्ययन ज्ञान के सर्वतोमुखी विकास, राष्ट्र की एक सूत्रता तथा देश और समाज के कल्याण का अमोघ साधन है, इसमें कुछ भी सन्देह नही।

जैनाध्ययन का महत्त्व और प्रगति

श्रमण सस्कृति की प्रधान धारा जैन सस्कृति सुदूर अतीत से चली आई

प्राय: सर्व प्राचीन विशुद्ध भारतीय संस्कृति है। अत भारतीय संस्कृति का समुचित मूल्यांकन करने के लिए और आधुनिक भारत के ही नहीं वरन विश्व के भी सांस्कृतिक विकास मे उससे पूरा पूरा लाभ उठाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जैन श्रमण सस्कृति के विविध अ गो का विशद एव गभीर अध्ययन किया जाय। वैसे तो १८ वी शताब्दी ई० की अतिम पाद में सर विलियम जोन्स से प्रारंभ करके अनेक पाश्चात्य विद्वानो द्वारा भारतीय साहित्य, कला, पुरातत्त्व तथा अन्य सांस्कृतिक विषयों का अध्ययन प्रारभ हो गया था। १९ वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे अनेक उद्भट भारतीय विद्वान भी उक्त कार्य में सक्रिय सहयोग देने लगे थे, और सौ वर्ष के उपरात तो इस क्षेत्र में भारतीय विद्वानों का ही प्राय एकाधिकार हो गया है। इन पाश्चात्य एवं पूर्वीय विद्वानों ने अपने उपरोक्त अध्ययन के दौरान मे प्रसगवश जब तब जैनधर्म, सस्कृति, इतिहास, साहित्य, कला, पुरातत्त्व, प्रच्यतत्त्व आदि का भी अल्पाधिक अध्ययन एव खोज शोध की और अपने महत्त्वपूर्ण गवेषणात्मक विवेचनो के द्वारा जैनाध्ययन को प्रगति प्रदान की। तथापि भारतीय अथवा विदेशी प्राच्यविदो का ध्यान अनेक कारणो से अभी तक भी उसकी ओर इतना आकृष्ट नही हो पाया जितना कि होना चाहिये था।

सास्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से जन धर्म, सिद्धान्त, तत्त्वज्ञान, दर्शन और सामाजिक आचार विचार एव पर्व आदि के अतिरिक्त वर्तमान भारत को प्रदत्त जैन सस्कृति की स्थूल पुरातन भेटे निम्नप्रकार है---विविध भाषामय तथा विविध विषयक विपुल जैन साहित्य, जैन ग्रन्थो की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ, जैन चित्र कला, जैन मूर्त्त कला, जैनस्थापत्य और शिलाखडो, प्रतिमाओ, ताम्रपत्रो आदि पर अकित जैन पुराभिलेख, इत्यादि।

- जैन ग्रहस्थ के देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, सयम, तप एव दान रूप दैनिक छह आवश्यक कार्यो मे दान देना उनका एक महत्त्वपूर्ण एव आवश्यक कर्त्तव्य है। शास्त्र, अभय, आहार एवं औषधिरूप चतुर्विध दान प्रणाली में शास्त्रदान का स्थान बहुत ऊंचा है। अत. शास्त्र दान सबधी इस धार्मिक

विधान, जैन साधु वर्ग की सदैव से चली आई ज्ञान पिपासा अध्ययन शीलता और साहित्यिक अभिरुचि तथा धनी श्रावक, की उदारता पूर्ण सहायता सहयोग एव श्रुतभक्ति के कारण आज भी भारतवर्ष के विभिन्न भागों में ऐसे अनेक जैन ग्रन्थ भडार विद्यमान हैं जो अपने प्राचीन प्रमाणीक महत्वपूर्ण अंश समझे जाने योग्य हैं।

प्राकृत—प्राचीन भारतीय सस्कृति की अनेक विधि धाराओ का महत्व भली भाति समझने के लिए सस्कृत और प्राकृत, दोनो ही साहित्यो का साथ साथ अध्ययन करने की आवश्यकता है। अभिलेखीय आधार स्पष्टतया सूचित करते है कि सर्व साधारण मे भावव्यजना के लिये प्राकृत भाषायें अत्यधिक लोकप्रिय थी। उत्तर तथा दक्षिण दोनो ही प्रदेशों मे प्राचीनतम काल से राजकीय आदेश तथा व्यक्तिगत लेखादि प्राकृत मे ही लिखे मिलते हैं। संस्कृत नाटको मे स्त्री आदि पात्रों के द्वारा प्राकृत का बहुत प्रयोग इस बात को प्रमाणित करता है कि एक समय था जबकि प्राकृत भाषाएँ ही लोक प्रिय तथा साधारण बोल चाल की भाषाएँ थी। वस्तुत कई एक महिला कवित्रियो ने प्राकृत में ही काव्य रचना की है। * इसमे भी सन्देह नहीं है कि जैन धार्मिक एव लौकिक गद्य पद्यात्मक प्राकृत साहित्य का सिलसिला अति प्राचीन काल से मध्य युग पर्यन्त अविच्छिन्न रूप से चला आया है, और यदि इस प्राकृत जैन साहित्य को सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य में से निकाल दिया जाय तो अवशेष नगण्य रह जाय।

किन्तु यद्यपि प्राय समस्त श्वेताम्बर जैन अर्धमागधी आगमग्रन्थ अ शत. अथवा पूर्णत एकाधिक सस्करणों में प्रकाशित हो चुके हैं, तथापि मूल पाठों के समालोचनात्मक दृष्टि से सुसम्पादित संस्करण बहुत ही थोडे हैं। निर्युक्तियों एव चूर्णियो सहित इस समस्त अर्धमागधी साहित्य के ऐसे एक रस

---

*प्रो० जे० बी० चौधरी कृत 'संस्कृत कवित्रियों' भा० २। कर्पूर मंजरी नाटक का प्रथम अभिनय भी विदुषीरत्न अवन्ति सुन्दरी की प्रेरणा पर ही हुआ था।

प्रकाशनों की आवश्यकता है। पाटन के 'हेम चन्द्राचार्य ज्ञान मंदिर' ने हस्त-लिखित प्रतियों के स्थानीय संग्रहों को सुरक्षित एवं व्यवस्थित करने का जो स्तुत्य कार्य किया वह अन्य स्थानों के लिये भी अनुकरणीय है और वह उपरोक्त प्रकार के संस्करणों प्रकाशन के लिये आवश्यक अन्वेषण कार्य के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। समग्र आगम ग्रन्थों के ऐसे प्रमाणिक सम्पादन से अर्धमागधी कोष,' 'पाइयसद्द महाण्णव' आदि वर्तमान कोष ग्रंथों की कमी पूर्ति हो जायगी। ऐसे जैन पारिभाषिक शब्दों या पदों का जिन के कि अर्थों का तारतम्य जैन साहित्य के विभिन्न स्तरों में अध्ययन किया जा सके, कोई भी प्रमाणीक संक-लन अभी तक नही बन पाया है। सुआली और जैकोबी ने ऐसे एक प्राकृत कोष के निर्माण करने के प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया था, किन्तु उसका कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। इधर वीर सेवा मदिर देहली में भी एक ऐसे ही पारिभाषिक जैन शब्द कोष 'जैन लक्षणा वलि' का निर्माण कई वर्षों से हो रहा है।

हरिभद्र सूरि की 'समराइच्च कहा प्राकृत अथवा जन महाराष्ट्री कथा साहित्य का सुन्दर व श्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करती है, किन्तु उसकी पूर्ववती 'कुवलय माला कहा' तथा उत्तरवर्ती 'वलासवई कहा' अभी तक संभवतया अप्रकाशित ही है।

प्राकृत साहित्य का वह थमिक स्तर जो दिगम्बर जैनो द्वारा मान्य एवं अत्यन्त पवित्र समझा जाता है, शिवार्य की भगवती आराधना, कुन्द कुन्द के पाहुड़ ग्रन्थ; वट्टकेर [1] कृत मूलाचार आदि विक्रम की प्रथम शताब्दी के ग्रन्थों में उप-लब्ध होता है। ऐसा विश्वास था और जो सत्य ही सिद्ध हुआ, [2] कि इनसे भी अधिक प्राचीनतर पाठ षट्खडागमादि दिगम्बर जैन सिद्धान्त ग्रन्थो की धवल जयधवल आदि विशाल टीकाओं मे जड़े पड़े हैं। इन महान ग्रंथो के

(१) ऐसा विश्वास करने के भी कारण है कि यह कुन्द कुन्द का ही अप-लाम था,' देखिये जैना सेटीक्वोरी; भा० कि०

(२) जै० ए०, भा० ६ पृ० ७५-८१, डा० हीरालाल का लेख।

सुसम्पादित अनुवादित सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसे गूढ जैन पारिभाषिक तत्त्व ज्ञान विषयक महान ग्रथो के, जो कि यत्र तत्र संस्कृत गद्यांशो से अलंकृत नैयायिक शैली की प्रौढ प्राकृत मे है, प्रकाश मे आने से भारतीय साहित्य की एक महत्त्व पूर्ण नवीन शाखा अध्ययनार्थ प्रस्तुत हो गई है। उपरोक्त सस्करणों की विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावनाओ मे अनेक ऐतिहासिक तथ्यो पर भी नवीन प्रकाश पड़ा है तथा और नवीन ऐतिहासिक शोध खोज को प्रोत्साहन मिला है।[1] उपरोक्त सभी ग्रन्थो मे बहुत सी सामग्री ऐसी है जो दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदाय भेद से भी प्राचीनतर है। यदि उसकी तुलना निर्युक्तियो आदि के साथ की जाय तो अनेक दिलचस्प तथ्यो के प्रकाश मे आने की सभावना है।

दिगम्बरो एव श्वेताम्बरो का प्राकृत एव सस्कृत भाषाओ मे निबद्ध विशालकाय टीका साहित्य अभी तक मूल पाठो के अर्थों को समझने के लिये ही अध्ययन किया जाता रहा है। जो टीका ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके है उनमे से इने गिनो का ही आलोचनात्मक अध्ययन हुआ है। निर्युक्तियो, चूर्णिये तथा अन्य सस्कृत प्राकृत टीकाएँ भी ज्ञातव्य सूचनाओ के ऐसे गहन भडार है जिनमे पूर्व पक्ष के प्रतिपादन के अतिरिक्त अनेक जैन अजैन ग्रथो के उद्धरण, अनुश्रुतिये नीति वचन, उपदेशात्मक आख्यान उपाख्यान, तथा अनेक तत्कालीन सॉस्कृतिक सूचनाएँ भी उपलब्ध होती है। किन्तु इन सब विषयो की व्यवस्थित छाट, गवेषणा सकलन तथा यथोचित मूल्याकन अभी तक प्राय नही हो पाया। इनमे से अनेक ग्रन्थो की तिथिये ज्ञात है, अत उनमे वर्णित विषय कालानुक्रम की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। अस्तु प्रो० विधु शेखर भट्टाचार्य ने दिखलाया कि गुणरत्न, धर्म कीर्ति के प्रमाण वार्तिक से भली भाँति परिचित था और उसने उक्त ग्रन्थ से अनेक उद्धरण भी दिये है।[2] श्री पी० के० गोडे ने अपने आकर्षक निबन्ध "शकराचार्य के पूर्ववर्ती जैन आधारो मे भगवत गीता" मे ऐसे उद्ध-

---

(१) अनेकान्त तथा जैना ऐंटेक्वेरी में प्रकाशित धवला का समय तथा स्वामी वीर सेन संबन्धी हमारे विभिन्न लेख।

(२) इ० हि० क्वा, १६, पृ० १४३.

रणों की पाठगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।[1] डा० उपाध्याय ने सिद्ध किया कि गोमट्टसार की सस्कृत 'जीवतत्त्व प्रदीपिका' टीका के कर्त्तव्य का श्रेय जो केशववर्णी को दिया जाता रहा है वह भ्रम पूर्ण है, और उसके वास्तविक कर्त्ता १६ वी शताब्दी के प्रारम्भ मे दक्षिण कनारा के राजा सालुव मल्लिराय के समकालीन कोई नेमिचन्द्र थे।[2] इन उद्धरणो की जाँच बहुधा उक्त टीकाओं की समयावधि निर्धारित करने मे भी सहायक होती है जैसा कि डा० उपाध्याय ने मूलाचार की वसुनन्दिवृत्ति पर से[3] तथा श्री गोडे ने मलयगिरि की तिथि के सम्बन्ध मे[4] दिखाने का प्रयत्नकिया है। गतदर्शक मे प्रकाशित कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो की प्रस्तावनाओं मे प० महेन्द्र कुमार, प० कैलाश चन्द्र, प० जुगलकिशोर मुख्तार, प० दरबारी लाल कोठिया आदि ने तथा अपने फुटकर लेखो के रूप मे कई अन्य विद्वानो ने भी इस प्रकार की सामग्री का विश्लेषण एव उपयोग किया है।

अपभ्रंश——भाषा और साहित्य का अध्ययन प्राच्य विद्या का एक नवीन क्षेत्र है। जैकोबी, दलाल, गुणे, शहीदुल्ला, गाधी, वैद्य, उपाध्ये, हीरालाल एल्सफोर्ड आदि विद्वानो ने अनेक मूल्यवान अपभ्रंश ग्रथो का सम्पादन किया है तथा इस भाषा के स्वरूप के सम्बन्ध मे महत्त्व पूर्ण विवेचन किये है। डा० पी० एल० वैद्य ने पुष्पदत्त के महापुराण का विद्वत्तापूर्ण सम्पादन किया। महापडित राहुल साकृत्यायन ने महाकवि स्वयभू की रामायण पर अभूत पूर्व प्रकाश डाला। प्रेमी जी ने भी इन प्रारम्भिक जैन अपभ्रंश कवियो के सम्बन्ध मे ज्ञातव्य सूचनाएँ दी। डा० उपाध्ये ने जोइन्दु के परमात्म प्रकाश का और प्रो० हीरालाल ने भी कई अपभ्रंश ग्रथो का सम्पादन किया है। प० परमा-

---

(१) एनल्स भा० ओ० रि० इ०, २०, पृ० १८८ फुटनोट

(२) इपि० कर्णा, ७, १,

(३) बूल्नर कमेमोरेशन वाल्यूम, लाहौर १६४० पृ० २५७ फु० नो०

(४) जै० ए०, भा० ५, पृ० १३३ फु० नो

चन्द्र शास्त्री ने कतिपय मध्य कालीन जैन अपभ्रंश कवियों का परिचय दिया है।[1]

अपभ्रंश भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में जो कुछ अधुना ज्ञात है वह उसकी तुलना में नगण्य सा है जो कि अभी भी राजपुताना, गुजरात आदि के ग्रंथ भंडारों मे दबा पड़ा है। राजस्थान, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, संभवतया उत्तर प्रदेश मे भी, सर्वत्र, ६ ठी शताब्दी पर्यन्त लगभग एक सहस्त्र वर्ष तक अपभ्रंश भाषा का अभ्यास और प्रचलन बहुलता के साथ रहा प्रतीत होता है, सो भी विशेष कर जैनो द्वारा। अपभ्रंश कविता अपनी भाषा सम्बन्धी विशेषताओ के अतिरिक्त, छन्द शास्त्र, आलंकारिक प्रयोग, नीति तथा तत्कालीन जगत के निकटतम अनुवीक्षण से ओत प्रोत है। उद्योतन सूरि के शब्दो मे उसका शब्द प्रवाह पार्वतीय स्रोत की नाईं द्रुतवेग से प्रवाहित होता है। उसके युद्ध वर्णन अत्यन्त रोमाञ्चक और प्रेम भक्ति करुणा आदि कोमल भावो के चित्रण आश्चर्यजनक रूप से सजीव होते है। यद्यपि अपभ्रंश साहित्य का सम्बध प्राय करके उच्चवर्गों से है तथापि वह सार्वजनिक जीवन के विविध अंगों को भली भाति प्रतिबिम्बित करता है। साहित्य के इस क्षेत्र में न केवल एक शुष्क भाषाविज्ञ को ही प्रचुर उपयोगी सामग्री उपलब्ध होती है वरन एक भावुक कलाकार अथवा काव्य रसिक को भी अति रुचिकर काव्यानन्द का आस्वादन प्राप्त होता है। भारतीय साहित्य मे कही अन्यत्र शब्द और भाव का, बाह्य संगीत और अन्तरंग गेयतत्त्व का ऐसा सुन्दर सामंजस्य उपलब्ध नही होता। साथ ही, लेखीय प्रमाण के रूप मे अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती कवियों की कृतियों का महत्त्व उनके पश्चाद्वर्ती महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि लेखको की रचनाओ से कही अधिक है।

---

(१) हमारे द्वारा सम्पादित जो इन्दु के मांगसार आत्मदर्शन की भूमिका तथा अनेकान्त १६४५; में प्रकाशित हमारा लेख 'नागभाषा और नाग सभ्यता' भी पठनीय है।

अपभ्रंश साहित्य का गंभीर अध्ययन एक अन्य दृष्टि से भी आवश्यक है। वह गुजराती व राजस्थानी भाषाओं के विकास के इतिहास के लिए निश्चयतः अत्युपयोगी है। यही नहीं, बल्कि विद्वानों ने तो यह बात भी प्रायः निर्विवाद स्वीकार करली है कि कतिपय गौण स्थानीय भेदों को लिए हुए अपभ्रंश भाषा ही जोकि प्रायः सम्पूर्ण उत्तरी एवं मध्य भारत मे बहुलता के साथ प्रचलित थी, आधुनिक भारतीय आर्य लोक भाषाओं का मूलाधार, उद्गम स्रोत एवं प्रकृत रूप है। अतएव इसमें सन्देह नही कि उसका अध्ययन उक्त प्रान्तीय भाषाओं के शब्द कोष तथा व्याकरण सम्बंधी नियमों को समृद्ध करने में अत्युपयोगी सिद्ध होगा और अन्तर प्रान्तीय व्यवहार संवर्द्धन के हित हमारी राष्ट्रीय भाषा के शब्द भडार के समुचित निर्माण की वर्तमान समस्या को सुलझाने में भी सहायक होगा। जैनो के मूल आर्ष ग्रन्थो तथा उनकी टीकाओं में प्रयुक्त प्रयोगों के सम्बन्ध से यदि प्राकृत भाषाओं का लिपि विज्ञान, वर्ण विज्ञान एवं व्याकरण विषयक व्यवस्थित अध्ययन चालू किया जाय तो वह निश्चय ही मध्य कालीन भारतीय आर्य साहित्यिक ज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

वास्तव मे, स्वय आचार्य हेमचद्र ने अपभ्रंश भाषा की व्यवहार्य रूपरेखा प्रदान करदी थी और अब जैकोबी, हीरालाल, वैद्य, उपाध्याय, एल्सफोर्ड प्रभृति विद्वानों ने उसके आदर्श सम्पादित सस्करण भी प्रस्तुत कर दिये है। सामान्यत. काम चलाने से लिए 'पाइयसद्दमहाण्णव' उसका एक अच्छा कोष भी है। अपभ्रंश साहित्य की यह भी विशेषता है कि उसमें भाषा के लिए उपयुक्त छन्दो का ही प्रयोग हुआ है। प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के छन्दो-अनुशासन के सम्बंध में प्रो० एच० डी० वेलकर द्वारा प्रस्तुत मूल्यवान सामग्री और विवेचन उक्त साहित्य के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। पूर्वी अपभ्रंश के सम्बन्ध में श्री हरप्रसाद शास्त्री, शहीदुल्ला, बागची, चौधरी आदि विद्वानो ने अच्छे ज्ञातव्य प्रदान किये हैं। अस्तु प्राकृत भाषाओं की अथवा मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओं की, जिनमे कि भगवान महावीर ने अपने

जीव दया मूलक सिद्धान्तो का उपदेश दिया, 'जिनमे सम्राट प्रियदर्शिन ने अपने स्मरणीय अभिलेख खुदवाये, जिनमे सैकड़ों कवियों ने जिनमें से कि हालकी सतसई और स्वयभू के निर्देशो द्वारा हमे केवल कुछ एक के ही नाम प्राप्त हुए है–लोक जीवनके विविध अगोके सम्बधमें आल्हाद पूर्णगान किया, जिनमे कालिदासके स्त्री पात्रोने अपने पत्र लिखे, वाक्पति, प्रवरसेन, उद्योतन, हरिभद्र, राजशेखर, स्वयभू, पुष्पदत. गुणचन्द्र,रामपाणिवाद तथा अन्य विभूतियोने अपनी मनोहारी गद्य-पद्य रचनाएं की, जोइन्दु तथा कान्ह जैसे सन्तो ने अपने रहस्यवादी विचारो की अभिव्यजना की, जिनमें कि राजपूत चरणों के वीरतापूर्ण गीत आर्यावर्त के चारो कोनो में गू ज उठे, और जिनकी कि गोद मे वे आधुनिक भारतीय लोक भाषाए जन्मी और पनपी कि जिन्हे समृद्ध करने के लिए हम आज प्रयत्नशील है तथा जिनपर हमे इतना गर्व है––भारतीय सस्कृति तथा सभ्यता को समझाने के लिए उनकी उपेक्षा नही की जा सकती। ये प्राकृत और अपभ्र श भाषाए सहस्त्रो वर्ष पर्यन्त सार्वदेशिक और और सार्वजनीन रही, प्राय सर्व ही प्रान्तीय भाषाओ को, यहा तक कि द्रविड वर्ग की कन्नडी आदि भाषाओ को भी इन्होने पर्याप्त रूप मे प्रभावित किया। और सर्वाधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि विभिन्न देशीय प्राकृत और अपभ्र श भाषा मे आधुनिक प्रान्तीय भाषाओ की भाति कोई भेद पक अन्तर ही न था। उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम सवत्र उनका प्राय एकसा प्रयोग होता था, साहित्य मे भी और बोलचाल मे भी। उनके पैशाची, शौरसेनी, गौडी, महाराष्ट्री आदि भेद वास्तव मे क्षेत्रपरक नही थे। जैसा कि डा० उपाध्याय ने स्पष्ट कहा है, यह कथन करना कि महाराष्ट्री प्राकृत के ग्रन्थ महाराष्ट्र मे ही लिखे गये अथवा जैन महाराष्ट्री का प्रयोग महाराष्ट्र के जैनो ने किया और शौरसेनी का शूरसेन देश के जैनो ने, नितान्त भ्रमपूर्ण है। यही बात तथा कथित विभिन्न अपभ्र शो के विषय मे है। इन भाषाओ का प्रदेश विशेष के साथ कोई सम्बध ही न था। वे तो चिरकाल पर्यन्त भारत वर्ष के सर्व साधारण की भाषाए रही थी, अन्तर्प्रान्तीय थी और सच्चे अर्थों मे अपने-अपने समय मे इस देश की राष्ट्रीय-लोक भाषाए थी।

अन्य भाषायें—मध्ययुगीय भारतीय आर्य भाषाओं के क्षेत्र के अतिरिक्त, जैन लेखको ने भारतीय ज्ञान की विविध शाखाओं में न केवल संस्कृत प्राकृत आदि मे ही वरन् कई द्रविड भाषाओं में भी पर्याप्त योगदान किया है। अनेक प्राच्यविदो द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों मे यथा शब्द शास्त्र, छन्द शास्त्र, काव्य शास्त्र, व्याकरण, राजनीति, न्याय, चिकित्साशास्त्र, गणित, ज्योतिष आदि मे तद्विषयक जैन ग्रन्थों का अध्ययन भी किया जाने लगा है, किन्तु ये अध्ययन प्राय. करके संस्कृत साहित्य तक ही सीमित है।

इस सम्बध में विचार करने के लिए जैन साहित्य को ही अध्ययन की इकाई मानकर चलना अधिक सुविधा जनक होगा, यद्यपि जैन ग्रन्थों से यह स्पष्ट है कि जैन विद्वानो की विविध विषयक साहित्यिक साधना भारतीय साहित्य की अन्य धाराओं से सर्वथा पृथक कभी नही रही। पूज्यपाद पातञ्जलि के महाभाष्य मे पूर्णतया निष्णात थे, अकलक ने अपने पूर्ववर्ती बौद्ध नैयायिकों की कृतियो का गभीर अध्ययन किया और उनका सयुक्तिक खडन एव आलोचना की। हरिभद्र ने तो दिङ्नाग के न्याय प्रवेश पर टीका भी लिखी। रविकीर्त्ति एव जिन सेन जैसे कवि पु गव कालिदास और भारवि की कृतियो से भली प्रकार परिचित थे और उनमे आदर भाव रखते थे। सिद्धचन्द्र और चारित्रवर्धन जैसे ग्रन्थकारो ने बाण तथा माघ के ग्रन्थो की टीकाए लिखीं। डा० हर्टल के कथनानुसार पचतत्र जैसे सर्व प्रसिद्ध ग्रन्थ के जितने सस्करण यूरोप आदि विभिन्न भारतेतर देशों में पहु चे वे सब ही जैन विद्वानो द्वारा किये गये मूल ग्रन्थ के सवर्द्धित, परिवर्द्धित अथवा परिवर्तित रूप थे, तथा जैन 'शुक सप्तति' ही एक मात्र ऐसी भारतीय रचना है जो अपने मूल रूप मे ही सम्पूर्ण जैसी की तैसी भारत के बाहर सुदूर देशों मे पहुची और प्रचार को प्राप्त हुई। अतएवर्ष भारतव के सम्पूर्ण साहित्यिक जाल के रूप एव विकास को पूर्णतया समझने के लिए जैन साहित्य का अध्ययन परमावश्यक है।

जैन विद्वानो ने अपनी साहित्य साधना प्राय. साथ ही साथ प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश, तामिल तथा कन्नडी भाषाओ मे की। कितने ही जैन ग्रन्थ-

कार तो अपने आपको 'उभय भाषा कवि चक्रवर्ती' आदि विशेषणो से सूचित करने मे गौरव मानते थे। उक्त विभिन्न भाषाओ मे उपलब्ध जैन रचनाएं इतनी परस्पर सम्बद्ध हैं कि एक ही नाम तथा एक ही प्रतिपाद्य विषय के ग्रन्थ विभिन्न कालो मे विभिन्न भाषाओं मे उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ जयराम ने प्राकृत में धर्म परीक्षा नामक ग्रन्थ की रचना की। उसी के आधार पर सन् ९८८ ई० में हरिषेण ने चित्तौड़ मे अपभ्रंश मे धर्म परीक्षा लिखी। सन् १०१४ मे उज्जैन निवासी अमितगति ने सस्कृत मे उसी ग्रन्थ की रचना की और १२ वीं शताब्दी मध्य के लगभग कर्णाटक निवासी वृत्तिविलास ने कन्नडी भाषा में की। इस प्रकार विभिन्न ग्रथो में अन्तर्भूत अन्तर्भाषियिक एव अन्तर्प्रान्तीय प्रभावों को लक्ष्य करने से भारतीय साहित्य का जो ढाचा हमारे समक्ष है उसमे अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यो की अवश्य ही वृद्धि होगी। ऐसा तुलनात्मक अध्ययन पूर्वापर तथा रचना तिथि आदि बातो के निर्णय मे भी महत्त्व पूर्ण सिद्ध होगा।

सस्कृत एव प्राकृत के अतिरिक्त अन्य भाषाओ मे रचे गये जैन साहित्य का बहुत कुछ आभास आर० नरसिहाचार्य कृत 'कर्णाटक कवि चरिते' या उसके प्रेमी जी कृत अनुवाद 'कर्णाटक के कवि, श्रीयुत देसाई कृत 'गुर्जर कवियो-२ भाग; प्रोफेसर चक्रवर्ती का तामिल जैन साहित्य, प्रेमी जा व बा० कामता प्रसाद के हिन्दी जैन साहित्य के इतिहास, हमारा 'हिन्दी का पुरातन गद्य साहित्य' और राजस्थानी जैन साहित्य के सम्बन्ध मे श्री अगरचन्द नाहटा के लेखो से हो सकता है।

बहु विषयक—बहुभाषयिक होने के साथ ही जैन साहित्य बहु-विषयिक भी है और नैयायिक अग तो अत्यन्त समृद्ध एवं महत्त्वपूर्ण है। किन्तु भारतीय साहित्य की न्याय विषयक शाखा ने प्राच्य विज्ञों का ध्यान अपनी ओर अभी कम ही आकर्षित कर पाया है। जैन नैयायिक साहित्य तो प्राय. स्पर्श ही नही किया गया, यद्यपि लगातार अनेक शताब्दियो से प्रकांड जैन नैयायिक जैन धर्म के सिद्धान्तों का अन्य भारतीय विचारधाराओं

के अत्यन्त विशद तुलनात्मक विवेचन करते चले आये हैं । आरम्भ में डा० के० बी० पाठक और डा० सतीशचन्द्र वि० भू० उक्त ग्रंथों के काल-क्रम के विषय में बहुत कुछ लिखा था, किन्तु उसके पश्चात् अब इधर इतनी अधिक नवीन सामग्री प्रकाश मे आ रही है कि विद्वानो को अपनी पूर्व निश्चित धारणाओं मे परिवर्तन करना पड़ रहा है । प्रो० एच० आर० कापड़िया ने गायकवाड़ ओरियंटल सीरीज (भाग १, बड़ौदा १६४०) के अन्तर्गत स्वोपज्ञ वृत्ति एव मुनिचन्द्र कृत टीका सहित 'अनेकांत जय पताका' का सम्पादन किया । प० महेन्द्र कुमार ने अपने द्वारा सुसम्पादित 'अकलक ग्रन्थत्रय' × की भूमिका मे अकलक के समय, शैली तथा अन्य अनेक तथ्यो पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डाला है । उन्ही के द्वारा सम्पादित न्याय कुमुदचन्द्र दो भागों की स्वय उनके तथा प० कैलाश चन्द्र द्वारा लिखित भूमिकाओ में नवीन दृष्टि कोण एवं प्रचुर सामग्री होने के साथ ही साथ अकलक के समय सम्बधी भ्रान्ति का भी प्राय. निरसन हो गया है । प० महेन्द्रकुमार द्वारा सम्पादित प्रमेय कमल मार्तण्ड तथा न्याय विनिश्चय विवरण के सस्करण भी महत्वपूर्ण हैं । सकल भारतीय न्याय शास्त्र मे निष्णात प्रज्ञाचक्षु प० सुखलाल संघवी अपनी गहरी पहुंच, ताजा दृष्टि कोण तथा खोज पूर्ण विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध है । उन्हे तथा उनके साथियों को 'जैन तर्क भाषा' एव 'प्रमाण मीमासा' के उत्तम सस्करण सम्पादित करने का श्रेय है । उन्होंने सिद्धसेन दिवाकर के 'सन्मतितर्क' का भी गुजराती अनुवाद और विद्वत्तापूर्ण सपादन किया है, जिसका कि अ गरेजी अनुवाद प्रो० अथवले तथा गोपानी ने किया है । पं० दरबारी-लाल कोठिया ने धर्म भूषण की न्यायदीपिका तथा विद्यानन्द की आप्त-परीक्षा के उत्तम सम्पादन किये हैं । पं० जुगलकिशोर मुख्तार, समन्तभद्र के युक्त्यानु-शासन का अनुवाद और सम्पादन कर रहे हैं, सन्मतितर्क और सिद्धसेन दिवा-कर सम्बंधी उनका लेख भी बहुत महत्त्वपूर्ण है । स्याद्वाद मंजरी और माणिक्यनंदि कृत परीक्षा मुख सूत्र के सम्पादित संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं ।

× सिंघी जैन ग्रन्थमाला न० १२, अहमदाबाद, १६३६.

कलकत्ता विश्वविद्यालय के डा० सातकौडी मुखर्जी ने जैन दर्शन पर एक स्वतंत्र ग्रन्थ-दी फिलासफी ग्राफ नान एबसोल्यूटिज्म, लिखा है। समन्तभद्र, पूज्यपाद अकलक, विद्यानंद आदि आचार्यों के समय एवं इतिहास के सम्बध में हमारे भी कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इस समग्र नव प्रकाशित साहित्य से जो सामग्री प्रकाश में आ रही है वह मध्यकालीन भारतीय न्याय दर्शन के सम्बध में पूर्व-निर्धारित धारणाओ मे भारी क्रान्ति करने वाली हैं। पूर्वपक्ष के प्रतिपादन में ये जैन ग्रन्थ उल्लेखनीय निष्पक्षता प्रदर्शित करते हैं और विन्टरनिट्ज के कथनानुसार, उनके दार्शनिक विवेचन अन्य भारतीय दर्शनो का अध्ययन करने में अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध होते है।

तत्त्वज्ञान, न्याय, धर्म शास्त्र आदि के अतिरिक्त जैनों का काव्य, नाटक, चम्पू, कथा साहित्य, अलकार, छद, शब्द शास्त्र, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र, राजनीति, इतिहास आदि विभिन्न भाषामय विविध विषयक साहित्य भी पर्याप्त विशाल काय एवं महत्त्वपूर्ण है। तत्तद विषयों से सम्बधित अखिल भारतीय साहित्य के विकास एवं इतिहास का ज्ञान बिना उन विषयो के जैन साहित्य के समुचित अध्ययन एव उपयोग के अधूरा ही रहेगा। किन्तु खेद है कि इस विशाल जैन साहित्य के न्यूनांश का भी अभी प्रकाशन अथवा सदुपयोग नही हो पाया है।

हस्त लिखित प्रतिया—भारतवर्ष के अनगिनत जैन शास्त्र भडारो मे सगृहीत पुरातन ग्रन्थो की हस्तलिलित प्रतियाँ देश की अमूल्य निधि हैं। ये ऐसी वस्तु है जिनकी कि एक बार पूर्णतया नष्ट हो जाने पर पूर्ति कर लेना असभव है। परवर्ती साहित्यगत उद्धरणो, उल्लेखो अथवा निर्देशो पर से ऐसे अनेक ग्रन्थो का पता चलता है जिनकी एक भी प्रति कही भी उपलब्ध नही है। साहित्यिक इतिहासकारो के लिए हस्तलिखित प्रतियाँ अनुमानातीत महत्त्व रखती हैं। उत्तर तथा दक्षिण दोनो ही प्रदेशो के जैन ग्रन्थकारों ने अपनी रचनाओ को केवल धार्मिक विषयो तक ही सीमित नही रक्खा, वरन् अपनी कृतियो से भारतीय ज्ञान की सभी विविध भाषाओ को सुसमृद्ध किया।

अतएव जैन ग्रन्थ भंडार ऐसे सुसम्पन्न रत्नागार हैं जिनका धैर्यपूर्ण अनुशीलन प्राच्य विद्याविदों के लिए आवश्यक एव वाञ्छनीय है। एक समय था जब साम्प्रदायिक सकीर्णता इन कोषागारों को विद्वत्समाज के लिए भी उन्मुक्त करने मे बाधक होती थी, किन्तु अब परिस्थिति बदल रही है। व्हूलर, कीलहार्न कथवटे, भडारकर, पीटर्सन, वेबर, ल्यूमॅन, मित्रा, कीथ, दलाल, गांधी, वेलंकर, हीरालाल, कापडिया तथा अन्य विद्वानो के सतत् प्रयत्नों के फलस्वरूप ऐसी अनेक परिचयात्मक ग्रन्थ सूचियों का निर्माण हो चुका है जो पुरातन जैन साहित्य की भी विविध शाखाओ का विवरण प्रदान करती है और अनुसधान कार्य के लिये अत्युपयोगी हैं।

वृहट्टिप्पनिका, जैन ग्रन्थ नामावली, जैन शास्त्र नाममाला आदि ग्रन्थ कोषो द्वारा उनके निर्माताओ ने उनमे, ज्ञात अथवा उपलब्ध, जैन ग्रथों का विवरण एक ही स्थान मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है जिससे सामान्य प्राथमिक पर्यवेक्षण सुगम हो जाता है। किंतु प्रो० हरिदामोदर वेलङ्कर द्वारा सपादित तथा भडारकर प्राच्य विद्यामंदिर, पूना, द्वारा प्रकाशित 'जिनरत्नकोष' नामक, जैन हस्त लिखित ग्रंथ सूची, इस दिशा में एक अत्यधिक सफल एवं महत्त्वपूर्ण प्रयत्न है। प्रो० वेलङ्कर ने यह कार्य, जिसे हाथ में लेने से एक सर्व साधन सम्पन्न सस्था भी शायद हिचकिचाती, एकाकी ही अतीव सुन्दरता के साथ सम्पादन किया है। इसके प्रकाशन से जैन साहित्य विषयक अध्ययन को एक नवीन दृष्टि प्राप्त होने की पूर्ण आशा है। वीर सेवा मंदिर, देहली मे भी कई दिगम्बर जैन ग्रथ भडारो के अप्रकाशित तथा दूसरी सूचियो में सम्मिलित न किये गये, ऐसे लगभग ६००० ग्रथों की एक विवरण सूची प्राय तैयार हो चुकी है, जो कि 'जिनरत्नकोप' गत त्रुटियो की पूर्ति करने के साथ ही साथ अन्य प्रकार भी उपयोगी सिद्ध होगी। दक्षिण देश के मूड़बद्री आदि स्थानों के भडारो के कन्नड़ लिपि मे निबद्ध ताड़पत्रीय ग्रथो की एक विवरण सूची प० के० भुजबलि शास्त्री द्वारा सम्पादित होकर भारतीय ज्ञान पीठ काशी से प्रकाशित हुई है। आमेर भडार की सूची भी जयपुर से प्रकाशित हो गई है। आफ-

क्रेल्ट के प्रसिद्ध 'कैटेलोगस केटेलोगोरम' के सशोधन, सवर्द्धन का कार्य मद्रास विश्वविद्यालय ने अपने हाथ में लिया था और यह योजना थी, कि उक्त सूची में ऐसे सर्व जैन ग्रथो को भी सम्मिलित कर लिया जायगा जोकि प्राचीन भारत के सास्कृतिक विकास सबधी ज्ञान के लिए उपयोगी है, और यह कि उसमें आलाचनात्मक एव तुलनात्मक विवेचन के उद्धरण भी रहेगे। योजना निस्सन्देह बडी सुन्दर है! इसकी सहायता से विशाल भारतीय साहित्य के अन्तर्गत जैन साहित्य का अब तक की अपेक्षा कही अधिक पूर्णता एवं यथार्थता के साथ अध्ययन किया जा सकेगा।

यद्यपि इस प्रकार यह क्षेत्र सीमाबद्ध किया जा रहा है, तथापि अभी तक ईडर नागौर, जयपुर, दिल्ली, बीकानेर आदि अनेक स्थानो के महत्त्वपूर्ण शास्त्र भडारो का व्यवस्थित रूप से निरीक्षण ही नही हो पाया है। दक्षिण मे मूडबद्री, हुम्मच, वारगल, कारकल आदि स्थानो के भडारो के भी, जहाँ कि ढेरो ताडपत्रीय प्रतियाँ सुरक्षित हैं, प्रमाणीक विवरण तैयार नही हुए है। अपनी प्राचीनता एव प्रमाणिकता के कारण ये सग्रह अध्ययन की विविध शाखाओ के लिए बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करेंगे, ऐसी पूर्ण सम्भावना है।

आमेर, पाटन, पूना, कारजा आदि के भडारो मे सुरक्षित प्राचीन देवनागरी लिपि बद्ध कुछ ग्रन्थ प्रतियाँ १२ वी शताब्दी(ई०)तक की है। निश्चित तिथि तथा लेखन स्थान से युक्त ऐसी प्रतियो की एक क्रमबद्ध श्रखला छाँट लेने से नागरी अक्षरो मे, समय के साथ साथ होने वाले क्रमिक विकास का एक कोष्ठक तैयार किया जा सकता है और उसके द्वारा स्व० प० गौरीशकर हीराचन्दा ओझा तथा ब्हूलर साहब ने, शिलालेखीय आधारो पर जो तालिकाये निर्माण की हैं, उनकी पूर्ति हो सकती है। कुछ विद्वानो का ध्यान ऐसी प्रतियो की ओर आकर्षित हो भी चुका है। मुनि पुण्य विजय जी द्वारा लिखित 'जैन चित्र कल्पद्रुम' (अहमदाबाद १९३५) की भूमिका, अक्षर विज्ञान एवं लेखन कला पर एक ठोस देन है, और कम से कम जहाँ तक गुजरात के भडारो मे सग्रहीत प्रतियो का सम्बन्ध है, उक्त विषयो पर अच्छा प्रकाश डालती है।

प्रो० एच० आर० कापडिया ने भी अपने निबन्धों में उक्त विषय के कुछ अंगों का विवेचन किया है ।*

चित्र कला—इन हस्तलिखित प्रतियों पर से लघु चित्रकला (मिनियेचर पेन्टिग) सम्बन्धी सामग्री का आशिक उपयोग मि० ब्राउन, नवाब तथा अन्य विद्वानो ने किया है। अभी हाल में हमने नागौर के वर्तमान भट्टारक जी के पास, यशोधर चरित्र की १७ वी शताब्दी की एक अति सुन्दर चित्र प्रति देखी थी, जो कि शिकागो विश्व प्रदर्शिनी मे भी प्रशसा प्राप्त कर चुकी है। जैन गुहा-चित्रो के सबन्ध मे पुद्दुकोटा राज्य के श्री एल गरोश शर्मा ने, अपनी पस्तक 'सित्तनवासल जैन गुहा चित्रावली एव चित्रकला' मे उक्त विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। डा० हीरानद शास्त्री ने भी जैन चित्रकला पर लिखा है। सिगनपुर (रायगढ) आदि की प्रागैतिहासिक चित्र कला मे भी जैन प्रभाव लक्षित होता है।× अनेक प्राचीन अर्वाचीन जैन मन्दिरो मे बहुलता से पाये जाने वाले भित्ति चित्र तथा जैन पौराणिक रूपक एव सकेत चित्र भी पर्याप्त सख्या मे उपलब्ध हैं। किन्तु इस समस्त सामग्री के न्यूनाश का भी उपयोग नही हो पाया है।

प्रशस्त्यादि—अधिकतर हस्तलिखित प्रतियो मे उनकी लेखन तिथि दी हुई होती है और उनमे ऐसी काल निर्णायक सामग्री पर्याप्त मात्रा मे होती है जो कि जैन सघ के मध्यकालीन इतिहास के लिये तो अत्यन्त उपयोगी है ही, साथ ही भारत के राजनैतिक इतिहास सबन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं के तिथि निर्णय मे तथा ज्ञात तिथियो की पुष्टि करने मे बहुधा उपयोगी सिद्ध हुई है और हो सकती है।

जैन ग्रन्थ प्रतियो मे पाई जाने वाली ये प्रशस्तियें, पुष्पिकाएँ आदि बहुधा तीन प्रकार की होती हैं—(१) ग्रन्थकार द्वारा निबद्ध—जिनमे वह अपने सम्बन्ध

---

*See Outlines of, Paleography and the Jaina Mss. J. U. B, VI 2. VII 2.

×See Prehistoric Jaina Paintings—J. A., X 2, XI,

की अनेक सूचना, अपनी गुरु परम्परा, कब, किसके लिये, किसके राज्य या आश्रय मे अथवा प्रेरणा पर ग्रन्थ की रचना हुई, इत्यादि बातों की सूचना देता है। (२) प्रति लेखक अथवा लिपि कर्त्ता की प्रशस्ति, लिपिकार का परिचय, लेखन तिथि तथा जिसके लिये वह प्रति लिखी गई अथवा जिसके द्वारा लिखवाई गई, आदि सूचनाएँ दी होती हैं। (३) दानी की प्रशस्ति मे उक्तदानी का तथा उसके परिवार, वश आदि का परिचय तथा किस साधु या मदिर को वह प्रति दान की गई, आदि बातो का उल्लेख रहता है। इस प्रकार की सूचनाएँ कर्णाटक एव तामिल देश की प्रतियो की अपेक्षा गुजरात, मध्य भारत आदि की प्रतियो मे अधिक बहुलता के साथ पाई जाती है। अहमदाबाद से एक विशाल, लेखक प्रशस्ति सग्रह, प्रकाशित हो चुका है, स्व० पूर्णचन्द नाहर ने भी, एक प्रशस्ति सग्रह, प्रकाशित किया था जैन सिद्धान्त भवन आरा से, ५४ दिगम्बर जैन ग्रन्थो की प्रशस्तियो का सग्रह प्रकाशित हुआ है। वीर सेवा मदिर, देहली से सस्कृत तथा अपभ्र श प्रशस्तियो के दो पृथक पृथक सग्रह प्रकाशित होने की योजना है, आमेर भडार का प्रशस्ति सग्रह भी प्रकाशित होने वाला है। ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन बम्बई व झालरापटन की वार्षिक रिपोर्टों मे भी कुछ प्रशस्तिये प्रकाशित हुई हैं। यदि प्रयत्न किया जाय तो ऐसे कितने ही अन्य सग्रह सुगमता से प्रकाशित किये जा सकते है। प्रो० एस० श्री कठ शास्त्री द्वारा सकलित 'कर्णाटक इतिहास के साधन—भा० १' (मैसूर १९४०) से स्पष्ट है कि ऐतिहासिक रचनाओ को अ शत अथवा पूर्णत. सकलित करने के लिए, तथा उनका परस्पर सबध बैठाने के लिए जैन ग्रन्थ प्रशस्तिया एक अत्यन्त मूल्यवान साधन है। हमने स्वय कई प्राचीन एव मध्यकालीन लेखको के इतिवृत्त का निर्माण करने मे विभिन्न प्रशस्तियों का उपयोग किया है। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी जैन ग्रन्थ प्रशस्तियो एव पुष्पिकाओ के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। यदि इन प्रशस्त्यादि का सुचारू सकलन कर लिया जाय तो उन अनगिनत प्रतिमाभिलेखो के साथ, जो जैन मूर्तियो पर खुदे मिलते है और जिनमे से कुछ प्रकाशित भी हो चुके है, तथा अन्य जैन

पुराभिलेखों के साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन करने से, न केवल नवीन तथ्य प्रकाश मे आयेगे वरन सुपरिचित घटनाओ तथा अन्य ऐतिहासिक तथ्यों का परस्पर सम्बध भी स्थापित किया जा सकेगा और कालानुक्रमिक अध्ययन में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होगे। इस प्रकार के पृथक २ विभिन्न सूचनाँशो का परस्पर सबध बैठाने से ही, ग्रन्थराज श्रीधवल की एक मात्र उपलब्ध मूल-प्रति के लेखन काल का निर्णय किया जा सका और मल्लिभूपाल को चीन्हा जा सका। आज यह विषय एक भाग्यानुसारी क्रीडा हो रही है, किन्तु इसमे से यह सयोगतत्व, गिरनाट की 'रिपर्टरी डी एपिग्रैफी जैना' नामक ग्रन्थ के आदर्श पर, इन सर्व साधनो से सबधित नामादि अनुक्रमणिकाये निर्माण करके निकाल दिया जा सकता है। प्रशस्तियो और अभिलेखो से जो समय सबधी सामग्री प्राप्त होती है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कभी-कभी तो ये तिथियें इतनी सुनिश्चित पाई जाती है, कि व्हिटने का बहुधा उद्धृत कथन, कि "भारतीय साहित्य के इतिहास की तिथियाँ ऐसे पूर्वापर असम्बद्ध तथा पृथक २ स्थापित सकेत चिन्ह है जो पुन विचारनीय एव चिन्तनीय हैं"—सन् १८७९ मे भले ही सत्य रहा हो, किन्तु अब वह अनेक अपवादो के साथ ही ग्रहण किया जा सकता है।

पुराभिलेख—राइस, नरसिंहाचार्य, गिरनाट, आयगर, शेशागिरि राव, सालतोर तथा अन्य विद्वानो ने उन जैन पुराभिलेखो का उपयोग सफलतापूर्वक किया है जो जैन धर्म के इतिहास के विविध अगो पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं और बहुधा तत्कालीन नरेशो, राजपुरुषो तथा अन्य राजनैतिक बातो का भी उल्लेख करते है। जैन मूर्तियो तथा मदिरादिको पर अंकित अभिलेख जिनमे से कितने ही बुद्धिसागर, जिन विजय जी, नाहर, कामता प्रसाद, कान्तिसागर, गोविन्द प्रसाद आदि विद्वानो द्वारा प्रकाश मे लाये जा चुके है, साहित्यिक एव ऐतिहासिक कालानुक्रम का निर्णय करने मे बहुत उपयोगी है, क्योकि उनमे प्रमुख आचार्यों का जोकि बहुधा ग्रन्थकार भी होते थे, प्राय उल्लेख रहता है। 'एपिग्राफिका कर्नाटिका' मे सकलित जैन अभिलेख, कर्णाटक प्रात के इतिहास मे

जैन धर्म का जो भाग रहा है, उसके व्यवस्थित ज्ञान के लिए अतीव उपयोगी सिद्ध हुए है। यह बात श्री बी० ए० सालतोर कृत मैडिवल जैनिज्म (बम्बई १९३८) तथा प्रो. एस. आर. शर्मा कृत 'जैनिज्म एड कर्णाटिक कल्चर' (धारवाड १९४०) से भली प्रकार प्रमाणित हो जाती हैं। निजाम राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रकाशित, कोप्पल से प्राप्त कन्नडी शिलालेखो पर लिखे गये निबध मे राज्य के अन्य स्थानों से भी प्राप्त, जैन अभिलेखो के महत्त्वपूर्ण उदाहरण दिये गये है। यह विभाग प्रसिद्ध पुराविद, गुलाम यजदानी की अध्यक्षता मे कार्य कर रहा था और आशा थी कि उसके द्वारा अन्य अनेक जैन शिलालेख शीघ्र ही प्रकाश मे आयेंगे। देवगढ आदि स्थानो मे प्राप्त, तथा 'एपिग्रेफिका इ डिका' मे प्रकाशित शिलालेखो को देखने से पता चलता है कि अनेक जैन शिलालेख सरकार के पुरातत्त्व एव प्राच्यतत्त्व विभागो के भडार गृहो मे केवल इसीलिये व्यर्थ पडे हुए है कि राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से वे प्रत्यक्ष उपयोगी नही जान पडते। इन समस्त अभिलेखो को तुरन्त प्रकाशित कर देना इन विभागो के लिए अवश्य ही कठिन कार्य था, विशेषत जबकि बृटिश सरकार का व्यवहार ऐसे सास्कृतिक विभागो की ओर विमाता सरीखा रहा है। अब स्वतत्र भारत मे, अपनी राष्ट्रीय सरकार से इस दिशा मे बहुत कुछ आशा है। यदि सरकार इस कार्य को स्वय हाथ मे न भी लेना चाहे तो भी प्राच्याध्ययन के हित मे यह अच्छा होगा कि वे लेख उन विद्वानो के सिपुर्द कर दिये जॉय, जो जैन पुराभिलेखो मे दिलचस्पी रखते है तथा जो भडारकर प्राच्यविद्या-मदिर पूना, भारतीय विद्याभवन, बम्बई प्रभृति सस्थाओ मे कार्य कर रहे है। इनमे से अनेक अभिलेख देश के राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से भले ही महत्त्वपूर्ण न हो, किन्तु जैन साहित्यगत लेखको तथा स्थानो को चीन्हने और विभिन्न प्रदेशो से सबंधित जन सघ का इतिहास निर्माण करने मे, अवश्य ही उपयोगी कुजिये प्रदान कर सकते हैं।

जिस प्रकार भडारकर ने कीलहार्न द्वारा सकलित शिलालेख सूची का सशोधन संवर्द्धन करके, उसे आधुनिक काल तक पूर्ण कर दिया, उसी प्रकार

यह नितान्त आवश्यक है कि कोई विद्वान, जो ऐसे केन्द्र मे कार्य कर रहा हो, जहाँ पुरातत्त्व व अभिलेखादि सम्बन्धी समग्र प्रकाशन एव अन्य सामग्री उपलब्ध अथवा सुलभ हो, गिरनाट के उपर्युलिखित महत्वपूर्ण ग्रन्थ का सशोधन सवर्द्धन करके, उसे वर्तमान काल तक पूर्ण करने का प्रयत्न करे। बा० छोटेलाल ने अपनी 'जैन बिबलियोग्रेफी' मे सन् १९०६ से १९२५ तक के प्रकाशित अ ग्रेजी जैन साहित्य, उद्धरण एव अभिलेख सूचनाओ को सकलित करने का प्रयत्न किया है। किन्तु शिलालेखो के सम्बन्ध मे यह ग्रथ उतना सतोषजनक एव प्रमाणीक नही है। देश के विभिन्न भागो से प्राप्त अनेक जैन शिलालेख प्रकाश मे आ चुके हैं। किन्तु एक पूर्ण 'जैना एपिग्रेफी' के अभाव मे उनमे निहित तथ्यो का यथोचित लाभ उठाया जाना कठिन है। समस्त प्रकाशित जैन शिलालेखो के एक आधुनिकतम विवरण से जैनाध्ययन को निश्चयत भारी प्रगति मिलेगी।

मूर्त्तिकला—जैन मूर्त्तिकला भारतीय मूर्त्तिकला का महत्वपूर्ण अ ग है। भारतवर्ष के अनगिनत मदिरो मे विद्यमान असख्य जैन मूर्त्तियो तथा जन ग्रन्थो मे उपलब्ध तत्सबधी प्रचुर साहित्य के होते हुए भी, जैन मूर्त्तिकला एव विज्ञान का अध्ययन अभी तक अपनी शैशवावस्था मे ही है। इस दिशा मे जो महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ है, उसमे जे० बरगेस तथा जे० एल० जैनी का, 'दिगम्बर जैन' 'आइकोनोग्रेफिये' बी० सी० भट्टाचार्य की 'दी जैना आइकोनोग्रेफी' (लाहौर १९३९) इत्यादि हैं किन्तु इनमे सशोधन सवर्द्धन की पर्याप्त आवश्यकता है। इस विषय की और अधिक उल्लेखनीय कृतियाँ, डा० एच. डी. साँकलिया कृत 'जैना आइकोनोग्रेफी' (एन आई ए, २८) 'जैन यक्ष यक्षणिया', 'बडौदा राज्य की तथा कथित बौद्ध मूर्त्तियाँ' (बुलेटिन आफ दी डेकन कालिज, आर आई I, २-४), 'नेमिनाथ के ससार त्याग कल्याणक का प्रस्तराँकन' (आई० एच० क्यू XVII, भा० २) 'एक जैन देवी की अद्भुत आकृति,' 'पीतल का जैन गणेश' (जे. ए.–IV पृ० ८४, V पृष्ठ ४६) इत्यादि हैं। डा० विनयदेव भट्टाचार्य (प्राच्य विद्याभवन, बडौदा) के निर्देशत्व मे, बडौदा के श्री यू पी शाह ने जैन

मूर्तिविज्ञान, पर कार्य किया है और तद्विषयक मूल आधारो से पर्याप्त सामग्री एकत्रित की है। उनके कुछ महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित भी हो चुके हैं, यथा जैन देवी अम्बिका, जैन सरस्वती आदि (जे. यू. बी, १९४०–४१) डा० अग्रवाल ने जैन शिलालेखो पर से जैन मूर्तिविज्ञान सम्बन्धी कतिपय शब्दो की व्याख्या की है (जे ए V पृ० ४३)। उन्होने तथा श्री कृष्णदत्त बाजपेयी, एम० एम० नागर आदि ने, विशेषरूप से मथुरा की प्राचीन जैन मूर्त्तकला पर कई उपयोगी लेख लिखे है। मथुरा की जैन सरस्वती पर हमारा भी एक लेख प्रकाशित हुआ है। डा० मोतीचन्द्र के तद्विषयक लेख भी महत्त्वपूर्ण है। श्री के के गांगुली के लेख 'बगाल की जैन मूर्त्तिया' (जे सी --VI,२ पृ० १३७) से प्रकट है, कि देश के इस भाग की खोज और अधिक जाचपूर्वक किये जाने की आवश्यकता है। एक स्फूर्तिदायक लेख 'जैन धर्म और भट्टकल पुरातत्व' (बम्बई प्रान्तीय कन्नड अनुसधान की वार्षिक रिपोर्ट, १९३९-४०, धारवाड, १९४१, पृ० ८१) मे, उक्त अनुसधान निर्देशक श्री आर एस पचमुखी ने, जैन मूर्त्ति विज्ञान के कतिपय अगो पर सरसरी दृष्टि से विचार किया है। उनके कुछ सामान्य कथन अप्रमाणिक होते हुए भी, उसमे उन्होने दक्षिणात्य जैन धर्म का शृ खला-बद्ध विवरण दिया है और भट्टकल तथा उन अन्य स्थानो की जो किसी समय जैन सस्कृति के प्रसिद्ध केन्द्र थे, कतिपय नवीन मूर्तियो को प्रकाश मे लाये हैं। मुनि कान्ति सागर, अशोक कुमार भट्टाचार्य आदि कुछ अन्य विद्वानो ने भी इस विषय पर लेखादि लिखे है। जैन मूर्त्तिविज्ञान और जैन देववाद तथा जैनधर्म मे मूर्त्तिपूजा का विकास एव इतिहास—इन्हे पृथक २ विषय मानकर ऐतिहासिक पूर्वपीठिका के साथ उक्त अध्ययन का प्रारभ करना अधिक उपयुक्त होगा। ये दोनो विषय आगे चलकर एक मे ही गर्भित हो जाते हैं अत प्रारभ मे ही उनके बीच भ्रान्ति न होने देना ठीक होगा। ये अध्ययन अभी अपनी प्रारभिक अवस्थाओ मे है। हिन्दू, बौद्ध और जैन मूर्त्तिविज्ञान की परस्पर समानताओ पर लक्ष्य देना आवश्यक है, किन्तु बिना ठोस प्रमाण के सहसा ऐसे कथन कर देना कि अमुक बात, अमुक ने, अमुक से ग्रहण की है, उचित नही है।

स्थापत्य—जैन स्थापत्य का अध्ययन तो और भी कम हो गया है। विन्सेन्ट स्मिथ कृत 'मथुरा का जैन स्तूप तथा अन्य पुरातत्त्व' नामक ग्रन्थ बहुत महत्व पूर्ण है। आबू के जैन मन्दिरो पर पर्याप्त लिखा जा चुका है। फर्गुसन आदि ने भी प्रसगत: जैन स्थापत्य पर किंचित प्रकाश डाला है किन्तु इस विषय का भी यथोचित अध्ययन अभी तक नही हो पाया है। स्तूप, निषद्या, मन्दिर, बसति, गुहा आदि विभिन्न रूपो तथा देश कालानुसार विविध शैलियो मे उपलब्ध जैन स्थापत्य की अपनी निजी सास्कृतिक विशेषताएँ भी हैं।

इस प्रकार जैनाध्य्यन की कतिपय स्थूल शाखाओ का यह सक्षिप्त निर्देश है। अनेक जैन व अजैन विद्वान इन विषयो मे अपनी-अपनी रुचि एव साधन सुविधाओ के अनुसार कार्य कर रहे है। कई एक साहित्यक अनुसधान सस्थाए और उत्तम कोटि की पत्र-पत्रिकाए भी चालू है। प्राच्याध्य्यन के अन्तर्गत जैनाध्य्यन का प्रारम्भ और बहुत काल तक नेतृत्व भी पाश्चात्य विद्वानो ने किया था। अत तत्सम्बन्धी साहित्य भी अगरेजी आदि विदेशी भाषाओ मे ही लिखा जाता रहा है। किन्तु अब समय आगया है कि जैनाध्य्यन सम्बन्धी सर्व प्रकार के निर्देशात्मक ग्रथ कोष, सूचियें, विवरण, विवेचन, लेख, निबन्धादि राष्ट्रीय व लोकभाषा हिन्दी मे ही लिखे जॉय। इससे जैनाध्ययन को विशेष प्राप्ति मिलेगी, जो कि भारतीय सस्कृति के समुचित ज्ञान, मूल्याँकन एव विकास के लिये परमावश्यक है।

विज्ञप्ति

जैन धर्म, सस्कृति, इतिहास पुरातत्व, प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य आदि से सम्बन्धित, सर्व प्रकार की जिज्ञासा के समाधान के लिये निम्नाकित सस्थाओ, प्रकाशको तथा व्यक्तियो को पत्र लिखने से यथोचित उत्तर प्राप्त हो सकता है —

१. अधिष्ठाता, वीर सेवा मन्दिर, ७/२१ दरियागज, देहली।

२. जैन सिद्धान्त भवन, आरा बिहार।

३. भारतीय ज्ञानपीठ काशी, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस।

४. जैन कल्चरल इन्स्टीट्यूट, ७/३ हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस।

५. दिगम्बर जैन सघ, चौरासी मथुरा।

६. दि० जैन परिषद कार्यालय, दरियागज, देहली।

७. जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग पो०, गिरगाँव, बम्बई।

८ दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चान्दवाडी, सूरत।

९. लाला पन्नालाल जैन अग्रवाल, ३८७२, चर्खेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार, देहली।

१०. ज्योतिप्रसाद जैन, एम० ए०, एल० एल० बी०, ७४-७५, ठठेरवाडा, मेरठ शहर। अथवा—यूनियन मैडिकल स्टोर्स, कैसर बाग, लखनऊ।

११. जैन सूचना ब्युरो, ५८७, सदर बाजार, दिल्ली।

हिन्दी विभाग

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की पुस्तकें

अकबर और जैन धर्म—ले० रामास्वामी आयंगर, अनु० कृष्णलाल वर्मा, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, भा० हि०, पृ० १४, व० १९८८।

अकल सीखने की पुस्तक—ले० श्रावक दुलीचन्द, प्र० लेखक स्वयं जयपुर, पृ० ३१, भा० हि०, आ० प्रथम।

अकलंक ग्रंथ त्रयम्—ले० श्रीमद्भट्टाकलंकदेव' सपा० प० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० सिंधी जैन ग्रथ माला अहमदाबाद-कलकत्ता, भा० स०, पृ० ३६४, व० १९३९ ई०, आ० प्रथम, (लघीस्त्रयम्, न्याय विनिश्चय, प्रमाण संग्रह)।

अकलंक चरित्र और अकलंक स्तोत्र—सपा० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १८।

अकलंक देव की कथा—ले० बख्तावर रतनलाल, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१२ ई०, प्र० जैन ग्रथ प्रचारक कार्यालय देवबद, आ० प्रथम।

अकलक नाटक—ले० सिद्धसेन जैन गोयलीय, प्र० जैन पाठशाला रिवाड़ी, भा० हि०, पृ० १०३, व० १९२८ ई०, आ० प्रथम।

अग्रवाल इतिहास—ले० अज्ञात, अनु० बी० एल जैन, प्र० लेखक स्वय बाराबकी, भा० हि०, पृ० २४।

अंगपण्णत्ति—ले० शुभचन्द्र, भा० प्रा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्रकाशित)।

अच्छी आदतें डालने की शिक्षा—ले० दयाचद्र जैन; भा० हि०, पृ० ३६, व० १९१५।

अजिताश्रम पाठावली—सपा० सक०-प० अजितप्रसाद एडवोकेट, प्र० ए० पी० जिंदल, अजिताश्रम, लखनऊ, भा० स० हि०, पृ० ७२, व० १९३५ ई०, आ० प्रथम ।

अजैन विद्वानों की जैन धर्म के विषय में सम्मतियाँ—(प्रथम भाग) सक० मा० बिहारीलाल, प्र० ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला अमरोहा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम ।

अजैन विद्वानों की जैन धर्म के विषय में सम्मतियाँ द्वितीय भाग—सक० मा० बिहारीलाल, प्र० ज्ञानवर्धक जैन पाठशाला अमरोहा, भा० हि०, पृ० ३१, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम ।

अठाई रासा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० हि०, व० १८९८ ।

अठारह नाते (पद्य)—ले० यति नयनसुखदास, प्र० ज्ञानचद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१० ई०, आ० द्वितीय ।

अठारह नाते की कथा—ले० अज्ञात, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा०, हि०, पृ० ६ ।

अढ़ाई द्वीप पूजन विधान—ले० प० कमलनयन, प्र० मूलचद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ३४९, व० १९४४ ई०, आ० प्रथम ।

अतीत जिन चतुर्विंशतिका—ले० जयतिलक सूरि, भा० प्रा० स० ।

अद्भुत रामचरित्र (प्रथम तुग-बनवास)—ले० यति नयनसुखदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० २३, व० १९१५ ई०, आ० प्रथम ।

अद्भुत रामचरित्र (दूसरा तुग–युद्ध-काड)—ले० निरजनदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९१६ ई०, आ० प्रथम ।

अद्भुत रामचरित (तीसरा तुंग-अयोध्या कांड)—ले० निरन्जनदास,

प्र० ला० होशियार सिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० २२, व० १६१५ ई०, भा० हि०, आ० प्रथम ।

अद्भुत रामचरित (चौथा तुंग-वैराग्य कांड)—ले० निरंजनदास, प्र० ला० होशियारसिंह सोनीपत, भा० हि०, पृ० १८, व० १६१६, भा० हि० ।

अध्यात्म संग्रह—(२८ रचनाओ का सग्रह)-भा० हि० स०, पृ० ३८८ ।

अध्यात्म तरंगिणी—ले० सोमदेव, भा० स०, पृ० १० ।

अध्यात्म पंचासिका-ले० अज्ञात, भा० हि० ।

अध्यात्म कमल मार्तण्ड—ले० कवि राजमल्ल, संपा० प्रो० जगदीश चन्द्र, प्र० माणिकचन्द दि० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० ।

अध्यात्म कमल मार्तण्ड—ले० कवि राजमल्ल, अनु० सपा० दरबारी लाल कोठिया और प० परमानन्द शास्त्री; प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा; भा० स० हि०, पृ० ११०, व० १६४४, आ० प्रथम ।

अध्यात्म विचार—ब्र० मोतीलाल, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६३० ।

अध्यात्म ज्ञान—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३१ ई० आ० प्रथम ।

अध्यात्माष्टवाम्—ले० वादिराज सूरि, भा० स० ।

अध्यात्मिक निवेदन—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० आत्मधर्म सम्मेलन सूरत, भा० हि०, पृ१६, व० १६२५ ई० आ० प्रथम ।

अनगार धर्मामृत—ले० प० आशाधर जी, सपा० प० वशीधर व प० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द दि० जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० ६६२ व० १६१६ ई० आ० प्रथम ।

अनगार धर्मामृत—(टीका) ले० प० आशाधर जी, अनु० टी०-प० खूबचन्द शास्त्री, प्र० सेठ खुशालचन्द मानाचन्द गांधी शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० ६३६, व० १६२७ ई०, आ० प्रथम ।

अनमोल बूटी—ले० मा० बिहारीलाल, भा० हि०, पृ० ५१, व० १६१४ ।

अनमोल रत्न अर्थात् आत्म कल्याण का उपाय—ले० शालिग्राम लमेचु, प्र० कुन्थूलाल इलाहाबाद, भा० हि०, पृ० १७, व०, १६१३ ई० ।

अन्य धर्मों से जैन धर्म में विशेषताएँ—ले० अजितकुमार शास्त्री, भा० हि०, पृ० ३१, व० १६२७ ।

अनन्तमती—ले० कृष्णलाल वर्मा, भा० हि० ।

अनाथरुदन—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ८, व० १६२४ ई०, आ० चतुर्थ ।

अनादि गणित—ले० नत्थनलाल जैन, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम ।

अनावश्यक दि० जैन मूर्त्ति पूजा—ले० प्र० चम्पालाल जैन सोहागपुर, भा० हि०, पृ० ४६, व० १६४० ।

अनित्य भावना—(पद्मानुवाद)—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २०, व० १६२४, आ० प्रथम ।

अनित्य भावना—ले० पद्मनन्द्याचार्य, अनु० सपा०-प जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ४८, व० १६४६ ई०, आ० तृतीय, मूल्य ।

अनुभव प्रकाश—ले० दीपचन्द, प्र० लखमीचन्द वेणीचन्द कुडुंयाड़ी, भा० हि०, पृ० ११८ ।

अनुभव माला—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० (पद्य), पृ० १५, व० १६३२ ।

अनुभवानन्द—स० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १२८, व० १६१२, आ० प्रथम ।

अबलाओं के आँसू—ले० अयोध्या प्रसाद जैन गोयलीय, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ७६, व० १६२६, आ० प्रथम।

अभिषेक पाठ संग्रह—सपा० पन्नालाल सोनी, भा० स०, पृ० ३६१, व० १६३५।

अभिषेक पाठ समीक्षा—ले० प० राजकुमार शास्त्री, प्र० सेठानी गुलाब बाई प्यार कुंवर बाई जी इन्दौर, भा० हि०, पृ० १६, व० १६४१।

अभिषेक पूजा पाठ संग्रह—प्र० माणिकचन्द सरावगी कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४८, व० १६४२।

अनेकार्थ रत्न मंजूषा—सपा० प्रो० हीरालाल, भा० स० पृ० १५६, व० १६३२।

अभिषेक पाठ—ले० पूज्यपादाचार्य, अनु० प० जिनदास, भा० स० हि०, पृ० ४८।

अमर जीवन और सुख का सदेश—ले० चम्पतराय जैन बैरिस्टर; अनु० बा० कामता प्रसाद जैन, भा० हि०; पृष्ठ १५।

अमितगति श्रावकाचार—ले० आचार्य अमितगति, अनु० टी० पं० भागचन्द्रजी; प्र० मुनि श्री अनन्तकीर्ति, दि० जैन ग्रन्थशाला बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ४४०; व० १६४२; आ० प्रथम।

अमृताशीति—ले० योगीन्द्रदेव; भा० सं०, पृ०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे पृ०।

अर्थ का अनर्थ—(बृहद विमल पुराण की समालोचना)—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०; पृ० ८७; व० १६२४; आ० प्रथम।

अर्थ प्रकाशिका—ले० प० सदासुखदास जी; प्र० कलप्पा भरमप्पा निटवे कोल्हापुर; भा० हि०; पृ० ७४३; व० १६०२; आ० प्रथम।

अर्थ प्रकाशिका (तत्त्वार्थसूत्र टीका)—मूल ले० आचार्य उमास्वामि; अनु० टी०-पं० सदासुखदास जी; प्र०-भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०; पृ० ५४३; व० १६१६; आ० प्रथम।

अर्थ प्रकाशिका—ले० आचार्य उमास्वामी, टी० पं सदासुखदास जी; प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत; भा० हि०; पृ० ४६८; व० १६४० ।

अर्घावली—प्र० सुमतिलाल, भा० हि०, पृ० १७।

अर्जुनलाल सेठी का जीवन चरित्र—प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य, भा० हि०; पृ० १५ ।

अर्जुनमाली—ले० डी० टी० शाह, भा० हि० ।

अर्थसंदृष्टि अधिकार—ले० पं० टोडरमल जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३०८, आ० प्रथम ।

अर्द्ध कथा—ले० प० बनारसीदास जी, संपा० डा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० हिन्दी परिषद प्रयाग, भा० हि०- पृ० ७३, व० १६४१, आ० प्रथम ।

अर्द्ध कथा—ले० प० बनारसीदास जी, सपा० डा० माताप्रसाद गुप्त; प्र० प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद प्रयाग, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६४३ ।

अर्द्ध कथानक—ले० प० बनारसीदास जी, सं० प० नाथूराम जी प्रेमी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १०२; व० १६४३, आ० प्रथम ।

अर्हत्प्रवचनम्—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे) प्र० ।

अर्हत पासा केवली—(अर्हन्त पासा केवलि)–ले० कविवर वृन्दावन जी; सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० पृ० २४, व० १६१०, आ० द्वितीय ।

अलकार चिन्तामणि—ले० अजितसेनाचार्य, प्र० सखाराम नेमचन्द दोशी शोलापुर, भा० स०, पृ० १६२, व० १८२६ शक ।

अवध परिचय—(अवध प्रान्त की जैन डाइरेक्टरी)–सपा० प० रामलाल पचरत्न, प्र० जिनेन्द्रचन्द्र मन्त्री अवध प्रान्तीय दि० जैन परिषद लखनऊ, भा० हि०, व० १६४५, आ० प्रथम ।

[illegible] के [illegible]—प्र० दिगम्बर जैन [illegible] सुर्वा, भा० हि०, पृ० २१।

अष्ट पाहुड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य; टी० पं० [illegible], प्र० मुनि अनन्त कीर्ति ग्रंथमाला बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ४१६; व० [illegible], आ० [illegible]।

अष्ट पाहुड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० टी० पं० [illegible] जैन न्याय तीर्थ, प्र० भारतवर्षीय जैन ग्रन्थरक्षक सोसाइटी देहली, भा० प्रा० हि०, पृ० १४७, व० १९४३, आ० प्रथम।

अष्ट शती—ले० भट्टाकलंकदेव, (आप्तमीमांसा तथा अष्ट सहस्री के साथ प्रकाशित)।

अष्ट सहस्री—ले० विद्यानन्द स्वामी, संपा० पं० वंशीधर, प्र० सेठ [illegible] आकलूज, भा० सं०, पृ० २९५, व० १९१५, आ० प्रथम।

अष्ट सहस्री तात्पर्य विवरणम्—ले० यशोविजय गणी, प्र० श्री जैन ग्रंथ प्रकाश सभा अहमदाबाद, भा० सं०, पृ० ४२८, व० १९३७।

अष्टांग हृदय—ले० श्रीमद्वाग्भट्ट, प्र० पन्नालाल जैन देश हितैषी [illegible] बम्बई।

अष्टाह्निका पूजन व महात्म्य—ले० हेमराज जी, संग्रह० सिंघई [illegible], पन्नालाल, प्र० स्वयं अमरावती, भा० हि०, पृ० १८, व० १९२१।

असहमत संगम—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० लेखक स्वयं हरदोई, भा० हि०, पृ० ५१२, व० १९२२, आ० प्रथम।

[illegible]—ले० [illegible]पाल जैन, प्र० मधुकर कार्यालय टीकमगढ़, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९४३, आ० प्रथम।

अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ पूजा—ले० कल्याण कुमार शशि, प्र०, [illegible], भा० हि०, पृ० ३६, व० १९४०।

अहिंसा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व० [illegible], आ० द्वितीय।

अहिंसा—ले० पं० कैलाश चन्द शास्त्री, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्बाला छावनी, भा० हि० पृ० ४८, व० १९३०, आ० प्रथम।

अहिंसा अर्थात् आनन्द की कुंजी—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० प्रेम मंडल हरदा सी० पी०, भा० हि०, पृ० ११।

अहिंसा और कायरता—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, हिन्दी विद्या-मंदिर देहली, भा० हि० पृ० २६; व० १९३८, आ० तृतीय।

अहिंसा धर्म प्रकाश [पूर्वार्ध]—ले० फुलजारीलाल जैन, प्र० स्वयं जैन स्कूल पानीपत, भा० हि०, प्र० ८३, व १९२४, आ० प्रथम।

अहिंसा प्रदीप—ले० धीरेन्द्र कुमार शास्त्री, प्र० अहिंसा प्रचारक संघ काशी, भा० हि०; प्र० ३३, आ० प्रथम।

अहिंसा सिद्धांत—ले० मुनि अमर चन्द, भा० हि०, प्र० ४८, व० १९३२।

अहिंसा धर्म और धार्मिक निर्दयता—ले० प्र० अज्ञात, भा० हि०।

अहिंसा धर्म और प्रेम—प्र० जीव दया सभा आगरा, भा० हि०, पृ० १०।

अंजना—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

अंजना पवञ्जय (काव्य)—ले० भवर लाल सेठी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९१५; आ० प्रथम।

अंजना पवञ्जय (नाटक)—ले० परमानन्द; भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३९।

अंजना सुन्दरी नाटक—ले० कन्हैयालाल; प्र० खेमराज श्री कृष्णदास बम्बई, भा० हि०, पृ० ११२, व० १९०९; आ० प्रथम।

अंजना सुन्दरी—ले० रामचरित उपाध्याय, भा० हि०।

आगम प्रमाणता सम्बन्ध में शास्त्रार्थ—ले० कई विद्वान; प्र० हीराचन्द नेमचन्द दोशी शोलापुर; भा० हि०; पृ० ३९; व० १९२४।

आचारसार—ले० आचार्य वीरनंदि; सपा० पं० इन्द्रलाल शास्त्री प० च

मनोहरलाल शास्त्री; प्र० माणिक चन्द दि० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भा० सं०; पृ० ६८; व० १६१८, आ० प्रथम।

आचारसार—ले० आचार्य वीरनंदि; टी० पं० लालाराम शास्त्री; प्र० सेठ शाह जोतीचन्द भाई चद सर्राफ बारामती, भा० स० हि०; पृ० २६६; व० १६३६, आ० प्रथम।

आचार्य शान्तिसागर पूजन स्तवन—ले० प० लालाराम व पं० मक्खन-लाल प्र० श्रीलाल जैन जव्हेरी कलकत्ता, भा० हि०; पृ० २८; व० १६३४।

आचार्य शान्तिसागर महाराज का चरित्र—प्र० राव जी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६२८, आ० प्रथम।

आत्मकथा—ले० प० दरबारी लाल सत्य भक्त, प्र० सत्याश्रम वर्धा सी० पी०, भा० हि०, पृ० २६१, व० १६४०, आ० प्रथम।

आत्म तेज—ले० भगवत जैन, प्र० स्वय; भा०हि०; पृ० ३०;व० १६३६।

आत्म दर्शन (सचित्र)—ले० मास्टर मेवाराम; प्र० पृथ्वीपाल जैन बड़ौदा, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६४४; आ० प्रथम।

आत्म चिन्तन –ले० केशरी मल जैन, भा० स० हि०; पृ० ६०।

आत्म दर्शन—ले० योगीन्द्र देव; भा० स०।

आत्म धर्म—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत; भा० हि०, पृ०१५६, व० १६१६, आ० प्रथम।

आत्मध्यान का उपाय—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० सवाई सेठ खुशाल चद चौरई छिन्दवाड़ा, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६२८, आ० प्रथम।

आत्म निवेदन—ले० के० भुजबलि शास्त्री, अनु० धरणीधर, भा० सं० हि०, पृ० ३२, व० १६४०।

आत्म प्रबोध—ले० कुमार कवि, अनु० पं० गजाधर लाल, संपा० पं० श्रीलाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १६४, आ० प्रथम।

आत्म प्रमोद—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० ३८ ।

आत्म प्रमोद (प्रथम द्वितीय भाग)—ले० ब्र० नन्दलाल, सम्पा० बिहारी लाल कठनेरा, प्र० लेखक स्वयं कारंजा, भा० हि०; पृ० ७१, व० १६२८, आ० प्रथम ।

आत्म भावना—ले० ब्र० नन्दलाल, भा० हि० पृ० १६, व० १६३१ ।

आत्म वन्दन (पद्य)—ले० ब्र० नन्दलाल, प्र० दुलीचन्द जैन कलकत्ता; भा० हि० पृ० २७; व० १६३६, आ० प्रथम ।

आत्मवाद और एकान्त परिहार—ले० प्र० ब्र० नन्दलाल, भा० हि०, पृ० २० ।

आत्म शुद्धि—ले० मुन्शीलाल एम० ए०, प्र० स्वयं; भा० हि०- पृ० ६६, व० १९१४, आ० द्वितीय।

आत्मसार छत्तीसी—ले० द्यानत राय कवि; भा० हि० ।

आत्म सिद्धि—ले० श्री मद्राज चन्द्र, संपा० पं० उदय लाल काशलीवाल, प्र० मनसुख लाल रावजीभाई बम्बई, भा० हि०, पृ० २०७, व० १६१८. आ० प्रथम ।

आत्म सिद्धि—ले० प दरबारी लाल सा० र०; प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर; भा० हि०, पृ० १७; व० १६३२ ।

आत्म सिद्धि और सम्यक्त्व—ले० प० दरबारी लाल सा० र०, प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १२, व० १६३२ ।

आत्मानन्द का सोपान—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० २०, व० १६२३; आ० प्रथम ।

आत्मानंद जैन शताब्दी स्मारक ग्रंथ—प्र० आत्मानद जैन सोसाइटी; भा० हि० अ० गु०, पृ० ११, व० १६३६ ।

आत्मानुशासन—ले० गुणभद्राचार्य, टी० पं० टोडरमल जी, अनु० हकीम ज्ञान चन्द, प्र० ज्ञान चंद जैनी लाहोर, भा० सं० हि०, पृ० ३४४, व० १८६७ ।

[illegible]—ले० [illegible]; टी० पं० [illegible], प्र० [illegible] ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०; पृ० २४२, व० १९२९, आ० द्वितीय।

आत्मिक मनोविज्ञान—ले० चम्पतराय बैरिस्टर; प्र० साहित्य मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १०५, व० १९३२, आ० प्रथम।

आत्मोन्नति—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० २४, व० १९३६, आ० प्रथम।

आदर्श कहानियाँ—ले० पंडिता चन्दा बाई, प्र० मूलचंद किशनदास कापडिया सूरत; भा० हि० पृ० २०४, व० १९३४ आ० प्रथम,

आदर्श जैन चर्या—ले० कामता प्रसाद जैन; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९४४, आ० प्रथम,।

आदर्श जैनी बनो—ले० ब्र० प्रेमसागर; प्र० बरातीलाल जैन [illegible] भा० हि०, पृ० १६; व० १९२६।

आदर्श नाटक—आ० प्रथम, भा० हि०, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; व० १९३३;

आदर्श निबंध—ले० पंडिता चन्दाबाई; प्र० जैन बालाविश्राम आरा भा० हि०, पृ० १४६।

आदर्श भावना—ले० ब्र० सुन्दरलाल, भा० हि०; पृ० १६, व० १९३५।

आदर्श महिला पंडिता चन्दाबाई—ले० पं० परमानन्द जैन शास्त्री; प्र० [illegible] देवी बालाविश्राम आरा, भा० हि०, पृ० २८३, व० १९४३; आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तुति (भाषा भक्तामर)—ले० पं० हेमराज, सपा०, मुंशी अमनसिंह, प्र० मु० अमनसिंह देहली, भा० हिं०, पृ० २८, व० १८९३; आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तोत्र—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० पं० [illegible] जी [illegible]

शुद्ध, प्र० सेठ हजारीलाल हरसुख राय सुसारी इन्दौर, भा० सं० हि०, पृ० २५, व० १९३६, आ० प्रथम।

आदिनाथ स्तोत्र व महावीराष्टक—ले० मानतु गाचार्य अनु० पं० भागचन्द प्र० हीरालाल पन्नालाल जैन दिल्ली, भा० स०, पृ० १६, व १९३९।

आदिनाथ स्तोत्र (विषापहार सहित)—ले० मानतु गाचार्य, अनु० टी० प० नाथूराम प्रेमी०, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ६०, व १९२३, आ० षष्टम्।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, टी० प० दौलतराम जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ९६२, व० १९२०, आ० प्रथम।

आदिपराण—ले० जिनसेनाचार्य टी० अनु० प० लालाराम शास्त्री, प्र० जैन ग्रथ प्रकाशन कार्यालय इन्दौर, भा० स० हि०, पृ० १७६८, व० १९१५, आ० प्रथम।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० दुलीचंद परवार देवरीसागर, भा० हि०, पृ० ४६०।

आदिपुराण—ले० जिनसेनाचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स०, पृ० २५८, आ. प्रथम।

आदिपुराण—(सचित्र)—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २०२, व० १९३५, आ० द्वितीय।

आदिपुराण (संक्षिप्त हिन्दी गद्यात्मक)—ले० मा० बिहारीलाल; प्र० शान्ति चन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९२६, आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा (प्रथम भाग)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० चन्द्र सेन जैन वैद्य इटावा; भा० हि०; पृ० ५४; व० १९१८; आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा (द्वितीय भाग)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा भा० हि० पृ० ७० ; व० ९१८ ; आ० प्रथम।

आदिपुराण समीक्षा की परीक्षा—ले० पं० लालाराम शास्त्री; प्र० माणिक चन्द्र बैनाड़ा बम्बई, भा० हि० ; पृ० ९६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक चौबीस ठाणा—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ मन्नूलाल जैन आगासोद, भा० हि०; पृ० १२४, व० १९३६, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक निवेदन—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशन दास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ०, १६; व० १९१७, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक पत्रावली (प्रथम भाग)—ले० प० गणेश प्रसाद जी वर्णी, प्र० जिज्ञासु मंडल कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४०; व० १९४०, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक पत्रावली (द्वितीय भाग)—ले० गणेश प्रसाद जी वर्णी, संपा० बा० छोटेलाल ; प्र० सर सेठ हुकम चन्द इन्दौर, भा० हि०; पृ० ७२, व० १९४१ आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक पत्रावली (तृतीय भाग)—ले० पंडित गणेश प्रसाद जी वर्णी प्र० जिज्ञासु मंडल कलकत्ता भा० हि०, पृ० १८३ व० १९४१, आ० प्रथम ।

आध्यात्मिक सोपान—संपा० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० दिगम्बर जैन पस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२५, व० १९३१, आ० प्रथम ।

आधुनिक जैन कवि—सपा० रमारानी, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी । भा० हि०, पृ० २१४, व १९४४ ।

आनुपूर्वी—प्र० उम्मेद सिह मुसद्दीलाल, भा० हि० पृ० २७, व. १९८८

आप्त परीक्षा—(मूल) ले० विद्यानन्द स्वामी, सपा० प लालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स०, पृ० १४, व० १९०४ ; आ० प्रथम ।

आप्त परीक्षा (सटीक)-ले० विद्यानन्द स्वामी; टी० अनु० प० उमराव सिंह प्र० स्याद्वाद विद्यालय काशी, भा० सं० हि०, पृ० ७२ व० १९१५ , आ० प्रथम ।

आप्त परीक्षा (पत्र परीक्षा सहित)—ले० विद्यानन्द स्वामी ; संपा० प० गजाधरलाल, प्र० पन्नालाल जैन बनारस; भा० सं० ; पृ० १७८, व० १९१३; आ० प्रथम ।

आप्तमीमांसा—ले० समन्तभद्राचार्य, संपा० पं० कालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० स८; प्र० १४; व० १९०४, आ० प्रथम ।

आप्तमीमांसा वचनिका—ले० समन्तभद्र आचार्य; टी० पं० जयचन्द्र जी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ११८, आ० प्रथम ।

आप्तमीमांसा प्रमाण परीक्षा—ले० समन्तभद्राचार्य, विद्यानन्द स्वामी संपा० प० गजाधरलाल, प्र० पन्ना लाल जैन काशी, भा० सं०, पृ० ८०, व० १९१४, आ० प्रथम ।

आप्त स्वरूप—ले० अज्ञात, टी० पं० उग्र सेन जैन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० २७२, व० १९४०, आ० प्रथम ।

आप्त स्वरूप—ले० अज्ञात, टी० प उग्रसेन जैन एम० ए०, प्र० महावीर प्रसाद एण्ड सन्स देहली, भा० हि०, पृ० १८७; व० १९४१; आ० प्रथम ।

आरती व तीर्थ भजनावली—सग्र० प० मगल सैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० ४२, व० १९४०; आ० तृतीय ।

आरती संग्रह—संग्र० पुरुषोत्तम दास जैन, प्र० स्वय सहारनपुर, भा० हि० पृ० १६, व० १९२६, आ० प्रथम ।

आराधनासार—ले० देवसेनाचार्य; स० टी० पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति देव; सपा प० मनोहर लाल शास्त्री, प्र० माणिकचद दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई भा० सं०, प्रा० पृ० १३१, व० १९१६; आ० प्रथम ।

आराधना (टीका)—ले० देव सेनाचार्य; टी० ,, ; अनु० पं० गजाधर लाल शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८८८, आ० प्रथम;

आराधनासार कथाकोष (प्रथम भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त, अनु० उदयलाल काशली वाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा सं० हि० ।

आराधनासार कथाकोष (दूसरा भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त; अनु० उदय लाल काशलीवाल, प्र० जैन मित्रकार्यालय बम्बई भा० सं० हिन्दी पृ० २०३; व० १९१५; आ० प्रथम।

आराधना सार कथाकोष (तीसरा भाग)—ले० ब्र० नेमिदत्त अनु० उदय लाल कासली वाल, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिन्दी पृष्ठ४६३; व० १९१६, आ० प्रथम।

आराधनासार कथाकोष (सचित्र-प्रथम भाग)—ले० परमानन्द विशारद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १९४; व० १९२७, आ० प्रथम।

आराधनासार कथाकोष (द्वितीय, तृतीय भाग)—ले०परमानन्द विशारद प्र० जिनवाणी कार्यालय कलकत्ता, पृ० १४६; आ० प्रथम।

आराधनासार कथा कोष (हिन्दी पद्य)—ले बखतावर रतनलाल; प्र० मोतीलाल जैन कुदेसर, मुजफ्फर नगर; भा० हि० पृ० ५४५; व० १९०६ आ० प्रथम।

आराधनास्वरूप—सम्र० धर्मचन्द हरजीवनदास ; भा० हि० ; पृ० ४८ ; व० १९१६।

आर्यभ्रम निराकरण—ले० मक्खनलाल जैन ; प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा , भा० हि० ; पृ० ३८ ; व० १९१३ ; आ० प्रथम।

आर्यभ्रमोच्छेदन—ले० उमरावसिंह जैन , प्र० चन्द्रसैन जैन वैद्य इटावा ; भा० हि० ; पृ० १२ ; व० १९१३ ; आ० प्रथम।

आर्यमत लीला—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार ; प्र० चन्द्रसैन वैद्य इटावा ; भा० हि० ; पृ० १८४ ; व० १९११ ; आ० प्रथम।

आर्य समाज की डबल गप्पाष्टक—ले० प० अजित कुमार शास्त्री ; प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन संघ अम्बाला छावनी ; भा० हि० ; पृ० २७ ; व० १९३९ ; आ० द्वितीय।

आर्य समाज के पचासौ प्रश्नों का उत्तर—ले० पं० अजित कुमार।

प्र० चम्पावती पुस्तकमाला अम्बाला छावनी ; भा० हि० ; पृ० ८६ ; व० १९३१ ; आ० प्रथम (दो अन्य पुस्तकें इसी प्रकार की प्रकाशित हुई हैं)।

आर्य समाज भ्रमोन्मूलन—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला छावनी, भाषा हिन्दी; पृष्ठ २१, व. १९३३ आ० प्रथम।

आर्य संशयोन्मूलन—लेखक पंडित देवकीनन्दन, प्रकाशक जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १८ व १९१३, आ० प्रथम।

आर्यों का तत्त्वज्ञान—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३१, व. १९१२, आ० चतुर्थ।

आर्यों की प्रलय—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक जैन, तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा; भाषा हिन्दी पृष्ठ ४०; व. १९१३; आ० द्वितीय।

आलाप पद्धति—लेखक देवसेनाचार्य, अनु० पंडित दीपचन्द जी वर्णी; प्रकाशक सेठ सवाभाई लखमल शाह आरोरा, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ १३२, व० १९३३ आ० प्रथम।

आलाप पद्धति—लेखक देवसेनाचार्य, अनु० पंडित हजारी लाल, संपा० पंडित फूलचन्द सि० शास्त्री, प्रकाशन दिगम्बर जैन पचान नातेपुते, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ १३६, व. १९३४।

आलोचना पाठ—प्रकाशन बा० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा हिन्दी व० १८९८।

आलोचना पाठ सटीक—अनु० भाईलाल कपूरचन्द भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४, व० १९०६।

आशाधर पूजा पाठ—लेखक पंडित आशाधर, संपादक नेमिशा उपाध्याय; भाषा स०; पृष्ठ १८३२, व १९२०।

आश्रम भजनावली (प्रथम भाग)—सग्र० प्रकाशक सुपरिंटडेंट प्रबन्ध भारतवर्षीय जैन अनाथाश्रम देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२; आ० द्वितीय।

आस्रव त्रिभंगी—लेखक श्रुतमुनि; भाषा संस्कृत, व १९२०; (भाव संग्रहादि में प्र०) ।

आहारदान विधि—लेखक पंडित वंशीधर; प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ५६, व १९२८ ।

इन्द्रिय पराजय शतक—लेखक अज्ञात; भाषा० सं ,

इष्ट छत्तीसी—लेखक कविवर बुधजान जी; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी पृष्ठ १४, वर्ष १९०८ आ० तृतीय ।

इष्टोपदेश—लेखक पूज्यपादाचार्य, भाषा० सं , पृष्ठ ७२, व १९२० ।

इष्टोपदेश टीका—लेखक आचार्य पूज्यपाद देवनन्दी; टीका ब्र० शीतल प्रसाद जी; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ २५६-व १९२३; आ० प्रथम ।

ईश्वरास्तित्व—लेखक पंडित पुत्तूलाल; प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १५, व १९१४, आ० प्रथम ।

उजले पोश बदमाश—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन सगठन सभा देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३, व १९२८, आ० प्रथम ।

उज्ज्वल जीवन के सात सोपान—लेखक मणिलाल नाथू भाई, अनु० मुनि तिलक विजय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, व १९२० ।

उत्तर पुराण—लेखक गुणभद्राचार्य, अनु० टीका पडित लालाराम शास्त्री प्र० जैन ग्रन्थ प्रकाशन कार्यालय इन्दौर, भाषा सस्कृत हिन्दी, पृष्ठ ७६०, व १९१८; आ० प्रथम ।

उद्गार (पद्य)—लेखक दलीपसिंह कागजी, प्रकाशक मोतीलाल जैन देहली; भाषा हिन्दी; पृष्ठ १६; व १९४२; आ० प्रथम ।

उन्नति शिक्षक—लेखक प्रकाशक छोटे लाल अजमेरा जयपुर, भाषा हिन्दी (१८ विविध विषयक निबंधों का संग्रह) ।

उपदेश और पुकार पच्चीसी—लेखक भैया देवीदास, प्र० जैन ग्रंथ

प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द; भाषा हिन्दी पृष्ठ १०; व० १९१० ।

उपदेश छाया आत्मसिद्धि—लेखक श्रीमद्राज चन्द्र, अनु० पंडित जगदीश चन्द्र शास्त्री एम ए., प्र० परम श्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ६४; व० १९३७, आ० प्रथम।

उपदेश माला—लेखक स्वामी आनन्दी लाल, प्र० शाह केशव लाल त्रिभुवन दास बडोदा, भाषा हिन्दी पृष्ठ १३, व० १९१४, आ० प्रथम।

उपदेश रत्नकोष—भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०, प्र० जैन पुस्तक प्रकाशन कार्यालय ब्यावर।

उपदेश रत्नमाला—लेखक पंडिता चन्दा बाई, प्र० जैन बालाविश्राम आरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३६, व० १९२५ आ० चतुर्थ।

उपदेश रत्नमाला (पद्य)—लेखक अज्ञात, अनु० दौलत राम जैन, सपा० मूल चंद वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भाषा हिन्दी पृष्ठ १५; व० १९२९, आ० प्रथम।

उपदेश रत्नावली—लेखक व प्र० पन्नालाल जैन मास्टर, लश्कर; भाषा हिन्दी।

उपदेश शुद्धसार—लेखक तारण तरण स्वामी; अनु० ब्र० शीतल प्रसाद प्र० सेठ मन्नूलाल आंबासौद; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३२६; व० १९२९; आ० प्रथम।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला—लेखक नेमिचन्द भंडारी; टीका पंडित पन्ना लाल बाकलीवाल; प्र० जैचन्द सीताराम सैतवाल वर्धा; भाषा हिन्दी पृष्ठ ८० व० १८८९, आ० प्रथम।

उपमिति भव प्रपंच कथा (प्रथम भाग)—लेखक सिद्धर्षि; अनु० पंडित नाथू राम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भाषा हिन्दी; पृष्ठ २०४, व १९११ आ० प्रथम।

उपमिति भव प्रपंच कथा (द्वितीय भाग)—लेखक सिद्धर्षि; अनु पंडित

नाथूराम प्रेमी प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकरक कार्यालय बम्बई भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६७; व० १९१२: आ० प्रथम।

उपासना तत्त्व—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३२, व० १९२१ आ० प्रथम।

उमास्वामी श्रावकाचार परीक्षा—लेखक पंडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक वीर सेवा मंदिर सरसावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २९, व. १९४४, आ० प्रथम।

ऋग्वेद के बनाने वाले ऋषि—लेखक बाबू सूरजभान वकील, प्रकाशक ज्योति प्रसाद जी देवबन्द भाषा हिन्दी पृष्ठ ११२, व० १९१४ आ० प्रथम।

ऋषभ दास जी जैन के पवित्र जीवन की कुछ झलक—लेखक ज्योति प्रसाद प्रेमी; भाषा हिन्दी; पृष्ठ १०, वर्ष १८३६।

ऋषभ देव की उत्पत्ति असंभव नहीं है—लेखक कामता प्रसाद जैन; प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्बाला छावनी; भाषा हिन्दी पृष्ठ ७६; व० १९३०; आ० प्रथम।

ऋषभ देव जी हत्या कांड का संक्षिप्त वृत्तान्त लेखक डा० गुलाबचंद पाटनी, प्रकाशक गुमानमल लुहाडचा अजमेर, भाषा हिन्दी पृष्ठ ३४; वर्ष १९२७।

ऋषभ देव में भयंकर हत्याकांड—लेखक जवाहरलाल जैन, प्र० स्वयं बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०।

ऋषभ पंचाशिका—लेखक धनपाल कवि, भाषा सं०, पृष्ठ ८, व० १८८६ (काव्य माला सप्तम गुच्छक मे प्र०)।

ऋषभ पुराण (पद्य)—ले० ब्र० मनसुख सागर; संपा० मा० बिहारी लाल चैतन्य; प्र० शान्ति चन्द जैन बुलन्दशहरी; भा०, हिं०, पृ० ५६; व० १९२६; आ० प्रथम।

ऋषि मंडल मंत्र कल्प—ले० विद्याभूषण सूरि; टी० पं० मनोहर लाल, प्र० जैन ग्रन्थ उद्धारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ६०, व० १९१९, आ० द्वितीय।

ऋषि मंडल मंत्र कल्प—ले० विद्याभूषण सूरि; टी० पं० मनोहर लाल; प्र० नेमचंद देवचन्द शाह शोलापुर; भा० सं० हि०; पृ० ६४, व० १६२६; आ० तृतीय।

ऋषि मन्डल यन्त्र पूजा—ले० गुणनन्दि मुनींद्र; टी० पं० मनोहरलाल; प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०; पृ० ४२; व० १६१५, आ० प्रथम।

एक रात—ले० जैनेन्द्र कुमार; भा० हि०, पृ० २०६, व० १६३५।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज, स० टी० भट्टारक चंद्रकीर्ति, अनु० सपा० प० परमानद शास्त्री, प्र० स्व० सपा०; भा० स० हि०; पृ० ५२; व० १६४०; आ० प्रथम।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज; (काव्य माला सप्तम गुच्छक में प्र०)।

एकीभाव स्तोत्र—ले० आचार्य वादिराज, (पंच स्तोत्र में प्र०)।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह—सपा० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, भा० हि०, पृ० ६१३; व० १६३७।

ऐतिहासिक स्त्रियाँ—ले० सपा० प्रेमलता देवी; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ८७, व० १६३६, आ० प्रथम।

ऐतिहासिक स्त्रियाँ—ले० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०।

एलक पन्नालाल दिग० जैन सरस्वती भवन—वार्षिक रिपोर्ट, ग्रन्थ-सूची, प्रशस्ति सग्रह (प्रथम वर्ष)—प्र० ठाकुरसीदास जैन मत्री बम्बई, भा० हि०; पृष्ठ १३६, व० १६२३।

वही	(द्वितीय वर्ष)	वही	पृ० ६८, व० १६२४।
वही	(तृतीय वर्ष)	वही	पृ० ११५, व० १६२५।
वही	(चतुर्थ वर्ष)	वही	पृ० १२०, व० १६२५।
वही	(पचम वर्ष)	वही	पृ० १७७, व० १६३१।
वही	(षष्ठ वार्षिक)	वही	पृ० ४०३, व० १६३२।

ओसवाल समाज की वर्तमान स्थिति—ले० कालूराम, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, वर्ष १९२१ ।

औदार्य चिन्तामणि—लेखक श्रुतसागर; संपादक एस. पी. वी. रंगनाथ स्वामी, भाषा प्राकृत संस्कृत; पृष्ठ ४४; वर्ष १९१७।

कथा कहानी और संस्मरण—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२८; वर्ष १९४१।

कथा मंजरी (पहिला भाग)—लेखक पंडित देवीदयाल चतुर्वेदी, प्रकाशक सरल जैन ग्रंथमाला जबलपुर; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३५; वर्ष १९४० आ० प्रथम ।

कथा मंजरी (दूसरा भाग)—लेखक मुवेन्द्र 'विश्व' प्रकाशक जैन ग्रंथमाला जबलपुर, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३८; वर्ष १९४१; आ. प्रथम ।

कनक तारा—लेखक बाबू सूरजभान वकील; प्रकाशक स्वयं; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३, वर्ष १९२५; आ प्रथम ।

कन्या विक्रम नाटक—प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी ।

कमल श्री नाटक—लेखक पंडित न्यामत सिंह, प्रकाशक न्यामत जैन पुस्तकालय हिसार; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३८६; वर्ष १९२७, आ० प्रथम।

कमला की सास—लेखक चन्द्रप्रभा देवी, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १३, वर्ष १९२७।

करलक्खण—सम्पादक प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी एम. ए. प्राकृत संस्कृत भाषा, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ काशी, पृष्ठ ५०, मूल्य १) व० १९४७।

क्या आर्य समाजी वेदानुयायी हैं—ले० पं० राजेन्द्र कुमार; प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला छावनी, भा० हि० पृ० ४७; व० १९३५; आ० द्वितीय ।

क्या ईश्वर जगत कर्त्ता है—ले० बा० दयाचन्द्र; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०; पृ० १२; व० १९१२; आ० प्रथम ।

क्या जैन समाज जिन्दा है—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय; प्र० हिन्दी विद्या मदिर न्यू देहली, भा० हि; पृ० ३२; व० १९३८; आ० प्रथम ।

क्या वेद ईश्वर कृत है—ले० पं० मंगलसेन; प्र० स्वयं अम्बाला छावनी; भा० हि०; पृ० २०; व० १९३१, आ० प्रथम ।

करकण्डु चरित—ले० मुनि कनकामर; सम्पा० प्रो० हीरालाल, प्र० गोपाल अम्बादास चवरे कारंजा; भा० अप०; पृ० २८४; व० १९३४; आ० प्रथम ।

करकुंड स्वामी की कथा—ले० अज्ञात, प्र०, जैन ग्रंथ प्रचार पुस्तकालय देवबन्द; भा० हि०; पृ० २०, व० १९०९; आ० प्रथम ।

कर्णाटक जैन कवि—ले० पं० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०; पृ० ३६, व० १९१४; आ० प्रथम ।

कर्म ग्रंथ भाग चौथा-षडशीति—ले० देवेन्द्र सूरि; अनु० पं० सुखलाल संघवी; प्र० आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मंडल आगरा, भा० प्रा० हि०, पृ० २९२; व० १९२२, आ० प्रथम ।

कर्त्तव्य कौमुदी—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर, भा० हि०; पृ० ५५०, व० १९२४ ।

कर्म प्रकृति—ले० शिवशर्म सूरि, भाषा, पृ० २८, व० १९२७;

कर्मप्रकृति टीका—ले० शिवशर्मसूरी; टी० मलयगिरि व यशोविजय, भा० प्रा० सं०; पृ० ३९२, व० १९३४ ।

कर्मग्रथ शतक—ले० देवेन्द्र सूरि; अनु० संपादन प० कैलाशचन्द्र शास्त्री; प्र० आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मंडल आगरा, भा० प्रा० हि०, पृ० ३७०; व० १९४२; आ० प्रथम ।

कर्मदहन विधान—ले० कविचन्द्र, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स०; पृ० १२ ।

कर्मदहन व्रत विधान आदि—ले० पं आशाधर, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० सं०; पृ० ६८; व० १९३८; आ० प्रथम ।

कर्मफल कैसे देते हैं—ले० स्वामी कर्मानन्द, प्र० जैन प्राचि [illegible]

सहारनपुर; भा० हि० पृ० ३८; आ० प्रथम ।

कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा मन्त्र स्तोत्र—प्र० मुन्शीलाल एंड संस कागजी देहली; भा० सं० हि०; पृ० १८; व० १९४२, आ० प्रथम ।

कल्पित कथा समीक्षा—ले० उग्रादित्याचार्य; अनु० संपा० वर्धमान पार्श्व-ना० शास्त्री; प्र० सेठ गोविन्द जी रावजी दोशी शोलापुर भा० सं० हिन्दी; पृ० ८१२, व० १९४०; प्रथम ।

कल्याण कारक—ले० उग्रादित्याचार्य, अनु० संपा० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० सेठ गोविन्द जी राव जी दोशी शोलापुर, भा० सं० हि, पृ० ८१२, व० १९४०; आ. प्रथम ।

कल्याण भावना—ले० ताराचद पांड्या; भा० हि०, पृ० १६, व० १९३४ ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र—ले० कुमुद चन्द्राचार्य; अनु पंडित बुद्धिलाल श्रावक; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, वर्ष १९१५, आ. प्र० ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र—ले० कुमुदचन्द्राचार्य, (काव्य माला सप्तम गुच्छक में प्र०) व० १८९६ ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र—लेखक कुमुदचन्द्राचार्य; व० १९०९, पंच स्तोत्र मे प्र० ।

कल्याण माला—ले० पडित आशाधर, भाषा सं०; व १९२१; (सिद्धांत सारादि संग्रह में प्र०) ।

कल्याण लोभणा (कल्याण लोचना)—लेखक अजीत ब्रह्म; भाषा प्रा० स०; पृष्ठ १०; वर्ष १९२१, (सिद्धांत सारादि सग्रह मे प्र०)

कल्याण लोभणा (कल्याण लोचना)—लेखक अजित ब्रह्म; अनु० लालाराम; भा० प्रा० सं० हिन्दी; पृष्ठ २१, (बृह भक्त्यादि सग्रह मे प्र०) ।

कलियुग की कुल देवी—ले० अज्ञात; भाषा हिन्दी; पृष्ठ १६; वर्ष १६११।

कलियुग लीला भजनावली—लेखक पंडित न्यामत सिंह, प्र० स्वयं हिसार; भा० हिन्दी, पृ० २०, व० १६१५, आ० तृतीय।

कविवर भूधरदास और जैनशतक—ले० शिखर चन्द जैन प्रा० र० प्र० सार्वजनिक वाचनालय इन्दौर, भा० हि०; व० १६३८।

क्वारों की दुर्दशा—लेखक प्र० बाबू सूरजभान वकील; भा० हिन्दी प्रष्ठ ३६; व० १६२७।

क्वारी बेवायें--लेखक अज्ञात, भा० हिन्दी।

कसाय पाहुड़ (जय धवल प्रथम खण्ड)—लेखक भगवत गुणधराचार्य, टी० स्वामी वीरसेन; जिनसेन; अनु० स पादक पडित फूलचन्द; प डित कैलास-चंद्र, प ंडित महेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सघ मथुरा, भाषा प्राकृत स स्कृत हिन्दी, प्रष्ठ ५६८; व० १६४४, आ० प्रथम।

कंस वही [प्राकृत काव्य]—सम्पादन ए. एन. उपाध्याय; भा० प्रा०।

कातन्त्र पच सधि(भाषाटीका)—लेखक पन्नालाल जैन; प्र० देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० स ं०।

कातन्त्र व्याकरण—लेखक सर्व वर्माचार्य, टी० भावसेन त्रैविद्य, स ंपा० जीवाराम शास्त्री, प्र० हीराचद नेमचंद, भा० स ं०, प्र० २२२, व० १८६५, आ० प्रथम।

कातन्त्र रूपमाला व्याकरण—ले० सर्व वर्माचार्य, टी० भावसेन त्रैविद्य, प्र० पन्नालाल जैन, देशहितैषी आफिस बम्बई; भा० स ं०।

काया पलट [रामकली]—लेखक ज्योति प्रसाद 'प्रेमी'; प्र० प्रेम पुस्त-कालय देवबद, भा० हि०; प्र० २२३६, व० १६२२, आ. प्रथम।

कालु भक्तामर स्तोत्र—लेखक स्वामी कादमल, अनु० कस्तूरी रंग नाथपा भाषा स ं० हिन्दी; प्रष्ठ ५०; वर्ष १६३०।

काव्य माला [२४ संस्कृत स्तोत्र पाठादि का संग्रह] संपादक पंडित काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भाषा संस्कृत; पृष्ठ १६१; व० १८९६; आ. द्वितीय, [इसके १३ या १४ गुच्छक प्रकाशित हुए हैं, जिनमें सातवां व तेरहवां महत्त्वपूर्ण है]।

काव्यानुशासनम्—ले० आचार्य हेमचंद्र, संपा० पं० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० ३६१, व० १९०१; आ० प्रथम

काव्यानुशासनम्—ले० श्री महाग्भट्ट, संपा० पं० शिवदत्त व पं० काशी नाथ शर्मा; प्र० निर्णयसागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० ६८, व० १८९४।

क्रिया कलाप—संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृष्ठ ३४०, व० १९३६, आ० प्रथम।

क्रिया कोष—ले० प० दौलतराम जी, प्र० जैन साहित्य प्रचारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी; पृ० १७८, व० १९१८, आ० प्रथम।

क्रिया कोष—ले० प० किशन सिंह जी, प्र० हीराचंद नेम चंद, शोलपुर, भा० हि०, पृ० १३६, व० १८९२।

क्रिया मंजरी—संग्र० पंडित लालाराम; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४२, व० १९१२; आ० प्रथम।

क्रिया रत्न समुच्चय—ले० गुणरत्न सूरि, भा० सं०; पृ० ३३५, व० १९०७।

कीर्ति कौमुदी—ले० कवि सोमेश्वर, भा० संस्कृत पृ० ७२, व० १८९७, (प्राचीन लेखमाला द्वितीय भाग में प्र०)।

कुन्दकुन्दाचार्य के तीन रत्न—लेखक श्री गोपालदास जीवा भाई पटेल, अनुवादक शोभाचंद्र भारिल्ल–भाषा हिन्दी पृष्ठ १४२ प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४८ मूल्य २)।

कुण्डलपुर महावीर पूजन—ले अज्ञात, भा० हिन्दी।

कुण्डलपुर महावीर परिचय—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी।

कुन्ती नाटक—ले० पं० न्यायत सिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हिन्दी, पृ०

२०, व, १६१३, आ० तृतीय,

कुन्थसागर गुण गायन—सम्पा. ब्र. विद्याधर वर्णी, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रन्थमाला शोलापुर भा० हिन्दी पृ० ७६, व० १६४२; आ० प्रथम ।

कुन्दकुन्द भजनावली—ले० ब्र० नन्दलाल. प्र० दिग० जैन ग्रंथमाला भिंड, भा० हि०, प्र० ३४, व० १६४२, आ० प्रथम ।

कुन्दकुन्दाचार्य चरित्र—लेखक तात्या नेमिनाथ पांगल, अनु० मूलचन्द किशन दास कापडिया, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृष्ठ ५३, व० १६१३ ।

कुन्दकुन्द वचनामृत—लेखक ब्र० नन्दलाल, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११, व० १६४५ ।

कुनयगज केसरी—सपा० प्रकाशक दिगबर जैन आम्नाय सरक्षिणी सभा खुर्जा, भाषा हिन्दी पृष्ठ ४३, व० १६११ ।

कुम्भापुत्त चरियम्—सपा० ए टी. उपाध्ये, भाषा प्राकृत, पृष्ठ १२६ ।

कुवलय माला कथा—लेखक रत्नप्रभ सूरि भाषा सस्कृत, पृष्ठ २५६, व० १६१५ ।

कुँवर दिग्विजय सिंह—प्रकाशक जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १८, वर्ष १६१० ।

कुसंग विष वृक्ष—लेखक पन्नालाल जैन, प्रकाशक देश हितैषी आफिस बम्बई, भाषा हिन्दी ।

केशरिया जी का हत्याकांड—ले० वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्र० मूलचद किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० १३६, व० १६२७ ।

कृपण पच्चीसी—ले० कवि विनोदीलाल प्र० जैन ग्रथ प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द; भा० हि०, पृष्ठ ८, व० १६१० ।

कन्नड़ प्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थ सूची—सम्पादक प० के भुजबली शास्त्री भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य १३) ।

खंडगिरि उदय गिरि पूजन—ले० मुनीम मुन्नालाल सुन्दर लाल, प्र० चतुराबाई कटक, भा० हि०, पृ० ३२।

खंडेलवाल जैन इतिहास—ले० राजमल बड़जात्या, प्र० स्वय, भा० हि०; पृ० ४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

ख्याल जैन धर्म प्रकाश—ले० मास्टर घासीराम, प्र० स्वय लखनऊ भा० हि०, पृ० २४, व० १८८८।

खुर्जा शास्त्रार्थ का पूर्ण रंग—प्र० जन सभा खुर्जा, भा० हि० पृ० ५० व० १९०६, आ० प्रथम।

गजबाणी—ले० ऋषभ चरण जैन, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृष्ठ १२६, व० १९२४, आ० प्रथम।

गजपुर क्षेत्र पूजा—ले० पं० मक्खन लाल प्रचारक, प्र० त्रिलोक चन्द जैन देहली, भा० हि०, पृ० ८, व० १९३७।

गद्य चिन्तामणि—ले० वादीभसिंह सूरि, संपा० कुप्पुस्वामी शास्त्री एस० सुब्रह्मण्य शास्त्री प्र० जी० ए० नेटमसन कंपनी मद्रास, भा० सं०, पृ० १६६, व० १९०२, आ० प्रथम।

ग्रंथत्रयी (तत्वानुशासन, वैराग्य मणिमाला, इष्टोपदेश)—ले० आचार्य रामसेन, श्रीचन्द्र, व पूज्यपाद, अनु० पं० लालाराम शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १९४, व० १९२१ आ० प्रथम।

ग्रंथ नामावली—प्र० दीपचन्द अग्रवाल मन्त्री ऐ० पन्ना लाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन झालरा पाटन, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६०, व० १९३३।

ग्रंथ परीक्षा (प्रथम भाग)—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११९, व० १९१७, आ० प्रथम।

ग्रंथ परीक्षा (दूसरा भाग)—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार,

प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११६, व० १६१७, आ० प्रथम ।

ग्रंथ परीक्षा (तृतीय भाग)—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६८, व० १६२८, आ० प्रथम ।

ग्रन्थ परीक्षा (चतुर्थ भाग)—ले० पंडित जुगल किशोर मुख्तार प्रकाशक जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हिन्दी, पृष्ठ १५६, व० १६३४, आ० प्रथम,

गागर में सागर—ले० दरबारीलाल सत्यभक्त, भा० हि०, पृ० ७२ ।

ग्रंथों की अक्षरानुसार सूची—सपा० सुपार्श्वदास गुप्त, प्र० जैन सिद्धांत भवन आरा, भा० हि०, पृ० १२५, व० १६१६ ।

गरीब—लेखक भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐतमाद पुर, भा० हिन्दी पृ० ६८ ।

गायन गोष्ठी—ले० चन्द्र सेन जैन वैद्य, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ ५६, व० १६३६

गिरनार महात्म्य—ले० कवि हजारीमल, सपा० वंशीधर जैन, प्र० जैन ग्रंथ कार्यालय ललित पुर, भा० हि०, पृ० १०७, व० १६१६, आ० प्रथम ।

गिरनारादि जैन मूड बद्री यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० स्वय फुलेरी, राजपूताना; भा० हि०, पृ० २६४, व० १६१३, आ० प्रथम ।

गुरु स्तुति—ले० वृन्दावन जी, भा० हि०, पृ० ७, व० १६१० ।

गुर्वष्टक—ले० वृन्दावन जी, भा० हि०, पृ० ४, व० १६१० ।

गृह देवी—ले० बा० सूरज भान वकील, प्र० महावीर ग्रन्थ कार्यालय आगरा, भा० हि० पृ० ६८, आ० द्वितीय ।

गृहस्थ धर्म—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० मा० चिम्मन लाल देहली, भा० हि०, पृष्ठ २२, व० १६२६, आ० प्रथम ।

गृहस्थ धर्म—ले० ब्र० शीतल प्रसाद जी, प्र० मूलचंद किशन दास कापडिया सूरत; भा० हि०, पृ० ३०६, व० १९४३, आ० तृतीय।

गृहस्थ शिक्षा—ले० ज्योति प्रसाद प्रेमी, प्र० प्रेम भवन देवबंद, भा० हि० पृ० ३२, व० १९३५, आ० प्रथम।

गृहस्थ शिक्षा सार—लेखक व प्रकाशक बा० छोटे लाल अजमेरा जयपुर, भा० हि०।

गृहिणी कर्त्तव्य—लेखक पंडिता लज्जावती जैन, प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०४, वर्ष १९४१, आ० प्रथम।

गोमट्ट सार (कर्म काड)—लेखक आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, टी० पंडित मनोहरलाल शास्त्री, प्रकाशक परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भाषा प्रा० स० हिन्दी, पृष्ठ २८८, वर्ष १९१२, आ० प्रथम।

गोमट्ट सार (कर्म काड)—लेखक आचार्य नेमि चद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, सं० टीका नेमि चद्र मुनि, हिन्दी टीका पडित टोडरमल जी, प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता भाषा प्राकृत सं० हिन्दी, पृष्ठ २१००, आ० प्रथम।

गोमट्टसार (जीव काड)—लेखक आचार्य नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती सं० टीका अभय चंद्र, हिन्दी टीका पडित टोडरमल्ल जी, प्रकाशक, भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी सस्था कलकत्ता भाषा प्राकृत स० हिन्दी, पृष्ठ १३२९, आ० प्रथम।

गोमट्टसार (जीव काड)—लेखक आचार्य नेमिचद्र सिद्धात चक्रवर्ती, टीका पडित खूबचद्र शास्त्री, प्रकाशक परम श्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ २७३, व० १९१६, आ० प्रथम।

गोमट्टसार (जीव काड)—लेखक आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धात क्रवर्ती, टीका पं मनोहर लाल, प्रकाशक श्रेष्ठि नाथारंग जी गाधी आकलूज, भाषा प्राकृत हिन्दी, पृष्ठ १५१, वर्ष १९११ आ० प्रथम।

गोमट्टसार पूजा—लेखक पंडित टोडरमल्ल जी, प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १३।

गोमट्टसार पीठिका—ले० टी० पं० टोडरमल जी, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ७१।

गोमट्टेश्वर पूजन भजन व आरती—ले० ला० पूरनमल, प्र० स्वयं शमशाबाद आगरा, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३९, आ० प्रथम।

गौतम चरित्र—ले० भट्टारक धर्म चन्द, अनु० प लालाराम, प्र० मूलचद किशन दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० २०४, व० १९२७, आ० प्रथम।

गौतम चरित्र—ले० भट्टारक धर्म चन्द, अनु० नन्दन लाल जैन, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृ० १०४, व० १९३९ आ० प्रथम।

गोतम पृच्छा—ले० नन्द लाल, सपा० छोटे लाल, भा० हि०।

गौरव गाथा—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली भा० हि०, पृ० २०, व० १९४०, आ० प्रथम।

घरवाली—ले० भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐत्मादपुर, भाषा हि० व० १९४२।

घूंघट—ले० भगवत जैन, प्र० भगवत भवन ऐत्मादपुर, भा० हि०, पृ० ३१; व० १९३८।

चतुः विंशति संधानम्—ले० कवि जगन्नाथ; अनु० टी० पं० लाला राम, प्र० रावजी सखाराम दोशी, शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० १५२, व० १९२९, आ० प्रथम।

चतु विंशति संधानम्—ले० कवि जगन्नाथ, अनु० टी० पं० लालाराम प्र० गाँधी नाथारग जी शोलापुर, भा० स० हि०, पृ० १५२; व० १९२८ आ० प्रथम।

चतुर्दशी महात्म्य—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, प्र० नेमिचन्द जैसवाल अजमेर भा० स, पृ० ७२ व० १९३७, आ० प्रथम।

चतुर्विंशति का स्तुति—ले० मुनि सुधर्म सागर, अनु० लालाराम शास्त्री प्र० आचार्य शान्ति सागर ग्रंथ माला सागवाडा; भा० सं० हि०, पृ० १२६, व० १६३६ ।

चतुर्विशति जिन पूजा—ले० कवि रामचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २१९, व० १६२४, आ० प्रथम ।

चतुर्विंशति जिन पूजा (सचित्र)—ले० कविवर वृन्दावन जी, प्र० चन्दा-बाई दिग० जैन ग्रन्थमाला देहली; भा० हि०; पृ० १२६; व० १६३८ ।

चतुर्विंशति जिन पूजा (सचित्र)—ले० बख्तावर रतन लाल; प्र० चंदा बाई दिग० जैन ग्रथमाला देहली, भा० हि०, पृ० १४८ ।

चतुर्विंशति जिन पूजा विधान—ले० रामचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सि० प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि० पृ० २१२; व० १६२३, आ० प्रथम ।

चतुर्विंशति जिन स्तुति—ले० शोभन मुनि, भा० म०, (काव्य माला सप्तम गुच्छक मे प्र०) ।

चन्द्र प्रभु चरितम्—ले० वीरनन्द्याचार्य; सपा० प० काशीनाथ शर्मा; प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भा० स०; पृ० १५०; व० १८६२, आ० प्रथम ।

चन्द्र प्रभु चरित्र—ले० वीरनन्द्याचार्य, अनु० प० रूप नरायण पाडेय, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० १८८, व० १६१६, आ. प्रथम ।

चन्द्र प्रभु पूजा—ले० अज्ञात भा० हि० ।

चन्द्र सागर का बहिष्कार क्यों—प्र० दिग० जैन मुनि धर्म रक्षक कमेटी इन्दौर; भा० हि०, पृ० ४१. व० १६४० ।

चर्चा चन्द्रोदय (प्रथम भाग)—ले० प० जीयालाल, प्र० स्वय फरुखनगर भा० हि०, ।

चर्चा चन्द्रोदय (द्वितीय भाग)—ले० प० जीयालाल, प्र० स्वय फरुख नगर भा० हि०; पृ० १०६, व० १८६२, आ. प्रथम ।

चर्चा चन्द्रोदय (तृतीय भाग)—ले० पं० जीयालाल; प्र० स्वयं फरुख नगर भा० हि०, पृ० ६४, व० १८६४।

चर्चा मंजरी—ले० वैद्य शीतल प्रसाद, प्र० स्वय देहली, भा० हि०; पृ० १६, व० १८६६, आ० प्रथम।

चर्चा शतक—ले० कवि द्यानतराय जी, प्र० नाना राम चन्द्र नाग फल्टन, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९००, आ० प्रथम।

चर्चा शतक—ले० कवि द्यानतराय जी, टी० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९१३, आ० प्रथम।

चर्चा समाधान—ले० प० भूधर दास, प्र० जैन ग्रंथ प्रभाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० पृ० १६०, व० १९२०, आ० प्रथम।

चर्चा समाधान—ले० प० भूधर दास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १०४, व० १९२५, आ० प्रथम,—पृ० १२३, व० १९२६, आ० द्वितीय।

चर्चा सागर—ले० पाडे चम्पा लाल, प्र० हसराज महादुराम चुहाडया नादगाँव, भा० हि०, पृ० ५३८, व० १९३०, आ० प्रथम।

चर्चा सागर उपनाम गंदा सागर—ले० अज्ञात, भा० हि०।

चर्चा सागर के विषय पर संक्षिप्त वक्तव्य—ले० प० झम्मन लाल तर्क-तीर्थ, भा० हि० पृ० १३४, व० १९३३।

चर्चा सागर के शास्त्रीय प्रमाणों पर विचार—ले० प० गजाधर लाल शास्त्री, प्रकाशक दिग० जैन युवक समिति कलकत्ता, भा० हि० पृ० २८४, व० १९३२, आ० प्रथम।

चर्चा सागर ग्रंथ पर शास्त्रीय प्रमाण—ले० प मक्खन लाल न्या०ल० प्र० दिग० जैन हितकारणी सभा बम्बई, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३१, आ० प्रथम।

चर्चा सागर ग्रंथ पर शास्त्रीय प्रमाण का मुँह तोड़ उत्तर—ले० रतन

लाल झाभरी; प्र० दिग जैन युवक समिति कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६, व० १६३२ ।

चर्चा सागर समीक्षा—ले० प० परमेष्ठिदास प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ़ देहली; भा० हि०, पृ० २६४; व० १६३२; आ० प्रथम ।

चाँदनी (काव्य)—ले० भगवत स्वरूप, प्र० स्वय ऐतमादपुर; भा० हि०, पृ० ६५, व० १६४३ ।

चारदान कथा (छन्द बद्ध)—प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद भा० हि० पृ० २६; व० १६०६, आ० प्रथम ।

चारित्र प्राभृत—ले० कुन्दकुन्द आचार्य, (षट् प्राभृतादि सग्रह मे प्र०) ।

चारित्र पाहुड—ले० कुन्दकुन्द आचार्य; (अष्ठ पाहुड व षट् पाहुड मे प्र०) ।

चारित्र सार—ले० चामुडराय, सपा० पं० इन्द्र लाल व उदय लाल काशलीवाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० स०, पृ० १०३, व० १६१७, आ० प्रथम ।

चारित्रा सार—ले० चामुडराय, अनु० टी० लालाराम शास्त्री; सपा० गजाधर लाल व श्री लाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता भा० हि०, पृ० २१८; आ० प्रथम ।

चारुदत्त चरित्र (पद्य)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० १११, व० १६१२, आ० प्रथम ।

चारित्र भक्ति—(दशभक्त्यादि सग्रह में प्र०) ।

चारुदत्त चरित्र—ले० प० परमेष्ठिदास, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत भा० हि०, पृ० १४८, व० १६३५, आ० प्रथम ।

चारुदत्त चरित्र—ले० वैद्य पारसदास, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ११२, व० १६३५, आ० प्रथम ।

चारुदत्त—ले० अज्ञात, भा० सं० ।

शिकागो प्रश्नोत्तर—ले० स्वामी आत्माराम, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९०४।

चित्रसेन पद्मावती चरित्र—ले० पूर्णमल, संपा० प० के० भुजबलि शास्त्री, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ८२, व० १९३६, आ० प्रथम।

चित्रबन्ध स्तोत्र—ले० गुणभद्राचार्य, भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह मे प्र०)।

चिदानन्द शिव सुन्दरी नाटक—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० ६१, व० १९०६, आ० प्रथम।

चेतन कर्म चरित्र (पद्य)—ले० कवि भगवती दास, प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भा० हि० पृ० ३६, आ० प्रथम।

चेलना चरित्र (पद्य)—ले० प० राजकुमार, प्र० दिग० जैन सघ अम्बाला छावनी, भा० हि०, पृ० ३८, व० १९३८, आ० प्रथम।

चैत्य भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, भा० म० हि०, (दश भक्त्यादि संग्रह मे प्र०)।

चौबीस ठाणा चर्चा—ले० अज्ञात, भा० प्रा० हि०।

चौबीस तीर्थंकरों की ज्ञातव्य बातों का नकशा—ले०अज्ञात; भा० हि०।

चौबीस दडक-(प्रकरण भाषा में प्र०)।

चौबीसी अखाड़ा—ले० यति नयनानद, प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०, पृ० १५, व० १९०८।

चौबीस पाठ—ले० कविबर वृन्दावन, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

चौबीसी पूजा (संग्रह) व संस्कृत चौबीसी पाठ—ले० कवि रामचन्द्र, वृन्दावन, बख्तावरसिंह, प्र० ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, भा० हि० स०, पृ० ५८४, व० १९१०।

चौबीसी पुराण—ले० प० पन्नालाल साहित्याचार्य, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २६३, व० १६३६, आ० प्रथम।

चौंसठ ऋद्धि पूजा—ले० अज्ञात, भा० हि०।

चौबीस स्थान चर्चा—ले० प्र० रामचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० १५०; व० १६०५।

छन्द शतक—लै० वृन्दावन दास; संपा० जमनालाल जैन; प्र० संस्करण सेठी हैदराबाद, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६४७, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० मुन्शी अमनसिह; प्र० स्वयं देहली; भा० हि०, पृ० ५३, व० १८६६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; टी० बा० सूरजभान वकील; स्वयं देवबन्द, भा० हि०, पृ० ४५, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० ब्र० शीतल, प्रसाद प्र० माणिकचद हीराचन्द बम्बई, भा० हि०, पृ० ५८; व० १६१२, आ० तृतीय।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, सपा० प० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० मूलचन्द किसनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६२७, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, संपा० प्र० श्रीलाल जैन देहली, भा० हि० पृ० ७६, व० १६२६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० प० मुन्नालाल राधेलीय; प्र० स्वयं सागर, भा० हि०, पृ० २००, व० १६३६, आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी; सपा० प० भुवनेन्द्र 'विश्व', प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८४; व० १६३८, आ० द्वितीय।

छहढाला—ले० कविवर दौलतराम जी, टी० प० मोहनलाल काव्यतीर्थ; प्र० हरप्रशाद जैन वैद्य, भा० हि० पृ० १२८, व० १६४४, आ० पंचम।

छहढाला—ले० कविवर द्यानतराय जी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२, व १६०६ आ० प्रथम।

छहढाला (बावनाक्षरी)—ले० द्यानत राय जी, टी० मुंशी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वयं टी० कटनी, भाषा हिन्दी पृष्ठ १४ व० १८६८; आ० प्रथम।

छहढाला—ले० कविवर बुधजन जी; टी० मुन्शी नाथूराम लमेचू; प्र० स्वयं टी० कटनी मुडावरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६; व० १८६८; आ० प्रथम।

छात्रों के लिए उपदेश—ले० मुन्शीलाल एम. ए., प्र० स्वय भा० हि०।

छेदपिंड—ले० इन्द्रनन्दि, संपा० पन्नालाल सोनी, भा० स०; (प्रायश्चित संग्रह में प्र०)।

छेदशास्त्र—ले० इन्द्रनन्दि, सपा० पन्नालाल सोनी; भा० स०, (प्रायश्चित संग्रह मे प्र०)।

जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला—ले० मुनि यशपति; भा० प्र०, पृ० १३५; व० १६३६।

जकड़ी सग्रह—(१५ जकडिया) प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०।

जगदीश विलास—ले० कवि जगदीश राय, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भाषा हिन्दी पृष्ठ ५२, व० १६२५, आ० द्वितीय।

जगत्कर्तृत्व मीमांसा—ले० बालचन्द्र यति, भा० स० हिन्दी पृष्ठ १०१; व० १६०८।

जगदुत्पत्ति विचार—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०, व० १६१३ आ० प्रथम।

जननी और शिशु—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११७, व० १६२३ आ० प्रथम।

जम्बू गुण रत्नमाला—ले० जेठमल; भा० हि० पृष्ठ ८४, व० १६१६।

जम्बू द्वीप का नक्शा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद; व० १८६८।

जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति (२ भाग)-सटीक—भा० प्रा० स० पृ० ५४५, व० १६१६।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले॰ पं॰ राजमल्ल, संपा॰ पं॰ जगदीशचन्द्र एम. ए.; प्र॰ माणिकचन्द दिग॰ जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भाषा सं॰ पृष्ठ २६००; व

जम्बू द्वीप षटमास—ले॰ उमास्वामि, भा॰ सं॰ पृ॰ २७; स॰ १६०२ १६३६; आ॰ प्रथम ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले॰ अज्ञात; अनु॰ प॰ दीपचन्द वर्णी, प्र॰ मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत; भा॰ हि॰, पृ॰ ५८, व॰ १६२७, आ॰ तृतीय ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले॰ पडि रायमल्ल; अनु॰ ब्र॰ शीतल प्रसाद; प्र॰ दिग॰ जैन पुस्तकालय सूरत, भा॰ हि॰ पृ॰ २१६, व॰ १६३६ आ॰ प्रथम ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले॰ जिनदास; अनु॰ मुन्शी नाथूराम लमेचू; प्र॰ स्वयं अनु॰ कटनी मुन्डाबरा; भा॰ हि॰, पृ॰ ६२, व॰ १६०२, आ॰ प्रथम, ।

जम्बू स्वामी चरित्र—ले॰ प॰ दीपचन्द्र वर्णी; प्र॰ ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम मथुरा, भा॰ हि॰, पृ॰ ३६, व॰ १६३६ ।

जय धवला टीका—प्र॰ अज्ञात, भा॰ प्रा॰ स॰, व॰ १६३४ ।

जय विजय—ले॰ अज्ञात; सपा॰ राजमल लोढा, प्र॰ जैन धर्म प्रचारक मंडल अजमेर; भा॰ हि॰, पृ॰ १६; व॰ १६३४, आ॰ प्रथम ।

जसहर चरिउ—ले॰ महाकवि पुष्पदन्त, सपा॰ पी॰ एल॰ वैद्य; प्र॰ जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारजा, भा॰ अप॰, पृ॰ २१७; व॰ १६३१ आ॰ प्रथम ।

जाति वर्ण और विवाह—ले॰ मोतीचन्द गौतमचन्द कोठारी, प्र॰ रावजी फूलचन्द कोठारी फलटण; भा॰ हि॰; पृ॰ ८६, व॰ १६३५ आ॰ प्रथल ।

जातीय संगठन—ले॰ कुँवरलाल न्या॰ तो. प्र॰ ताराचन्द रपरिया आगरा, भा॰ हि॰, पृ॰ ३२, आ॰ प्रथम ।

जिनचतुर्विंशतिका—ले॰ भूपाल कवि; भा, सं; पृ, ५; व; १८६६, काव्यमाला सप्तम् गुच्छक मे प्र॰; (तथा पंच स्तोत्र मैं प्र॰) ।

जिनचतुर्विंशति काव्य—ले॰ पं॰ जियालाल, भा॰, हि॰, प्र॰ २६, व॰ १६१४ ।

जिन चतुर्विंशतिका स्तुति—ले० पं० भूधरदास, भा, हि; पृ०, १६, व० १८६६।

जिन गुणगायन मंजरी (प्रथम भाग)—पं० सद्भावरत्नाकर कार्यालय सागर; भा० हि०; पृ० ६४; व० १९१७; आ० प्रथम।

जिनगुण मुक्तावली—ले० कवि भूधरदास, सपा० मुन्शी अमनसिंह; प्र० स्वयं संपा० देहली, भा० हि०; पृ० १२; आ० प्रथम।

जिनवृत्त—ले० धन्यकुमार सिंह; प्र० सन्तोषकुमार जैन उत्तरपाड़ा; भा० हि०, पृ० २८, व० १९२४, आ० प्रथम।

जिनदत्त चरित्रम—ले० गुणभद्राचार्य; संपा० प० मनोहरलाल; प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रथमाला बबई, भा० स०; पृ० १००, व० १९१७; आ० प्रथम।

जिनदत्त चरित्र—ले० गुणभद्राचार्य, अनु० श्रीलाल जैन का० तो०, प्र० जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता; भा० हि०, पृ० १३६; आ० प्रथम।

जिनदत्त चरित्र (भाषा पद्य)—ले० बख्तावर रतनलाल; सपा० प्र० मुशी अमनसिह सोनीपत; भा० हि०; पृ० १६२, व० १९०२, आ० प्रथम।

जिन देव स्तुति (भाषा एकीभाव)—ले० कवि भूधरदास, प्र० मुंशी अमन सिंह देहली; भा० हि० पृ० १६; व० १८९६, आ, प्रथम।

जिन रत्नकोष (भाग १)—सपा० एन० डी० वेलकर, प्र० भडारकर ओरियटल रिसर्च इस्टीट्यूट पूना, भा० अ० स०, पृ० ४७६, व० १९४४, आ० प्रथम।

जिन पूजाधिकार मीमांसा—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० सेठ नाथारग जी गांधी बबई, भा० हि०; पृ० ५६, व० १९१३, आ० प्रथम।

जिन वाणी माता की पुकार—ले० परमेष्ठिदास लमेचू, प्र० उदयराज बद्रीदास कलकत्ता, भा० हि०; पृ० २०, व० १९१३, आ० प्रथम।

जिनवाणी संग्रह—सग्र० सपा० प० सतीशचद्र, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता । भा० हि० स०, पृ० ४६४, आ० छठी ।

जिनशतक (स्तुति विद्या)—ले० समतभद्राचार्य, स० टी० नृसिहभट्ट, हि० अनु० प० लालाराम, प्र० स्याद्वाद रत्नाकर कार्यालय काशी, भा० स० हि०, पृ० १२८, व० १९१२, आ० प्रथम ।

जिनशतकार—ले० जम्बू गुरु, भा० स०, पृ० २२, (काव्यमाला सप्तम गुच्छक मे प्र०) ।

जिनशासन का रहस्य—ले० प० माणिकचन्द न्या० आ०, प्र० जैन-मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ६७ व० १९३८, आ० प्रथम ।

जिनसहस्रनाम—ले० जिनसेनाचार्य व० प० आशाधर, प्र० जैनग्रथ-रत्नाकर कार्यालय बबई, भा० स० ।

जिन सहस्त्र नामस्तोत्र—ले० जिनसेनाचार्य, अनु० प० गौरीलाल सि० शा०, भा० सं० हि०, पृ० ६१, व० १९३ , आ० प्रथम ।

जिनेन्द्र गुणगायन—सपा० मूलचन्द्र, गुप्त, प्र० जैनग्रथ प्रभाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २८, व० १९१८ ।

जिनेन्द्र गुणानुवाद पच्चीसी—ले० कवि चुन्नीलाल, भा०; हि,० प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बबई ।

जिनेन्द्र दर्शनपाठ—सग्र० पं० मुन्नालाल, प्र० स्वय सिवनी, भा० सं० हि०, पृ० ३२, व० १९१२; आ० प्रथम ।

जिनेन्द्र पच कल्याणक—ले० प० रूपचन्द्र; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त-प्रकाशनी सस्था कलकत्ता; भा० हि०; पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम ।

जिनेन्द्र पच कल्याणक पाठ—ले० प० रूपचन्द्र, अनु० सपा० कुन्दनलाल जैन, प्र० दिगम्बरजैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९२७, आ० द्वितीय ।

जिनेन्द्र भजन भंडार—ले० पन्नालाल जैन, प्र० स्वय सिवनी, भा०

हि०' पृ० ६०; व० १९२२, आ० प्रथम।

जिनेन्द्र भजन माला—ले० प० न्यामतसिंह; प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० ३४; व० १९२४; आ० द्वितीय।

जिनेन्द्र मत दर्पण (प्रथम भाग)—ले० बा० बनारसीदास, संपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि० पृ० ३२; व० १९२६, आ० पचम।

जिनेश्वर पद सग्रह—ले० जिनेश्वरदास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ६४।

जीव और कर्म विचार—ले० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० दिगम्बर जैन महासभा; भा०, हि०, पृ० २६७, व० १९२१, आ० प्रथम।

जीव कर्म सवाद—ले० आत्माराम, प्र० मेलाराम, भा० हि०; पृ० ६७, व० १९४३।

जीवन चरित्र दा० वी० सेठ हुकमचन्द—प्र० मैनेजर जैन मित्र, भा० हि०, पृ० ७, व० १९१४।

जीवन निर्वाह—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बबई, भा० हि,० पृ० २०३, व० १९२०, आ० प्रथम।

जीवधर चम्पू—ले० महाकवि हरिश्चन्द्र, संपा० टी० एस० कप्पु स्वामी शास्त्री, प्र० सपादक स्वय तजोर, भा० स०; पृ० १५२, व० १९०५, आ० प्रथम।

जीवंधर चरित्र—ले० गुणभद्राचार्य, सपा० टी० एस० कप्पूस्वामी, प्र० सपा० स्वय तजोर, भा० स०, पृ० ६१, व० १९०७।

जीवधर चरित्र—ले० अज्ञात सपा० विद्या कुमार सेठी व राजमल लोढा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मडल अजमेर, भा० स०, पृ० १६।

जीवधर चरित्र (पद्य)—ले० पं० नथमल बिलाला, प्र० जैन मदिर रोहतक, भा० हि० पृ० ३१०; व० १९४२ आ० प्रथम।

जीवंधर नाटक—ले० पं० कुञ्ज बिहारी लाल; प्र० स्वयं, हजारी बाग; भा० हिं०, पृ० १२१, व० १९१७, आ० प्रथम।

जीव रक्षा दर्पण—सग्र० पारसदास खजाची, प्र० स्वय देहली; भा० हिं०, पृ० ७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

जीव स्थानम् (प्रथम पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदंत भूतबलि; टी० वीर सेन स्वामी, सपा० प० बशीधर, प्र० गाधी हरीभाई देवकरण शोलापुर भा० प्रा० स०, पृ० ३८०, व० १९३९, आ० प्रथम।

जीव स्थानम् (द्वितीय पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदत भूतबलि, टी० वीर सेन स्वामी, सपा० प० बशीधर, प्र० गाधी हरीभाई देवकरण शोलापुर, भा० प्रा० स० पृ० ३४४, व० १९४०, आ० प्रथम।

जीव स्थानम् (तृतीय पुष्प)—ले० आचार्य पुष्पदत भूतबलि, टी० वीर-सेन स्वामी, सपा० प० बशीधर, प्र० गाधी हरीभाई देवकरण शोलापुर, भा० प्रा० स०, पृ० ३७६, व० १९४१; आ० प्रथम।

जीवाजीव बिचार (प्रथम भाग)—ले० मास्टर पन्नूलाल काला; प्र० शिक्षा प्रचारक कार्यालय देहली, भा० हि०।

जीवाजीव विचार (द्वितीय भाग)—ले० मास्टर पन्नूलाल काला, प्र० शिक्षा प्रचारक कार्यालय देहली; भा० हि० पृ० ३२; व० १९३२ आ० प्रथम।

जेल में मेरा जैनाभ्यास—ले० सेठ अचल सिह, प्रकाशक स्वय आगरा; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४४० ,वर्ष १९३४, आ० प्रथम।

जैनों शास्त्रार्थ—प्रकाशक अज्ञात, भाषा हिन्दी, वर्ष १९१७।

जैन आरती संग्रह—सग्रहकर्त्ता श्रीलाल जैन; प्रकाशक नन्नूमल जैन देहली; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६, व० १९४४, आ० प्रथम।

जेन इतिहास—लेखक अज्ञात; भाषा हिन्दी।

जैन इतिहास की पूर्व पीठिका और हमारा अभ्युत्थान—लेखक प्रो० हीरालाल जैन, प्र० हिन्दीग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ १८३, व० १९३९; आ० प्रथम।

जैन इतिहास सोसाइटी—ले० बा० बनारसीदास, अनु० बाबू देवीसहाय, प्र० सेठ नाथारग जी गाधी आकलूज, भा० हि०, पृ० ७६, व० १६०४, आ० प्रथम ।

जैन और बौद्ध का भेद—ले० डा० हर्मन जैकोबी, अनु० संपा० राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द, भा० हि०, पृ० १०, व० १८६७, आ० द्वितीय ।

जैन ऋषि (पद्य)—ले० श्री प्रेमी; प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २०, आ० प्रथम ।

जैन कथा कोष—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० ।

जैन कथा द्वाविंशति—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, भाषा सस्कृत, पृष्ठ ३६, व० १८६६ ।

जैन कथा संग्रह व स्त्री रक्षा—प्र० बा० ज्ञान चन्द जैनी लाहौर, भाषा हि०, पृ० २२०, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैन कर्म सिद्धान्त—ले० पंडित अजित कुमार शास्त्री, प्रकाशक दिग० जैन मभा अमरोहा, भाषा हिन्दी; पृ० ६०, व० १६३१; आ० प्रथम ।

जैन कर्म सिद्धान्त—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० ले० स्वय, भा० हि०, पृ० २३ ।

जैन कवियों का इतिहास—ले० मूलचन्द वत्सल, प्र० जैन साहित्य सम्मेलन दमोह, भाषा हिन्दी पृष्ठ १८७, व० १६३६, आ० प्रथम ।

जैन क्रिया कोष—ले० प० दौलतराम जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० २२४, आ० प्रथम ।

जैन क्रिया कोष—ले० प० दौलतराम जी, सपा० बाबू लाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १८८, व० १६२८; आ० प्रथम ।

जैन कीर्तन—ले० चन्द्रसेन वैद्य, प्र० स्वयं, भा० हि० पृ० ८, व० १६३५ ।

जैन कुतूहल—(पद्य)—ले० भारतेन्दु हरिश्चंद, भा० हि०; पृ० ५ ।

जैन ग्रंथ प्रशस्ति संग्रह—संपा० प० जुगलकिशोर मुक्तार व० प० परमानंद शास्त्री; प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा; भा० स० प्रा० अप० हि० ।

जैन ग्रन्थ सग्रह—संग्र० नन्द किशोर सिंघई, भा० स० हि०, पृ० ३०८, व० १९२६ ।

जैन गाथांजली—ले० महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन, प्र० संत कार्यालय प्रयाग; भा० हि०, पृ० ७४ ।

जैन गायन सुधा—सग्र० सूरज भान जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ८०, व० १९३७; आ० प्रथम ।

जैन जगती—ले० कुंवर दौलतसिह लोढ़ा 'अरविन्द'; प्र० शान्तिगृह घामनिया (मेवाड); भा० हि० पृ० २५२; व० १९४२ ।

जैन ज्योतिष—सपादक शकर पढरीनाथ रणदेव, भा० सं० हि०; पृ० १५१, व० १९३१ ।

जैन जागरफी (प्रथम भाग)—ले प० गोपालदास बरैया, प्र० जैन-सिद्धात प्रचारिणी सभा मुरैना, भाषा हिन्दी, पृ० ३२, आ० प्रथम ।

जैन जाति का ह्रास और उन्नति के उपाय—ले० कामता प्रसाद जन, प्र० संयुक्त प्रान्तीय दिग० जैन सभा, भाषा हि०, पृ० ५६, व० १९२४, आ० प्रथम ।

जैन जाति रक्षा—ले० मुरारीलाल जैन, प्र० दिग० जैन प्रान्तिक सभा जालन्धर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२६, आ० प्रथम ।

जैन जाति सुदशा प्रवर्तक—ले० सूरजभान वकील, प्र० दौलतराम जैन देहली, भाषा हिन्दी, पृ० ४०, आ० प्रथम ।

जैन जातियों में पारस्परिक विवाह—ले० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १६ ।

जैन जीवन संगीत—प्र० जैन साहित्य मन्दिर, सागर भा० हि०, पृ० ३२ ।

जैन झंडा गायन संग्रह—प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ ३६, व० १९४१ ।

जैन तीर्थमाला—ले० प्रभुदयाल ज्ञानचन्द्र, भा० हि० पृ० ३२१, व० १९०१ ।

जैन तीर्थ और उनकी यात्रा—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन परिषद, भा० हि०, पृ० १४२, व० १९४३, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा—ले० अज्ञात भा० हि०, आ० द्वितीय।

जैन तीर्थ यात्रा दर्पण—ले० डा० मित्रसेन जैन, प्र० कुलभूषण कुमार खतौली, भा० हि०, पृ० ८२, व० १९३९, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा दर्पण—ले० डाह्या भाई शिवलाल, प्र० स्वय-कैरो, भा० हि०, पृ० ६४, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा विवरण—ले० डाह्या भाई शिवलाल, प्र०, स्वयं भा० हि०।

जैन तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र० गेबीलाल, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हि०, पृ० २१६, व० १९३०, आ० प्रथम।

जैन तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र, गेबीलाल सशो० गुलजारीलाल चौधरी; प्र० दि० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २१४, व० १९३१, आ० द्वितीय।

जैन तीर्थ यात्रा दीपक—ले० प० फतहचन्द, प्र० स्वय दिल्ली, भा० हि०, पृ० २००, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन दर्शन और जैन धर्म—ले० हर्बर्टवारेन, अनु० मि० लालन, भा० हि० पृ० १६ व० १९२०।

जैन द्वितीय पुस्तक—ले० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वय कटनी, भा० हि० पृ० १६० आ० प्रथम।

जैनधर्म—ले० हर्बर्ट वारेन प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८, आ० प्रथम (अंग्रेजी निबध का अनुवाद)

जैन धर्म और अहिंसा—ले० ए० पी० शुक्ल, प्र० साहित्य प्रकाशन मण्डल हावड़ा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९४४।

जैन धर्म और अहिंसा—ले० माणिकचन्द , प्र० जैन युवक संघ हाथरस, भा० हि०, पृ० १६ ।

जैनधर्म—ले० नाथूराम डोंगरीय, प्र० जैन शिक्षा मन्दिर बिजनौर, भा० हि०, पृ० ११५, व० १६४१, आ० प्रथम ।

जैन धर्म अव्यवहार्य नहीं है—ले० प० दीपचन्द वर्णी, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली; भा० हि०, पृ० ४४, व० १६३६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म और डा० गौड़ का हिन्दू कोड—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, भा० हि०, पृ० १२ व० १६२१ ।

जैन धर्म और मूर्ति पूजा—ले० बिरधीलाल सेठी, प्र० ज्ञानचन्द जैन कोटा, भा० हि०, पृ० ६२, व० १६२६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म और विधवा विवाह (प्रथम भाग)—ले० सव्यसाची, प्र० जैन बालविधवा सहायक सभा, देहली, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६२६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म और विधवा विवाह (द्वितीय भाग)—ले० सव्यसाँची, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली भा० हि०, पृ० २३४, व० १६३१, आ० प्रथम ।

जैन धर्म का परिचय–ले० सेठ हीराचन्द नेमचंद, प्र० दिग० जैन मालवा प्रान्तिक सभा बडनगर, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६१५, आ० प्रथम ।

जैन धर्म का परिचय–ले० सेठ हीराचन्द नेमचन्द, प्र० सेठ नाथारंग गाधी, आकलूज, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६०३, आ० प्रथम ।

जैन धर्म का मर्म–ले० कुँवरसैन शर्मा, प्र० नन्नूमल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १४, व १६१६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म का महत्त्व–ले० बा० ऋषभदास वकील, अनु० दयाचद गोयलीय, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६; व० १६२३, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म का महत्त्व—संपा० बा० सूरजमल, प्र० जैनमित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० १६६; व० १६११ आ० प्रथम ।

जैन धर्म का स्वरूप—ले० स्वामी आत्माराम; भा० हि०, पृ० ४६, व० १६०५।

जैन धर्म का हृदय—ले० जुगमन्दर लाल जैनी बैरिस्टर, अनु० मुन्शीलाल एम. ए, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, भा० हि०, पृ० १६, व० १६१६।

जैन धर्म की उदारता—ले० प० परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १०६, व० १६३६, आ० द्वितीय।

जैन धर्म का उदारता—ले० प० परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन देहली, भा० हि०, पृ० ६०, व० १६३४, आ० प्रथम।

जैन धर्म की प्राचीनता—सपा० दीनदयाल जैन, प्र० जैसवाल जैन कार्यालय आगरा, भा० हि० पृ० ४६, व० १६२६, आ० प्रथम।

जैन धर्म की प्राचीनता—प्र० जैन सुधारक सघ देहली, भा० हि० पृ० १६ व १६४२, आ० प्रथम।

जैनधर्म की विशेषताए—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० २०, व० १६३८, आ० प्रथम।

जैन धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मितियाँ—सग्र० मा० बिहारीलाल, प्र० जैन धर्म सरक्षिणी सभा अमरोहा, भा० हि० पृ० १८, व० १६१५, आ० प्रथम।

जैन धर्म क्या है—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि० पृ० १८।

जैन धर्म क्या है—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २४, व० १६२०, आ० प्रथम।

जैन धर्म पर अन्य धर्मों का प्रभाव—ले० नाथूराम प्रेमी, प्र० आत्म-जागृति कार्यालय जैन गुरुकुल व्यावर, भा० हि०, पृ० २६, व० १६३२।

जैन धर्म पर एक महाशय की कृपा—ले० प० हसराज शर्मा भा० हि०, पृ० ४१, व० १६१६।

जैन धर्म पर लोकमान्य तिलक का व्याख्यान—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ६ ।

जैन धर्म पर सेठी जी के विचार और उनकी समालोचना—ले० प० मक्खनलाल न्या० ल०, प्र० स्याद्वाद प्रचारणी सभा कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १११, आ० प्रथम ।

जैन धर्म प्रकाश—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० परिषद पब्लिशिंग हाउस बिजनौर, भा० हि० पृ० २५०, व० १९२९ आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रकाश (निबन्ध सग्रह)—प्र० धर्मचन्द्र धम्मावत बनारस, भा० हि०, पृ० ५८, व० १९४५ ।

जैन धर्म प्रवेशिका—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन मित्रमडल देहली, भा० हि०, पृ० ८७, व १९१६, आ० प्रथम ।

जैन धर्म प्रवेशिका (प्रथम भाग)—ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झासी, भा० हि० पृ० ३६, व १९४४, आ० तृतीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय भाग)–ले० मोहनलाल लैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झाँसी, भा० हि० पृ० ४६; व १९४४, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (तृतीय भाग)–ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रशाद जैन वैद्य लुहरी जि० झासी, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४४, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म प्रवेशिका (चतुर्थ भाग)–ले० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी जि० झाँसी, भा० हि०, पृ० ११६ ।

जैन धर्म प्रवेशिका (प्रथम पुस्तक)–ले० पं० लालन, अनु० दरयावसिंह सोधिया, प्र० धर्मचन्द पालीताणा, भा० हि०, पृ० ७१, व० १९१३, आ० प्रथम ।

जैन धर्म बालबोध (प्रथम भाग)—ले० प० लालन, अनु० दरयावसिंह सोधिया, प्र० धर्मचन्द मुनीम, पालीताणा, भा० हि०; पृ० ५६, व० १९१३, आ० प्रथम।

जैन धर्म बाल बोध (द्वितीय भाग)—ले० प० लालन, अनु० दरयाव सिंह सोधिया, प्र० धर्मचन्द मुनीम, पालीताणा, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९१२; आ० प्रथम।

जैनधर्म परिचय—ले० प० अजितकुमार, प्र० चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ४६, व० १९३०, आ० प्रथम।

जैनधर्म भजनमाला—सग्र० ऐ० धर्मसागर, प्र० पन्नालाल मोदी झाबुआ, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६३, व १९४१, आ० प्रथम।

जैन धर्म मीमांसा—प्रथम भाग—ले० प० दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० सत्य समाज ग्रन्थमाला बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२८, व० १९३६, आ० प्रथम।

जैन धर्म मीमांसा (द्वितीय भाग) —ले० प० दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० सत्यसमाज ग्रन्थमाला बम्बई, भा० हि०; पृ० ४१२, व० १९४०; आ० प्रथम।

जैन धर्म मीमांसा—(तृतीय भाग)—ले० प० दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० सत्य समाज ग्रन्थमाला बम्बई, भा० हि०; पृ० ३६७; व० १९४२, आ० प्रथम।

जैन धर्म में अहिंसा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत; भा० हि०, पृ० १४३, व० १९३९ आ० प्रथम।

जैन धर्म में दैव और पुरुषार्थ —ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० १६७, व० १९४१, आ० प्रथम।

जैन धर्म श्रेष्ठ क्यों है—ले० मिलापचन्द कटारिया, प्र० अनेकान्त प्रभाकर मडल देहली, भा० हि०, पृ० ३१, व० १९३१।

जैन धर्म सिद्धान्त—ले० शिवव्रत लाल वर्मन, प्र० वीर कार्यालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ८८; व० १९२८ आ० प्रथम।

जैन धर्म ही भूमंडल का सार्वजनिक सिद्धान्त हो सकता है—ले० माई-दयाल जैन; प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १४, व० १६२७; आ० प्रथम।

जैन धर्मादर्श—ले० रावजी नेमचन्द शाह; प्र० स्वय, पृष्ठ २३२, व० १६१०।

जैन धर्मामृत—(प्रथम भाग)—सपा० सिद्धसेन गोयलीय; प्र० स्वयं किरठल (मेरठ); भा० हि०; पृ० ७४, व० १६३४, आ० प्रथम।

जैन धर्मामृत सार—ले० नेमिचन्द्र सीताराम (मराठी), अनु० पं० पन्ना-लाल बाकलीवाल; प्र० जैन सभा वर्धा, भा० हि०, पृ०, १३१, व० १८६१, आ० प्रथम।

जैन धर्मोन्नति कारक—प्र० धन्ना लाल आसकरन दुर्गापुर, भा० हि०; पृ० ३४; व १८६१।

जैन नारी गीतावली—प्र० जैनी लाल, भा० हि०; पृ० ३०।

जैन नारी मंगलाचार—सपा० प्र० पी० सी जैन आगरा, भा० हि०, पृ० १६।

जैन नित्य पाठ संग्रह (१६ पाठो का सग्रह)—प्र० निर्णय सागर प्रेस बबई, भा० स०, पृ० १८८, व० १६१२, आ० चतुर्थ,

जैन नित्य पाठ संग्रह—सग्र० व प्र० अज्ञात, भा० हि०, पृ० १८०,

जैन नियम पोथी—सग्र० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बबई, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६३०, आ० चतुर्थ।

जैन पथ प्रदर्शक गीतांजली—ले० पन्नालाल जैन, प्र० स्वय सिवनी, भा० हि०; पृ० ५२, व० १६२१, आ० प्रथम।

जैनपद संग्रह—ले० सन्तलाल, प्र० ज्ञानचन्द जैन लाहौर, भा० हि० पृ० ३२, व० १६००।

जैनपद संग्रह—प्रथम भाग—ले० कविवर दौलतराम जी, प्र० जैन ग्रन्थ-

रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ११६, व० १६०६, आ० तृतीय, ।

जैनपद संग्रह द्वितीय भाग—ले० कवि भागचन्द्र जी, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—तृतीय भाग—ले० कवि भूधरदास जी, प्र० जैन ग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६८, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—चतुर्थ भाग—ले० कवि द्यानतरायजी, प्र० जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५५, व० १६०६, आ० प्रथम ।

जैनपद संग्रह—पचम भाग—ले० कवि बुधजन जी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १००, व० १६१०, आ० प्रथम ।

जैन पद सागर—सपा० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६२, व० १६३० ।

जैनपाठमाला—प्रथमभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० भुन्नुलाल ज्योसिंह राय शहादरा, भा० हि०, पृ० १७, व० १६२७, आ० प्रथम ।

जैन पाठमाला—दूसराभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० एस० एस० जैन लोग्रर मिडिल स्कूल देहली, भा० हि०, पृ० २८, व० १६२७, आ० प्रथम ।

जैन पाठमाला—तीसराभाग—ले० गुणधरलाल जैन, प्र० एस० एस० जैन० लोयर मिडिल स्कूल देहली, भा० हि० ।

जैन पाठमाला—चौथाभाग—ले० गुणधरलाल जैन, सपा० प० लालाराम, प्र० लेखक स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ७७, व० १६२८, आ० प्रथम ।

जैन प्रतिमा यंत्र लेख सग्रह—संपा० बा० छोटे लाल जैन, प्र० पुरातत्वान्वेषिणी जैन परिषद कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४०, व० १६२३ ।

जैन प्रथम पुस्तक-ले० नाथूराम लेमचू; भा० हि०, पृ० ७३, व० १६२५ ।

जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि० पृ० १२०

जैन पुष्पमाला—प्रथम गुच्छक—ले० पन्ना लाल जैन, प्र० स्वय विसाना, भा० हि०, पृ० १७; व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह (प्रथम भाग)—सपा० मुनि जिनविजय, बम्बई; भा० स० प्रा० हि०, पृ० २००, व० १९४३।

जैन फिलासफ़ी—ले० वीर चन्द राघव चन्द गाधी, प्र० चन्द्र सेन जन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २१, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैनबद्री मूलबद्री क्षेत्र—ले० सुखदेव जी, भा० हि०, पृ० ३२, व० १८८५।

जैन बाल गुटका (प्रथम भाग)—संग्र० बा० ज्ञान चद जैनी, प्र० स्वयं लाहौर, भा० हि०, पृ० १८६, व० १९०९, आ० चतुर्थ।

जैन बाल गुटका (दूसरा भाग)—सग्र० बा० ज्ञान चन्द जैनी, प्र० स्वयं लाहौर, भा० हि०, पृ० ३०६, व० १९०९।

जैन बाल बोधक (प्रथम भाग)—ले० प० पन्नालाल बाकलीबाल, प्र० नेमिचद बाकलीबाल, कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८०; व० १९२२, आ० आठवीं।

जैन बाल बोधक (द्वितीय भाग)—ले० पं० पन्नालाल बाकलीबाल, प्र० स्वदेशी कार्यालय बम्बई; भा० हि० पृ० १२८, व० १९०६ आ० प्रथम।

जैन बाल बोधक (द्वितीय भाग)—लेखक प० पन्ना लाल बाकलीबाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १२२, वर्ष १९१७।

जैन बालबोधक-(तृतीय भाग)-लेखक पडित पन्नालाल बाकलीबाल प्रकाशक भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता; भा० हि०, पृ० २५१, व० १९२२ आ० प्रथम।

जैन बौद्ध तत्त्वज्ञान—लेखक सपा० ब्र० शीतल प्रसाद; प्रकाशक स्वयं सूरत, भा० हि०, पृ० २२२, व० १९३४, आ० प्रथम।

जैन बौद्ध तत्त्व ज्ञान (दूसरा भाग)–लेखक सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० २६४; व० १९३७, आ० प्रथम;

जैन भजन तरंगनी—ले० प० न्यामत सिह, प्र० स्वय हिसार; भा० हि०, पृ० ३४, व० १९२६; आ० प्रथम।

जैन भजन पच्चीसी—ले० श्रीनिवास जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि० पृ० २४, व० १९३८, आ० प्रथम।

जैन भजन मुक्तावली–ले० प० न्यामतसिह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि० पृ० २८, व० १९१४, आ० प्रथम।

जैन भजन रत्नावली–ले० प० न्यामत सिह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ५७, व० १९१८ आ० प्रथम।

जैन भजन शतक—ले० प० न्यामत सिह, प्र० स्वयं हिसार, पृ० ७१, व० १९२७, आ० सातवी।

जैन भजन संग्रह—ले० यति नयनसुखदास, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९३५, आ० द्वितीय।

जैन भजन सग्रह—ले० यति नयनसुखदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९०९।

जैन भजन संग्रह—सग्र० ज्ञानचन्द्र जन, प्र० धनपाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९४२, आ० प्रथम।

जैन भजन सग्रह—प्रथम भाग—सग्र० प० मगनराय, प्र० जैनीलाल देवबन्द, भा० हि०, पृ० ३४, व० १८९६।

जैन भजनावली—ले० गुणमाला देवी, प्र० मुमुक्षु महिलाश्रम महावीरजी, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम।

जैन भारती—ले० गुणभद्र जैन कविरत्न, प्र० जिनवाणी प्रचारक, कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २०७, व० १९३५, आ० प्रथम।

जैन मत के उत्पत्ति काल का निर्णय—ले० बाबूराम शर्मा, भा० हि०, पृ० ६।

जैनमत नास्तिक मत नहीं है—ले० हर्बर्ट वारेन, अनु० मुंशीलाल एम. ए., प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० ३३, व० १९३३, आ० द्वितीय।

जैन मत प्रबोधनी—ले० अज्ञात, भा० हि०, पृ० ६८, व० १८७४।

जैनमत भ्रमांधकार मार्तण्ड—ले० प० शिवचन्द्र, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० ५२, व० १८८७, आ० प्रथम।

जैनमत समीक्षा—ले० प्रभुदत्तशर्मा भा० हि०, पृ० १२५।

जैन मित्र मंडल का इतिहास और कार्य विवरण—प्र० मन्त्री जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ६० व० १९२७, आ० प्रथम।

जैन मुनि—ले० आत्माराम, भाषा हिन्दी, पृ० २४, व० १९३५।

जैन मेला अल्लम—ले० पडित न्यामत सिंह, भाषा हिन्दी, पृ० ११।

जैन यात्रा दर्पण—ले० दुलीचन्द, प्र० स्वय, भाषा हि० पृ० २२, व० १८८७, आ० प्रथम।

जैन रामायण (पद्य)—ले० चुन्नी लाल, प्र० उग्रसेन जैन महलका (मेरठ) भाषा हिन्दी, पृ० ४०, व० १९२८, आ० प्रथम।

जैन रामायण नाटक—लेखक मूल चन्द, जैन, प्र० स्वय महलका (मेरठ), भा० हि०, पृ० २६४, आ० प्रथम।

जैन लावनी बहार—सपा० प्रकाशक फूलचन्द जैनी, आगरा, भा० हिन्दी पृ० १६।

जैन ला—ले० चम्पतराय, बैरिस्टर, प्र० दिग० जैन परिषद बिजनौर, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९२८, आ० प्रथम।

जैन लेख संग्रह (२ खड)—पूरण चद नाहर, भा० हि० स०।

जैनबद्री मूलबद्री यात्रा—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबंद, भा० हि०, व० १८९८।

जैन वनिता विलास—ले० प० गोरेलाल पचरत्न, प्र० सिघई खेमचन्द जवेरी, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६२४, आ० प्रथम ।

जैनव्रत कथा कोष—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३२, आ० प्रथम ।

जैनव्रत कथा रत्न—सग्र० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वय कटनी, भा० हि० पृ० ४१, व० १८६८, आ० प्रथम ।

जैन व्रत कथा संग्रह—ले० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० ११५, व० १६३८, आ० प्रथम ।

जैनव्रत कथा संग्रह—प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६२२, आ० प्रथम ।

जैनव्रत कथा सग्रह—प्र० वीरसिह जैनी इटावा, भा० हिन्दी, पृ० ३२ व० १६०७, आ० प्रथम ।

जैन व्रत कथा संग्रह—लेखक मा० दीपचन्द परवार, प्र० मूलचन्द किशन-दास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० १८८, व० १६१६, आ० प्रथम ।

जैन व्रत कथा संग्रह—ले० मु० नाथूराम लेमचू, प्र० खेमराज श्रीकृष्ण दास बम्बई, भा० हि०, पृ० ४५; व० १६०० ।

जैन विवाह पद्धति—प्र० बा० सूरजभान वकील, भा० स०, पृ० १०,

जैन विवाह पद्धति—सग्र० प० गौरीलाल जैन, प्र० मिथ्यात्व तिमिर नाशनी दिग० जैन सभा देहली, भाषा सस्कृत हि०, पृ० ६४, व० १६१६, आ० द्वितीय,

जैन विवाह पद्धति—सग्र० पं० फत्तेलाल, प्र० लल्लूभाई लक्ष्मीचन्द बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४०, व० १६०१,

जैन विवाह विधि—सपा० प० चैनसुखदास न्या० ती०, प्र० सद्बोध-प्रकाश कार्यालय जयपुर, भा० स० हि० पृ० ६०, व० १६३२, आ० द्वितीय,

जैन विवाह विधि—सपा० मु० सुमेरचन्द जैन, प्र० स्वयं देहली ; भा० हि० ; पृ० ३४ ; व० १९४२; आ० प्रथम ।

जैन वीरांगनायें—ले० बा० कामता प्रसाद जैन; प्र० वीर कार्यालय बिजनौर, भा० हि० ; पृ० ८० ; व० १९३० ; आ० प्रथम ।

जैन वीरों का इतिहास ले० बा० कामता प्रसाद ; प्र० जैन मित्र मंडल देहली ; भा० हि०, पृ० ८६ ; व० १९३१ ।

जैन वीरों का इतिहास और हमारा पतन—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० १५०, व० १९३०, आ० प्रथम, ।

जैन वैराग्य शतक—ले० बिहारी लाल चैतन्य, भा० हि०, पृ० ३२ व० १९२८ ।

जैन शतक—ले० कविवर भूधरदास, सपा० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन, ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३४, व० १९०७, आ० प्रथम ।

जैन शास्त्रोच्चारण—प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक कार्यालय देवबद, भा० हि०, पृ० ८ ।

जैन शास्त्रोच्चारण—प्र० बा० ज्ञानचंद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० १०, व० १८९८ ।

जैन शास्त्र नाममाला—ले० दुलीचन्द श्रावक, प्र० स्वय जयपुर, भा० हि०, पृ० ६१, व० १८९५ ।

जैन शासन—ले० प० सुमेरचद दिवाकर, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भा० हि०, व० १९४७ ।

जैन शिलालेख सग्रह (प्रथमोभाग.)—सपा० प्रो० हीरालाल जैन, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ५६०, व० १९२७, आ० प्रथम ।

जैन सगीत माला—प्रथम भाग—ले० बा० सुमेरचन्द जैन, प्र० स्वयं शिमला, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९०३, आ० प्रथम ।

जैन स्तव रत्नमाला—ले० पं० गिरधर शर्मा, प्र० सेठ लालचन्द सेठी झालरापाटन, भा० हि०, पृ० २६, व० १६२२, आ० प्रथम ।

जैन स्त्री शिक्षा—(प्रथम भाग)—ले० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, भा० हि० ।

जैन स्त्री शिक्षा—(द्वितीय भाग)—ले० प पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० श्रीलाल जैन कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६२ ।

जैन स्तोत्र संग्रह (५ स्तोत्र)—प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०; पृ० ४०, व० १८६०, द्वि० आ०, व० १६०० ।

जैन सम्प्रदाय शिक्षा—ले० श्रीपाल चन्द्र, भा० हि०, (विविध विषय का वृहत ग्रंथ) ।

जैन समाज का ह्रास क्यों—ले० अयोध्याप्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६३६, आ० प्रथम ।

जैन समाज की वर्तमान दशा पर विचार—ले० से० ज्वालाप्रसाद, प्र० ज्योतिप्रसाद जैन देवबद, भा० हि०, पृ० २२, व० १६३३ ।

जैन समाज दर्पण (पद्य)—लेखक प० कमलकुमार जैन वि० र०, प्र० सूरजमल मोतीलाल छाबडा खंडवा, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६३७, आ० प्रथम।

जैन समाज दिग्दर्शन—ले० प० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार; भा० हि०, पृ० २८, व० १६२८; आ० प्रथम ।

जैन संस्कार पद्धति—ले० गेंदालाल जैन, भा० हि०, पृ० १०२, व० १६१० ।

जैन साहित्य और इतिहास—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० हि० ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० ६१५, व० १६४२; आ० प्रथम ।

जैन सिद्धान्त दर्पण—ले० पं० गोपालदास बरैया; प्र० मुनि अनंतकीर्ति दि० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० हि०; पृ० २४०, व० १६२८, आ० प्रथम ।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—लै० पं० गोपालदास बरैया, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २०६, व० १६१६, आ० पचम।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपालदास बरैया, संपा० मनोहर लाल शास्त्री, प्र० गाधी रामचन्द्र नाथारग बम्बई, भा० हि०, पृ० २०४, व० १६१६, आ० तृतीय।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० गांधी रामचन्द्र नाथारग बम्बई, भा० हि०, पृ० १६६, व० १६०६, आ० प्रथम।

जैन सिद्धान्त संग्रह—संग्र० मूलचन्द, प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० स० हि० ; पृ० ४६०; व० १६२५, आ० तृतीय।

जैन सुधा बिंदु—ले० पं० जीयालाल चौधरी, प्र० चित्त विनोद पुस्तकालय फर्रुखनगर, भा० हि०; पृ० ३०, व० १८६४, आ. प्रथम।

जैनागार प्रक्रिया—संग्र० बा० दुलीचन्द्र, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ४३८, आ० प्रथम।

जैनाचार्यों का शासन भेद—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ ८०, व० १६२८, आ० प्रथम।

जैनार्णव-संग्र० चन्द्रसैन जैन वैद्य, प्र० स्वयं इटावा, भा० हि०, पृ० ४७३ व० १६२४, आ. पंचम।

जैनास्तिकत्व मीमांसा—लै० प० हसराज शर्मा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४८ वर्ष १६१२।

जैनियों का अत्याचार—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० कुलवन्तराय ओवरसियर हरदा, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

जैनियों का तत्त्व ज्ञान और चारित्र—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १२, आ० प्रथम।

जैनियों में अशान्ति और उसे शान्त करने के उपाय—प्र० धन्नालाल कशलीवाल बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४, वर्ष १९११।

जैनी कौन हो सकता है—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३१, —व० १९२४, प्र० कुरीति निवारणी सभा घामपुर।

जैनेन्द्र के विचार—ले० प्रभाकर माचवे, भा० हि०, पृ० ३६३, व० १९३७।

जैनेन्द्र प्रक्रिया—ले० आचार्य गुणनन्दि, सपा० पं० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी, भाषा सं०, पृष्ठ ३००, वर्ष १९१४, आ० प्रथम।

जैनेन्द्र पचाध्यायी सूत्रपाठ—ले०पूज्यपाद स्वामी, सपा० वंशीधर शास्त्री, प्र० गांधी नाथारंग आकलूज, भा० सं०, पृ० ५६, व० १९१२, आ० प्रथम।

जैनेन्द्र व्याकरण—ले० पूज्यपाद स्वामी, टी. देव नन्दि (महाकृति), भा० सं०, पृ० ३७०।

जोग शिक्षा—ले० प० भूधरदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भाषा हिन्दी, व० १८९८।

ज्योति प्रसाद—ले० माई दयाल जैन, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १६८, व० १९३८, आ० प्रथम।

ज्योति प्रसाद भजनमाला—ले० कवि ज्योति प्रसाद, प्र० ज्ञानानन्द जैन बड़ौत (मेरठ) भा० हि०, पृ० ४८, व० १९१६, आ० चतुर्थ।

ज्योतिषसार (प्राकृत)—टी०सपा० प० भगवतदास जैन, भा०प्रा. हि०, पृ० ८३, व० १९२३, आ० प्रथम।

झांझरी जी की नारदीय लीला का अन्त—ले० प० रामप्रसाद शास्त्री, प्र० दिग० जैन हितकारी सभा बम्बई, भा० हि०; पृ० ३९; व० १९३२।

डा० सतीशचन्द्र की स्पीच—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि० पृ० १०; व० १९१४, आ० प्रथम।

ढाढसी गाथा—ले० अज्ञात, भा० प्रा०, पृ० ६ ।

ढुंढक मत मीमांसा—ले० मूलचन्द्र ब्रह्मचारी, प्र० न्यामतसिंह टीकरी (मेरठ), भा० हि०, पृ० २६, आ० प्रथम ।

णमोकार मंत्र का अर्थ—ले० ज्ञानचन्द्र जैनी, प्र० स्वयं (लाहौर) भा० हि०, पृ. ४८, व० १९०६ ।

णोय कुमार चरिउ—देखिये–नागकुमार चरित्र (कवि पुष्पदन्त कृत) ।

णाणसार (ज्ञान सार)—ले० पद्मसिंह मुनि, टी० पं० तिलोकचन्द्र, भा. सं० हिंदी, पृष्ठ ४६, व० १९४३ ।

तत्त्वानुशासन—ले० नागसेनाचार्य, भाषा संस्कृत, पृष्ठ २३, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र०) ।

तत्त्व भावना (वृहत्सामायिक पाठ)—ले० अमितगति आचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० सं० हि०, पृ० ३४४; व० १९३० आ० प्रथम ।

तत्त्वमाला – ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० भारत जैन महा मंडल, भा० हि०, पृ० १०४, व० १९११; आ० द्वितीय ।

तत्त्वसार—ले० देवसेन, भा० प्रा० (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र० ।

तत्त्वसार टीका—ले० देवसेनाचार्य; [टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० १६२, व० १९३८, आ० प्रथम ।

तत्त्व ज्ञान तरंगिणी—ले० ज्ञान भूषण भट्टारक; अनु० पं० गजाधरलाल प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० हि. स.; पृ० २१३, व०१९१६, आ० प्रथम ।

तत्त्वानुशासनादि संग्रह (१४ मूल सं० प्रा० ग्रन्थों का सग्रह)—ले० विविध आचार्य; संपा० पं० मनोहरलाल शास्त्री, प्र० माणिकचन्द दिगम्बर, जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० सं० प्र०, पृ० १७६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

तत्त्वार्थ दीपिका (प्रथम खण्ड)—ले० उमास्वामी आचार्य; टी० पं०

बटेश्वरदयाल बकवेरिया; प्र० उदयराज जैन ग्रन्थमाला अटेर (ग्वालियर); भाषा संस्कृत हिन्दी, पृ० २५६, व० १९३७ आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ राजकौस्तुभ (प्रथम खण्ड-२ अध्याय)—ले० भट्टाकलंक देव, टी. पंडित पन्नालाल दूनी वाले, सपा० पडित सतीशचन्द्र पंडित कस्तूर चन्द, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल परवार देवरी, भा० स० हि०, पृ० १४१, व० १९२४, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ राज वार्तिक—ले० भट्टाकलंक देव, अनु० सपा० पंडित गजाधर लाल प० मक्खन लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था काशी; भा० स० हि०; पृ० ४१५; व० १९१५।

तत्त्वार्थ राज वार्तिकालंकार (पूर्वार्ध)—ले० भट्टाकलंक देव, अनुवादक टी० पडित गजाधर लाल पण्डित मक्खनलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० स० हि० पृ० १२५१, आ. प्रथम।

तत्त्वार्थ राज वार्तिकालकार (उत्तरार्द्ध)—ले० भट्टाकलक देव; अनु० टी० पण्डित गजाधरलाल पण्डित मक्खन लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ १२२७, आ. प्रथम।

तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिकम्—ले० विद्यानन्दि स्वामी, सपा० पण्डित मनोहरलाल शास्त्री, प्र० रामचन्द्र नाथारंग जी बम्बई; भाषा सं०, पृ० ५१२, व० १९१८।

तत्त्वार्थसार (सटीक)—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पण्डित वशीधर, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४२८, व० १९१९, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ वृत्ति—भगवदुमास्वामि विरचित, टीका श्री श्रुतसागर सूरि, हिन्दीसार प्रो० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ, काशी मूल्य १६)।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, अनु० भगवान सागर ब्रह्मचारी, प्र० स्वयं अनु०, भा० सं० हि०, पृ० १४८, व० १९३३, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, अनु० सपा० प० सुखलाल संघवी, भा० सं० हि०, पृ० ५८८, व० १६३६।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० उमास्वामी, टी० शान्तिराज शास्त्री, भा० सं०, पृ० १०४, व० १६४४।

तत्त्वार्थ सूत्र—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, अनु० संपा० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मंदिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ५२, व० १६४४, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ सूत्र का अर्थाशय—ले० मुंशी नाथूराम लमेचू, प्र० स्वयं कटनी, भा० हि०, पृ० ५१, व० १६०२, आ० प्रथम।

तत्त्वार्थ सूत्र टीका—ले० प० सदासुख जी, प्र० नाना रामचन्द्र नाग फल्टण, भा० स० हि०, पृ० ६६, व० १८६६, आ० प्रथम।

तरन तारन प्रार्थनाएँ—सपा० प्र० अमृतलाल चचल, भा० हि०।

तारण तरण श्रावकाचार—ले० तारण तरण स्वामी, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मथुरा प्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४३६, व० १६३२, आ० प्रथम।

तारण पंथ समर्थन—ले० प्र० चम्पालाल जैन, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६४०।

तारण शब्द कोष(२ खंड)—ले० जयसेन क्षुल्लक, प्र० कुन्दनलाल हजारी लाल बासौदा, भा० हि०, पृ० १५५, व० १६३६।

तारण त्रिवेणी—ले० तारण स्वामी, अनु० अमृत लालचंचल, भा० सं० हि०, पृ० ११८, व० १६४०।

तारण समाज के किये गये प्रश्नों के उत्तर—ले० जीवधर कुमार व दरबारी लाल, प्र० तारण समाज, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६४०।

तामिल वेद—ले० तिरुवल्लवर, अनु० संपा० व प्र० जीतमल लूणिया अजमेर, भा० हि०।

तिलक मञ्जरी—ले० धनपाल, संपा० भवदत्त शास्त्री तथा काशीनाथ

पांडुरंग, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० ३५०, व० १९०३।

तिलोय पण्णत्ति (त्रिलोक प्रज्ञप्ति प्रथम खंड)— ले० यतिवृषभाचार्य, संपा० डा० ए० एन० उपाध्याय तथा-प्रो० हीरालाल जैन, अनु० प० बाल चन्द्र शास्त्री, प्र० जैन सस्कृत सरक्षक सघ शोलापुर, भा० हि०, पृ० ५२८, व० १९४३, आ० प्रथम।

तीर्थङ्कर भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, भा० स०, (दशभक्तयादि संग्रह में प्र०।

तीर्थ माला अमोलकरत्न—ले० शीतल प्रसाद, भा० प्र० हि०, पृ० ३८, व० १८९३।

तीर्थ यात्रा दर्शक—ले० ब्र० गेबीलाल; प्र० दिग० जैन समाज कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २७६ व० १९२८, आ० प्रथम।

तीर्थ यात्रा दर्शक—प्र० चन्द्रराज शेट्टि व वर्धमान हेगडे पुत्तरु (कन्नड)।

तीस चौबीसी पूजा—ले० कविवर वृन्दावन जी, सपा. मुन्नालाल काव्यतीर्थ, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३७१, व० १९१७, आ० प्रथम।

तीस चौबीसी विधान और समाधिमरण—ले० प० हजारीलाल वैद्य, भा० हि०, पृ० १४, व० १९३५।

तीन पुष्प—ले० कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्र० शारदा सहेली सघ देहली, भा० हि०, पृ० ३२०; व० १९४४।

तेरह द्वीप पूजन विधान—ले० कवि श्रीलाल जी, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३२८, व० १९४३, आ० द्वितीय।

त्याग मीमाँसा—ले० पं० दीपचन्द वर्णी, प्र० कोठारी मणिलाल चुन्नीलाल; भा० हि०, पृ० २८, व० १९२८, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, पृ०३३ व० १९३१, आ० द्वितीय।

थ्येट्रीकल जैन भजन मंजरी—ले० पं० न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१२, आ० तीसरी।

दम्पति सुख साधन (प्रथम भाग)—ले० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि०, व० १६०१।

दम्पति सुख साधन (द्वितीय भाग)—ले० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि०, व० १६०१।

दयानन्द चरित्र दर्पण—ले० जीयालाल जैनी, प्र० चित्र विनोद पुस्तकालय फर्रुखनगर, भा० हि०, पृ० २६१; व० १८६४, प्रा० प्रथम।

दयानन्द छल कपट दर्पण—ले० प० जीयालाल ज्योतिषी, प्र० स्वयं, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६१, वर्ष १८६०, आ० प्रथम।

दयानन्द छल कपट दर्पण—लेखक पंडित जीयालाल ज्योतिषी, प्रकाशक कामताप्रसाद दीक्षित अमरौधा (कानपुर), भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३२४, व० १६३०, आ० द्वितीय।

दया स्वीकार माँस तिरस्कार—ले० बुधमल पाटनी, प्र० भारत धर्म महामंडल लखनऊ, भा० हि०, पृष्ठ १०२, व० १६१४, आ० प्रथम।

द्यानत पद संग्रह—ले० कवि द्यानतराय, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४८।

दरश व्रत नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०।

दर्शन और आरती—प्र० मा० शिवरामसिंह जैन रोहतक, भा० हि०, पृ० २६; व० १६३५, आ० द्वितीय।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६७, व० १६१६, आ० चतुर्थ।

दर्शन कथा—ले० कवि भारामल्ल; प्र० बा० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ७४, व० १६१२।

दर्शन कथा (सचित्र)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक

कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५७, व० १६३६, आ० प्रथम।

दर्शन कथा (बड़ी-पद्य)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० पूरनमल जैन शमसाबाद, (आगरा); भा० हि०, पृ० ६४, व० १६४२, आ० द्वितीय।

दर्शन प्राभृत—ले० कुन्दकुन्द, टी० श्रुतसागर, भा० प्रा० सं०, (षटप्राभृतादि सग्रह मे प्र०)।

दर्शन पाठ—ले० दौलतराम व बुधजन जी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० १६, व० १६३०।

दर्शन पाहुड—ले० कुन्दकुन्द, भा० प्र०, (अष्ट पाहुड व षट पाहुड संग्रह में प्र०)।

दर्शन सार—ले० देवसेनाचार्य; टी० सपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई।

दर्शन प्रतीक्षा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय, सहारनपुर; भा० हि०, पृ०२४; आ० प्रथम।

दर्श महिमा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन पुस्तकालय सहारनपुर; भा० हि०, पृ० २४ आ० प्रथम।

द्रव्य दर्पण—ले० प० अजितकुमार शास्त्री, प्र० चैतन्य प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर, भा० हि०; पृ० ३६; व० १६३०, आ० प्रथम।

द्रव्य सग्रह—ले० नेमिचन्द सि० च०, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० टी० स्वय देवबद, भा० प्रा० हि०, पृ० ८१, व० १६०६।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, अनु० पं० सतीशचन्द्र, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० प्रा० हि०, पृ० ३६; व० १६२६, आ० प्रथप।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालल बम्बई; भा० प्रा० हि०, पृ० १२४; व०१६२६; आ० प्रथम।

द्रव्य सग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, पद्यानुवाद-द्यानतराय; टी० संपा०

पं० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०; पृ० ५८, व० १९१४. आ० चतुर्थ।

द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचन्द्राचार्य, टी० संपा० प० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० प्रा० हि०; पृ० ६०, व० १९३८, आ० द्वितीय।

द्रव्य संग्रह (हिन्दी दोहा बद्ध)—ले० मा० मुख्तारसिंह; अनु० मैना सुन्दरी; प्र० दि० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० ६८; व० १९४३।

द्रव्यानुयोग तर्कणा—ले० भोज कवि, अनु० ठाकुरप्रसाद शर्मा, भा० सं० हि०; पृ० २६०, व० १९०५।

दश आरती भाषा—प्र० बा. सूरजभान वकील देवबंद; भाषा हिन्दी, व० १८९८।

दश भक्ति—संग्रह मुनि श्रुतसागर; प्र० जैन मित्र मण्डल देहली; भाषा हिन्दी; पृ० ४३; व० १९३२।

दश भक्त्यादि संग्रह—ले० आचार्य पूज्यपाद; टी० पण्डित लालाराम, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० ० हि०; पृ० २००; व० १९३३, आ० प्रथम।

दशलक्षण धर्म—ले० पण्डित सदासुख जी; भाषा हिन्दी।

दशलक्षण धर्म—ले० पण्डित दीपचन्द वर्णी, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० १३५, व० १९४२; आ० चतुर्थ।

दश लक्षणधर्म पूजा—ले० पण्डित जिनेश्वरदास, प्र० मौजीलाल जैन देहली, भा० हि० पृ० ४२; व० १९३५।

दश लक्षण धम संग्रह—ले० पण्डित रइघु कवि; प्र० जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय वर्धा; भाषा प्रा०, पृष्ठ ६४, आ० प्रथम।

दश लक्षण धर्म संग्रह (धर्म कुसुमोद्यान)—ले० पण्डित पन्नालाल जैन सा० शा०, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलत्ता, भा० हि०, पृ० ४१।

दस्सा पूजाधिकार विचार—ले० स्फुलिङ्ग; प्र० जमनाबाई जबलपुर, भा० हि०, पृ० ३९, व० १९३९, आ० द्वितीय।

दस्साओं का पूजाधिकार—ले० पण्डित परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हिन्दी; पृ० ३५; व० १९३५; आ० प्रथम।

दस्तूर अमल अग्रवाल सभा सहारनपुर—भाषा हिन्दी।

दस्तूर अमल जैन बिरादरी मेरठ—प्र० जैन बिरादरी मेरठ शहर, भाषा हिन्दी, व १९२७।

द्वादशानुप्रेक्षा—ले० सोमदेव सूरि; टी० पं० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ५७ आ. प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा—ले० शुभचन्द्राचार्य, टी० प० जयचन्द छावडा, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ८०, व० १९०५; आ० प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा—प्र० जयचन्द्र श्रावणे वर्धा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४३, व० १८९८, आ० प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा—प्र० जैन ग्रंथ भडार सागर, भा० हि०, पृ० ७६, व० १९२८, आ० प्रथम।

द्वादशानुप्रेक्षा व बारह भावना—ले० दयाचन्द गोयलीय; प्र० सद्बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ७४, व० १९१४, आ० प्रथम।

द्वात्रिंशतिका—ले० अमित गति सूरि, भाषा संस्कृत, पृष्ठ १०६, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह मे प्र०)।

द्विसंधानम्—ले० कवि धनंजय, सं० टी० बदरीनाथ, सम्पादक पंडित काशीनाथ शर्मा व पण्डित शिवदत, प्रकाशक निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृ० २२६, व० १८९५, आ० प्रथम।

दान कथा—ले० बख्तावर मल रतनलाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई भा० हि०।

दान कथा—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४२।

दान का फल अथवा सती चन्दन बाला नाटक—ले० शेरसिंह नाज, प्र० प्यारे लाल देवी सहाय देहली, भा० हि०, पृ० २०७, व० १६२७, आ० प्रथम।

दान विचार—ले० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० रतनलाल जैन मादिपुरिया देहली, भा० हि०, पृ० २०२, व० १६३२, आ० प्रथम।

दान विचार समीक्षा—ले० पण्डित परमेष्ठिदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृष्ठ ८०, व० १६३३, आ० प्रथम।

दानवीर सेठ माणिकचन्द्र—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० ६२०, व० १६१६; आ० प्रथम।

दानवीर सेठ हुकमचन्द का जीवन चरित्र—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

दान शासन—लेखक महर्षि वासु पूज्य, टी० अनुवादक वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्रकाशक गोविन्द राव जी शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० ३४०, व० १६४१, आ० प्रथम।

दिगम्बर मुनि—लेखक कामता प्रशाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०; पृ० ३२; व० १६३१ आ० प्रथम।

दिया तल अंधेरा—प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०।

दीपमालिका विधान—संपादक मदनलाल जैन, प्रकाशक दोशी जयचन्द हेमचन्द ईडर, भा० हि० पृ० ३६; व० १६२३, आ० प्रथम।

दीपमालिका विधान—संग्रह संपादक ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक मूलचंद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० १८, व० १६१७; आ० द्वितीय।

दिगम्बर जैन मूर्ति पूजा पर शंकाएं—लेखक प्र० गुलाबचन्द जैन पूना, भा० हि०, पृ० १८, व० १६३६।

दिगम्बर मुद्रा की सर्वमान्यता—लेखक के० भुजबलि शास्त्री, प्रकाशक जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० हि०; पृष्ठ ३२।

दिगम्बर मुद्रा मंडन—लेखक पण्डित शिवचन्द्र, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०; पृ० १५, व० १८६३; आ० प्रथम।

दाम्पत्य सुखोपाय (भाग १ व २)—लेखक पण्डित पन्नालाल जैन, प्र० जैन हितैषी आफिस बम्बई।

दास पुष्पांजलि—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६२७, आ० द्वितीय।

दीपावली महोत्सव—लेखक पण्डित कमल कुमार शास्त्री, प्रकाशक राजकुमार प्रभाचन्द ललितपुर, भा, हि०, पृ०, ५८, व० १६३६ आ० प्रथम।

दीपावली महोत्सव—प्र० प्रज्ञा पुस्तकमाला बरायठा (सागर) भा० हि०, पृ० १०४।

दुखित पुकार—लेखक प्र० फूलचन्द जैन आगरा, भाषा हिन्दी।

दुर्गति दुःखदीपिका (पद्य)—लेखक यति नयनसुखदास, संपादक ब्र० प्रेमसागर, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६ व० १६४० आ० प्रथम।

देवगढ़ काव्य—लेखक कल्याण कुमार शशि, प्रकाशक नाथूराम सिंघई ललितपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३०, व० १६३६; आ० प्रथम।

देवगढ़ के जैन मंदिर— ले० विशंभरदास गार्गीय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २८, व० १६२१।

देवचन्द्र चौबीसी—लेखक देवचन्द्र, भाषा हिंदी, पृ० ६४, (पदसंग्रह)।

देव दर्शन—संपादक दरयावसिंह सोधिया व शाह सन्तोषचंद माणिकचंद, प्रकाशक बुद्धूलाल श्रावक देवरी, भाषा संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ १६, व० १६१६ आ० प्रथम।

देव परीक्षा—लेखक चांदनराम जैनी, भा० हि० पृ० ४३, व १६१४।

देव रचना—लेखक लाला हरजसराय, प्रकाशक प्यारेलाल, भा. हि.।

देव शास्त्र गुरू पूजा—संपादक अनुवादक बाबू सूरजभान वकील, प्र० स्वयं देवबंद, भाषा प्रा० संस्कृत हिन्दी, पृष्ठ २५, व० १६०६, आ० प्रथम।

देवेन्द्र चरित्र—लेखक प्र० बाबू अजित प्रसाद लखनऊ, भाषा हिन्दी, पृ. १०२, व. १६३२।

देवेन्द्र मिलाप—लेखक छेदालाल, भा. हि., पृ. ३६; व १६२८।

दिगम्बर जैन ग्रंथकर्त्ता और उनके ग्रंथ—लेखक पण्डित नाथूराम प्रेमी, प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई. भा० हि०; पृ० ३६; व० १६११, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैन भाषा ग्रन्थ नामावली—संग्रह बाबू ज्ञानचंद जैनी, प्रकाशक दिगम्बर जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर भाषा हिन्दी, पृष्ठ २८, व० १६०१।

दिगम्बर जैन मुनि पूजा व भजनावली—सपादक पण्डित जिनेश्वरदास प्रकाशक चिरंजीलाल जैन अलवर, भा० हि०; पृष्ठ १६; व० १६३२, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैनों में जागृति के प्रश्न व शास्त्रार्थ की अपील—लेखक उजागर मल जैन, प्रकाशक जैन शिक्षा प्रचारक समिति जयपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १४।

दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि—लेखक बाबू कामताप्रसाद जैन, प्र० चम्पावती जैन पुस्तकमाला अम्बाला छावनी, भा०हि०; पृ० ३२०; व० १६३२, आ० प्रथम।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अंश १, २)—लेखक पण्डित मक्खनलाल शास्त्री, प्रकाशक जुहारूमल मूलचन्द, भा० हि०, पृ० १४६, व० १६४४, (प्रो० हीरालाल के मन्तव्यों के उत्तर में)।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अंश ३)—सपादक प्र० पण्डित रामप्रसाद शास्त्री बम्बई, वर्ष १६४६।

दिगम्बर जैन सिद्धांत दर्पण (अंश ४)— " " " शास्त्री बम्बई, व० १६४७।

दिगम्बर जैन मूर्ति पूजा पर ५१ प्रश्न—लेखक प्र० चम्पालाल जैन सोहागपुर, भा० हि०, पृ० १६; व० १६३३।

देहली दिग्दर्शन—ले० बा० अजितप्रसाद एडवोकेट; प्र० स्वयं अजिताश्रम लखनऊ भा० हि०, पृ० २०; व० १६२३।

देहली शास्त्रार्थ—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ६८,

व० १६१७, आ० प्रथम।

देहली की जैन संस्थाएँ—ले० ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल, भा० हि०, व० १६४६।

दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां—ले० डा० जगदीशचन्द्र, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भा० हि०, व० १६४७।

द्रोण नैना और मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र यात्रा विवरण—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० महावीर दिग० जैन मन्दिर हाथरस, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६ ७, आ० प्रथम।

दौलत जैनपदसंग्रह—ले० कवि दौलतराम जी; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालयक कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ८०।

दौलत विलास (दौलत कवितावली) ले० कवि दौलतराम जी, सपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०; पृ० ८०, व० १६०४, आ० प्रथम।

धनञ्जय नाम माला—ले० कविवर धनञ्जय, सपा० मोहनलाल जैन का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन वैद्य लुहरी (झाँसी) भा० स०, पृ० १६, व० १६४०, आ० द्वितीय।

धन्य कुमार चरित्र (पद्य)—ले० प० खुशालचन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता भा० हि०, पृ० १०२, व० १६३८, आ० प्रथम।

धन्य कुमार चरित्र—ले० प० खुशालचन्द, प्र० श्री वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६३, व० १६१६, आ० प्रथम।

धन्य कुमार चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० प० उदयलाल काशलीवाल; प्र० जैनभारतीभवन काशी, भाषा हिन्दी पृष्ठ १०३, वर्ष १६११; आ० प्रथम।

धम्मरसायणम्—लेखक पद्मनन्दि; भाषा अप० स०, पृष्ठ ३४, (सिद्धान्त सारादि संग्रह मे प्र०)।

धर्म और शील—लेखक मुन्शीलाल एम. ए. प्रकाशक स्वय लाहौर; भाषा हिन्दी; पृष्ठ ११२; वर्ष १६१२, आ० प्रथम।

धर्म का आदि प्रवर्तक—लेखक स्वामी कर्मानन्द; प्रकाशक जैन संघ अम्बाला; भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६२, वर्ष १६४६ ।

धर्मचर्चा संग्रह—सम्र० शाह धर्मचन्द हरजीवन दास; प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६१८, आ० प्रथम ।

धर्म चला—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० कुलवन्तराय जैन, भा० हि० ।

धर्म परीक्षा—ले० अमित गति आचार्य, अनु० पन्नालाल बाकलीवाल; प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि० स०, पृ० २३०, व० १६०८, आ० प्रथम; पृ० २५२, व० १६२२, आ० द्वितीय ।

धर्म परीक्षा—ले० अमितगति आचार्य, अनु० पन्नालालबाकलीवाल. प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा०, हि० सं० पृ० २२०, व० १६०८, आ० प्रथम ।

धर्म प्रचार—ले० बा० कुलवन्तराय, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० १४, व० १६२७ ।

धर्म प्रबोधिनी—प्र० ला० शकरलाल जैनी रहाना (सहारनपुर), भा० हि०, पृ० १८, व० १८६८, आ० प्रथम०, पृ० २०, आ० द्वितीय, पृ० ५२, व० १८७२ ।

धर्म प्रभावना—ले० कुलवन्तराय जैन, प्र०-स्वय होशगाबाद, भा० हि०, पृ० १३, व० १६२७, आ० प्रथम ।

धर्म प्रश्नोत्तर—ले० सकलकीर्त्ति आचार्य, अनु० लालाराम, प्र० स्याद्वाद रत्नाकरकार्यालय काशी, भा० स० हि०, पृ० २६५, व० १६१२, आ० प्रथम ।

धर्म प्रश्नोत्तर—ले० सकलकीर्त्ति आचार्य, अनु० लालाराम, प्र० खुमानलाल जैन केवलारी, भा० सं०, हि० पृ० ३००, व० १६३८, आ० दूसरी ।

धर्मपाल नाटक—ले० पं० अर्जुनलाल सेठी, भा० हि० ।

धर्मपाल नाटक के पद्य—ले० अर्जुनलाल सेठी, भा० हि०, पृ० १४ ।

धर्ममीमांसा (प्रथम भाग)—ले० पं० दरबारीलाल सत्य भक्त, प्र० सत्य-समाज ग्रंथ माला कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ८७, व० १९३५।

धर्मरत्नोद्योत (पद्य)—ले० बा० जगमोहनदास, संपा० व० प्र० पं० पन्नालाल बाकलीवाल बम्बई, भा० हि०, पृ० १८२, व० १९१२, आ० प्रथम।

धर्मरहस्य—ले० चम्पतराय जैन बैरिस्टर, प्र० स्वयं बम्बई, भा० हि०, पृ० ११२, व० १९४०, आ० प्रथम।

धर्मविलास—ले० द्यानतराय जी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६३, व० १९१४, आ० प्रथम।

धर्मवीर सुदर्शन (काव्य)—लेखक अमरचन्द मुनि, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९३८।

धर्म शर्माभ्युदय—ले० महाकवि हरिश्चन्द्र, सपा० पं० काशीनाथशर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० १९१, व० १८९९।

धर्मशिक्षावली (प्रथम भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारत वर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ३६, व० १९४३, आ० छटी।

धर्म शिक्षावली (दूसरा भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारत वर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९४३, आ० छठी।

धर्म शिक्षावली (तीसरा भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० भारत वर्षीय दिग० जैन पब्लिशिंग हाउस देहली, भा० हि०, पृ० ९५, व० १९४४; आ० छठी।

धर्मशिक्षावली (चतुर्थ भाग)—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० वीरकार्यालय मल्हीपुर, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३४, आ० प्रथम।

धर्म संग्रह श्रावकाचार—ले० पं० मेधावी, अनु० पं० उदयलाल काशलीवाल, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० स० हि०, पृ० ३३५, व० १९१०, आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (प्रथम रत्न)—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा० हि०, पृ० ३३, व० १९२६, आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (दूसरा रत्न)—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, हि०, पृ० २३, व० १९२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धांत रत्न माला (तीसरा रत्न)—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, पृ० २०; व० १९२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धान्त रत्न माला (चौथा रत्न)—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा० हि०, व० १९२६; आ० प्रथम।

धर्म सिद्धान्त रत्न माला (पाचवा रत्न)–'धर्मचला' लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० बा० कुलवन्तराय जैनी हरदा, भा०, हि०, पृ० ८, व० १९२७।

धर्मामृत रसायन—लेखक कुँवर दिग्विजयसिंह, प्र० जैनतत्वप्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१२, आ० द्वितीय।

धर्मों में भिन्नता–लेखक प० दरबारीलाल सा० र०; प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १८, व० १९३२।

धूर्ताख्यान–लेखक हरिभद्र सूरि, अनु० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९१२, आ० प्रथम।

नकली और असली धर्मात्मा—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० १९९, व० १९१९; आ० प्रथम।

नकशा गुण स्थान—सपा० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि०, पृ० १, व० १९१९, आ० प्रथम।

नन्दीश्वर भक्ति—लेखक पूज्यपादाचार्य, टी० लालाराम, भा० स० हि०, (दशभक्त्यादि सग्रह मे प्र०)।

नन्दीश्वर भक्ति—लेखक श्रुतधराचार्य, भा० स०, पृ० ४२, व० १९९४।

नन्दीश्वर व्रत उद्यापन-प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३३, व० १९३१, आ० प्रथम।

नयचक्रादि संग्रह (दो ग्रन्थ)—लेखक माइल्ल धवल व देवसेनाचार्य, सपा० प० वशीधर शास्त्री, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०, पृ० १६४, व० १९२०, आ० प्रथम।

नयविवरणम्—लेखक विद्यानन्द स्वामी, भा० स०, पृ० १०, व० १९०५।

न्याय कुमुदचन्द्र (प्रथम खड)—लेखक प्रभाचन्दाचार्य; संपा० पं० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० ४०२, व० १९३८, आ० प्रथम।

न्याय कुमुदचन्द्र (द्वितीय खड)—लेखक, प्रभाचन्द्राचार्य, संपा०, पं० महेन्द्रकुमार न्या० आ०, प्र० मणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १०४१, व० १९४१, आ० प्रथम।

न्याय विनिश्चय विवरणम् (प्रथम भाग)—श्री भट्टाकलक देव विरचित, टीका वादिराजसूरि, सम्पादक प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ काशी, व० १९४९, मूल्य १५, पृ० ६११।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, अनु० टी० प० खूबचन्द्र, सपा० प० वशीधर, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १३४, व० १९१३ आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, प्र० कलप्पाभरमप्पानिटवे कोल्हापुर, भा० स०, पृ० ८२, व० १८९९, आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, अनु० संपादक प० दरबारीलाल कोठिया, न्यायाचार्य प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० स० हि०, पृ० ३५०, व० १९४५, आ० प्रथम।

न्याय दीपिका—ले० धर्मभूषण भट्टारक, प्र० जैनेन्द्रमुद्रणालय बम्बई, भा० स०, पृ० ७६, व० १८९९।

न्याय प्रदीप—ले० पं० दरबारी लाल स०भ०, प्र० साहित्यरत्न कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३६; व० १६२६; आ० प्रथम।

न्याय बोधक—ले० प० अजितकुमार शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १६; आ० प्रथम।

न्याय विनिश्चय—ले० अकलङ्क देव, भा० सं०; (अकलङ्क ग्रन्थत्रयम्-में प्र०)।

नरपशु शास्त्रार्थ—ले० पं० सिद्धसेन सा० र०, प्र० सेठ कोटडिया सोमचन्द उत्तमचन्द लाकरोडा (गुजरात), भा० हि०; पृ० २६, व० १६३०, आ० प्रथम।

नरमेध यज्ञ मीमाँसा (समालोचना)—ले० पं० हंसराज शर्मा जैन, भा० हि०; पृ० २०, व० १६१२।

नरेश धर्म दर्पण—ले० आचार्य कुंथसागर, प्र० कुंथसागर ग्रन्थमाला सोलापुर, भा० हि० , पृ० २८, व० १६४० आ० द्वितीय।

नवगृह विधान—ले० मनसुख सागर, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३८, व० १६३८, आ० प्रथम।

नव रत्न—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६४, व० १६३०, आ० प्रथम।

नवीन जिनवाणी संग्रह—संपा० प० मंगलसैन, प्र० श्री वीरपुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हि० सं०; पृ० ५१६, व० १६४२, आ० द्वितीय।

नवीन तीर्थ यात्रा—ले० सूरजभान जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ११२, वर्ष १६३६, आ० प्रथम।

नागकुमार चरित्र—ले० महाकवि पुष्पदन्त, सपा० प्रो० हीरालाल जैन, प्र० बलात्कारगण जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारंजा, भा० अप०, पृ० २०६, व० १६३३, आ० प्रथम।

नाग कुमार चरित्र—ले० मल्लिषेण सूरि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०, पृ० १६१, व० १६१३, आ० प्रथम।

नाटक समयसार—ले० कविवर बनारसीदास, टी० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५६४, व० १६२६, आ० प्रथम।

नाटक समयसार कलशा—ले० अमृतचन्द सूरि, भा० सं०, पृ० ३५, व० १६०५।

नाम माला—ले० धनञ्जय, अनु० प० घनश्याम दास, प्र० बंशीधर ललितपुर, भा० स० हि०, पृ० १००; व० १६१६, आ० प्रथम।

नाम माला—ले० धनञ्जय; अनु० प० घनश्यामदास, प्र० पं० गौरीलाल जैन देहली, भा० स०, पृ० ३२, व० १६१६ आ० प्रथम।

नारी धर्म प्रकाश—ले० पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस बबई, भा० हि०।

नारी शिक्षादर्श—ले० पं० उग्रसेन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० १८०, व० १६३४, आ० प्रथम।

निजात्म शुद्धि भावना—ले० आचार्य कुन्थसागर, प्र० शिष्यमडल बोरसद, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६४०, आ० प्रथम।

निजात्म शुद्धि भावना और मोक्ष मार्ग प्रदीप—ले० आ० कुथ सागर, प्र० साध्वी नानी ब्हेन सितवाडा, भा० हि०, पृ० १२४, व० १६३८।

निजात्माष्टकम्—ले० योगीन्द्र देव, भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

नित्य नियम देव पूजा व शीतलारिष्ट निवारक पूजा—ले० प० फूलचन्द, प्र० स्वय फीरोजाबाद, भा० हि०, पृ० ३४, व० १६३५; आ० प्रथम।

नित्य नियम पूजा और भाषा पूजा संग्रह—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०; पृ० ८६, व० १६३२, आ० नवम।

नित्य नियम पूजा प्राकृत—टी० अनु० सदासुखजी व बा० सूरजभान वकील, प्र० सूरजभान वकील देवबद, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ३८, व० १८६६, आ० प्रथम।

नित्य नियम पूजा सार्थ—संपा० ला० लक्खीराम जैन, प्र० स्वयं, टीकरी, भाषा सं० हिन्दी; पृ० ६४, व० १६४१; आ० प्रथम ।

नित्य नियम पूजा सार्थ—टी० अनु० प० अजित कुमार शास्त्री, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भाषा स० हि०, पृ० १२८, व० १६२३, आ० प्रथम ।

नित्य नियम व हस्तिनापुर क्षेत्र पूजा भाषा—सपा० मगलसैन जैन, प्र० दिग० जन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३६, आ० प्रथम ।

नित्य नियम संग्रह—प्र० केशरीमल मोतीलाल जावरा; भा० सस्कृत हि०, पृ०२६५ व० १६४०, आ० द्वितीय ।

नित्य नेम पूजा भाषा—प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू कटनी, भा० हि०, पृ० २३, व० १६०६ ।

नित्य प्रार्थना—ले० ज्योति प्रसाद जैन; प्र० स्वय; भा० हि०, पृ० १६, व० १६३२ ।

नित्य पाठ पूजा गुटका—प्र० धर्मचन्द सरावगी कलकत्ता, भा० हि० सं० पृ० ४६४, व० १६४१, आ० द्वितीय ।

नित्य पाठावलि—ले० अमितगति, अनु० तिलक विजय, भा० स० हि०, पृ० ३०, व० १६२५ ।

नित्य पूजा विधान संस्कृत—प्र० जैन सिद्धान्त प्रचारक मण्डली देवबन्द, भा० स०, पृ० ४६, व० १६०६, आ० प्रथम ।

नित्य पूजा सस्कृत तथा भाषा—संपा० बद्रीप्रसाद जैन, प्र० स्वयं काशी, भा० स० हि०, पृ० ३४, व० १६०६, आ० प्रथम ।

निबन्ध दर्पण—ले० ब्र० चन्दाबाई, प्र० देवेन्द्र किशोर जैन आरा, भा० हि०, पृ० १८०, व १८४२, आ० प्रथम ।

निबन्ध माला (जैन धर्म परिचय)—ले० सुमेरचन्द जैन प्रभाकर, प्र० सरकार आदर्श दिल्ली, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६४६ ।

निबन्ध रत्नमाला—ले० बा० चन्दा बाई प्र० कुमार देवेन्द्रप्रसाद आरा; भा० हि०, पृ० १२०, व० १६२०, आ० प्रथम ।

निमित्त शास्त्रम्—ले० महर्षि ऋषिपुत्र, अनु० पं० लालाराम; संपा० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री प्र० सपा० स्वय शोलापुर, भा० सं० हि०, पृ० ४४, व० १६४१ ।

नियम सार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० पद्मप्रभ मलाधारीदेव; हि० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० २२३, व० १६१६, आ० प्रथम ।

निर्ग्रन्थ मुनि शान्तिसागर जी का जीवन चरित्र—ले० ब्र. भगवानसागर, प्र० ब्र० आत्मानन्द गिरीडीह (हजारी बाग), भा० हि०, पृ० ६३, व० १६२७, आ० प्रथम ।

निर्वाण कांड—प्र० ज्ञान चन्द जैन लाहौर, भा० प्रा०, पृ० ८ ।

निर्वाण कांड (प्राकृत व भाषा)-प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबद, भा० प्रा० हि० व० १८६८ ।

निर्वाण भक्ति—ले० पूज्यपादाचार्य, टी० लालाराम, भा० स० हि०; (दश भक्त्यादि सग्रह मे प्र०) ।

निर्माल्य द्रव्य चर्चा—सपा० हीराचन्द नेमचन्द दोशी, प्र० स्वय शोलापुर भा० हि०; पृ० ६८, व० १६२२ ।

निशि भोजन कथा—ले० पंडित भारामल्ल जैन और कवि भूधरदास, प्र० जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २८, व० १६११, आ० प्रथम ।

निशि भोजन कथा (पद्य)—ले० प० भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

निशि भोजन भुंजन कथा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८६८ ।

नीति वाक्य माला—अनु० पं० नन्दनलाल, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० २०१, व० १६२४, आ० प्रथम ।

नीति वाक्यामृत—ले० सोमदेवसूरि, प्र० गोपाल नारायण कम्पनी बम्बई, भा० स०, पृ० १३०, व० १८६१, आ० प्रथम।

नीति वाक्यामृतम्—ले० सोमदेव सूरि, सपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रथमाला बम्बई, भाषा स०, पृ० ४६४, व० १६२२, आ० प्रथम।

नीति वाक्यामृतम् (परिशिष्ट)—ले० सोमदेव सूरि, प्र० माणिकचन्द्र जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० ८०, व० १६२८, आ० प्रथम।

नीति सार—ले० इन्द्रनन्दि, भा० सं०, (तत्त्वानुशासनादि संग्रह में प्र०)।

नीतिसार समुच्चय—ले० इन्द्रनन्दि, संपा० प० गौरीलाल, प्र० सेठ लालचन्द देहली, भा० स०, पृ० ७६।

नूतन चरित्र—ले० बा० रतनचन्द जैन, प्र० हिन्दी ग्रथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

नूतन बोधमाला—ले० संपा० प० कैन्द्रकुमार जैन, प्र० बापूदास नारायण साधारण गाँव, भाषा हिन्दी, पृ० ५०, व० १६३२।

नेमनाथ का बारह मासा—ले० कवि विनोदी लाल, प्र० बा० सूरजभान वकील, भाषा हिन्दी, वर्ष १८६८।

नेमनाथ पदरौत गिरनार—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हिन्दी।

नेमि चरित्र—ले० विक्रम कवि; अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन ग्रथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०, पृ० ५६, व० १६१४, आ० प्रथम।

नेमि दूत काव्य—ले० विक्रम कवि; भा० स०।

नेमिनाथ स्तोत्र—भा० सं०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह में प्र०)।

नेमि निर्वाण (काव्य)—ले० महाकवि वाग्भट्ट, सपा० प० शिवदत्त व काशीनाथ पांडुरग, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० स०, पृ० ८५, व० १८६६।

नेमि पुराण—ले० ब्र० नेमिदत्त; अनु० उदयलाल काशलीवाल; प्र० जैन

साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०, पृ० ३७६, आ० प्रथम।

नेमिश्वर विवाह (दो)—प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भाषा हिन्दी, पृ० २३, व० १६०१, आ० प्रथम।

नौकारमन्त्र (बेलबूटेदार)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० प्रा०, व० १८६८।

पउमचरियम—ले० विमल सूरि; सपा० वी. एम शाह अहमदाबाद, भा० प्रा० पृ० १४८, (प्रथम ४ अध्याय)।

पखवाड़ा—ले प० द्यानतराय, टी० प० मगलसेन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर; भाषा हिन्दी, पृ० २०, व० १६३४ आ० प्रथम।

पतन से उत्थान—ले० प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० सेठ मोहरीलाल चादमल अहमदाबाद, भाषा हिन्दी, पृ० १२१, व० १६३६, आ० प्रथम।

पतित पावन महावीर—ले० प्र० कौशल प्रसाद, भा० हि०, व० १६४६।

पतितोद्धारक जैन धर्म—ले० बा० कामता प्रशाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय, सूरत भाषा हि० पृ० २०४, व० १६३६, आ० प्रथम।

पत्र परीक्षा—ले० विद्यानन्द स्वामी; सपा० प० गजाधर लाल, भा० स०, पृ० १३, व० १६१३।

पद्म चरित् (प्रथम खड)—ले० रविषेणाचार्य, सपा० प० दरबारीलाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ५११, व० १६२८, आ० प्रथम।

पद्म चरित् (द्वितीय खड)—ले० रविषेणाचार्य, सपा० पं० दरबारीलाल, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई; भा० स० हि०, पृ० ४३६, व० १६२८ आ० प्रथम।

पद्म चरित् (तृतीय खड)—ले० रविषेणाचार्य, सपा० प० दरबारी लाल, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० हि०; पृ० ४४६; व० १६२८, आ० प्रथम।

पद्म चन्द्र कोष—ले० प० गणेशदत्त, प्र० मेहरचन्द लक्ष्मणदास लाहौर, भा० स०, पृ० ४५२, व० १८६८, आ० प्रथम।

पद्मनन्दि पंच विंशतिका—ले० आचार्य पद्मनन्दि, अनु० पं० गजाधरलाल, प्र० जन भारती भवन बनारस, भा० स० हि०, पृ० ५१३, व० १९१४, आ० प्रथम।

पद्म नन्दि श्रावकाचार—ले० पद्मनन्दि आचार्य, भा० स० हि०; पृ० ३०; व० १९३२।

पद्म पुराण—ले० रविशेणाचार्य, टी० अनु० प० दौलतराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०; पृ० ८६०, व० १९२९; आ० प्रथम।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पंडित दौलतराम, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्लालिय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ९९९, व० १९२०, आ० तीसरी, पृष्ठ ८६५, व० १९२५, आ० द्वितीय।

पद्म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पडित दौलतराम, प्र० दिग० जैन ग्रन्थ प्रचारक कार्यलिय देवबद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०७६।

पद्‌म पुराण—ले० रविषेणाचार्य, टी० अनु० पडित दौलतराम, प्र० बाबू ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ११८७।

पद्‌म पुराण समीक्षा—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० चन्द्रसेन जैनी वैद्य इटावा, भाषा हि०, पृष्ठ १३२, व० १९१९, आ० प्रथम।

पद्‌म पुष्पांजलि—प्र० पद्मपुरी तीर्थ कमिटी, भा० हि०; व० १९४७।

पद्‌मावती पूजन—प्र० नन्नूमल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६।

पद्‌मावती क्षेत्रपाल पूजा—प्र० वर्धमान जैन पुस्तकालय देहली, भा० हि०, पृ० १८।

पद्य संग्रह—लेखक यति नैनसुखदास, भा० हि; पृ० ६८।

पंच कल्याणक पाठ—लेखक प० बक्तावर लाल, सपा० प० वद्रीप्रसाद; प्र० जैन पुस्तकालय बनारस, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९०९।

पंच कल्याणक पाठ—लेखक प० कमलनयन, प्र० जैन भारती भवन फतहगढ़, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९२६, आ० दूसरी।

पंच कल्याणक समुच्चय—संग्र० क्षुल्लक धर्म सागर, प्र० केशरियाप्रशाद जैन अहाबाद, भा० हि०; पृ० १६; व० १९३२।

पंच कल्याण मगल भाषा—लेखक पांडे रूपचन्द्र, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द भा० हि०, व० १८९८।

पंच गुरु भक्ति—लेखक पूज्यपाद, भा० सं०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

पंच जैन स्तोत्र संग्रह—भा० सं०; पृ० ४०।

पंच तन्त्र (भाषा टीका)—प्र० पन्नालाल जैन देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० सं० हि०।

पंच परमेष्टि के गुण—प्र० मगन बाई बम्बई, भा० हि०, पृ० ११, व० १९०६, आ० प्रथम।

पंच परमेष्टि पूजा—लेखक यशोनन्दि आचार्य, प्र० देवप्पा दुधप्पा आडमुट्टे कोल्हापुर, भा० स०, पृ० ९५, व० १९१४।

पंच परमेष्टि पूजन विधान भाषा—लेखक पं० टेकचन्द, सपा० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्र० जैन भारती भवन काशी, भा० हि०; पृ० ३४, व० १९२४, आ० प्रथम।

पंच परमेष्टि वन्दना—लेखक प० मगतराय, प्र० जैनधर्म प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०; पृ० ७, व० १९०९, आ० प्रथम।

पंचबाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्करों की पूजा—लेखक भोलानाथ दरखशाँ, भा० हि०, पृ० १४, व० १९२६, प्रकाशक हीरालाल पन्नालाल जैन देहली।

पंच मेरु और नन्दीश्वर पूजन विधान—लेखक प० टेकचन्द, सपा० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० ६२, व० १९२४, आ० प्रथम।

पंचरत्न—लेखक बा० कामताप्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ६१, व० १९३३, आ० प्रथम।

पंचव्रत—लेखक भोलानाथ दरखशाँ, प्र० जैन मित्र मडल देहली; भा० हि०, पृ० २२, व० १९३०, आ० प्रथम।

पंचस्तोत्रम्—प्र० जैन सिद्धांत प्रचार मण्डली देवबन्द, भा० स०, पृ० ३८, व० १९०९, आ० प्रथम ।

पंचस्तोत्र संग्रह—अनु० पं० पन्नालाल सा० आ०, प्र० मूलचंद किशनदास कापडिया सूरत, भा० स० हि०, पृ० १४२, व० १९४०, आ० प्रथम ।

पंचसंग्रह—लेखक अमितगति आचार्य, संपा० पं० दरबारीलाल न्या० ती०, प्र० माणिकचंद दिग० जैन० ग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० २४८, व० १९२७, आ० प्रथम ।

पंचसंग्रह—लेखक अमितगति आचार्य; टी० स० प० बंशीधर शास्त्री, प्र० बालचंद कस्तूरचंद गांधी धाराशिव, भा० स० हि०, पृ० ६५६, व० १९३१, आ० प्रथम ।

पंचसुत्त—संपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, भा० प्रा० ।

पंचाध्यायी—लेखक पंडित राजमल्ल, प्रा० गांधी नाथारंग अकलूज, भा० स०, पृ० २००, व० १९०६ ।

पंचाध्यायी (सटीक)—लेखक पांडेरायमल्ल, टी. प. देवकीनन्दन, प्र० महावीर ब्रह्मचर्याश्रम कारंजा, भा० स० हिन्दी, पृ० ४७६, व० १९३२, आ० प्रथम ।

पंचाध्यायी—लेखक पांडेराय मल्ल, टी० पं० मक्खनलाल, प्र० जैनग्रंथ-प्रकाश कार्यालय इंदौर, भा० स० हि०, पृ० ३२६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

पंचायती अत्याचार का नमूना—लेखक प्र० अज्ञात, भा० हिन्दी, पृ० १८ ।

पंचास्तिकाय—लेखक कुंदकुन्दाचार्य, स. टी अमृतचन्द्र, और जयसेन, हिन्दी टी० पांडे हेमराज, हि० अनु० पन्नालाल, संपा० पं० मनोहरलाल बाकलीवाल प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० २५५, व० ९१४, आ० द्वितीय ।

पंचास्तिकाय समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० अमृतचन्द्र, हिन्दी, अनु० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० प्रा० सं० हिन्दी, पृ० १७०, व० १९०४; आ० प्रथम ।

पंचास्तिकाय टीका (प्रथम भाग)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० हिन्दी, पृ० ४२४, व० १९२७, आ० प्रथम।

पंचास्तिकाय टीका (दूसरा भाग)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० प्रा० हिन्दी, पृ० २४५, व० १९२८, आ० प्रथम।

पंचास्तिकाय (हिन्दी पद्य)—लेखक पांडे हीरानन्द, प्र० जैन साहित्य-प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २००, व० १९१५, आ० प्रथम।

पंचेन्द्री संवाद—लेखक कविवर भगवतीदास, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर-कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० १९१२, आ० प्रथम।

पट्टावली समुच्चय—सपा० दर्शन विजय जी, भा० हिन्दी, पृ० २५६, व० १९३२।

परमात्म प्रकाश—लेखक योगीन्द्र देव, स० टी० ब्रह्मदेव, हि० टी० पं० दौलतराम, संपादक प० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० अप० स० हि०, पृ० ३५५, व० १९१५; आ० द्वितीय।

परमात्म प्रकाश—लेखक योगीन्द्रदेव, हि० अनु० बा० सूरजभान वकील, प्र० अनु० स्वयं देवबन्द, भा० अप० हि०, पृ० ५८, व० १९०९, आ० प्रथम।

परमात्म प्रकाश योगसारश्च—लेखक योगीन्द्रदेव, स० टी० ब्रह्मदेव, हि० टी० प० दौलतराम, सपा० डा० ए एन उपाध्ये, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० अप० सं० हिन्दी, पृ० ३९४, व० १९३७, आ० द्वितीय।

परमाध्यात्म तरंगिणी—लेखक अमृतचन्द्राचाय, स० टी० भट्टारक शुभचन्द्र, हि० टी० प० जयचन्द्र, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० २३६, आ० प्रथम।

परमार्थ अकड़ी—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हिन्दी, व १८९८।

परमार्थ अकड़ी संग्रह—प्र० जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६, व० १९११, आ० प्रथम।

परमार्थिक पदार्थ विज्ञान—लेखक पं० दरयावसिंह सोधिया, प्र० परवार बन्धु कार्यालय जबलपुर, भा० हि०, पृ० ३३, भा० प्रथम।

परमेश्वर की सत्ता—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

परमेष्ठी पद्यावली—लेखक प० परमेष्ठीदास, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९३४, आ० प्रथम।

पर्यूषण पर्व—लेखक ज्योतिप्रसाद जैन, प्र० जैन सभा मेरठ, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४०, आ० प्रथम।

पर्यूषणपर्व—लेखक सूरजमल जैन, प्र० स्वयं संपा० जैनप्रभात इन्दौर, भा० हि०, पृ० ४८।

परिशिष्ट पर्व (प्रथम भाग)—लेखक हेमचन्द्राचार्य, सपा० मुनि तिलक विजय, भा० हि०, पृ० १८६, व० १९१५।

परिशिष्ट पर्व (द्वितीय भाग)—लेखक हेमचन्द्राचार्य, स० मुनितिलक विजय, भा० हि०, पृ० १९९, व १९१६।

परीक्षा मुखम्—लेखक माणिक्यनन्दि, प्र० गाधी नाथारंग जी आकलूज, भा० स०, पृ० १२८ व० १९०४।

परीक्षामुख—लेखक माणिक्यनन्दि, अनु० प० गजाधरलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ८०; व० १९१६, आ० प्रथम।

परीक्षामुख—लेखक माणिक्यनन्दि, अनु० पं० घनश्यामदास, प्र० स्वयं, भा० स० हि०, पृ० ९४, व० १९०५, आ० प्रथम।

परीक्षा मुखम प्रमेय रत्नमाला सहित—लेखक माणिक्यचन्द्राचार्य, अनन्तवीर्याचार्य, सपा० प० फूलचन्द्र शास्त्री, प्र० बालचन्द्र शास्त्री, भा० स०, पृ० २१०, व०, १९२८।

परीक्षामुख लघुवृत्ति—लेखक अनन्तवीर्य, भा० स०, पृ० ८७, व० १९०९।

प्रतिक्रमण—भा० सं० हि०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)।

प्रतिमाचालीसी–प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि;० व० १८९८।

प्रतिमालेख संग्रह–सपा० कामता प्रसाद जैन, प्र० जैन सिद्धात भवन आरा, भा० स० हि०, पृ० ३९, व० १९३६, आ० प्रथम।

प्रतिष्ठातिलक–लेखक नेमचन्द्राचार्य, भा० स०, पृ० ८११; व० १९१४।

प्रतिष्ठा पाठ—लेखक जयसेनाचार्य; प्र० सेठ नेमचन्द हीराचन्ददोशी शोलापुर; भा० स०; पृ० ३०८, व० १९२५, आ० प्रथम।

प्रतिष्ठासार समह–स० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० स० हि०, पृ० २२३, व० १९२८, आ० प्रथम।

प्रतिष्ठासारोद्धार–लेखक प० आशाधर, अनु० प० मनोहरलाल शास्त्री; प्र० जैनग्रन्थउद्धारककार्यालय बम्बई; भा० स० हि०; पृ० १४४, व० १९१८, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० सब्दोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हिन्दी, पृ० ९०; व० १९१४; आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरित्र – लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य; टी. अनु० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स०|हि०, पृ० १६७, व० १९२२, आ० द्वितीय, पृ० ३४४, व० १९३६, आ० तृतीय।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० २६४।

प्रद्युम्न चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति आचार्य, अनु० बुधमल पाटणी व नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० १६७, व० १९०८, आ० प्रथम।

प्रद्युम्न चरितम् काव्य—लेखक महासेनाचार्य, सपादक प० मनोहरलाल शास्त्री, प० रामप्रसाद शास्त्री, प्र० मणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बबई, भा० स०, पृ० २३६, व० १९१७, आ० प्रथम।

प्रबन्धावली—लेखक पूरणचन्द्र नाहर, भा० हि०, पृ० २०३, व० १९३७।

प्रबोध पच्चीसी—लेखक प्रबोधकुमार जैन, प्र० बा० देवेन्द्र किशोर आरा, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६३७, आ० प्रथम।

प्रबोधसार—लेखक भट्टारक यशः कीर्ति, अनु० पं० लालाराम, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० स० हि०; पृ० २२८; व० १६२८, आ० प्रथम।

प्रभंजन चरित्र—ले० अज्ञात, अनु० प० घनश्याम दास, प्र० जैन ग्रन्थ कार्यालय ललितपुर, भा० हि०; पृ० ४२; व० १६१६, आ० प्रथम।

प्रभावशाली जीवन—अनु० माई दयाल जैन, भा० हि०; पृ० १२०; व० १६३१।

प्रभु पूजा या बच्चों का खेल—ले० ताराचन्द शास्त्री, भा० हि०, पृ० २७।

प्रभु विलास—ले० अज्ञात, प्र० जैनग्रथ प्रचारकपुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०, पृ० ३०, व० १६११; आ० द्वितीय।

प्रमाण नयतत्त्वालोकालकार—ले० वादिदेव सूरि; टी० रत्नप्रभाचार्य, भा० सं०, पृ० २०२, व० १६१०।

प्रमाण निर्णय—ले० वादिराज सूरि, सपा० प० इन्द्रलालशास्त्री व प० खूबचन्द शास्त्री; प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० ८०, व० १६१७, आ० प्रथम।

प्रमाण परीक्षा—ले० विद्यानन्द स्वामी, भा० स०, पृ० ३०, व० १६१४।

प्रमाण संग्रह—ले० अकलकदेव, भा० सं, (अकलक ग्रन्थत्रयम् मे प्र०)।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, सपा० प० वंशीधर शास्त्री, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई; भा० स०, पृ० २११, व० १६१८, आ० प्रथम।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड (प्रथम भाग)—ले० प्रभाचन्द्राचाय, प्र० अज्ञात, भा० स०।

प्रमेय कमल मार्त्तण्ड (द्वितीय भाग)—ले० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० अज्ञात, भा० स०।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्त वीर्याचार्य, प्र० जैन साहित्य प्रसारक

कार्यालय बम्बई, भा० सं०, पृ० ८८, व० १९२७, आ० प्रथम ।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्तवीर्याचार्य, प्र० जैनसाहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० स०, पृ० १२८ ।

प्रमेय रत्नमाला—ले० अनन्त वीर्याचार्य, टी० प० जयचन्द छावडा, प्र० मुनि अनन्त कीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स० हि०, पृ० २२३, आ० प्रथम ।

प्रवचन सार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० अमृतचन्द्राचार्य, जयसेनाचार्य, हि० टी० पाडे हेमराज, संपा० डा० ए. एन. उपाध्ये, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० ५८५, व० १९३५, आ० द्वितीय ।

प्रवचनसार परमागम—ले० कविवर वृन्दावन जी, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन हितैषी कार्यालय, भा० हि०, पृ० २३२, व० १९०८, आ० प्रथम ।

प्रवचनसार टीका—(प्रथम खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० प्रा० हि० पृ० ३७३; व० १९२४, आ० प्रथम ।

प्रवचनसार टीका (द्वितीय खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० प्रा० हि०, पृष्ठ ३९६, व० १९२५, आ० प्रथम ।

प्रवचनसार टीका (तृतीय खण्ड)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ३६३, व० १९२६; आ० प्रथम ।

प्रश्न मालिका—ले० प० शिवचन्द्र, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० १२, व० १८८६ ।

प्रश्नोत्तर दीपिका—ले० पं० शिवचन्द्र, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० २४, व० १८९१ ।

प्रश्नोत्तर माणिक्य माला—ले० पूज्यपाद; भा० स०, पृ० १-७, व० १९०८ ।

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका—ले० अमोघ वर्ष, अनु० जिनवरदास, प्र० जैन-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बबई; भा० सं० हि०, पृ० २४, व० १६०८, आ० प्रथम।

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—ले० सकल कीर्ति भट्टारक, टी० अनु० प० लालाराम, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० ३०६, व० १६२७ आ० प्रथम।

प्रश्नोत्तर सर्वार्थ सिद्धि—सपा० बा० नेमीदास एडवोकेट, प्र० ला० जैनीलाल सहारनपुर, भा० हि०; पृ० ३१४, आ० प्रथम।

प्रशस्ति सग्रह—सपा० के० भुजबलि शास्त्री, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा, भा० स० हि०; पृ० २२०; व० १६४१, आ० प्रथम।

प्रस्तुत प्रश्न—ले० जैनेन्द्र कुमार; भा० हि०, पृ० २५८, व० १६३६।

प्राकृत दशलाक्षणिक धर्म—ले० प० रइधु; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० २७; व० १६०७, आ० प्रथम।

प्राकृत भाव संग्रह—ले० देवसेनाचार्य, भा० प्रा०, (भाव सग्रहादि मे प्र)

प्राकृत व्याकरण—लेखक त्रिविक्रम, भा०, प्रा०, पृ० १३६; व० १८६६।

प्राकृत षोडश कारण जयमाला—प्र० जैन साहित्य मदिर सागर, भा० प्रा० हि०, पृष्ठ ११६, व० १६२६, आ० प्रथम।

प्राकृत सुभाषित सग्रह—अनु० सपा० प्रो० शाह सूरत, भाषा प्रा०।

प्राचीन कलिंग या खारवेल—ले० गगाधर सामन्त, भा० हि०, पृ० १०८; व० १६२६।

प्राचीन जिनवाणी सग्रह—प्र० वर्धमान पुस्तकालय देहली, भाषा स० हि०।

प्राचीन जैन इतिहास (प्रथम भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १५०; व० १६१६; आ० प्रथम।

प्राचीन जैन इतिहास (द्वितीय भाग)—ले० सूरजमल जैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १७२, व० १६२१, आ० प्रथम।

प्राचीन जैन इतिहास (तृतीय भाग)—ले० सूरजमल जैन; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १२६, व० १९३९, श्रा० प्रथम।

प्राचीन जैन पद शतक—ले० विभिन्न; प्र० दुलीचन्द्र परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५८।

प्राचीन जैन लेख संग्रह—ले० बा० कामता प्रसाद, भा० हि०, पृ० १०३, व० १९२६।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० लाला नेमिनाथ पांगल, पृ० ३६, व० १९११।

प्रायश्चित चूलिका—लेखक गुरुदास, टी. नन्दिगुरु, भा० स०, (प्रायश्चित संग्रह मे प्र०)।

प्राणप्रिय काव्य—लेखक मुनि रत्नसिंह, अनु० संपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० २१, व० १९११, श्रा० प्रथम।

प्रातः स्मरण मंगल पाठ (पद्य)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८९८।

प्रायश्चित ग्रथ–लेखक अकलकदेव, भा० स०, (प्रायश्चित संग्रह में प्र०)।

प्रायश्चित संग्रह (४ ग्रथ)—लेखक विभिन्न आचार्य, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैनग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं० प्रा०, पृ० २००, व० १९२१, श्रा० प्रथम।

प्रायश्चित समुच्चय (चूलिका सहित)—लेखक प० गुरुदास, अनु० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स०, पृ० २१६, व० १९२६, श्रा० प्रथम।

प्रार्थनास्तोत्र—लेखक कवि भूधरदास व प० अर्जुनलाल सेठी, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३२।

प्रेमकली—सपा० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन, भा० हि०; पृ० १६०।

प्रेमोपहार (कविता)—लेखक कन्हैयालाल जैन; भा० हि०, पृ० ११ व० १६१८।

प्रेमोपहार के खिले खिलाये फूल—संपा० कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन; भा० हि०।

परीक्षापत्र—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं आरा, भा० हि०, पृ० १४, व० १८६६।

पवन दूत काव्य—लेखक वादिचन्द्र सूरि, अनु० पं० उदयलाल, काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ३२. व० १६१४, आ० प्रथम।

पशुबलि निषेध—लेखक धीरेन्द्र कुमार शास्त्री. भा० हि,० पृ० १८, व० १६३६।

पाइअलच्छी नाम माला—लेखक धनपाल; भा० प्रा०, पृ० १६४ व० १६१६।

प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ—सं० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल आदि; प्र० प्रेमी अभिनन्दन समिति, भा० हि०, पृ० ७२१, व० १६४६।

पाइय सद्दमहाण्णवो—सपा० पं० हरगोविंददास टी. शाह. कलकत्ता भा० प्रा०, व० १६२८, (४ भाग)।

पाठ्य पूजा संग्रह (प्रथम भाग)—प्र० विशम्बरदास जैन रोहतक; भा० हिं० सं०, पृ० ४८; व० १६४०, आ० प्रथम।

पाठ्यय पूजा संग्रह (दूसरा भाग)—प्र० विशम्भरदास जैन रोहतक, भा० हि० सं०, पृ० ७८; व० १६४०; आ० प्रथम।

पांडव पुराण—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक; अनु० प० घनश्यामदास; प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हिन्दी; पृ० ४००, व १६१६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण (सचित्र)—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, संपा० नन्दनलाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ३५८; व० १६३६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण अथवा जैन महाभारत—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, सपा० पं० श्रीनिवास जैन, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० स० हि०; पृ० ४२२, व० १६१६, आ० प्रथम।

पांडव पुराण भाषा (छन्द बद्ध)—लेखक प० बुलाकीदास; भा० हि०; पृ० ४०४, व० १६०८।

पात्र केशरी स्तोत्र—लेखक आचार्य पात्र केशरी; अनु० प० लालाराम; प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ५५, आ० प्रथम।

पात्र केसरि स्तोत्र सटीक—लेखक विद्यानंद स्वामी, भा० सं०, (तत्त्वानुशासनादि सग्रह मे प्र०)।

पार्श्वनाथ चरितम् (काव्य)—ले० वादिराज सूरि, भा० स०, पृ० १६८, व० १६१५।

पार्श्वनाथ चरित्र—लेखक वादिराज सूरी, स० पं० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० स०, पृ० २१६, व० १६१६, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ चरित्र—लेखक वादिराज सूरी, अनु० प० श्रीलाल का. ती., प्र० जयचन्द्र जैन कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४२५, व० १६२२, आ० प्रथम।

पार्श्व पुराण (पद्य)—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ८५, व० १६०७, आ० प्रथम,—पृ० १७६, व० १६१८, आ० द्वितीय।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी; प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६१।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० ला० जैनी लाल देवबद, भा० हि०; पृ० १२०।

पार्श्व पुराण—लेखक कविवर भूधरदास जी, सपा० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वय संपा० देहली, भा० हि०, पृ० २६४, व० १८६८, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ स्तुति (भाषा कल्याण मन्दिर)—लेखक आचार्य कुमुदचन्द्र, हि०, पद्य० अनु० प० बनारसीदास जी, प्र० मुन्शी अमनसिंह देहली, भा० हि०, पृ० १५, व० १८९६, आ० प्रथम।

पार्श्वनाथ स्तोत्र (लक्ष्मी स्तोत्र)—ले० पद्मनन्दि मुनि, भा० सं०, पृ० ६, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

पार्श्वयज्ञ—लेखक पं० अर्जुनलाल सेठी, स पा० प्रकाशचन्द्र सेठी; प्र० ग्रन्थ भ डार बम्बई, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९२३, आ० प्रथम।

पार्श्वाभ्युदयम (काव्य)—लेखक जिनसेनाचार्य, स टी योगिराट्; प्र० सेठ नाथारग जी गांधी आकलूज, भा० स०, पृ० २७१; व० १९०९, आ० प्रथम।

पावन प्रवाह—लेखक प० चैनसुखदास; अनु० प० मिलापचन्द्र; प्र० पं० श्रीप्रकाश जयपुर, भा० सं० हि०, पृ० ९९, व० १९४२; आ० प्रथम।

पाहुड दोहा—लेखक मुनि रामसिह; स पा० प्रो० हीरालाल जैन; प्र० गोपाल अम्बादास चवेर कारजा, भा० अप० हि०; पृ० १३६; व० १९३३; आ० प्रथम।

पिता के उपदेश—ले० दयाचन्द्र गोयलीय; भा० हि०; पृ० २२; व० १९३१।

पिंडशुद्धि अधिकार व मुनि आहार विधि—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७, व० १९२९; आ० दूसरी।

पी. एल. जागरफी (प्रथम भाग)– सग्रह० सपा० पं० प्यारेलाल जैन, प्र० स्वय अलीगढ, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९२०, आ० प्रथम।

पी. एल. जागरफी (द्वितीय भाग)—स० सग्र० प० प्यारेलाल जैन, भा० हि०, पृ० ५६, व० १९२१, आ० प्रथम।

पी. एल. जागरफी (तृतीय भाग)—स पा० प० प्यारेलाल जैन, प्र० स्वयं अलीगढ़, भा० हि०, पृ० २३६, आ० प्रथम।

पुण्यप्र भाव—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

पुण्याश्रव कथा कोष—लेखक रामचन्द्र मुमुक्षु, अनु० संपा० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ३२६; व० १९१६, आ० द्वितीय।

पुण्या श्रव कथा कोष—ले० रामचन्द्र मुमुक्ष, अनु० सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० श्रीमती प्रसन्न बाई बम्बई, भा० स० हि०, पृ० २३९, व० १९०७।

पुण्याश्रव कथा कोष (सचित्र)—ले० परमानद विशारद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३६६, वर्ष १९३७, आ० प्रथम।

पुनर्विवाह जैन शास्त्रोक्त नहीं है—ले० त्रिलोकचन्द दौलतराम, भा० हिं०, पृ० ६।

पुरातन जैन वाक्य सूची—मक० सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० प्रा० हि०।

पुराण और जैन धर्म—ले० हंसराज शर्मा, भा० हि०, पृ० १०६, वर्ष १९२६।

पुराण परीक्षा—ले० लालता प्रसाद जैन, प्र० स्वय कायम गज, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९०७, आ० प्रथम।

पुरुदेव चम्पु—ले० महाकवि अर्हद्दास, सं० टी० व सपा० जिनदास शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैनग्रन्थ माला बम्बई, भाषा स०, पृष्ठ २१२, व० १९२८, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० नाथूराम प्रेमी, प्र० परम श्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० स० हि०, पृष्ठ ११५, व० १९०४, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वय देवबंद, भा० स० हि०, पृष्ठ ४२, व० १९०९, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० प० मक्खनलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ४७९; व० १९२६, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० उग्रसेन एम. ए.; प्र० जैन एसोसियेशन रोहतक, भा० सं० हि०, पृ० १६६; व० १९३३, आ० प्रथम।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, भा० सं०, पृ० १६, (मूल)।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय—ले० अमृतचन्द्राचार्य, टी० पं० टोडरमल्ल जी व पं० सत्यंधर जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १२४, व० १९३०, आ० प्रथम।

पुष्पमाला—ले० श्री मद्राजचन्द्र, अनु० जगदीशचन्द्र, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९३७।

पुष्पोषवन—अनु० पंडित मेहरचन्द जैन, भा० हि०, पृ० ३३१, व० १८८८, आ० प्रथम।

पूजाचर्या—ले० पण्डित मक्खन लाल प्रचारक, प्र० स्वयं देहली, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३२, व० १९३१, आ० प्रथम।

पूज्यपाद श्रावकाचार—ले० पूज्यपादाचार्य, सम्पादक प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० स०, पृ० ३६, व० १९३१, आ० प्रथम।

पूर्ण दर्शन—ले० प्रेमी सहारनपुरी; प्र० प्रेम भवन सहारनपुर, भा० हि०; पृ० ३२ आ० प्रथम।

पोरों की कहानियाँ—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०।

फीरोजाबाद शास्त्रार्थ—भा० हि०, पृ० ३४, व० १८८८ आ० प्रथम।

बड़ी बहू बड़े भाग—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी।

वज्रदन्त का बारह मासा—ले० प० भूधरदास, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भाषा हिन्दी, व० १८९९।

बड़े बाबा या भगवान महावीर—प्र० जैन सेवा दल दमोह, भाषा हिन्दी, पृ० ६, व १९४४।

बनारसी नाम माला—ले० पण्डित बनारसीदास जी, सपा० पं० जुगल-किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० हिन्दी; पृ० १०८; व० १९४१; आ० प्रथम।

बनारसी विलास—ले० कविवर बनारसीदास, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३६८, व० १९०६, आ० प्रथम।

बम्बई प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—सग्र० सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ माणिकचन्द पानाचन्द जौहरी बम्बई, भा० हि०, पृ० २३२, व० १९२५, आ० प्रथम।

बम्बई मे शुद्ध दिगम्बराम्नाय मन्दिर निर्माण पत्रिका—प्र० जैन पचान बम्बई; भा० हि०, पृ० १६, व० १८८८।

बयाना काण्ड—प्र० बा० छोटेलाल जैन कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २६, व० १९२६, आ० प्रथम।

ब्याहलो नेमनाथ का (पद्य)—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८९८।

ब्याहता बहु—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० साहु जुगमन्दरदास नजीबाबाद, भा० हि०, पृ० ४५, व० १९१५।

बलदेव भजनमाला—सपा० मूलचन्द गुप्त, भा० हि०, पृ० ११२।

बलिदान या अनोखा बदला—ले० फकीरचन्द वियोगी, प्र० हरिवश एण्ड को० देहली, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९४०।

ब्रह्म विलास—ले० भैया भगवतीदास, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३०५, व० १९२६, आ० द्वितीय;—प्रथम आ० १९०४।

बहिरग शुद्धि अथवा मोक्ष पात्रता—ले० प० मक्खनलाल; प्र० श्री निवास शास्त्री कलकत्ता, भा० हि०; पृ० ३५, व० १९३८।

बगाल बिहार उड़ीसा के प्राचीन जैन स्मारक—सपा० ब्र० शीतलप्रसाद

प्र० बैजनाथ सरावगी कलकत्ता,भा० हि०, पृ० १४७, व० १९२३, आ० प्रथम।

ब्रह्म गुलाल चरित्र—भाषा हिन्दी।

ब्राह्मणों की उत्पत्ति—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृष्ठ ३४, व० १९१८।

बाइस परिषह—ले० प० भूधरदास, प्र० ज्ञानचन्द जैनी लाहौर, भा० हि० पृ० १६, व० १९१२।

बाइस परिषह—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, पृ० १६, व० १८९८, आ० प्रथम।

बाइस परिषह—प्र० बा० ज्ञानचद जैनी लाहौर, भा० हि०, पृ० ६४; व० १९०५, आ० प्रथम।

बारस अणुवेक्खा—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, टी० अनु० प० मनोहर लाल व पण्डित नाथूराम प्रेमी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि०, पृ० ४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

बारह भावना—ले० बा० रामप्रसाद 'मधुर', प्र० जैन युवक मडल एटा; भाषा हिन्दी; पृ० २७; व० १९३६।

बारह भावना भाषा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद; भाषा हिन्दी, व० १८९८।

बारह खड़ी सूरत—प्र० जैन ग्रथ प्रचारक पुस्तकालय देवबद, भा० हि०, पृ० २०, व० १९१२, आ० द्वितीय।

बारह मासा—ले० गुलशनराय; प्र० स्वय देहली, भा० हि०; पृ० ७, व० १९३१; आ० प्रथम।

बारह मासा नेमिराजुल—ले० कवि नयनसुखदास, संपा० पुष्प जैनभिक्खु, प्र० नानकचन्द बनारसी दास देहली, भा० हि०; पृ० ५६, व० १९३७, आ० प्रथम।

बारह मासा मुनिराज—ले० जीयालाल, प्र० जैन पुस्तकालय इटावा, भा० हि०; पृ० ७, व० १९०८, आ० द्वितीय।

बारह मासा राजल—ले० नयनसुखदास; प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देवबन्द, भा० हि०; पृ० ६; व० १९२४, आ० पंचम।

बारह मासा संग्रह—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १७।

बारह मासा संग्रह—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भाषा हि०; व० १८६८।

बारह मासा संग्रह—ले० पण्डित नयनानन्द, प्र० नरायणदास जंगलीमल देहली, भा० हि०, पृष्ठ ४०, व० १९००।

बालक भजन संग्रह (प्रथम भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (द्वितीय भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०; पृ० २०, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (तृतीय भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (चतुर्थ भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६; व० १९२५, आ० प्रथम।

बालक भजन संग्रह (पंचम भाग)—ले० मास्टर भूरेलाल; प्र० ब्र० पार्श्व सागर, कुन्थलगिरि, भा० हि०, पृ० २४, व० १९२४ आ० प्रथम।

बाल गणित—ले० दयाचन्द जैन; प्र० भारतवर्षीय अनाथ रक्षक जैन सोसाइटी हिसार, भा० हि०, पृ० ६४, व० १९११; आ० प्रथम।

बाल चरितावली—ले० अज्ञात; भा० हि०।

बाल पुष्पांजलि—सपा० मा० शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक; भा० हि० पृ० १८, व० १९३४, आ० प्रथम।

बालबोध जैन धर्म (प्रथम भाग)—ले० दयाचन्द गोयलीय; प्र० रूपचन्द गोयलीय गढीअबुल्लाखाँ०, भा० हिंदी, पृष्ठ ८, व० १९१९, आ० नवम।

बाल बोध जैन धर्म (दूसरा भाग)—ले० दयाचन्द गोयलीय, प्र० बालकृष्ण रामचन्द्र घाणेकर, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१२, आ० तृतीय।

बालबोध जैन धर्म (तीसरा भाग)—लेखक दयाचन्द्र गोयलीय व लाला धर्म शास्त्री, प्र० भारतवर्षीय शिक्षा प्रचारक समिति जयपुर, भा० हि०, पृ० ३०, व० १९१२, आ० प्रथम।

बालबोध जैन धर्म (चतुर्थ भाग)—ले० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ७२, व० १९१५, आ० दूसरी।

बालमित्र (भाग १ व २)—लेखक पन्नालाल जैन, प्र० देश हितैषी आफिस बम्बई; भा० हि०।

बालविवाह—ले० ला० हजारीलाल, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा; भा० हि०, पृ० २६, व० १९१४, आ० प्रथम।

बालशिक्षा—ले० बुधमल पाटनी, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०. पृ० ३२, व० १९१५, आ० प्रथम।

बालिका विनय—संपा० पं० चन्दाबाई, भा० हि०; पृ० ६४, व० १९२१।

बाहुबलि स्वामी व पंच बालयति तीर्थंकर पूजा—लेखक पं० दीपचन्द, प्र० रघुनाथदास प्रेमचन्द जैन तिसावर; भा० हि०, पृ० ८, व १९३१; आ० प्रथम।

बिगड़े का सुधार नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०।

बीस प्रश्नों का उत्तर—लेखक कुंवर दिग्विजयसिंह, प्र० जैनतत्त्व-प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २२; व० १९१२।

बीस विहरमान जिन पूजा—लेखक पं० जौहरीलाल, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९२७।

बुड्ढे का ब्याह—लेखक बा० ज्योतिप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फरनगर; भा० हि०, पृ० २५, व० १९३८; आ० प्रथम।

बुधजनसतसई—लेखक कविवर बुधजन जी, प्र० जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ९५, व० १९१०, आ० प्रथम।

बृहद् विमलनाथ पुराण—लेखक ब्र० श्रीकृष्णदास, अनु० पं० गजाधर-

लाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३६६, व० १६१४; आ० प्रथम।

बोधामृतसार—लेखक मुनि कुंथसागर जी; प्र० सेठ शकरलाल गांधी बम्बई, भा० हि०, पृ० २४०, व० १६३७, आ० प्रथम।

बून्दीराज मे कन्याओं की रक्षा का कानून—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ८४, व० १६२६।

बोधप्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी श्रुतसागर, भा० प्रा० स०, (षटप्राभृतादि सग्रह मे प्र०)।

बोध पाहुड़—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सपा० बा० सूरजभान वकील, (षट पाहुड़ मे प्र०)।

भक्तामर और भोजभूप—लेखक पीताम्बर दास गुप्त, भा० हि०, पृ० १८८।

भक्तामर कथा—लेखक ब्र० रायमल्ल, हि० अनु० उदयलाल, काशलीवाल प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १४७।

भक्तामर कथा—लेखक ब्र० रायमल्ल, हि० अनु० उदयलाल काशीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३६, व० १६३०, आ० चतुर्थ।

भक्तामर कथा (यंत्र मंत्र सहित)—ले० पं० विनोदीलाल, सपा० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता; भा० हि० स०, पृ० १७१, व० १६३५, आ० प्रथम।

भक्तामर काव्य—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० नाथूराम डोगरीय, प्र० अनु० स्वय बिजनौर, भा० स० हि०, पृ० ४८; व० १६३६; आ० प्रथम।

भक्तामर यंत्रमंत्र पूजन—प्र० चन्दाबाई दिग० जैनग्रंथमाला देहली, भा० हि०, पृ० २१, व० १६३८।

भक्तामर स्तोत्र—ले० मानतुंगाचार्य, अनु० टी० ज्ञानचन्द्र जैन, प्र० ज्ञानचन्द्र जैनी लाहौर, भा० स० हि०, पृ० ५०, व०, १६१२।

भक्तामरस्तोत्र—लेखक मानतुंगाचार्य, हि० पद्यानुवाद-कवि हेमराज, टी. सुमेरचन्द चन्द जैन उन्नीषु, प्र० मित्र सेन मामचन्द जैन देवबन्द, भा० स० हि०, पृ० ४१।

भक्तामर स्तोत्र (सटीक)—ले० मानतुंगाचार्य; प्र० मुंशीनाथूराम लमेचू मुड़ावरा; भ० स० हि०, पृ० ३२; व० १६०६; आ० प्रथम।

भक्तावर स्तोत्र (सार्थ)—ले० पांडे हेमराज, टी. प० महेरचन्द; भा० हि०; पृ० २५।

भक्तामर स्तोत्रम्—ले० मानतुङ्ग; स टी. सिद्धिचन्द्र; हि० हेमचन्द्र; भा. स. हि; पृ० १२६; व० १८६४।

भक्तिप्रवाह या अपूर्वदर्शन—लेखक मुन्नालाल समगोरिया; प्र० जैन उपयोगी वस्तु भंडार देहली, भा० हि०, पृ० ४८; व० १६४४।

भगवती आराधना—लेखक शिवार्य; टी अपराजित सूरि; आशाधर; अमितगति, हिन्दी अनुवादक जिनदास पार्श्वनाथ; भाषा प्रा. सस्कृत हिन्दी, पृष्ठ १८७८, वर्ष १६३५।

भगवती आराधना—लेखक शिवार्य, टी. पंडित सदासुख जी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भाषा प्रा० हिन्दी, वर्ष १६३२।

भगवती आराधना सार—लखक शिवार्य टी० पं० सदासुख जी, प्र० शाहमाणिकचन्द मोतीचन्द; भाषा प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ६३८, वर्ष १६०६, आ० प्रथम।

भगवान कुन्दकुन्दाचार्य—लेखक बाबू भोलानाथ मुख्तार, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ८२, वर्ष १६४२; आ० प्रथम।

भगवान धर्मादर्श—लेखक भगवानदास जैन, भाषा हिन्दी स०, पृ० २८; वर्ष १८६०।

भगवान्नाम सागर—लेखक भगवानदास जैन; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १७५; वर्ष १६०६।

भगवान् नेमनाथ—लेखक राजमल लोढा; प्र० जैन साहित्य कार्यालय मन्दसौर, भाषा हिन्दी, पृ० १६, वर्ष १९३५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर—लेखक मूलचन्द वत्सल, प्र० चैतन्य प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर, भाषा हिन्दी; पृ० १६, वर्ष १९३१, आ० प्रथम।

भगवान महावीर—लेखक बाबू कामताप्रशाद जैन, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० हिन्दी, पृ० २८०; वर्ष १९२४, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और उनका उपदेश—ले० कामता प्रसाद जैन, प्र० वीर कार्यालय बिजनौर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ४६, वर्ष १९२५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और उनका दिव्य उपदेश—संपा० सम्० ताराचन्द रपरिया, प्र० जैन भ्रातृ संघ आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २४।

भगवान महावीर और उनका समय—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार; प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६२, व० १९३४, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध—ले० बा० कामताप्रसाद; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत; भाषा हिन्दी; पृष्ठ २७१, व १९२७, आ० प्रथम।

भगवान महावीर और स्याद्वाद—ले० बाबू जयभगवान वकील, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्र भडार पानीपत; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ८, वर्ष १९३८, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का अचेलक धम—ले० पंडित कैलाशचन्द्र, प्र० दिग० जैन सघ मथुरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३५, वर्ष १९४५; आ० प्रथम।

भगवान महावीर का जहूर—ले० पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३१, व० १९२८, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का समय—लेखक कामताप्रसाद जैन, भाषा हिंदी, पृष्ठ ३१; व १९३२; आ० प्रथम।

भगवान महावीर की अहिंसा और भारत के देशी राज्यों पर उसका

प्रभाव—लेखक कामताप्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६; वर्ष १६३३, आ० प्रथम।

भगवान महावीर की शिक्षाएं—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन भ्रातृ संघ आगरा, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११, वर्ष १६२५, आ० प्रथम।

भगवान महावीर का आदर्श जीवन—लेखक चौथमल जी, भाषा हिंदी, पृष्ठ ६५७, वर्ष १६३१।

भगवान पार्श्वनाथ—लेखक बा० कामताप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ४१४, व० १६२६, आ० प्रथम।

भगवान पार्श्वनाथ (सचित्र)—लेखक हरिसत्य भट्टाचार्य; अनु० मास्टर छोटेलाल, प्र० जैन साहित्य मन्दिर सागर, भा० हि०; पृ० ४३, व० १६२६, आ० प्रथम।

भजन मंडली—लेखक चन्द्रसेन जैन वैद्य, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २८, व० १६१२, आ० प्रथम।

भजन व आरती संग्रह—प्र० सुमतिलाल; भा० हि०, पृ० १६।

भजन संग्रह—संग्रह० नाथूराम लेमचू, प्र० स्वयं कटनी, भा० हि०, पृ० २६, आ० प्रथम।

भट्टारक चर्चा—लेखक हीराचन्द नेमचंददोशी, भा० हि०, पृ० ३६; व० १६१७।

भट्टारक मीमांसा—लेखक पं० दीपचन्द वर्णी; प्र० वीर कालूराम राजेन्द्रकुमार रतलाम, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२८।

भद्रबाहु चरित्र—लेखक रत्ननन्दि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन भारती भवन बनारस, भा० हि०, पृ० ६६, व० १६११, आ० प्रथम।

भदैया पूजा संग्रह—प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था कलकत्ता; भा० हि०, सं० पृ० २६६, व० १६३५, आ० तृतीय।

भरत बाहुबलि संवाद—संपा० प्र० त्रिलोकचन्द्र पाटनी केकड़ी, भा० हि०; पृ० ८०, व० १६२०।

भरतेशवैभव (प्रथम भाग)—लेखक महाकवि रन्न; अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० रावजी सखारामदोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० २०८, व० १६३६, आ० प्रथम।

भरतेशवैभव (द्वितीय भाग)—लेखक महाकवि रन्न; अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० गोविन्दजी रावजी दोशी शोलापुर, भा० हि०, पृ० ३५८; व० १६४१, आ० प्रथम।

भरतेशवैभव (तृतीय भाग)—ले० महाकवि रन्न, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० स्वय अनु० शोलापुर, भा० हि०, पृ० १२२, व० १६४३, आ० प्रथम।

भ्रमनिवारण—लेखक न्यामतसिंह जैन, प्र० स्वय टीकरी (मेरठ), भा० हि०, पृ० ५६, व० १६३६, आ० प्रथम।

भविसदत्त चरित्र—लेखक पं० बनवारीलाल, प्र० वीर जैन साहित्य कार्यालय हिसार, भा० हि० (पद्य), पृ० १६३, व० १६१६, आ० प्रथम।

भविसयत्त कहा—लेखक धनपाल; सपा० सी डी दलाल, भा० अप० प०; पृ० ३८१, व० १६२३।

भाग्य और पुरुषार्थ—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० कुलवन्तराय जैन, भा० हि०, पृ० ३८।

भाद्रपद पूजा सग्रह—सग्रह० प० कस्तूरचन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४०।

भारत का आदि सम्राट—लेखक स्वामी कर्मानन्द; प्र० दिगम्बर जैन सघ मथुरा; भा० हि०, पृ० ३०, व० १६३८।

भारत के सपूत—लेखक मुन्नालाल समगौरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४३, व० १६४१, आ० प्रथम।

भारत गौरव (सम्राट चन्द्रगुप्त)—लेखक जिनेश्वर प्रसाद मायल, भा० हि०।

भारत वर्षीय दिगम्बर जैन डायरेक्टरी—प्र० सेठ ठाकुरदास भगवानदास

जौहरी बम्बई, भा० हिं०, पृ० १४२३; व० १६१४, आ० प्रथम ।

भावना—लेखक शोभाचन्द्र भारिल्ल, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६३६ ।

भावना बोध—लेखक श्री मद्राजचन्द्र, अनु० जगदीशचन्द्र, भा० हि०, पृ० १२०, व० १६३७ ।

भावना लहरी–लेखक विविध, भा० हि०, पृ० ४८, प्र० दिगम्बर जैन शास्त्र भडार पानीपत; व०, १६३६ ।

भावना विवेक—लेखक प० चैनसुखदास, अनु० प० भँवरलाल, प्र० सब्दोध ग्रंथ माला जयपुर, भा० स० हि०; पृ० २८०; व० १६४१, आ० प्रथम ।

भावना संग्रह–प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० २८, आ० प्रथम ।

भावत्रिभङ्गी—लेखक श्रुत मुनि, भा० स०, (भाव संग्रहादि में प्र०) ।

भाव पाहुड—लेखक कुन्दकुन्द, भा० प्रा०, (अष्ट पाहुड व षट् पाहुड में प्र०) अपरनाम भाव प्राभृत ।

भाव संग्रहादि (४ ग्रंथ)—लेखक विभिन्न, सपा० प० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथ माला बम्बई, भा० स० प्रा०, पृ० ३२८, व० १६२१, आ० प्रथम ।

भाषा एकीभाव–प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, व० १८६८, भा० हि० ।

भाषा कल्याण मन्दिर–प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, व० १८६८, भा० हि० ।

भाषा जैन नित्य पाठ संग्रह—प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४४ ।

भाषा नित्य पूजा (सार्थ)—अनु० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रंथ माला जबलपुर; भा० हि०; पृ० ५६, व० १६३६, आ० प्रथम ।

भाषा पंच स्तोत्र—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० हि०, व० १८९८ ।

भाषा पूजन संग्रह—सम्र० प्र० मुन्शी नाथूराम लेमचू, भा० हि०, पृ० १०१, व० १९०३, आ० द्वितीय ।

भाषा पूजा संग्रह—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६६; व० १९८८, आ० छठी ।

भाषा भक्तामर—लेखक पांडे हेमराज, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० हि०, व० १८९८ ।

भाषा भक्तामर व महावीराष्टक—लेखक पांडे हेमराज व प० गजाधरलाल, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १६; व० १९३९ ।

भाषा भूपाल चौबीसी— प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० हि०, व० १८९८ ।

भाषा वाक्यावली—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० श्रीमती कुन्दनकुमारी आरा, भा० हि०, पृ० १० व० १८८९ ।

भाषा सूक्ति मुक्तावली—(सिंदूर प्रकरण सहित)—ले० प० बनारसीदास, टी० पा० मुंशी अमनसिह, प्र० स्वय सपा० देहली, भा० हि०, पृ० ४०, व० १८९३ ।

भूगोल मीमांसा—ले० प० गोपालदास बरैया, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १७, व० १९१२, आ० प्रथम ।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, प्र० मुशी अमनसिह सोनीपत, भा० हि०, पृ० ११२, व० १८९०, आ० प्रथम ।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, टी० सपा० बा० ज्ञानचद्र, प्र० स्वय दिगम्बर जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९०९, आ० प्रथम ।

भूधर जैन शतक—लेखक कविवर भूधरदास जी, टी० मुशी अमनसिह, प्र० श्रीमती सोनादेवी देहली, भा० हि०, पृ० ८०; व० १९४१, आ० प्रथम ।

भूभ्रमण भ्रान्ति–संपा० प्र० पं० प्यारेलाल, भा० हि०, पृ० १६; व० १६२० ।

भूभ्रमण सिद्धान्त और जैन धर्म—लेखक डा० निहालकरण सेठी, भा० हि०, पृ० १५ ।

भैरव पद्मावती कल्प—लेखक मल्लिषेणसूरि, भा० स०, पृ० १६६, व० १६३७ ।

मदनपराजय–मूलग्रंथ संस्कृत, कवि नागदेव, हिन्दी अनुवादक प्रो० राजकुमार जैन, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, मूल्य ८), पृ० २४२, प्रकाशन १६४८ ।

मक्खनलाल भजन माला–लेखक प० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६३०, आ० प्रथम ।

मकरध्वज पराजय नाटक—लेखक कवि जिनदास, अनु० प० गजाधरलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १०५; आ० प्रथम ।

मक्शी पार्श्वनाथ—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

मंगलादेवी—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्र० जौहरीमल सर्राफ देहला, भा० हि०, पृ० ५२, व० १६२५, आ० प्रथम ।

मणिभद्र—ले० सुशील; अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६१६ ।

मद्रास मैसूर प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० सपा० ब्र० शीतलप्रसाद; प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ३३४, व० १६२८, आ० प्रथम ।

मध्यप्रान्त मध्यभारत व राजपूताने के प्राचीन जैन स्मारक–संग्र० संपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया, सूरत, भा० हि०, पृ० २०४, व० १६२६, आ० प्रथम ।

मनमोहन पंचशती—लेखक कविवर छत्रपति, सपा० सोनपाल जैन, प्र० स्वयं संपा० बडवानी, भा० सं० हि०, पृ० २३६, व० १६१७, आ० प्रथम ।

मनमोहनी नाटक—ले० प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि० ।

मनोरमा—अनु० मूलचन्द्र, भा० हि०, पृ० १०४; व० १६११ ।

मनोरमा उपन्यास—ले० जैनेन्द्र किशोर, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० ।

मनोरमा चरित्र—लेखक पन्नालाल जैन, प्र० रायल स्टेशनरी मार्ट देहली, भा० हि०, पृ० १२६, व० १६२६, आ० प्रथम ।

मनोरमा सुन्दरी—लेखक श्रीयुत प्रेमी, प्र० प्रेमभवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

ममल पाहुड (प्रथम भाग)—लेखक तारण तरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, 'भा० हि०, पृ० ४२०, व० १६३७, आ० प्रथम ।

ममल पाहुड (द्वितीय भाग)—लेखक तारणतरण स्वामी, अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ४५०; व० १६३८, आ० प्रथम ।

ममल पाहुड (तृतीय भाग)—लेखक तारणतरण स्वामी अनु० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मथुराप्रसाद बजाज सागर, भा० हि०, पृ० ३१८, व० १६३६, आ० प्रथम ।

मरणभोज—लेखक प० परमेष्ठीदास, प्र० सिंघई मूलचन्द मुनीम व शाह साकेरचन्द मगनलाल सरैया सूरत, भा० हि०, पृ० १०४, व० १६३७, आ० प्रथम ।

मल्लिनाथ पुराण—लेखक सकल कीर्ति आचार्य, अनु० प० गजाधरलाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० १८४, व० १६२३, आ० प्रथम ।

मल्लिनाथ पुराण—लेखक सकलकीर्ति आचार्य, अनु० टी० प० गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १४५ ।

महर्षि स्तोत्र—भा० स०, (सिद्धान्त सारादि संग्रह मे प्र०)।

महात्मा रामचन्द्र—लेखक प० मूलचन्द वत्सल, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या, सूरत, भा० हि०, पृ० २६, व० १६२७, आ० प्रथम।

महापुराण (प्रथम खड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, संपा० डा० पी० एल. वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ६७२, व० १६३७, आ० प्रथम।

महापुराण (द्वितीय खड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, सपा० डा. पी. एल. वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० अप०, पृ० ५६७, व० १६४०, आ० प्रथम।

महापुराण (तृतीय खड)—लेखक महाकवि पुष्पदन्त, सपा० डा० पी० एल० वैद्य, प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ३१३, व० १६४१, आ० प्रथम।

महाबन्ध (महाधवल)—ले० भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी, सपा० अनु० प० सुमेरचन्द्र दिवाकर, प्र० भारतीयज्ञान पीठ बनारस, भा० प्रा० स० हि०, व० १६४७।

महाराज श्रेणिक—लेखक शुभचन्द्र भट्टारक, सपा० एम० एल० जैन, प्र० सस्ता जैन साहित्य मन्दिर कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३४६, व० १६३८, आ० प्रथम।

महारानी चेलनी—लेखक बा० कामताप्रशाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १७०, व० १६३३, आ० द्वितीय।

महावीर—ले० बा० कामताप्रशाद, भा० हि०, पृ० ६३।

महावीर चरित्र—लेखक अशग कवि, अनु० पं० खूबचन्द शास्त्री, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडया सूरत, भा० स० हिन्दी, पृ० २७७; व० १६१८, आ० प्रथम।

महावीर चाँदन गाँव नाटक—लेखक राजकंवार जन, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० २८, व० १६३७, आ०प्रथम।

महावीर जिन पूजा संग्रह—प्र० महावीरप्रशाद जैन अनाथाश्रम देहली, भा० हिन्दी सं०, पृ० ६०, व० १६२६, आ० प्रथम।

महावीर जीवन विस्तार—अनु० ताराचन्द दोशी; प्र० श्री ज्ञानप्रसारक मंडल सिरोही, भा० हिन्दी; पृ० ६०, व० १६१८; आ० प्रथम।

महावीर पुराण (सचित्र)—सपा० नन्दनलाल जैन, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १६५, व० १६३६, आ० प्रथम।

महावीर पुराण—लेखक सकलकीर्तिदेव; अनु० प० मनोहरलाल, प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई; भा० स० हिन्दी, पृ० १५५, व० १६१६, आ० प्रथम।

महावीर पुष्पाञ्जली—सग्रह उमरावसिह जैन, प्र० रतनलाल जैन मादीपुरिया देहली, भा० हि०; पृ० ८८, व० १६४१, आ० प्रथम।

महावीर स्वामी का जीवन—लेखक प० न्यामतसिह जैन, भा० हिन्दी, पृ० ४३।

महावीर स्वामी चरित्र—लेखक प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० सेठ सवाभाई सरबमलदास आरोन, भा० हिन्दी, पृ० ६८, व० १६३७, आ० प्रथम।

महावीराष्टक—लेखक भागचन्द्र, भा० स०।

महिपाल चरित्र—लेखक कुन्दनलाल जैन, प्र० स्वय हासी हिसार, भा० हि०, पृ० ७०, व० १६३३, आ० प्रथम।

महिलाओं का चक्रवर्तित्व—सपा० सक० कुमार देवेन्द्रप्रशाद, प्र० स्वय प्रेम मन्दिर आरा, भा० हिन्दी, व० १६२०, आ० प्रथम।

महिला रत्नमगन बाई—लेखक ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० २००, व० १६३३, आ० प्रथम।

महीचन्द जैन भजनावली—सग्रह सेठ छोटेलाल, प्र० स्वय सीकर; भा० हिन्दी, पृ० ४०, व० १६२६, आ० प्रथम।

महेन्द्रकुमार नाटक—ले० अर्जुनलाल सेठी, भा० हिंदी, पृ० ७७।

मंगतराय भजन माला—लेखक कवि मगतराय, भा० हि०।

मंगलमय महावीर–लेखक साधु टी० एल० वास्वानी, अनु० हेमचन्द्र मोदी, भा० हिन्दी, पृ० १०, व० १९४० ।

मानव धर्म–लेखक ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० हिन्दी, ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० १६, व० १९३०, आ० प्रथम ।

मानव धर्म और मांसाहार–लेखक धन्यकुमार, प्र० सन्मति पुस्तकालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृ० १६; व० १९३८ ।

मानिक विलास—लेखक कवि माणिकचन्द, भा० हि०, १२५ पद ।

मांसभक्षण पर विचार—लेखक अम्बालाल दाधीच, प्र० भारत जैन महामडल लखनऊ, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९१५, आ० द्वितीय ।

मार्गानुसारी के ३५ गुण—लेखक मा० रखबचन्द्र, प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय व्यावर, भा० हिन्दी, पृ० १५, व० १९३० ।

मिथ्यात निषेध—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैनमित्रमडल देहली; भा० हि०, पृ० २४, व० १९३३, आ० प्रथम ।

मिथ्यात्व नाशक नाटक—ले० प० पन्नालाल जन, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भा० हि० ।

मीन संवाद—ले० प० जुगलकिशोर मुख्तार, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२९ ।

मुक्ति—ले० प० प्रभाचन्द्र, प्र० जैन मित्रमडल देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १२, वर्ष १९३६, आ० द्वितीय ।

मुक्ति दूत—ले० वीरेन्द्र कुमार जैन एम० ए०, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ बनारस, भाषा हिन्दी, व० १९४७ ।

मुक्ति और उसका साधन—ले० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० जैनमित्रमडल देहली, भाषा हि०, पृ० २८, व० १९२९, आ० प्रथम ।

मुकद्दमा जैन मत समीक्षा—ले० प्र० अज्ञात, भा० हि० ।

मुनि धर्म प्रदीप—ले० आचार्य कुंथ सागर, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रन्थमाला शोलापुर, भा० हि०, पृ० १६८, व० १९४१ ।

मुनि यमन सेन चरित्र—ले० बा० ज्ञानचन्द जैनी, प्र० दिग० जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० १३०, व० १६०२ ।

मुनिराज का बारहमासा—प्र० बा० सूरजभान वकील, देवबंद, भा० हि० व० १८६८ ।

मुनिसुव्रत काव्य—ले० कवि अर्हद्दास, अनु० टी० पं० के० भुजबलि शास्त्री व प० हरनाथ द्विवेदी, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा; भा० स० हि०, पृ० २२१, व० १६२६, आ० प्रथम ।

मुनिवंश दीपिका—ले० नयन सुखदास, प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि० ।

मुनि संघ भजनावली—ले० प्र० शिवराम जैन रोहतक; भा० हि०, पृ० ८, व० १६३० ।

मुहूर्त दर्पण—सम्प्र० अनु० प० नेमिचन्द्र, संपा० के० भुजबलि शास्त्री, प्र० स्वय आरा; भा० सं० हि०, पृ० ८०, व० १६४८, आ० प्रथम ।

मूर्ति खंडन निर्णय—प्र० ला० कन्हैयालाल देहली; भा० हि०, व० १८६७ ।

मूर्ति पूजा मंडन—ले० प० मिहरचन्द दास जैन, प्र० जैन प्रचारिणी सभा सुनपत, भा० हि०, पृ० १३, व० १८८८, आ० प्रथम ।

मूर्त्ति पूजा मंडन नूतन मत खंडन—लेखक प० शिवचन्द्र, भा० हि०, पृ० २१, व० १८८७ ।

मूर्त्ति मंडन—लेखक मुसद्दीलाल जैनी, प्र० दिग० जैन सभा निरपुडा; भा० हि०, पृ० १४; व० १६१३, आ० प्रथम ।

मूर्त्ति मंडन प्रकाश—ले० प० न्यामत सिह, प्र० स्वय हिसार, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६२३, आ० प्रथम ।

मुहणौत नैणसी की ख्यात—ले० मुहणौत नैणसी, भाषा हिन्दी राजस्थानी; प्र० अज्ञात ।

मूल प्रति क्रमण—लेखक अज्ञात; भा० प्रा० ।

मूलाचार—लेखक वट्टकेर स्वामी; संपा० पं० मनोहरलाल; प्र० मुनि अनंत कीर्ति ग्रन्थमाला बम्बई, भा० प्रा० सं०, पृ० ४३२, व० १९१९; आ० प्रथम।

मूलाचार (पूर्वार्ध)—ले० वट्टकेर स्वामी; स० टी० वसुनन्द्याचार्य, संपा० पन्नालाल सोनी, गजाधरलाल व श्री लाल; प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रन्थ-माला बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ५२०, व० १९२०, आ० प्रथम।

मूलाचार (उत्तरार्ध)—ले० वट्टकेर स्वामी, सं० टी० वसुनन्द्याचार्य, सपा० पन्नालाल सोनी, गजाधरलाल व श्रीलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथ-माला बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ३४०, व० १९२३, आ० प्रथम।

मूलाचार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले शास्त्री, प्र० सेठ सखाराम देवचन्द शाह शोलापुर, भा० प्रा० हि०, पृ० ७००; व० १९४७।

मूलाराधना—ले० शिवार्य, टी० अपराजित सूरि (विजयोदया टीका), पं० आशाधर (मूलाराधना), आचार्य अमितगति (स० श्लोक); हि० टी० अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० १६७८; व० १९३५; आ० प्रथम।

मेरी द्रव्य पूजा—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, भा०, हि०, पृ० ८, व० १९२८।

मेरी भावना—लेखक प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली; भा० हि०, व० १९३१, –(इस पुस्तक के बीसियो विभिन्न सस्करण, विविध सस्थाओ और व्यक्तियो की ओर से प्रकाशित हो चुके है)।

मेरा विकास कथा—ले० स्वामी सत्यभक्त, प्र० सत्यसदेश ग्रथमाला सत्याश्रम वर्धा, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९४३, आ० प्रथम।

मैं कौन हूँ—ले० ज्योतिप्रसाद जैन. प्र० जैनमित्रमण्डल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९३६, आ० प्रथम।

मैथिली कल्याण नाटकम्—ले० कवि हस्तिमल्ल, सपा प० मनोहरलाल

शास्त्री, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रन्थ माला बम्बई, भा० सं०, पृ० १०४, व० १६१६, आ० प्रथम।

मोक्ष पाहुड (मोक्ष प्राभृत)—ले० कुन्दकुन्द, भा० प्रा स० हि०, (अष्ट पाहुड व षट पाहुड मे प्र०)।

मोटर यात्रा दर्पण—ले० पं० शिवजी राम जैन, प्र० सेठ रतनलाल सूरज मल पांड्या रांची, भा० हि०, पृ० १६४, व० १६३८, आ० प्रथम।

मोहिनी—ले० भैयालाल जैन, प्र० महावीर ग्रन्थ कार्यलिय आगरा, भा० हि०, पृ० ८३, व० १६२४।

मोक्ष की कुञ्जी—प्र० आत्म जागृति कार्यालय बगडी (मारवाड), भा० हि०, पृ० ६४, व० १६२८, आ० प्रथम।

मोक्ष पंचाशिका—भा० स०, (तत्त्वानुशासनादि सग्रह मे प्र०)।

मोक्ष मार्ग की सच्ची कहानियां—प्र० बुद्धिलाल श्रावक, भा० हि०, पृ० ८२, व० १६१२, आ० प्रथम, पृ० ८१, व० १६१७, आ० द्वितीय।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४६६, व० १६११, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४६८, व० १६३६, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी, प्र० ज्ञानचन्द जैन लाहौर, भा० हि०, पृ० ५१२, व० १८६७, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—ले० प० टोडरमल जी, प्र० पन्नालाल चौधरी काशी, भा० हि०, पृ० ५२४, व० १६२५, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक—लेखक प० टोडरमलजी, प्र० मुनि अनन्तकीर्ति ग्रथ माला बम्बई, भा० हि०, पृ० ५११, व० १६३७।

मोक्ष मार्ग प्रकाशक (द्वितीय भाग)—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३४४, व० १६३३, आ० प्रथम।

मोक्ष मार्ग प्रदीप—ले० कुन्थ सागर (आचार्य); भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ ६२; वर्ष १६३७ ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, अनु० संपा० बनबारीलाल स्याद्वादी, प्र० सस्तासाहित्य भंडार देहली, भा० स० हि०, पृ० १११, व० १८४०, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, हि० टी० पं० लालाराम, प्र० सेठ गणेशी लाल उदयपुर, भा० स० हि०; पृ० २२८; व० १६४१, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी; अनु० पन्नालाल सा० आ० प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० स० हि०, पृ० २७२; व० १६४५, आ० तृतीय (सचित्र) ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, हि० पद्य अनु० पं० छोटेलाल, प्र० जैन भारतीय भवन बनारस, भा० स० हि०, पृ० ६५, व० १६१२, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र—ले० उमास्वामी, प्र० हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० स०, पृ० २०, व० १६३३, आ० प्रथम ।

मोक्ष शास्त्र (बाल बोधिनी टीका)—ले० उमास्वामी, टी० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हि०, पृष्ठ १६२ ।

मौन व्रत कथा—ले० गुणचन्द्र भट्टारक; अनु० प० नन्दनलाल, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हि०, पृ० २४, आ० प्रथम ।

मौन व्रत कथा—ले० गुणचन्द्र भट्टारक, अनु० प० नन्दनलाल, प्र० छोटे लाल परमानन्द देवरी; भा० स० हि०, पृष्ठ ५०, आ० प्रथम ।

मौर्य साम्राज्य के जैन वीर—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैनमित्र मंडल देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १७३, व० १६३२, आ० प्रथम ।

मृत्यु महोत्सव—हि० टी० पं० सदासुखजी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा स० हिन्दी, पृ० २३, व० १६०८ आ० प्रथम ।

यज्ञोपवीत संस्कार—सपा० क्षुल्लक ज्ञान सागर, प्र० गांधी मगनलाल

शकरलाल रतलाम; भा० हिन्दी, पृ० १४४, आ० द्वितीय।

यज्ञोपवीत संस्कार—संपा० ज्ञानचन्द्र वर्णी, प्र० गाधी मगनलाल शंकर लाल रतलाम; भा० हि० सं०, पृष्ठ ३५; व० १९३०, आ० प्रथम।

यमन सेन चरित्र—ले० ज्ञानचन्द्र जैनी, प्र० स्वय लाहौर, भा० हि०, पृ० १३०, व० १९०२, आ० प्रथम।

यशस्तिलक चम्पु—ले० सोमदेव, सपा० जे० एन० क्षीरसागर; भाषा सं०, व० १९४६, बम्बई (प्रथम उच्छ्वास)।

यशस्तिलकम् (२ खड)—ले० सोमदेव सूरि; स० टी० श्रुतसागर, सपा० काशीनाथ शर्मा, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० सं०, पृष्ठ ४१९, व० १९०३, आ० प्रथम।

यशोधर—संपा० विद्याकुमार व राजमल लोढा, प्र० जैन धर्म प्रचारक मण्डल अजमेर; भा० हि०, पृ० १७, व० १९३३, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र—ले० वादिराज सूरि, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५२, व० १९१४, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र (जसहर चरिउ)—ले० महाकवि पुष्पदन्त; सपा० डा० पी० एल० वैद्य, प्र० कारजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारजा, भा० अप० हि०, पृ० १८८, व० १९३१, आ० प्रथम।

यशोधर चरित्र—ले० महाकवि पुष्पदन्त, प्र० गिरनारीलाल जैन सहारनपुर, भा० अप० स० हि०, पृ० ३०४।

यशोधर चरित्र—ले० वादिराज सूरि, सपा० टीत ए०, गोपीनाथ राव एम० ए०, प्र० सपा० स्वय तजौर, भा० स०; पृ० ५६, व० १९१२।

युक्त्यानुशासनम्—लेखक समन्तभद्राचार्य, स० टी० विद्यानन्द स्वामी, सपा० पडित इन्द्रलाल व श्री लाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १९६, व० १९२०, आ० प्रथम।

यूरोप में सात मास—ले० प्र० धर्मचन्द सरावगी कलकत्ता; भा० हि०।

योग प्रदीप—ले० हर्ष कीर्त्ति मुनि, भा० सं०, पृ० ३४, व० १८१७ ।

योग सार—लेखक अमितगति आचार्य, अनु० प० गजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भाषा स० हि०, पृ० २००, व० १९१८, आ० प्रथम ।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० प्रो० जगदीश चन्द्र, संपा० डा० ए० एन० उपाध्ये, प्र० रामचन्द्र जैन शास्त्र माला बम्बई, भाषा अप० हिन्दी; पृ० ३०, व० १९३७; आ० प्रथम ।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० अप० हि०, पृ० ३६४, व० १९४१, आ० प्रथम ।

योग सार—लेखक योगीन्द्र देव, टी० प० नन्दराम गोयल, प्र० दिग० जैन भ्रातृ सघ आगरा, भा० हि०, पृ० १४८, व० १९३८, आ० प्रथम ।

योगि भक्ति—लेखक पूज्यपाद, टी० लालाराम, भा० संस्कृत हि०, (दश-भक्त्यादि सग्रह मे प्र०) ।

रक्षाबंधन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, प्र० स्वय मुंडावरा, भा० हि०, पृ० १६, व० १९०२, आ० प्रथम ।

रक्षाबन्धन कथा (पद्य)—लेखक मुंशी नाथूराम लेमचू, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६ ।

रक्षाबन्धन कथा (पद्य)—लेखक मुशी नाथूराम लेमचू, अनु दामोदर दास, प्र० मूलचन्द किसनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९४२, आ० चतुर्थ ।

रक्षाबन्धन कथा—लेखक ब्र० प्रेमसागर पंच रत्न, प्र० जैन सुधारक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४० ।

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, स० टी० प्रभाचन्द्राचार्य, प्र० माणिकचन्द्र ग्रंथ माला बम्बई, भा० स०, पृ० ३६८, व० १९२५, आ० प्रथम ।

रत्नकरंड श्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० प्रभाचन्द्राचार्य, सपा० व प्रस्तावना लेखक पडित जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रंथमाला बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ४५०, व० १९२५, आ० प्रथम ।

रत्नकरड श्रावकाचार—लेखक सन्तभद्राचार्य, हि० टी० पंडित सदासुख जी, प्र० बाबू सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हिन्दी, पृ० ३७६, व० १८९७, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, सपा० ब्र० भगवानदास, प्र० जैन दिगम्बर ग्रंथ माला अहमदाबाद, भा० स०, पृ० १५६, व १९३२, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य सपा० पडित गौरीलाल; प्र० स्वय कलकत्ता, भा० स०, पृ० २७४, व० १९३८, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० पडित पन्नालाल सा० आ०, प्र० सरल जैन ग्रंथमाला जबलपुर, भा० स० हिन्दी, पृ० १२०, व० १९३९, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, हिन्दी पद्य० अनु० मुख्तार सिंह जैन, टी० मैनासुन्दरी जैन प्र० दि० जैनपुस्तकालय मुजफ्फरनगर, भा० हिन्दी, पृ० ७५, व० १९४१, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० टी० उग्रसेन एम० ए०, प्र० जैन मित्रमडल देहली, भा० स० हिन्दी, पृ० २७२, व० १९४०, आ० प्रथम ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० मोहनलाल का० ती०, प्र० हरप्रसाद जैन लहरी, भा० स० हिन्दी, पृ० ११२, व० १९४३, आ० द्वितीय ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, हिन्दी पद्य अनु० गिरधर शर्मा, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हिन्दी, पृ० ६२, व० १९२५ ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पं० सदासुख जी

काशलीवाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हिन्दी, पृ० ४६२, आ० सातवीं।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पंडित सदासुख जी काशलीवाल, प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यलिय बम्बई, भा० सं० हिन्दी, पृ० २८१, व० १६०८, आ० प्रथम।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० पडित सदासुख जी काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृ० २७६, व० १६१७, आ० तृतीय।

रत्नकरंडश्रावकाचार—लेखक समन्तभद्राचार्य, टी० प० सदासुखजी काशलीवाल, प्र० ब्र० नन्दलाल भिण्ड, भा० सं० हि०, व० १६३६, आ० प्रथम।

रत्न करंड श्रावकाचार—लेखक समतभद्राचार्य, टी० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ६६, व० १६३६।

रत्न करंड श्रावकाचार की प्रस्तावना—लेखक प० जुगलकिशोर मुख्तार, भा० हिन्दी, पृ० ८४, व० १६२४।

रत्न परीक्षक—लेखक घासीराम जैन, भा० हि०, पृ० ४४।

रत्न माला—लेखक शिवकोटि भट्टारक, टी० अनु० पं० गौरीलाल, प्र० अनु० स्वय, भा० सं० हि०, पृ० ८४, व० १६३३, आ० प्रथम।

रत्न माला—लेखक शिवकोटि भट्टारक, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ शास्त्री भा० स० हि०।

रत्नत्रय कुञ्ज—लेखक बैरिस्टर चम्पतराय, अनु० कामता प्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६३०, आ० प्रथम।

रत्नत्रय धर्म—लेखक पन्नालाल सा०, आ० प्र० जैन भ्रातृ संघ सागर, भा० हिन्दी, पृ० ३८; व० १६४४।

रत्न कवि प्रशस्ति—भा० कन्नड।

रमणी रत्नमाला—लेखक अज्ञात, भा० हि० ।

रयणसार (सटीक)—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, अनु० क्षुल्लक ज्ञान सागर; भा० प्रा८ हि०; पृ० १३० ।

रयणसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, सपा० प० पन्नालाल सोनी, भा० प्रा० सं० पृ० ३२, वर्ष १९२० ।

रविव्रत उद्यापन - ले० भानुकीर्ति व भाऊ कवि, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० स०, पृ० १६, व० १९४३, आ० द्वितीय ।

रविव्रत कथा—लेखक कवि भाऊ, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६ ।

रविव्रत कथा—ले० कवि भाऊ, प्र० जैन ग्रन्थकार्यालय देवरी, भा० हि० पृष्ठ १८ ।

रविव्रत कथा (बड़ी)—लेखक ज्ञानचन्द जैनी, प्र० वर्धमान जैन पुस्तकालय देहली; भा० हि०, पृ० ४५; व० १९४१, आ० प्रथम, – (इसे ही देहली की कुछ माताओं ने प्रकाशित कराया) ।

रस भरी—लेखक प्र० भगवत स्वरूप जैन, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९४० ।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी—ले० प० टोडरमल्ल जी, सपा० मास्टर छोटेलाल, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० १६, व० १९३९ आ० द्वितीय ।

राजपुताने के जैन वीर—लेखक अयोध्याप्रसाद गोयलीय, प्र० हि० विद्या-मंदिर देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३५२, वर्ष १९३३, आ० प्रथम ।

राजुल पच्चीसी—लेखक कवि विनोदी लाल, प्र० बद्रीप्रसाद जैन काशी; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३, वर्ष १९०६, आ० प्रथम ।

राजुल भजन एकादशी—लेखक पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वय हिसार; भाषा हिन्दी, पृष्ठ ८, आ० तीसरी ।

रात्रि भोजन कथा (सचित्र)—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५६, व १९३९ ।

रामदुलारी—लेखक प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद; भा० हि० ।

रामवनवास (काव्य)—लेखक प० गुणभद्र जी, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ६५, व० १९३६, आ० प्रथम ।

रिष्ट समुच्चय—लेखक दुर्गदेव, संपा० ए. एस. गोपानी, प्र० सिंघी जैन ग्रंथ माला बंबई, भा० प्रा० स० अ०, पृ० १८६, व० १९४५, आ० प्रथम ।

रेशम के वस्त्र—लेखक ज्योतिप्रशाद जैन, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ८ ।

लखनऊ परिचय—लेखक ज्योतिप्रशाद जैन, प्र० अवध प्रान्तीय दिग० जैन परिषद लखनऊ, भा० हि०, पृ० १६, व० १९४४ ।

लघुनयचक्र—लेखक देवसेन, (नय चक्रादि संग्रह में प्र०) ।

लघुबोधामृतसार—लेखक कुंथसागर आचार्य, अनु० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री, प्र० सेठ मगनलाल खमीचद जावरा, भा० सं० हि०, पृ० १३, व० १९३८ ।

लघुशान्ति सुधा सिंधु—लेखक कुंथसागर आचार्य, प्र० विजयलाल जैन डूंगरपुर, भा० स० हि०, पृ० ४४, व० १९४८ ।

लघुसर्वज्ञसिद्धि—लेखक अनन्तकीर्ति, भा० स०, पृ० २३, व० १९१५ ।

लघुसामायिक या पाप प्रायश्चित—ले० चम्पालाल जैन, प्र० सेठ गुलाब चंद्र, भा० हि०, पृ० २० ।

लड़कों के विक्रय का ड्रामा—लेखक कवि ज्योतिप्रशाद, प्र० रा सा. नेमदास देहली भा० हि०, पृ० १७, व० १९३६, आ० प्रथम ।

लघयिस्त्रयम्—(अकलंक ग्रंथ त्रयम् तथा लघयिस्त्रादि संग्रह मे प्र०) ।

लघयिस्त्र्यादि संग्रह—लेखक भट्टाकलक व अनन्त कीर्ति, सपा० प० कलप्पा भरमप्पा निटवे, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैनग्रंथमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० २२४, व० १९१६, आ० प्रथम ।

लब्धिसार (क्षपणासार सहित)—लेखक नेमिचन्द्र सि० च०, स० टी० केशववर्णी (जीव तत्त्व प्रदीपिका), हि०, टी० पं० टोडरमल्ल (सम्यग्ज्ञान

चन्द्रिका तथा अर्थ सहदृष्टि अधिकार), सपा० गजाधरलाल व श्रीलाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० ६७४, व० १६१६, आ० प्रथम ।

लब्धिसार (क्षपणासार सहित)—लेखक टोडरमल्ल, हि० टी० प० मनोहरलाल, प्र० रायचन्द्रजैनशास्त्र मालाबम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० १७५, व १८१६, आ० प्रथम ।

लाटी संहिता—लेखक पाँडे राजमल्ल, हि० अनु० पं० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० ३७६, व० १६३८, आ० प्रथम ।

लाटी संहिता—लेखक पाँडे राजमल्ल, संपा० प० दरबारीलाल न्या० ती०, प्र० माणिकचद दिग० जैन ग्रथमाला बम्बई, भा० स०, पृ० १५६, व० १६३७, आ० प्रथम ।

लाला जम्बू प्रसाद—लेखक ऋषभदास जैन, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ११५ ।

लावनी कला खडन का फोटू—लेखक ज्योतिप्रशाद, प्र० स्वय, भा० हि०, पृ० ८० व० १६०५ ।

लिंग पाहुड़ (लिङ्ग प्राभृत)—लेखक कुन्दकुन्द, (अष्टपाहुड व षटप्राभृतादि संग्रह मे प्र०) ।

लिंगबोध व्याकरण - लेखक प० पन्नालाल बाकली वाल, भा० हि०, पृ० २१ ।

वाणिकप्रिया (कविता सग्रह)—लेखक अज्ञात, भा० हि०, ।

वनवासिनी - लेखक उदयलाल काशलीवाल, प्र० हि० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४३, व० १६१४, आ० प्रथम ।

वर्ण और जाति भेद लेखक बा० सूरजभान वकील प्र० चद्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २७, व० १६६६, आ० प्रथम ।

वर्तमान चतुर्वि शति जिन पंच कल्याणक पाठ—लेखक कवि वृन्दावन,

संपा० प्र० बी० एल० जैन बुलन्दशहरी, भा० हि०, पृ० ८०, आ० प्रथम ।

वर्तमान चौबीस जिन पंच कल्याणक पाठ—लेखक कवि वृन्दावन, प्र० जैन धर्म प्रचारणी सभा देवबन्द, भा० हि०, पृ० ६२, व० १८६६। आ० प्रथम ।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकर पच कल्याणक पूजा—ले० कवि वृन्दावन, प्र० विद्यादानोपदेश प्रकाशनी जैन सभा वर्धा, भा० हि०, पृ० ६२ ।

वर्तमान जिन चतुर्विंशति पूजा विधान—ले० बालाप्रशाद कानूनगो, प्र० स्वय रामपुर स्टेट, भा० हि०, पृ० १३६, व० १६३६, आ० प्रथम ।

वर्द्धमान पराण (पद्य)—लेखक कवि नवलशाह, संपा० पन्नालाल सा० भा०, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० ४२६, व० १६४२; आ० प्रथम ।

वरांगचरित्र—ले० जटासिंहनन्दि, सपा० डा. ए० एन. उपाध्ये, प्र० माणिकचन्द दिग० जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० अप०, पृ० ३६५, व० १६३८; आ० प्रथम ।

वरांगचरित्र (भाषा पद्य)—ले० कवि० कमलनयन, सपा० बा० कामता प्रसाद, प्र० जैन साहित्य समिति जसवन्त नगर, भा० हि० पृ० १३६, व० १६३६, आ० प्रथम ।

वसुनन्दि श्रावकाचार—ले० वसुनन्दि आचार्य, टी० अनु० बा० सूरजभान वकील, प्र० अनु० स्वय देवबंद, भा० स० हि०, पृ० ६५, व० १६१६ आ० प्रथम ।

वाग्भट्टालङ्कार (सटीक)—ले० वाग्भट्ट, प्र० पन्नालाल जैन देशहितैषी आफिस बम्बई, भा० सं० ।

वास्तुसार प्रकरण—ले० ठक्कर फेरु; टी० प० भगवानदास भा० सं० हि०; पृ० २१६ ।

विक्रान्त कौरव नाटकम्—ले० हस्तिमल्ल; सं० प० मनोहरलाल, प्रकाशक

माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० सं०, पृ० १७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

विचार पुष्पोद्यान—संग्र० दौलतराम मित्र, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर भा० हि०, पृ० २४८, व० १९२६, आ० प्रथम।

विजातीय विवाह आगम और युक्ति दोनों से विरुद्ध है—ले० श्रीलाल पाटनी, प्र० संयुक्त प्रान्तीय खंडेलवाल सभा, भा० हि० पृ० ११२ आ० प्रथम।

विजातीय विवाह मीमांसा—ले० प० परमेष्ठी दास, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७२, व० १९३५, आ० प्रथम।

विजातीय विवाह मीमाँसा—ले० दरबारी लाल न्यातीर्थ, प्र० जौहरीमल सर्राफ देहली भा० हि०, पृ० १७, व० १९२५।

विज्ञप्ति त्रिवेणी—संपा० मुनि जिन विजय; भा० स० हि०, पृ० १६६, व० १९१५।

विद्यमान विंशति तीर्थङ्कर पूजा—ले० कवि थानसिंह, संपा० इन्द्र लाल शास्त्री, प्र० नेमिचद बाकलीवाल कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १८८, व० १९२३ आ० प्रथम।

विद्यार्थी जैन धर्म शिक्षा—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २९६, व० १९३५, आ० प्रथम।

विद्युतचोर— ले० पीतराम जैन, प्र० फूल चद सोगानी कोटा, भा० हि०, पृ० ५५, व० १९३६, आ० प्रथम।

विद्वद्जन बोधक (प्रथम भाग)—ले० प० पन्नालाल सिंघी दूनी वाले, प्र० जैन ग्रथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५३६, व० १९२५ आ० प्रथम।

विद्वद्रत्न माला (प्रथम भाग)—ले० प नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १७४, व० १९१२, आ० प्रथम।

विदेशों में जैन धर्म—ले० बा० देवी सहाय, भा० हि०, पृ० २६ व० १९०७।

विदेह क्षेत्रीय विंशति तीर्थंकर संस्कृत पूजा—ले० प० रामप्रसाद भा० सं०, पृ० १२, व० १६२५।

विधवाओं और उनके संरक्षकों से अपील—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२८, आ० प्रथम।

विधवाओं की दुर्दशा का दिग्दर्शन—ले० मोती लाल पहाड्या भा० हिन्दी।

विधवा विवाह—ले० मोतीलाल पहाड्या, भा० हि०, पृ० १६; व० १६२६।

विधवा विवाह की असिद्धता—ले० प० श्री लाल; भा० हि०, पृ० ४५ व० १६०७।

विधवा विवाह खंडन—ले० प० मक्खनलाल तर्क तीर्थ, भा० हि० पृ० ६२।

विधवा कर्तव्य—ले० बा० सूरजभान वकील, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५२, व० १६१८, आ० प्रथम।

विधवा चरित्र—ले० बा० भोलानाथ जैन, भा० हि०; पृ० ४८।

विधवा विवाह प्रकाश—ले० रघुवीर शरण जैन, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३२, आ० प्रथम।

विधवा विवाह समाधान—ले० सव्यसाची, प्र० जैन बाल विधवा सहायक सभा देहली, भा० हि०, पृ० १८, व० १६२६ आ० प्रथम।

विधवा संबोधन—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२२, (कविता)।

विनती संग्रह—प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी पृ० ५६; व० १६२६, आ० प्रथम।

विमल नाथ पुराण—ले० सकल कीर्ति भट्टारक, अनु० प० गजाधर लाल प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० १०४ व० १६२३, आ० प्रथम।

विमल नाथ पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० बजावर लाल, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० २०८; व० १६३६, आ० द्वितीय ।

विमल पुराण-ले० ब्र० कृष्णदास. अनु० श्रीलाल काव्य तीर्थ, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १४३, आ० प्रथम ।

विमल पुराण (भाषा)—ले० ब्र० कृष्णदास, अनु० श्री लाल का० ती०; प्र० जैनग्रथ रत्नाकर कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०; पृ० १२६, आ० द्वितीय

विमल पुष्पाजंली (कविता)—ले० मैनाबाई, प्र० शम्भूलाल दयाचन्द्र भा० हि०, पृ० १६ ।

विमल श्रद्धांजली— ले० मैनाबाई, प्र० दयाचन्द दुखिया अलाहाबाद, भा० हि,० पृ० १६, व० १६४७,

विरोध परिहार—ले० प० राजेन्द्र कुमार, प्र० भारतवर्षीय दिग० जैन सघ अम्बाला; भा० हि०, पृ० ४४८, व० १६३८, आ० प्रथम ।

विवाह और हमारी समाज—ले० पंडिता ललिता कुमारी, प्र० सुशीला देवी पाटणी जयपुर, भा० हि०, पृ० ४१, व० १६४०, आ० प्रथम ।

विवाह का उद्देशय—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०, पृ० ३६, व० १६१६ ।

विवाह के समय पुत्री को शिक्षा और आशीर्वाद—ले० ज्योति प्रसाद जैन, भा० हि०, पृ० १५, व० १६३० ।

विवाह क्षेत्र प्रकाश—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १७५; व० १६२५, आ० प्रथम ।

विवाह समुद्देय—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० साहू मुकन्दी लाल नजीबाबाद; भा० हि०, पृ० ४० व० १६२२, आ० प्रथम ।

विवाह समुद्देश—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मदिर सरसावा, भा० हि० ।

विश्वप्रेम और सेवाधर्म—ले० अयोध्यया प्रसाद गोयलीय, प्र० मामनचन्द प्रेमी देहली, भा० हि०, पृ० ३२; व० १६२८, आ० प्रथम ।

विश्व लोचन कोष—ले० श्रीधर सेनाचार्य, अनु० नन्दन लाल शर्मा, प्र० गाधी नाथारंगजी बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४२१, व० १९१२, आ० प्रथम।

विशाल जैन संघ—ले० बा० कामता प्रसाद, प्र० परिषद पब्लिशिंग हाउस बिजनौर, भा० हि;० पृ ७५, व ० १९२९, आ० प्रथम।

विष्णुकुमार—ले० प० जुगमन्दिरदास, प्र० स्वयं हिम्मतनगर (आगरा), भा० हि०, पृ० ४७, व० १९२८, आ० प्रथम।

विषापहार भाषा—ले० अचलकीर्ति, प्र० जैनधर्मप्रचारकपुस्तकालय देवबद; भा० हि०; पृ० ४, व० १९०६, आ० प्रथम।

विषापहार स्तोत्र—ले० धनञ्जय कवि; भा० स०, (पच स्तोत्र जैन काव्यमाला सप्तम् गुच्छक मे प्र०)

वीतराग स्तोत्र—ले० हेमचन्द्र, भा० स०, पृ० ७७, व० १९१४।

वीर अकलंक नाटक—ले० प० सिद्धसेन व गुणभद्र, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ७५, व० १९३७, आ० द्वितीय।

वीर आह्वान—ले० धन्यकुमार जैन, प्र० दिग० जैन छात्र हितकारिणी सभा सागर, भा० हि०, व० १९४०।

वीर गुटका—सग्र० सपा० आनन्ददास जैन, प्र० धर्मपत्नी नन्हेमल देहली, भा० हि०, पृ० ३५०, व० १९४१, आ० प्रथम।

वीरचन्दराघव जी गाँधी का जीवन चरित्र—भा० हि०, पृ० ३१ व० १९१८।

वीर चरित्र—(पद्य) ले० राजधरलाल जैन; सपा० प्र० सिंघई मिट्ठनलाल केवलारी, भा० हि०, व० १९२६, आ० प्रथम।

वीर जीवन—ले० लज्जावती विशारद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ११७, व० १९४१, आ० प्रथम।

वीर निर्वाण पूजा—ले० दुलीचद जैन, प्र० जैन पाठशाला सतना, भा० हि०, पृ० १०, व० १९२७, आ० प्रथम।

वीर पाठावली—ले० बा० कामताप्रसाद, प्र० मूलचद किसनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पृ० ११४, व० १९४२, आ० द्वितीय।

वीर प्रभु के नाम खुली चिट्ठी—ले० लोकमणि जैन, प्र० तारण समाज, भा० हि०, पृ० २८, व० १६४० ।

वीर पुष्पाँजली—ले प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० प्रेममंदिरआरा, भा० हि० (पद्य), पृ० ५६, व० १६२१, आ० प्रथम ।

वीरमाला—सग्र० प० आनददास जैन, प्र० मुल्तानसिंह देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६४० ।

वीर वन्दना—सग्र० सपा० लक्ष्मीचन्द जैन एम० ए०, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ४४, व० १६३३, आ० प्रथम ।

वीर स्तुति—ले० अज्ञात, भा० हि० ।

वीर सन्देश—ले० दयाराम जैन, प्र० वर्द्धमान साहित्य मन्दिर लखनऊ, भा० हि०, पृ० १६ ।

वृद्धविवाह—प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० २६, व० १६१४ ।

वृन्दावन विलास—ले० कविवर वृन्दावन, सपा० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैनहितैषीकार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १५०, व० १६०-, आ० प्रथम ।

वृहत् कथा कोष—ले० हरिषेणाचार्य, सपा० डा. ए एन. उपाध्ये, प्र० भारतीयविद्याभवन बबई, भा० स०, पृ० ४०२, व० १६४३, आ० प्रथम ।

वृहज्जिनवाणी सग्रह—संपा० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० जैन ग्रथकार्यालयकलकत्ता, भा० हि० स०, पृ० ७६४, व० १६४१, आ० आठवीं ।

वृहज्जैन नित्य पाठ संग्रह—सपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० हि० स०, व० १६२६ ।

वृहज्जैन शब्दार्णव (प्रथम खड)—ले० सपा० मास्टर बिहारीलाल

चैतन्य, प्र० मैनेजर स्वल्पार्घ ज्ञान रत्नमाला बाराबंकी, भा० हि०, पृ० २८६, व० १९२५, आ० प्रथम।

बृहज्जैन शब्दार्णव (द्वितीय खंड)—सम्पा० मा० बिहारीलाल, सपा० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० पृ० ३११, व० १९३४, आ० प्रथम।

बृहज्जैनेन्द्र यज्ञ—ले० मुनीन्द्रसागर, प्र० जिनमति बाई परनबाड़ा, भा० स० हि०, पृ० ९८, आ० प्रथम।

बृहत् द्रव्य संग्रह—ले० नेमिचंद्राचार्य, सं० टी० ब्रह्मदेव, हि० अनु० जवाहरलाल, सपा० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, भा० प्रा० स० हि०, पृ० २१८, व० १९१९, आ० द्वितीय।

बृहन्नय चक्रम—ले० माइल्लधवल, भा० प्रा० स०, पृ० ११२ (नय चक्रादि संग्रह मे प्र०)

बृहत् निर्वाण विधान और त्रैलोक्य जिनालय विधान—ले० कवि बखतराय, सपा० बुद्धिलाल श्रावक, प्र० मूलचंद किसनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ९२, व० १९२२, आ० प्रथम।

बृहत् विमलनाथ पुराण—ले० ब्र० कृष्णदास, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि० पृ० ३९६, व० १९३४, आ० प्रथम।

बृहत्सम्मेदशिखर महात्म्य—ले० ब्र० मनसुखसागर, सपा० प० मूलचंद, प्र० रघुनाथप्रशाद ऐत्मादपुर, (आगरा), भा० हि०, पृ० १८२, व० १९०९, आ० प्रथम।

बृहत्सर्वज्ञ सिद्धि—ले० अनन्तकीर्ति आचार्य, भा० स०, पृ० ७५, व० १९१५।

बृहत्स्वयंभू स्तोत्र (मूल) ले० समन्तभद्राचार्य, भा० स०, पृ० १४, व० १९०५।

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य; अनु० प० मुन्नालाल; प्र० प्यारेलाल पचरत्नसुरई; भा० सं० हिन्दी, पृ० ७६, व० १९१६, आ० प्रथम।

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, टी० ब्र० शीतल प्रसाद; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० स० हि० पृष्ठ ३१६, व० १९३२, आ० प्रथम।

बृहत्स्वयंभूस्तोत्र—ले० समन्तभद्राचार्य, अनु० दीपचंद पाड्या, प्र० अर्हत्प्रवचन साहित्य मदिर केकडी (अजमेर) भा० स० हि०, पृ० ४०, व० १९४० आ० प्रथम।

बृहत्सामायिकपाठ—सपा० अनु० प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भा० स० प्रा० हि०, पृ० १९६, व० १९३५।

वेद क्या भग्वद्वाणी हैं—ले० सोऽह शर्मा, प्र० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला; भा० हि० पृ० १८, व० १९३३, आ० दूसरी।

वेद पुराणादि ग्रंथों में जैन धर्म का अस्तित्त्व—ले० प० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० स्वय देहली, भा० हि०, पृ० ६०; व० १९३० आ० प्रथम।

वेद मीमांसा—ले० प० पुत्तुलाल, प्र० ब्र० शीतल प्रसाद सूरत, भा० हि० पृ० ६६; व० १९१७, आ० प्रथम।

वेद समालोचना—ले० प० राजेन्द्र कुमार, प्र० चम्पावती जैन पुस्तक माला अम्वाल', भा० हि०, पृ० ११६, व० १९२०; आ० प्रथम।

वेदों मे विकार—ले० स्वा० कर्मानद, प्र० शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, भा० हि० पृ० २३, व० १९३६, आ० प्रथम।

वैदिक ऋषिवाद—ले० स्वा० कर्मानद, प्र० शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९३६, आ० प्रथम।

वैद्यसार—ले० पूज्यपाद स्वामी, अनु० सपा० सत्यधर का० ती०; प्र० जैन सिद्धान्तभवन आरा, भा० स० हि०, पृ० ११० व० १९४२ आ० प्रथम।

वैराग्य भावना—ले० भूधरदास जी, भा० हि०, पृ० ८, व० १९०३।

वैराग्य शतक—ले० गुणविजय आचार्य, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० १५, व० १९३८, आ० प्रथम।

वेश्यानृत्यस्तोत्र—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि० स०, पृ० १६, व० १९२८।

वैराग्य मणिमाला—ले० श्री चन्द्राचार्य, भा० सं०; (ग्रन्थत्रयी तथा तत्वानु शासनादि संग्रह में प्र०)

शकुन सिद्धान्त दर्पण—सपा० सुमेरचद उन्नीषु, प्र० मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, भाषा हिन्दी; पृ० ५६, व० १९३८, आ० प्रथम ।

शब्दानुशासनम्—ले० शाकटायनाचार्य, स० टी० अभय चन्द्र सूरि (प्रक्रिया संग्रह), सपा० पं० ज्येष्ट राम मुकुन्द जी शर्मा, प्र० पन्नालाल जैन बम्बई, भा० स० हि०, पृ० ४८८, व० १९०७ ।

शब्दानुशासनम्—ले० शाकटायनाचार्य; सं० टी० यक्षवर्म (चिंतामणि वृत्ति), सपा० पडित मुन्नालाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था काशी, भा० सं० हि०, पृ० ८०, व० १९२८ ।

शब्दार्णव चन्द्रिका—ले० सोमदेव सूरि, सपा० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था काशी भा० सस्कृत, पृ० २६९, व० १९१५, आ० प्रथम ।

श्वेताम्बर मत समीक्षा—ले० प० अजित कुमार शास्त्री, प्र० प० वशीधर शोलापुर, भा० हि०, पृ० २७९, व० १९३०, आ० प्रथम ।

श्रद्धा ज्ञान और चारित्र—ले० चम्पतराय बैरिस्टर, अनु० कामता प्रसाद, प्र० साहित्य मडल देहली, भा० हि०, पृ० ११५, व० १९३२, आ० प्रथम ।

श्रंगार वैराग्य तरंगिणी—ले० सोमप्रभाचार्य, प्र० जगजीवन सुन्दर श्रावक भा० स० पृ० १९, व० १८८५; आ० प्रथम ।

श्रमण नारद—ले० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३० व० १९१८ ।

श्रमण भगवान महावीर—लेखक मुनि कल्याण विजय, भा० हि०, पृ० ४३२, व० १९४१ ।

श्रावक धर्म प्रकाश—लेखक सूर्य सागर आचार्य प्र० श्रीमंत सेठ ऋषभ कुमार खुरई, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९३१, आ० द्वितीय ।

श्रावक धर्म दर्पण—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० ४५० वर्ष १९२४ ।

श्रावक धर्म संग्रह—लेखक पंडित दरयावसिंह, प्र० स्वयं इन्दौर, भा० हि०. पृ० ३०४, व० १९१५, आ० प्रथम ।

श्रावक नियमावली—लेखक नेमिसागर ऐलक, प्र० श्राविका संघ देहली, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम ।

श्रावक प्रतिक्रमण—अनु० नन्दनलाल वैद्य, प्र० मूलचन्द किशन दास कापड़िया सूरत, भाषा हि०, पृ० ६४ व० १९२४, आ० प्रथम ।

श्रावक प्रति क्रमणसार—ले० कुन्थसागर आचार्य, प्र० आचार्य कुंथसागर ग्रंथमाला शोलापुर, भा० स० हि० पृ० १०६; व० १९४२, आ० प्रथम ।

श्रावक वनिता बोधिनी—लेखक जयदयालमल्ल, प्र० स्वयं गन्नौर (देहली), भा० हि० पृ० १४८, व० १९०८; आ० दूसरी ।

श्रावकवनिता बोधिनी—लेखक जय दयाल मल्ल, प्र० जीवाकौर बाई महिला ग्रन्थ भंडार बम्बई, भा० हि०, पृ० १०१, व० १९३१, आ० छटी,

श्रावक वनिता बोधिनी—लेखक प्र० भारतीय दिग० जैन महिला परिषद् बम्बई, भा० हि०, पृ० १२०, व० १९२०, आ० चतुर्थ ।

श्रावकाचार—लेखक अमित गति आचार्य, हि० टी० पंडित भागचन्द, प्र० मुनि अनन्त कीर्ति दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भाषा स० हिन्दी, पृ० ४४२, वर्ष १९२२, आ० प्रथम ।

श्रावकाचार (प्रथम भाग)—लेखक गुणभूषण भट्टारक, अनु० पंडित नन्दनलाल वैद्य, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा स० हिन्दी, पृष्ठ १५५ वर्ष १९२५, आ० प्रथम ।

श्रावकाचार (द्वितीय भाग)—लेखक गुणभूषण भट्टारक, अनु० पंडित नन्दन लाल वैद्य, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा हिन्दी; पृष्ठ १३४, व० १९२५, आ० प्रथम ।

श्रावकाचार की सच्ची कहानियां—अनु० सपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्रकाशक

जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हिन्दी, पृ० ६६; व० १९३६, आ० प्रथम।

श्राविका धर्म दर्पण—लेखक बाबू सूरज भान वकील, प्र० कुलवंतराय जैन भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५७, व० १९३९; आ० प्रथम।

श्राविका धर्म दर्पण—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६४, व० १९२४।

श्री देवाधि देव रचना—लेखक कवि हरजसराय, अनु० सपा० श्रीलाल जैन, प्र० गुरुदत्तमल पन्नालाल कसूर, भा० स० हिन्दी पृ० ८०; व० १९१३, आ० प्रथम।

श्रीपाल—लेखक कन्हैलालाल जैन, भा० हि०, पृ० १३८, व० १९३०।

श्रीपाल चरित्र (पद्य)—लेखक कवि परमल्ल, अनु० मास्टर दीपचंद, प्र० मूलचद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०; पृष्ठ १७४; व० १९१७, आ० द्वितीय।

श्रीपाल चरित्र समालोचना—लेखक वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्रकाशन चन्द्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० २२, व० १९१८, आ० प्रथम।

श्रीपाल नाटक—प्र० दिग० जैन उपदेशक सोसाइटी देहली, भा० हि०, पृ० १५२, व० १९२३, आ० प्रथम।

श्री धवल—देखो 'षटखंडागम्'।

श्री पाल पुराण (सचित्र)—ले० कवि परिमल्ल, सपा० परमानद मिघई, प्र० जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १७४, व० १९३५ आ० प्रथम।

श्रीपुर पार्श्वनाथस्तोत्र—लेखक विद्यानन्द स्वामी, भ० स०, पृ० ३१, व० १९२०।

श्रीमद्दयानन्द परिचय—लेखक स्वा० कर्मानंद, प्र० दिग० जैन शास्त्रार्थ सघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० ६८, व० १९३६ आ० प्रथम।

श्रुत भक्ति—लेखक पूज्यपाद; भा० सं० हि०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०)

श्रुत पंचमी क्रिया (श्रुतावतारादि)–भा० स०, पृ० २८ व० १६०५।

श्रुत स्कंध—ले० ब्रह्म हेम चन्द्र, भा० प्रा०, (तत्त्वानु शासनादि सग्रह मे प्र०)

श्रुतस्कंध विधान—ले० प० पन्नालाल दूनी वाले, प्र० मूलचद किशनदास कापडिया सूरत, भा० हि०, पृ० ३२ व० १९२७ आ० प्रथम।

श्रुतावतार कथा और श्रुतस्कंध विधानादि–सग्रह लालाराम जैन, प्र० जैन हितैषी कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४८, व० १६०८, आ० प्रथम।

श्रेणिक चरित्र—लेखक शुभचद्र भट्टारक, अनु० पडित गजाधर लाल, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ३१६, व० १९२८, आ० प्रथम।

श्रेणिक चारित्रसार–लेखक ब्रह्मनेमिदत्त, अनु० उदय लाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ४२, आ० प्रथम।

श्रुतावतार–लेखक इन्द्रनन्दि, भा० स०, (तत्त्वानु शासनादि सग्रह मे प्र०)

श्रुतावतार—लेखक विबुध श्रीधर, भाषा स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

शास्त्रोच्चार भाषा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, भा० हि०; व० १८६८।

शान्ति कथा—ले० द्वारकाप्रशाद जैन, प्र० सागरमल चम्पालाल बगलोद भा० हि०, पृ० ६४, व० १६४१, आ० द्वितीय।

शान्तिनाथ चरितम्—ले० भावचन्द्र, भा० स०; पृ० १६६, व० १६३६–अहमदाबाद।

शान्तिनाथ पुराण—ले० सकलकीर्ति भट्टारक, अनु० प० लालाराम, प्र० सिघई दुलीचन्द पन्नालाल देवरी, भा० हि०; पृ० ४०७, व० १६२३, आ० प्रथम।

शान्तिनाथ पुराण—ले० सकलकीर्ति भट्टारक; अनु० प० लालाराम,

प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ३९२; व० १९३१, आ० तृतीय।

शान्ति भक्ति—ले० पूज्यपाद, भा० सं० हि०, (दशभ क्त्यादि संग्रह में प्र०)

शान्ति महिमा – ले० मोतीलाल, भा० हि०, पृ० ९२, व० १९१८।

शान्ति सागर चरित्र—ले० प० वशीवर, प्र० रावजी सखाराम दोषी शोलापुर, भा० हि०, पृ० १६०, व० १९३२।

शान्ति सागराचार्य महाराज का जीवन चरित्र—सं० प्र० गुलशन-राय देहली, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९३२, आ० प्रथम।

शान्ति साधना (पद्य संग्रह)—प्र० चन्द्रकुमार शास्त्री मुजफ्फरनगर, भा० हि०, पृ० २४, व० १९३५, आ० प्रथम।

शान्तिसुख वाटिका (भाग १) – ले० प० भूधरदास, प्र० नत्थनलाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६, आ० प्रथम।

शान्तिसुख वाटिका (भाग २) – ले० प० भूधरदास, प्र० नत्थनलाल जैन देहली, भा० हि०, पृ० १६।

शान्तिसुधा सिन्धु—ले० कुंथुसागर आचार्य, टी० प० लालाराम, प्र० चैनसुखदास गम्भीरमल पाड्या कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ४२२, व० १९४१।

शान्ति सोपान (परमानन्द स्तोत्र आदि पाठ संग्रह)—अनु० ब्र० ज्ञानानन्द, प्र० अहिंसा प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०, पृ० ११०, व० १९२., आ० प्रथम।

शान्तिमार्ग—ले० दयाचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० ४०, व० १९१८।

शान्ति वैभव —ले० दयाचन्द्र जैन, भा० हि०, पृ० ६०, व० १९१९।

शारदाष्टक—ले० प० बनारसीदास, भा० हि०, व० १९-७।

शास्त्रसार समुच्चय—ले० माघनन्दि योगीन्द्र, टी० शीतल प्रसाद वैद्य, प्र० टीकाकार स्वयं देहली, भा० सं० हि०, पृ० ६०, व० १९२४, आ० प्रथम।

शास्त्रसार समुच्चय (मूल)—ले० माघनन्दि योगीन्द्र, (सिद्धान्त सारादि संग्रह में प्र०)

शास्त्रार्थ अजमेर—प्र० जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ८०, व० १९१३, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ अजमेर का पूर्वरंग—प्र० चन्द्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० १२१, व० १९१२; आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ नजीबाबाद—प्र० जैन कुमारसभा यशवंतनगर, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९१७, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ पानीपत (प्रथम भाग)—प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला; भा० हि०, पृ० १५२, व० १९३४, आ० प्रथम।

शास्त्रार्थपानीपत (द्वितीय भाग)—प्र० दिग० जैन संघ अम्बाला, भा० हि०, पृ० १७६, व० १९३४; आ० प्रथम।

शास्त्रार्थ फीरोजाबाद—भा० हि०, पृ० ६१, व० १९१४, आ० चतुर्थ।

शिक्षा चन्द्रिका—ले० पं० शिवचन्द, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० ५६, व० १८७४, आ० प्रथम।

शिक्षा जकड़ी—ले० कवि भूधरदास, प्र० मुंशी अमनसिंह देहली, भा० हि०; पृ० ६, आ० प्रथम।

शिक्षा पत्री (पद्य)—ले० पं० मेहरचन्द, प्र० स्वयं देहली, भा० हि०, पृ० १२, व० १८६४,—(शेख सादी के पन्दनामे का हि० अनु०)

शिक्षाप्रद शास्त्रीय उदाहरण—ले० पं० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० जौहरीमल जैन सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० २२, आ० प्रथम।

शिक्षाप्रद शास्त्रीय उदाहरण की समालोचना—ले० मक्खनलाल प्रचारक, प्र० जैन पंचायत देहली, भा० हि०, पृ० ४६, व० १९२० आ० प्रथम।

शिखर महात्म्य—ले० मुन्नालाल, प्र० जैन धर्म प्रचारक पुस्तकालय देवबंद, भा० हि०, पृ० ११; व० १९११, आ० द्वितीय।

शिखर महात्म्य—भा० हि०, पृ० १४ ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक १)—ले० मास्टर शिवरामसिंह प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३८, आ० तृतीय ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक २)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि० पृ० ३२, व० १९३८, आ० तृतीय ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ३)—ले० मास्टर शिवरामसिंह; प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३४; आ० द्वितीय ।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ४)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृ० ३२, व० १९३३, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ५)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० पृ० ३२ हि०, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ६)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हि०, पृष्ठ ३२, व० १९३६, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पाँजली (अंक ७)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हिंदी, पृष्ठ ३२, व० १९३७, आ० प्रथम ।

शिवराम पुष्पांजली (अंक ८)—ले० मास्टर शिवरामसिंह, प्र० स्वयं रोहतक, भा० हिंदी, पृष्ठ २०, व० १९४४, आ० प्रथम ।

शिशुबोध जैन धर्म (प्रथम भाग)—प्र० दुलीचंद पन्नालाल परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ८ ।

शिखरमहात्म—प्र० बा० सूरजभान वकील; भा० हिन्दी, व० १८९८ ।

शीतलनाथ स्तोत्र (पद्य)—ले० जीयालाल ज्योतिषरत्न, प्र० मूलचंद किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हिन्दी, पृष्ठ २०; व० १९२७, आ० प्रथम ।

शीतल सुमन—ले० अज्ञात, भा० हिन्दी ।

शील और भावना—ले० मुंशीलाल एम. ए., प्र० स्वयं, भा० हिन्दी; पृष्ठ २४, व० १९०९, आ० प्रथम ।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल; प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ ७२, व० १६१५।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० दुलीचंद परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६३, आ० प्रथम।

शील कथा (सचित्र)—ले० कवि भारामल्ल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६४, आ० प्रथम।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, भा० हिन्दी, पृष्ठ २४।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० नाथूराम लमेचू मुंडावरा, भा० हिन्दी, पृ० ६१, व० १८६६, आ० प्रथम।

शील कथा—ले० कवि भारामल्ल, प्र० ज्ञानचंद जैनी लहौर, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६४, व० १६०८।

शील पाहुड़ (शील प्राभृत)—ले० कुन्दकुन्द, (अष्ट पाहुड व षट प्राभृतादि संग्रह में प्र०)

शील महात्म्यादि संग्रह (पद्य)—ले० कवि वृन्दावन, प्र० जानकी बाई आरा, भा० हिन्दी, पृष्ठ ६, व० १६००, आ० प्रथम।

शील महिमा—ले० प्रेमी सहारनपुरी, प्र० प्रेम भवन पुस्तकालय सहारनपुर, भा० हिन्दी पृष्ठ २४, प्रा० प्रथम।

शुद्ध द्रव्यों का आहुतियाँ—ले० प० माणिकचंद्र कौन्देय, प्र० चतरसेन सहारनपुर, भा० हिन्दी, पृष्ठ २०, व० १६४०।

शुद्धि—ले० बाबू सूरजभान वकील, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भाषा हिन्दी पृष्ठ १६, व० १६२५।

शुद्धि आन्दोलन पर शास्त्रीय विचार—ले० प० मक्खनलाल, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर, भा० हिन्दी, पृ० ३२, व० १६२६।

शूद्रमुक्ति—ले० अज्ञात, भा० हि० पृष्ठ ३४, व० १६२०।

षटखंडागमः (प्रथमखंड, भाग १)—ले० पुष्पदन्त भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (धवला); हि० अनु० सम्पा० प्रो० हीरालाल पं०

फूलचंद पं० हीरालाल; प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंद शितावराय जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भाषा प्रा० सं० हिन्दी, पृ० ४३८, वर्ष १९३९; आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग २)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी, हिन्दी अनु० सपा० प्रो० हीरालाल प० फूलचन्द पं० हीरालाल; प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचंद शितावराय जैन साहित्योद्धारक फंड अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४४५, व० १९४०, आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १; भाग ३)—ले० पुष्पदत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० सपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचंद पं० हीरालाल प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचंद शितावराय जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४८८; व० १९४१, आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग ४)—ले० पुष्पदत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल व प० हीरालाल शास्त्री, प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचद शिताबराय जैन साहित्योद्धारक कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ४८८, व० १९४२, आ० प्रथम।

षटखंडागम. (खंड १, भाग ५)—ले० पुष्पदत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० सपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचन्द पं० हीरालाल, प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती; भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ३५०, व० १९४२, आ० प्रथम।

षटखंडागमः (खंड १, भाग ६)—ले० पुष्पदत भूतबलि आचार्य, टी० वीरसेन स्वामी (श्रीधवल), हि० अनु० संपा० प्रो० हीरालाल पं० बालचन्द्र, प्र० श्रीमत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराय जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० स० हिन्दी, पृ० ५९६, व० १९४३, आ० प्रथम।

षटखंडागमः(खंड २)—ले० पुष्पदंत भूतबलि आचार्य टी० वीरसेन

स्वामी (श्री धवल), संपा० प्रो० हीरालाल पं० फूलचन्द पं हीरालाल; प्र० श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचन्द शिताबराल जैन साहित्योद्धारक फंड कार्यालय अमरावती, भा० प्रा० सं० हिन्दी; पृ० ५६४, व० १९४५, आ० प्रथम।

षटद्रव्य दिग्दर्शन—ले० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन धर्म प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०, पृ० १६, व० १९१३।

षटपाहुड (सं० छाया व हि० अनु० सहित)—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, भा० प्रा० स० हि०, पृ० १४०, व० १९१०, आ० प्रथम।

षटप्राभृतादि संग्रह—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, सं० टी० श्रुतसागर सूरि, संपा० पं० पन्नालाल सोनी, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रंथमाला बम्बई भा० प्रा० सं०, पृ० ४६२, व० १९२०, आ० प्रथम।

षोडश संस्कार—संपा० पं० लालाराम, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, भाषा हि०, पृ० १४७, व० १९२४, आ० प्रथम।

षोडस संस्कार—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भाषा हि०, पृ० ७२।

सच्चा जिनवाणी संग्रह—संपा० पंडित कस्तूर चंद, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी संस्कृत, पृ० ७६१; आ० पन्द्रहवीं।

सच्चा सुख—लेखक चम्पतराय बैरिस्टर, प्र० दिग० जैन परिषद कार्यालय बिजनौर; भा० हि०, पृ० २३, व० १९२५।

सच्ची प्रभावना—लेखक कुंवर दिग्विजय सिंह, भा० हि०, पृ० ४४, व० १९१०।

सच्चे सुख का उपाय—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन मालवा प्रान्तिक सभा बड़नगर, भा० हि०, पृष्ठ २६, व० १९१६, आ० प्रथम।

सज्जन चित्त वल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य, अनु० पंडित मेहरचंद, प्र० मुन्शी अमर्नसिंह सोनीपत, भा० सं० हिन्दी, पृष्ठ ६८, वर्ष १८९२, आ० प्रथम।

सज्जन चित्तवल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य; प्रकाशक जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २६, व० १९१२, आ० प्रथम।

सज्जन चित्त वल्लभ—लेखक मल्लिषेणाचार्य, प्रकाशक नाथूराम कन्हैयालाल दूंडासरा, भाषा हिन्दी; पृष्ठ ३०, व० १८९९ आ० प्रथम।

सती अंजना सुन्दरी नाटक—लेखक ज्योति प्रसाद, संपा० मंगल सैन, प्रकाशक मसरसैन जैन मुजफ्फर नगर, भा० हिन्दी, पृष्ठ १७८, व० १९३६, आ० द्वितीय।

सती चन्दन बाला नाटक—लेखक शेरसिंह नाज़, प्रकाशक प्यारे लाल देवी सहाय देहली, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २०७, व० १९२७, आ० प्रथम।

सती पुष्पलता (सचित्र)—लेखक मुन्नालाल समगौरिया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता; भाषा हिन्दी, पृष्ठ १०२, व० १९४१, आ० द्वितीय।

सती मनोरमा—लेखक डा० मित्र सैन, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ७१, व० १९३७, आ० प्रथम।

सती सीता—लेखक पूनम चन्द्र सेठी; संपा० विद्या कुमार व राजमल लोढा प्रकाशन जैन धर्म प्रचारक मंडल अजमेर, भाषा हिन्दी, पृ० १४, व० १९३५, आ० प्रथम।

सत्तास्वरूप—लेखक पंडित भागचन्द्र, प्रकाशक लल्लूमल सेठी गया, भा० हिन्दी, पृ० ८२, व० १९३६, आ० प्रथम।

सत्य घोष नाटक—लेखक बाबू ज्योतिप्रसाद, प्रकाशक दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हिन्दी, पृ० ८६, व० १९३८, आ० प्रथम।

सत्यमार्ग—लेखक बाबू कामता प्रसाद, प्रकाशक वीर कार्यालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ४४०, व० १९२६, आ० प्रथम।

सत्य संगति—लेखक पंडित दरबारी लाल सत्य भक्त, भा० हिन्दी, पृष्ठ १२८, व० १९३८।

सत्यामृत (दृष्टि कांड)—लेखक दरबारी लाल सत्य भक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हि०, पृ० २१०, व० १९४०, आ० प्रथम।

सत्यामृत (आचार कांड)– लेखक दरबारी सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हिन्दी, पृष्ठ २३०, आ० प्रथम।

सत्यामृत (व्यवहार कांड)– लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३५१, व० १६४५, आ० प्रथम।

सत्यार्थ दर्पण–लेखक पंडित अजित कुमार; प्रकाशक अकलंक प्रेस मुल्तान, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३५०, व० १६३७, आ० द्वितीय।

सत्यार्थ दर्पण—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक चम्पावती पुस्तक माला अम्बाला, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ३३५, व० १६३१, आ० द्वितीय।

सत्यार्थ दर्पण—लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक लाल देवीसहाय फ़ीरोजपुर, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १५३, आ० प्रथम।

सत्यार्थ निर्णय – लेखक पंडित अजित कुमार, प्रकाशक दिग० जैन संघ मथुरा, भा० हि०, पृ० २५६, व० १६४३, आ० प्रथम।

सत्यार्थ प्रकाश और जैन धर्म– लेखक स्वामी कर्मानन्द, भा० हिन्दी।

सत्यार्थ यज्ञ -लेखक कविमनरंगलाल, प्रकाशक अजिताश्रम लखनऊ, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६१३, आ० प्रथम पृ० १५५; व० १६२५, आ० द्वितीय।

सत्साधु स्मरण मंगल पाठ—सङ्क० संपा० पंडित जुगल किशोर मुख्तार प्रकाशक वीर सेवा मंदिर सरसावा, भाषा सं० प्रा० हिन्दी, पृष्ठ ७७, व० १६४४, आ० प्रथम।

स्तुति प्रार्थना—लेखक संपा० नाथूराम प्रेमी, भाषा हिन्दी, पृ० १५; व० १६२६।

स्तुति प्रार्थना संग्रह—लेखक पंडित जुगल किशोर मुख्तार, बा० जोतीप्रसाद, मुंशी राम प्रसाद, प्रकाशक जौहरी मल सर्राफ़ देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १६।

स्तोत्र शतक—संपा० ब्र० चन्द्रसेन जैन वैद्य इटावा, भा० सं० हि०, पृ० ५८, व० १६०४।

स्त्रीगान जैन भजन पच्चीसी—लेखक पंडित न्यामतसिंह, प्र० स्वयं हिसार, भा० हि०, पृ० १६; व० १६१३, आ० तीसरी।

स्त्री मुक्ति—भा० हि०, पृ० ६२; व० १६१६।

स्त्री शिक्षा—लेखक पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० गंगा विष्णु श्री कृष्णदास बम्बई, भा० हि०; पृ० ४५, व० १६०१।

सत्यासत्य निर्णय—लेखक प्रकाशक लाल मुसद्दी लाल निरपुड़ा (मेरठ), भा० हि०।

सत्य का बोल बाला—प्र० दुली चन्द परवार, भा० हिन्दी, पृ० ६४, व० १६३५।

सदाचार शिष्टाचार और स्वास्थ्य—लेखक बा० माई दयाल जैन, भा० हि०; पृ० ७२, व० १६३५।

सदाचार रत्न कोष (रत्न करड श्रावकाचार)—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६२६, आ० प्रथम।

सदाचारी बालक—प्र० जैनग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

सद्गुण पुष्पोद्यान श्रावकाचार—लेखक प० फुलजारी लाल, प्र० स्वयं पानीपत, भा० हि०, पृ० १२४, व० १६२४, आ० प्रथम।

सद्विचार मुक्तावली (कविता संग्रह)—संपा० चेतनदास जैन; भा० हिन्दी, पृ० ६४।

सद्विचार रत्नावली—लेखक पं० मुन्नालाल समगोरिया; प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हिन्दी, पृष्ठ ३०, व० १६४२, आ० प्रथम।

सन्मार्ग प्रदर्शक—लेखक प० उमराव सिंह, भा० हिन्दी, पृ० २२

सन्यासी—लेखक भगवत् जैन; प्रकाशक स्वयं, भा० हिन्दी, पृष्ट ६६, व० १६४२, नाटक।

सनातन जैन ग्रंथमाला—प्रथम गुच्छक (१४ ग्रंथों का संग्रह)—संपा० प० पन्नालाल ब बगोकर, प्र० निर्णय सागर प्रेस बम्बई, भा० प्रा० स०, पृ० ३०६,

व० १६०६ ।

सनातन जैनधर्म—लेखक चम्पतराय बैरिस्टर, प्र० स्वयं हरदोई; भा० हि०, पृ० ६२; व० १६२४; आ० प्रथम ।

सनातन जैनधर्म—लेखक पं० श्रीलाल, प्र० जैनधर्म प्रचारिणी सभा काशी, भा० हि०; पृ० १५, व० १६१३ ।

सनातन जैनमत—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० प्रेमचन्द जैन देहली, भा० हि०, पृ० ७४, व० १६२७, आ० प्रथम ।

सनातन जैन भजनावली—ले० मंगतराय जैन 'साधु' भा० हि० ।

सप्तऋषि पूजा-ले० पं० स्वरूप चन्द, प्र० केसरी चन्द राम करण हैदराबाद, भा० हि०, पृ० ५६, व० १६१५, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—लेखक पं० विमलदास; संपा० पी. वी. अनंताचार्य; प्र० संपा० स्वयं कांची; भा० सं०; पृ० ५२; व० १६०१, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—ले० पं० विमलदास; अनु० ठाकुरप्रसाद शर्मा, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई; भा० सं० हि०; पृ० ६६; व० १६०५, आ० प्रथम ।

सप्त भंगी तरंगिणी—ले० पं० विमलदास; संपा० पं० मनोहरलाल; प्र० परमश्रुत प्रभावकमंडल बंबई भा० सं० हि०; पृ० ६३; व० १६१६; आ० द्वितीय; ।

सप्तमुनि पूजन—लेखक प्यारेलाल पूरनमल, संपा० छेदालाल, प्र० पूरनमल शमशाबाद; भा० हि०, पृ० १६, व० १६३०; आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन चरित्र—लेखक सोमकीर्त्ति भट्टारक, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि० स०, पृ० २२४, व० १६१२, आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन चरित्र (सचित्र)—लेखक सोमकीर्त्ति भट्टारक; अनु० संपा० परमानन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, व० १६३७, आ० प्रथम ।

सप्तव्यसन (पद्य)—लेखक पं० मूलचन्द्र, भा० हि०, पृ० ८।

सफलता के तीन साधन—प्र० कुंवर मोतीलाल, भा० हि,० पृ० १६०।

सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र०—लेखक उमास्वामी, हि० अनु० टी. पं० खूबचन्द्र शास्त्री, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ५००, व, १९३२, भा० प्रथम।

समगोरया भजनावली—लेखक मुन्नालाल समगोरया, प्र० दुलीचन्द परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ३०; व० १९४१ आ० प्रथम।

समदृष्टि के चिन्ह (प्रथम भाग)—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त, प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर भा० हि०, पृ० १२, व० १९३२।

समदृष्टि के चिन्ह (द्वितीय भाग)—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त प्र० आत्मजागृति कार्यालय ब्यावर, भा० हि०, पृ० १०, व० १९३२।

समन्तभद्र का समय और डा० के० बी० पाठक—लेखक पं० जुगल किशोर मुख्तार, भा० हि०।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, हि० टी० पं० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० जिनवर गंगा साचवरे कारंजा; भा० प्रा० हि०; पृ० ४१६, व० १९०८।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दा चार्य, टी० पं० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० कलापाभरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० प्रा० हि०, पृ० ४१६, व० १९०८, भा० प्रथम।

समय प्राभृत—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य; टी० पं० जयचन्द्र (आत्म ख्याति), प्र० सेठ मदनचन्द नेमिचन्द पाण्ड्या किशनगढ, भा० प्रा० हि०, पृ० ६३८।

समय प्राभृतं—लेखक कुदकुन्दा चार्य, सपा० पं० गजाधरलाल, प्र० पं० पन्नालाल जैन काशी; भा० प्रा०, पृ० २१६, व० १९१४, भा० प्रथम।

समयसार—ले० कुन्दकुन्दाचार्य, स० टी० अमृतचन्द्राचार्य, जयसेनाचार्य, हि० टी० पं० मनोहरलाल, प्र० परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई; भा० प्रा० सं० हि०, पृ० ५७६, व० १९१९, भा० प्रथम।

समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, हि० अनु० प० गोपाल सहाय सेठ०, संपा० प० मनोहरलाल, प्र० जैन ग्रंथ उद्धारक कार्यालय बम्बई, भा० प्रा० हि० पृ० ६१, व० १६१६, आ० प्रथम।

समयसार—लेखक कुन्दकुन्दाचार्य, टी० पं० जयचन्द्र, अनु० पं० मनोहरलाल, सपा० प्र० बा० नानकचन्द एडवाकेट रोहतक, भा० प्रा० हि०, पृ० ९५४, व० १६४२, आ० प्रथम।

समयसार कलश—लेखक अमृतचन्द्राचार्य, हि० टी० पाडेरायमल्ल, अनु० स० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० २३६, व० १६३१, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास, प्र० रामचन्द्र नाग, भा० हि०, पृ० १५२, व० १६१४, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक पं० बनारसीदास, प्र० जैन औद्योगिक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १३१, व० १६१५, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास; प्र० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०; पृ० १२०; व० १८६८, आ० प्रथम।

समयसार नाटक—लेखक प० बनारसीदास, अनु० प० बुद्धिलाल श्रावक, सपा० प० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ५६४, व० १६१० आ० प्रथम (अमृतचन्द्राचार्य कृत संस्कृत कलशा युक्त।

समवशरण दर्पण—लेखक अज्ञात, भा० हि०।

समवशरण पाठ (पद्य सचित्र)—लेखक लाला भगवानदास, प्र० राजमल जैन महमूदाबाद, भा० हि०, पृ० ११२, व० १६३०, आ० प्रथम।

समवशरण पूजन पाठ—लेखक लालजीमल, प्रा० मुन्नालाय जैन अजमेर, भा० हि०, पृ० ८८।

समवशरण स्तोत्र—लेखक विष्णुसेन, भा० स०, (सिद्धान्त सारादि सग्रह मे प्र०)।

समाज के अधःपतन के कारण और उन्नति के उपाय—लेखक प्र० फूलचन्द जैन आगरा, भा० हि०, पृ० ४४, व १६२० ।

समाज संगठन—लेखक पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० १६, व० १६३७, आ० प्रथम ।

समाधि तन्त्र—लेखक आचार्य देवनन्दि पूज्यपाद, सं० टी० प्रभाचन्द्र, अनु० प० परमानन्द शास्त्री, संपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० सं० हि०, पृ० १०८, व० १६३६, आ० प्रथम ।

समाधि भक्ति भा० स० हि०, (दश भक्त्यादि संग्रह में प्र०) ।

समाधिमरण और मृत्यु महोत्सव—लेखक प० सूरचन्द, हि० टी० पं० सदासुखदास; प्र० दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स० हि०, पृ० ३२ ।

समाधि मरण पाठ—ले० प० सूरचन्द; सपा० श्रीमती अध्यापिका, प्र० जैन कन्या शिक्षालय देहली, भाषा हिन्दी, पृ० १३, व० १६०६, आ० प्रथम ।

समाधिमरण भाषा—लेखक प० सूरचन्द, स० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वय स० देहली, भाषा हिंदी, पृ० २०, व० १६००, आ० प्रथम ।

समाधि शतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, अनु० स० मणिलाल एन. द्विवेदी, प्र० गिरधर लाल हीराभाई अहमदाबाद, भाषा स० अं०, पृष्ठ १३२, व० १८६५ ।

समाधिशतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, अनु० मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०, पृष्ठ २८, व० १६२६, आ० प्रथम ।

समाधि शतक—लेखक पूज्यपादाचार्य, प्र० नाथूराम बुकसेलर मुंडावरा, भा० हि०; पृ० २८; व० १६०५, आ० प्रथम ।

समाधि शतकम—लेखक पूज्यपादाचार्य, टी० प्रभाचन्द्राचार्य अनु० माणिक मुनि, प्र० बा० कीर्तिप्रशाद वकील, भा० हि०, पृ० ४८, व०, १६१५, आ० प्रथम ।

सम्मेद शिखर तीर्थ चित्रावली—सपा० प्र० नथमल चंडालिया, पृ० ३३; व० १६२७ ।

समाधिशतक टीका—पूज्यपादाचार्य, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० पं० फतहचंद देहली, भाषा सं० हि०, पृ० १७५, व० १९२२, आ० प्रथम।

समालोचना मूर्तियाप्रतिमा पूजा—भाषा हि०, पृ० १२, वर्ष १८८८।

सम्मेद शिषर का नकशा—प्र० बाबू सूरजभान वकील देवबंद; वर्ष १८९८।

सम्मेद शिषर पूजा—ले० लक्ष्मीप्रसाद, प्र० प्रभुलाल रामपुर; भाषा हि०; पृ० १५, वर्ष १९२८, आ० प्रथम।

सम्मेद शिषर महात्म—ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं, भाषा हिन्दी, पृ० ९, व० १८८४।

सम्मेद शिषर महात्म्य (पूजन विधान सहित)—ले० प० जवाहरलाल, प्र० बद्रीप्रसाद जैन बनारस, भाषा हि०, पृ० ३३, वर्ष १९०८, आ० प्रथम।

सम्मेद शिषर संबंधी चिट्ठी—प्र० रत्नचन्द्र मंत्री धर्म संरक्षिणी दिग० जैन महासभा मथुरा भाषा हि०, पृ० ७, वर्ष १८९९।

सम्मेद शिषरादि यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रशाद, प्र० दिग० जैन प्रभावनी सभा सांभरलेक, भाषा हि०, पृ० १११, वर्ष १९१८, आ० प्रथम।

सम्मेदाचल गायन—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भाषा हि०।

सम्यक्‌दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक; प्र० स्वयं, भाषा हि०; पृ० ९५, व० १८९१, आ० प्रथम।

सम्यकज्ञान दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं; भाषा हि०, पृ० ११६, वर्ष १८८९।

सम्यक्‌ज्ञान दीपिका—ले० धर्मदास क्षुल्लक; प्र० हीरालाल बापुजी बदबोरे अमरावती, भाषा हि० पृ० ९९, व० १९१४, आ० प्रथम।

सम्यक्त्व के आठ अंग—लेखक दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र० आत्म जागृति कार्यालय ब्यावर; भा० हि०, पृ० ३६, व० १९३२।

सम्यक्त्व कौमदी— अनु० टी० पं० तुलसीराम का० ती०, प्र० हिन्दी जैन साहित्य पुस्तक कार्यालय बम्बई; भा० सं० हि०, पृ० २५८, व० १९१५, आ० प्रथम।

सम्यक्त्व कौमदी—अनु० टी० पं० तुलसीराम का० ती०, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १४८, व० १९२८, आ० प्रथम।

सम्यक्त्वादर्श—लेखक क्षुल्लक पूर्णसिंह, अनु० रवीन्द्रनाथ जैन, प्र० जिनेश्वरदास जैन रोहतक, भा० सं० हि०, पृ० ६६, व० १९४२, आ० प्रथम।

सम्यग्दर्शन की नई खोज—ले० स्वामी कर्मानन्द; प्र० जैन प्रगति ग्रंथ माला सहारनपुर; भा० हि०, पृ० ८०, व० १९४६।

स्याद्वाद परिचय—लेखक प० अजितकुमार, प्र० अकलंक प्रेस मुलतान, भा० हि०. पृ० २८, व० १९३१, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—ले० मल्लिषेण सूरि, सपा० दामोदरलाल गोस्वामी, प्र० संस्कृत बुकडिपो बनारस, भा० सं०, पृ० २२०, व० १९००, आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—लेखक हेमचन्द्राचार्य, टी० मल्लिषेण, हि० अनु० पं० जवाहरलाल व वंशीधर, प्र० परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० २३८, व० १९१०. आ० प्रथम।

स्याद्वाद मंजरी—ले० हेमचन्द्राचार्य, टी० मल्लिषेण, अनु० संपा० प्रो० जगदीशचन्द्र शास्त्री, प्र० परमश्रुत, प्रभावक मंडल बम्बई भा० सं० हि०, पृ० ५२७, व० १९३ , आ० द्वितीय।

सरल जैन धर्म (पहला भाग)—सपा० भुवनेन्द्रविश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर; भा० हि०, पृ० १६।

सरल जैन धर्म (दूसरा भाग)—संपा० भुवनेन्द्रविश्व, प्र० सरल जैन

ग्रन्थमाला जबलपुर, भा० हि०, पृ० २८, व० १६३६, आ० प्रथम ।

सरल जैन धर्म (तीसरा भाग)—संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर, भा० हि०, पृ० ४०, व० १६३८, आ० प्रथम ।

सरल जैन धर्म (चौथा भाग)—संपा० भुवनेन्द्र विश्व, प्र० सरल जैन ग्रन्थ माला जबलपुर, भा० हि०, पृ० ७६, व० १६३६ आ० प्रथम ।

सर्वधर्म समभाव—लेखक प० दरबारी न्या० ती०; भा० हि०, पृ० २४ व० १६४१ ।

सरल जैन विवाह विधि—लेखक मनोहरलाल जैन का० ती० प्र० सेठ गिरधारीलाल हरप्रसाद लुहरी, भा० हि० स०; पृ० ७६, व० १६३६, आ० द्वितीय ।

सरल नित्य पाठ संग्रह—संग्रह० कस्तूरचन्द शास्त्री, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल कलकत्ता, भा० हि० स०; पृ० १४३; व० १६२ , आ० द्वितीय ।

सर्वज्ञस्तवन सटीक—लेखक जयानन्द सूरि, भा० स०, (दशभक्त्यादि संग्रह में प्र०) ।

सर्वार्थसिद्धि—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; संपा० जिनदास शास्त्री, प्र० रावजी सखाराम दोशी शोलापुर; भा० स०; पृ० ३२२; व० १६३६, आ० तृतीय ।

सर्वार्थसिद्धि—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि, प्र० कल्लाप्पा भरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० स० पृ० २७६, व० १६१७, आ० द्वितीय,—पृ० ५७६, व० १६०३, आ० प्रथम ।

सर्वार्थसिद्धि वचनिका—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि; टी० प० जयचन्द छावडा, प्र० कल्लाप्पा भरमप्पा निटवे कोल्हापुर, भा० हि० स०, पृ० ८०४, व० १६११ ।

सर्वार्थसिद्धि (तत्त्वार्थवृत्ति)—लेख० पूज्यपाद देवनन्दि, टी० प० जयचन्द छावडा, प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि० स०, पृ० ८०४; आ० प्रथम ।

सर्वार्थ सिद्धि वृत्ति—लेखक पूज्यपाद देवनन्दि, अनु० टी० बा० जगरूप-सहाय वकील, प्र० महेशचन्द्र एण्ड को० जैन ग्रन्थ डिपो एटा, भा० स० हिं०; पृ० १५७४, व० १९२३-१९२९; आ० प्रथम।

सरस्वती पूजा (भाषा)—भा० हि०; व० १९०७।

सरस्वती स्तवन—लेखक नाथूराम प्रेमी, भा० हि०; व० १९०७।

सनूना पूजन (आदिनाथ स्तोत्र व कथा सहित)–ले० पं० बाबू लाल, प्र० जैन सभा फीरोजपुर; भा० हिन्दी, पृ० १९, व० ० १९१०।

सलूनोत्पत्ति कथा—प्रकाशक दिग० जैन एसोसियेशन मेरठ सदर, भा० हिन्दी; पृ० २०।

सवालात तेरापंथियों के बीस पंथियों से–भा० हिन्दी, पृ० ६।

स्वतन्त्रता का सोपान–लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापडया सूरत; भा० हिन्दी, पृष्ठ ४२५, व० १९४४, आ० प्रथम।

स्वर्गीय हेमचंद्र–लेखक सपा० यशपाल जैन प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हिन्दी, पृष्ठ १६०, व० १९४४, आ० प्रथम।

स्वरूपचंद नाम माला व अनेकार्थ नाममाला—लेखक स्वरूपचंद जैन त्यागी, प्र० भानुकुमार सर्व सुख हितैषी आयुर्वेदीय फार्मेसी भिंड, भा० हिंदी, पृष्ठ ९५, व० १९४२ आ० आ० प्रथम।

स्वरूप संबोधन–लेखक अकलंक देव, भा० सं०, व० १९१५।

स्वसमरानंद अथवा चेतन कर्मयुद्ध—सपा० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० हिंदी, पृष्ठ ८१, व० १९२३, आ० प्रथम।

स्वात्मानुभव मनन–ले० धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं, भा० हिंदी, पृ० ९६ व० १८९१।

स्वानुभव दर्पण (सटीक)—लेखक योगीन्द्र; देव अनु० प्र० मुंशी नाथूराम लमेचू, भा० हिंदी, पृष्ठ ५३; आ० प्रथम, व० १८९९।

स्वयंभूस्तोत्र—लेखक समन्तभद्राचार्य, अनु० सपा० पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० वीर सेवा मन्दिर सरसावा, भा० स० हिंदी, पृष्ठ , व० , आ० प्रथम।

स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा—ले० स्वामी कार्तिकेय, स० टी० शुभचन्द्र भट्टारक, हि० टी० प० जयचन्द्रजी; प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० २६०, व० १६२१, आ० प्रथम ।

स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा—ले० स्वामी कार्तिकेय, स० टी० शुभचन्द्र भट्टारक, संपा० पं० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र० गांधी नाथारंगजी आकलूज, भा० प्रा० सं० हि०, पृ० २०४, व० १६०४, आ० प्रथम।

स्वामी समन्तभद्राचार्य—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० २६७, व० १६२५; आ० प्रथम।

सहज सुख साधन—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० मूलचंद किशनदास कापडया सूरत, भा० हि०, पृ० ३६२, व० १६३६, आ० प्रथम।

सहजानंद सोपान—ले० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०; पृ० २७४, व० १६३७, आ० प्रथम।

सहनशील चंदन—ले० प० राजमल लोढा, प्र० जैन साहित्य कार्यालय मदसौर, भा० हि०, पृ० १६।

संकट हरण व दुःख हरण विनती—ले० कवि वृन्दावन, प्र० जैन ग्रंथ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद, भा० हि० पृ० ६, व० १६२६, आ० द्वितीय।

संक्षिप्त जैन इतिहास (प्रथम भाग)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १३२, व० १६३६, आ० दूसरी।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २, खड १)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० २६६, व० १६३२, आ० प्रथम।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २, खंड २)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० १८१; व० १९३४, आ० प्रथम ।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खंड १)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १५४, व० १९३७, आ० प्रथम ।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खंड २)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १६४, व० १९३८, आ० प्रथम ।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३, खंड ३)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० १६६, व० १९४१, आ० प्रथम ।

संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ४)—ले० बा० कामता प्रशाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि० ।

संक्षिप्त जैनरामायण (पद्य)—ले० कवि मनरगलाल, प्र० चंद्रसेन वैद्य इटावा, भा० हि०, पृ० ६२, व० १९२४, आ० प्रथम —पृ० ८८, व० १९२६, आ० दूसरी ।

संक्षिप्त नित्य पूजा—संपा० बी० एल० चैतन्य बुलन्दशहरी, प्र० मातेश्वरी संपा० बिजनौर, भा० हि०, पृ० ३२; व० १९२६ ।

संगठन का बिगुल—ले० अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० २८, व० १९२५, आ० प्रथम ।

संयम प्रकाश (प्रथम किरण-पूर्वार्द्ध)—ले० सूर्य सागर आचार्य, संपा० श्रीप्रकाश व भँवरलाल, प्र० आचार्य सूर्यसागर दिग० जैन ग्रन्थमाला समिति जयपुर; भा० हि० सं०, पृ० १६८, व० १९४४, आ० प्रथम ।

संयम प्रकाश (द्वितीय किरण-उत्तरार्द्ध)—ले० सूर्य सागर आचार्य, संपा० श्रीप्रकाश व भँवरलाल, प्र० आचार्य सूर्य सागर दिग० जैन ग्रंथमाला

समिति जयपुर, भा० हि० सं०, पृ० ११४, व० १६४५, आ० प्रथम।

संयुक्त प्रान्त के प्राचीन जैन स्मारक—संग्र० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० हीरालाल जैन एम. ए प्रयाग, भा० हि०, पृ० १११, व० १६२३, आ० प्रथम।

संशय तिमिर प्रदीप—ले० उदयलाल काशलीवाल, प्र० स्वय बड़नगर, भा० हि०, पृ० १७०, व० १६०६, आ० द्वितीय।

संशय वदन विदारण—ले० शुभचन्द्र भट्टारक, अनु० प० लालाराम, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशनी संस्था कलकत्ता, भा० स० हि०, पृ० १४४, व० १६२३, आ० प्रथम।

संसार और मोक्ष—ले० बा० ऋषभदास बी. ए., अनु० दयाचन्द्र गोयलीय, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १६, व० १६१०, आ० प्रथम।

ससार दुःख दर्पण—ले० ज्योति प्रसाद जैन, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६३८, आ० पाचवी।

संसार दुःखदर्पण और नरक दुःख दर्शन—ले० ज्योतिप्रसाद व प० भूधरदास, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १५, व० १६३५, आ० चौथी।

संसार मे सुख कहां है—ले० वाडीलाल मोतीलाल शाह, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० १०८।

संस्कृत पंच स्तोत्र—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबद, व० १८६८, भा० स०।

संस्कृत प्राकृत नित्य नियम पूजा—प्र० बा० सूरजभान वकील देवबंद, व० १८६८, भा० स० प्रा०।

संस्कृत प्रवेशिका (प्रथम भाग)—ले० प० श्रीलाल जैन, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० सं०, पृ० २०८, व० १६१६, आ० प्रथम।

संस्कृत प्रवेशिनी (द्वितीय भाग)—ले० पं० खीलाल जन, प्र० भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था कलकत्ता, भा० सं०, पृ० १७६, व० १९१९। आ० प्रथम।

संस्कृत भाव संग्रह—ले० प० वामदेव, भा० सं०, (भाव संग्रहादि में प्र०)।

संस्कृत हिन्दी शब्द रत्नाकर—ले० बिहारीलाल चैतन्य; भा० सं० हि०, पृ० ११२।

सागार धर्मामृत (भव्य कुमुद चन्द्रिका टीका सहित)—ले० पं० आशाधर, सपा० प० मनोहरलाल, प्र० माणिकचन्द्र दिग० जैन ग्रन्थमाला बम्बई, भा० स०, पृ० २४६, व० १९१५, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत (पूर्वार्द्ध)—ले० पं० आशाधर, अनु० पं० लालाराम, प्र० दिग० जैन पुस्कालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३१२, व० १९१५, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत (उत्तरार्द्ध)—ले० प० आशाधर, अनु० पं० लालाराम, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० २२३, व० १९१६, आ० प्रथम।

सागार धर्मामृत सटीक—ले० पं० आशाधर, टी० प० देवकीनन्दन शास्त्री, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० सं० हि०, पृ० ३१९, व० १९४०, आ० प्रथम।

सादगी और बनावट—ले० ज्योति प्रसाद जैन, प्र० प्यारेलाल चन्दूलाल जगाधरी, भा० हि०, पृ० १६, व० १९२३, आ० प्रथम।

साध्वी (पद्य)—ले० गुणभद्र कविरत्न, प्र० दुलीचद परवार कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ४०।

सामाजिक चित्र—प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०।

सामायिक—सपा० मुनि हर्षकीर्ति, प्र० दिगम्बरी समस्त संघ भावनगर, भा० सं० प्रा०; पृ० ९९, व० १८९७।

सामायिक पाठ—ले० अमित गति आचार्य, टी० पं० जयचन्द छावड़ा, प्र० मुनिअनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला समिति बम्बई, भा० हि०, पृ० ६५, व० १६२४, आ० प्रथम।

सामायिक पाठ—ले० अमितगति आचार्य, अनु० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० मूलचन्द किशनदास कापड़या सूरत, भा० स० हि०, पृ० २४, व० १६२६, आ० दूसरी।

सामायिक पाठ और मेरी भावना—ले० अमितगति आचार्य व प० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० कस्तूरचन्द छावड़ा, प्र० दुलीचन्द पन्नालाल कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० ३१, व० १६३१, आ० पंचम।

सामायिक भाषा—ले० प० महाचन्द, प्र० बा० ज्ञानचन्द लाहौर, भा० हि०; पृ० १८; व० १८६७।

सामायिकानन्द पाठ—ले० रूपचन्द जैन, प्र० ज्ञानचंद इटावा, भा० हि०, पृ० ८, व० १६३४, आ० प्रथम।

सार्वधर्म—ले० पं० गोपालदास बरैया, प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ५५, आ० प्रथम।

सार समुच्चय (मूल)—ले० कुलभद्र, भा० स०, (सिद्धात संग्रह में प्र०)।

सार समुच्चय टीका—ले० कुलभद्राचार्य; टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० स हि०, पृ० २३२, व० १६३७; आ० प्रथम।

सावय धम्म दोहा—ले० देवसेन आचार्य, अनु० सपा० प्रो० हीरालल जैन, प्र० कारजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी कारजा, भा० अप० हि०, पृ० १२५, व० १६३२, आ० प्रथम।

सिद्धि प्रिय स्तोत्र—ले० देवनन्दि, भा० सं०, (काव्यमाला सप्तमगुच्छक में प्र०)

सिद्धान्त सूत्र समन्वय—लें० पं० मक्खन लाल न्या० स०, प्र० दिग० जैन पचायत बम्बई, भा० हि, पृ० १७०, व० १९४७।

सिद्ध चक्र पूजा बड़ी तथा अठाईरासा—ले० पं० ज्ञानतराय व विनय कीर्ति, प्र० मा० शिवराम सिंह रोहतक, भा० हि०, पृ० ४८, व० १९४०, आ० प्रथम।

सिद्ध चक्र मंडल विधान—ले० शुभचन्द्र भट्टारक, प्र० सेठ राजकुमार सिंह म० ब० इन्दौर, भा० सं०, पृ० १७५, व० १९४४।

सिद्ध चक्र विधान—ले० कविवर संतलाल; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०; पृ० ३६८, व० १९४३, आ० द्वितीय।

सिद्ध भक्ति—ले० पूज्यपाद भा० सं०, (दशभक्त्यादि सग्रह में प्र०)

सिद्ध क्षेत्र पूजा संग्रह—संग्र० मास्टर कुन्दन लाल, प्र० मूलचंद किशन दास कापड़या सूरत, भा० हि०, पृ० ३२८, व० १९४४, आ० चतुर्थ; पृ० १४४; व० १९२१, आ० द्वितीय।

सिद्धान्त समीक्षा (भाग १, २, ३,)—लेखक प्रो० हीरालाल, पं० फूलचन्द्र, प० जीवधर, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० व० १९४५-४६।

सिद्धांत सारादि संग्रह (२५ विभिन्न सं० प्रा० ग्रन्थों का सग्रह)—संपा० पं० पन्ना लाल सोनी, प्र० माणिक चन्द दिग० जैन ग्रन्थ माला समिति बम्बई, भा० स० प्रा०, पृ० ३६५; व० १९२३, आ० प्रथम।

सिद्धांतसार—ले० जिनचद, टी० ज्ञान भूषण, भा० सं०. (सिद्धांत सरादि संग्रह मे प्र०)

सिद्धि सोपान—ले० पूज्यपादा चार्य, (सिद्ध भक्ति)—अनु० सपा० प० जुगलकिशोर मुख्तार प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०; पृ० ४८, व० १९३३, आ० प्रथम (अन्य स्थानों से और भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं)

सीता का बारह मासा—प्र० बा० सूरजभान वकील, भा० हि०, व० १८६८ ।

सीता चरित्र—ले० दया चन्द्र गोयलीय, प्र० जैन साहित्य भंडार लखनऊ, भा० हि०, पृ० ६२, व १९१७; आ० प्रथम ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्ति आचार्य, हि० टी० प नाथूलाल, प्र० ज्ञान चन्द जैनी लाहौर, भा० स० हि०, पृ० १४२; व० १९११ ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हि० टी० प नाथूलाल, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हिन्दी स०, पृ० १३८, आ० प्रथम ।

सुकमाल चरित्र—ले० सकल कीर्त्ति आचार्य, हिन्दी टी० प० नाथूराम, प्र० भाषा हिन्दी, पृ० १३२ ।

सिर सिर वाल कहा—ले० रत्न शेखर सूरि, अनु० सपा० एन० जी० सुरु, भाषा प्रा०, व० १९३३—पूना ।

सुख और सफलता के मूल सिद्धान्त—लेखक दयाचन्द गोयलीय, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २० वर्ष १९१७ ।

सुगम जैन विवाह विधि—लेखक सपा० किशन चन्द्र जैन, प्र० चन्दन लाल, भा० स० हिन्दी, पृ० ८०, व० १९३२ ।

सुकमाल चरित्रसार—लेखक ब्रह्मनेमि-दत्त, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० हिन्दी जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भाषा हिन्दी, पृष्ठ २२, व० १९१५, आ० प्रथम ।

सुख सागर भजनावली—लेखक ब्र० शीतल प्रसाद, प्रकाशक मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत, भा० हि०, पाट १५२; वर्ष १९१९, आ० प्रथम ।

सुखानंद मनोरमा नाटक—

सुगंधदशमी कथा—लेखक ब्र० श्रुतसागर; प्रकाशक जिन वाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता भाषा हि०; पृ० १६ ।

सुगंधदशमी कथा (पद्य)—लेखक ब्र० श्रुतसागर, प्रकाशक वीर जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० २०, व० १९४२, आ० प्रथम ।

सुगंध दशमी व्रत कथा—लेखक पं० खुशाल चन्द्र, प्रकाशक हीरालाल पन्नालाल देहली, भा० हि०, पृ० १४, व० १६३४, आ० प्रथम।

सुगुरु शतक भाषा—प्रकाशक बा० सूरज भान वकील देवबद, भा० हि०; व० १८६८।

सुदर्शन (अहिंसा मार्तण्ड)—लेखक पीताम्बर दास जैन, भा० हिन्दी, व० १६४०।

सुदर्शन चरित्र—लेखक सकल कीर्त्ति, अनु० उदयलाल काशलीवाल, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० १०६, आ० प्रथम।

सुदर्शन चरित्र (सचित्र)—सपा प० परमानन्द, प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १४६।

सुदर्शन नाटक—लेखक मूलचन्द वत्सल, प्र० साहित्य रत्नालय बिजनौर, भा० हि०, पृ० ११२, व० १६२७, आ० प्रथम।

सुदृष्टि तरंगिणी—लेखक प० टेकचन्द्र, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता; भा० हि०, पृ० ६५०, व० १६२६, आ० प्रथम।

सुदृष्टि तरंगिणी—लेखक प० टेक चन्द्र, प्र० पन्नालाल चौधरी काशी, भा० हि०, पृ० ६८३, व० १६२८।

सुधर्म श्रावकाचार—लेखक सुधर्म सागर, टी० प० लालाराम, सपा० पं० मक्खन लाल, प्र० सेठ जीवाराज उगर चद गाधी सोनगढ़, भाषा स० हि०, पृ० ५०२, व० १६४०।

सुन्दर जाल—ले० ज्योति प्रसाद जैन, भा० हि०, पृ० १६, व० १६२१।

सुधर्म श्रावकाचार समीक्षा—लेखक प० परमेष्ठि दास, प्रकाशक मूलचंद किशनदास कापडया सूरत, भाषा हिन्दी, पृ० ११८, व० १६४३, आ० प्रथम।

सुधर्मोपदेशामृतसार—लेखक कुथ सागर आचार्य, अनु० प लालाराम, प्र० आचार्य कुथसागर ग्रथ माला शोलापुर, भा० हि० स०, पृ० १७४, व० १६४०, आ० प्रथम।

सुबोधरत्न शतकम्—लेखक माणिक्य मुनि, प्रकाशक शीतल प्रसाद वैद्य,

देहली, भा० सं०, पृ० २७, व० १६१५।

सुबोध दर्पण (रत्नत्रय धर्म प्रकाश)—लेखक प० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० दिग० जैन पचान लाकरौड़ा, भाषा हि०, पृ० ७६, व० १६३६, आ० प्रथम।

सुभाषितरत्न सदोह—ले० अमितगति आचार्य, सपा० प० काशीनाथ शास्त्री व भावदत्त शास्त्री, प्र० निर्णयसागर प्रेस बम्बई, भा० स० हि०, पृ० १०४, व० १६०३, आ० प्रथम।

सुभाषितरत्न संदोह—ले० अमितगति आचार्य, अनु० प० श्रीलाल का० ती०, प्र० भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी सस्था कलकत्ता, भा० सं० हि०, पृ० २८२ व० १६१७, आ० प्रथम पृष्ठ २४३, व० १६३६, आ० द्वितीय।

सुभाषित शतकम्—सव्य० अनु० प० माणिक चन्द्र, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सरत, भा० स० हि०, पृ० २८, व० १६४५, आ० प्रथम।

सुमन संचय—सग्र० ब्र० प्रेमसागर, प्र० बैनीप्रसाद गुलाब चंद रैपुरा, भा० हि०, पृ० ७२, व० १६४१, आ० प्रथम।

सुलोचना चरित्र—ले० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हि०, पृ० ११५, व० १६२४; आ० प्रथम।

सुवर्ण सूत्रम—ले० कुथमागर, प्र० उत्तम चद के लचद दोशी ईडर, भा० सं० पृ० २४, व० १६४१, आ० प्रथम।

सुशीला उपन्यास—ले० पं० गोपालदास बैरया, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ३१२, व० १६१४, आ० प्रथम।

सुसराल जाते समय पुत्री को माता का उपदेश—सपा० प० दीपचन्द वर्णी; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत; भा० हि०, पृ० ४७, व० १६४३, आ० अष्टम।

सुहाग रक्षक विधान—ले० मोतीलाल पहाड्या; भा० हि० पृ० ११ व० १६२४।

सूत्र पाहुड़ (सूत्र प्राभृत)—ले० कुन्द कुन्द; भा० प्रा० स०, (अष्ट पाहुड़ व षटप्राभृतादि सग्रह में प्र०)

सूक्त मुक्तावली—लै० सौमप्रभाचार्य, टी० हर्षकीर्तिसूर, संपा० ब्रजवल्लभ शास्त्री, प्र० स्वयं संपादक अहमदाबाद, भा० सं०, पृ० ७३, व० १८६७, आ० प्रथम ।

सूक्तमुक्तावली—लै० सौमप्रभाचार्य; हि० अनु० (पद्य) पं० बनारसीदास, संपा० मुन्शी अमनसिंह, प्र० स्वयं संपा० सोनीपत, भा० हि०, पृष्ठ ४०, व० १८६३ ।

सूक्तमुक्तावली—ले० सोमप्रभाचार्य; अनु० पं० बनारसीदास व कुँवरपाल, टी० प० लालाराम, प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० १००, व० १९१२, आ० द्वितीय ।

सूक्ति संग्रह—ले० कवि राक्षस; भा० सं०, पृ० ६, व० १९२० ।

सूर्य प्रकाश—ले० नेमिचन्द्र भट्टारक, टी० संपा० ब्र० ज्ञानचन्द्र; प्र० गांधी मिया चन्द देवचन्द प्येडे शिरसकर नातेपुते, भा० सं० हि०, पृ० ४१३, आ० प्रथम ।

सूर्य प्रकाश परीक्षा—पं० जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जौहरी मल सर्राफ देहली, भा० हि०, पृ० १६०, व० १९३४, आ० प्रथम ।

सूवा बत्तीसी—ले० भैया भगवती दास; प्र० दिग० जैन धर्म पुस्तकालय लाहौर, भा० हि०, पृ० ८; व० १९१४ ।

सेठी सुदर्शन की कथा—प्र० जैन ग्रन्थ प्रचारक पुस्तकालय देवबंद; भा० हि०, पृ० ८ ।

सेठी जी के मामले में लोकमत—प्र० भारत जैन महामंडल; भा० हि०, पृ० ८०; व० १९१५ ।

सोनागीर यात्रा विवरण (सचित्र)—ले० द्वारका प्रसाद, प्र० दिग० जैन धर्म प्रभावती सभा सांभालेक, भा० हि०, पृ० ३३, व० १९१८; आ० प्रथम ।

सोमा सती नाटक—प्र० जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० १६ ।

सोलह कारण धर्म—ले० पं० दीपचन्द वर्णी, प्र० मूलचन्द किशन दास

कापड़िया सूरत, भा० हि० पृ० १३७, व० १६४३, आ० तृतीय ।

सोलह कारण व्रत कथा पूजा—ले० पं० दीपचन्द्र वर्णी, प्र० हुकमी चन्द्र डोलिला; भा० हि०, पृ० २६, व० १६३८ ।

सौभाग्य भजन माला—ले० सौभाग्य मल दोशी; प्र० स्वयं अजमेर; भा० हि०; पृ० २१; व० १६२७; आ० प्रथम ।

सौभाग्य रत्न माला—ले० प० चन्दाबाई, भा० हि०; पृ० ११८, व० १६१६ ।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा—ले० प० गोपालदास बरैया; प्र० जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा इटावा, भा० हि०, पृ० ३१ व० १६१२, आ० प्रथम ।

सृष्टि कर्तृत्व मीमांसा—ले० प० गोपालदास बैरया; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा हि०; पृ० ३१, व० १६२८, आ० प्रथम ।

सृष्टि वाद परीक्षा—प्र० जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा; भा० हि०, पृ० ८ ।

हनुमान चरित्र नाविल भूमिका—ले० प्रकाशक मास्टर बिहारी लाल बुलन्दशहर, भा० हि०, पृ० ३१, व० १८६६ आ० प्रथम ।

हनुमान चरित्रनाविल भूमिका (भाग)—लेखक प्र० मास्टर बिहारीलाल बुलन्दरशहर, भा० हि०; पृ० ३१, व० १८६६ ।

हम दुःखी क्यों हैं—ले० प जुगल किशोर मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, भा० हि०, पृ० ३२, व० १६२८, आ० प्रथम ।

हमारा उत्थान और पतन—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० हिन्दी विद्या मदिर देहली, भा० हि०, पृ० १४४, व० १६३६ ।

हमारी कायरता के कारण—लेखक अयोध्या प्रसाद गोयलीय, प्र० जैन संगठन सभा देहली, भा० हि०, पृ० ३०, वर्ष १६३७; आ० प्रथम ।

हमारी शिक्षा पद्धति—लेखक पडित कैलाश चन्द्र, प्रकाशक जैन मित्र मंडल देहली, भा० हि०, पृ० ५३, व० १६३२, आ० प्रथम ।

हमारे दुःखों का प्रधान कारण—लेखक पडित जुगल किशोर मुख्तार,

प्रकाशक जैन संगठन सभा देहली; भा०, हि०, पृ० ३२, व० १६२८, आ० प्रथम।

हरिवंश पुराण—जिनसेनाचार्य, हि० टी० पं० दौलतराम जी, प्रकाशक जिनवाणी प्रचारक कार्यालय कलकत्ता, भा० हि०, पृ० ५३५, व० १६३३।

हरिवंश पुराण—लेखक जिनसेनाचार्य; टी० प० दौलतराम जी, प्रकाशक ज्ञानचद जैनी लाहौर, भा० स० हिन्दी, पृ० १०००, व० १६१०।

हरिवंश पुराण—लेखक जिनसेनाचार्य, अनु० पंडित गंजाधर लाल, प्र० भारतीय जैन सिद्धात प्रकाशिनी सस्था कलकत्ता, भा० हिंदी, पृ० ६२७, व० आ० प्रथम।

हरिवंश पुराणम् (प्रथम खड)—लेखक जिनसेनाचार्य; सपा० पंडित दरबारी लाल न्या० ती०; प्रकाशक माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रंथ माला समिति बम्बई; भा० सं०, पृ० ४४८, व० १६३०, आ० प्रथम।

हरिवंश पुराणम (द्वितीय खड)—लेखक जिनसेनाचर्य, संपा० पंडित दरबारी लाल न्या० ती० प्रकाशक माणिक चन्द दिग० जैन ग्रंथमाला समिति बम्बई भा० हि०; पृ० ३७४; व० १६३० आ०, प्रथम।

हरिवंश पुराण समीक्षा—लेखक बा० सूरजभान वकील, प्रकाशक चन्द्र सेन जैन वैद्य इटावा; भा० हि०, पृ० ५८; वर्ष १६१८; आ० प्रथम।

हम और हमारा कर्तव्य—लेखक प्रकाशक उत्तम चन्द्र जैन मेरठ; भाषा हि० पृ० ८; व० १६२२।

हस्तिनागपुर कीर्तन—संग्र० प्र० सुमतप्रशाद जैन प्रचारक मुजफ्फर नगर, भा० हि०, पृ० ३२, व०, १६४२।

हस्तिनागपुर महात्म—लेखक मंगलसेन जैन विसारद, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय मुजफ्फर नगर, भा० हि०; पृ० ५२, व० १६३८; आ० प्रथम।

हित की बात— प्र० जैन तत्व प्रकाशनी सभा इटावा, भा० हि०, पृष्ठ ३२,

हित शिक्षा—लेखक वाड़ीलाल मोतीलाल शाह, अनु० भैयालाल जैन, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ११६, व० १६११।

हितैषी गायन—प्र० जैन ग्रथ प्रभाकर कार्यालय सागर, भाषा हिंदी, व० १९२३, आ० प्रथम।

हितैषी गायन रत्नाकर— प्र० भारतहितैषी पुस्तकालय सीकर; भाषा हिन्दी, पृ० ९८; आ० प्रथम।

हितैषी भजन सगह—प्र० मनीराम नथूमल जैन, भा० हि०, पृ० १४।

हिन्दी छहढाला—लेखक कवि दौलतराम, टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० हि०, पृ० ६८, व० १९३७, आ० आठवी।

हिन्दी जैन पद्यावली—प्र० जैन धर्म प्रसारक सस्था नागपुर; भा० हि०, पृ० १७, व० १९२९, आ० प्रथम।

हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास—ले० पं० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ९६, व० १९१७, आ० प्रथम।

हिंदी जैन साहित्य का इतिहास—लेखक बा० कामता प्रसाद जैन, प्र० भारतीय ज्ञान पीठ काशी; भा० हि०, व० १९४७।

हिंदी पद्यात्मक श्री ऋषभपुराण व संक्षिप्त गद्यात्मक आदि—संपा० मा० बिहारी लाल चैतन्य, प्र० शाति चन्द्र जैन बिजनौर, भा० हि०; पृ० १८८, व० १९२६, आ० प्रथम।

हिंदी भक्तामर—लेखक अमृत लाल जैन चंचल, प्र० सिघई प्रेमचन्द जबलपुर भा० हि०, पृ० ४८, व० १९३७; आ० द्वितीय।

हिंदी भक्तामर और प्राण प्रिय काव्य—सपा० प्र० पन्नालाल जैन, भा० हि०, पृ० ३८, व० १९१४।

हिंदी साहित्य अभिधान लेखक—लेखक शान्ति चन्द्र जैन, प्र० स्वल्पार्थ ज्ञान रत्न माला कार्यालय बाराबकी, भा० हि०, पृ० २०, व० १९२५ आ० प्रथम।

हिंदी साहित्य अभिधान लेखक (द्वितीय अवयव)—लेखक बिहारी लाल चैतन्य, प्र० स्वल्पार्थ ज्ञान रत्न माला कार्यालय बाराबकी, भा० हि०, पृ० ११२,

व० १९२५, आ० प्रथम ।

हिंदी जैन विवाह पद्धित—संपादक कुलवंत राय जैन, भा० हि०, पृ० ३८; व० १९३९ ।

हिन्दू कोड और जैन धर्म—प्र० वर्धमान ज्ञान प्रचारिणी समिति इन्दौर, भा० हि०; पृ० १८, व० १९२१ आ० प्रथम ।

हीराबाई—लेखक बा० सूरजभान वकील, भा० हि०, पृ० २४ ।

होली संग्रह और प्रभाती संग्रह—सग्र० तथा प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भा० हि०, पृ० २४, व० १९०२; आ० प्रथम ।

हितोपदेश रत्नावली—प्र० जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर; भा० हि०, पृ० ४०, व० १९२४ ।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य, सपा प्र० टी० एस० कुप्पुस्वामी शास्त्री, तजौर, भा० स०, पृ० १४३, व० १९०३ ।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य, अनु० मुंशीलाल एम. ए., संपा० नाथूराम प्रेमी; प्र० जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, भा० सं० हिंदी पृ० १४८, व० १९१०; आ० प्रथम ।

क्षत्र चूड़ामणि—लेखक वादीभसिंह आचार्य हि० टी० पं० निद्धामल, प्र० स्वय टी०, भा० हिंदी, पृ० २६२, व०, आ० प्रथम ।

क्षत्र चूड़ामणि (पूर्वार्ध)— लेखक वादीभसिंह आचार्य; हि० टी० मोहन लाल जैन का० ती०, प्र० सरल प्रज्ञा पुस्तक माला मडावरा; भाषा हिन्दी, पृ० १६४, व० १९३२, आ० प्रथम ।

क्षत्र चूड़ामणि (उत्तरार्ध)—लेखक वादीभसिंह आचार्य, टी० मोहन लाल जैन का० ती०, सरल प्रज्ञा पुस्तक माला मंडावरा; भा० हिन्दी, पृ०—व० १९४०, आ० प्रथम ।

क्षपणासार—देखो—लब्धिसार ।

त्रिभंगी सार—ले० तारण तरण स्वामी; टी० ब्र० शीतल प्रसाद, प्र० सेठ मन्नुलाल जैन आगासौंद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ १३५, व० १९३९, आ० प्रथम ।

त्रिलोक प्रज्ञप्ति—देखिये तिलोय पण्णुति ।

त्रिलोक सार—ले० नेमीचन्द्र सि. च., स० टी० माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव, संपा० प० मनोहरलाल, प्र० माणिक चन्द्र दिग० जैन ग्रंथमाला समिति बम्बई; भा० प्रा० स०, पृ० ४२५, व० १९२८, आ० प्रथम ।

त्रिलोक सार—ले० नेमीचन्द सि. च., हि० टी० प० टोडरमल, संपा० पण्डित मनोहरलाल, प्र० जन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई; भा० प्रा०हि०, पृ० ३६५, व० १९१८, आ० प्रथम ।

त्रिशला नदंन—ले० प्र० भगवत् जैन, भा० हिन्दी, पृष्ठ १८ ।

त्रिषष्टि स्मृति शास्त्रम्—ले० पं० आशाधर, संपा० मोतीलाल, प्र० माणिकचद दिग० जैन ग्रथ माला बम्बई, भा० सं०, पृष्ठ १७८, व० १९३७ ।

त्रेष्ठ शलाका पुरुषों के नाम—ले० बा० सूरजभान वकील देवबन्द, भा० हि०, व० १८९८ ।

त्रैवर्णिकाचार—ले० सोमसेन भट्टारक, अनु० पण्डित पन्नालाल सोनी; प्र० जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय बम्बई, भा० स० हिन्दी, पृ० ३९८, व० १९२५, आ० प्रथम ।

त्रैलोक्य तिलक व्रतोद्यापन—ले० पण्डित पन्नालाल जैन सा० आ०; प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भा० हिन्दी, पृ० ३८, व० १९४३, आ० प्रथम ।

त्रिवेणी—ले० ब. प्र० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन आरा, भा० हि० ।

ज्ञान कोष—संग्र० बा. धनकुमार चंद जैन, प्र० रोशनलाल जैन आरा; भाषा हिन्दी, पृ० १८५, व० १९३७, आ० प्रथम ।

ज्ञान चन्द्रोदय नाटक—ले० पन्नालाल जैन, प्र० जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई, भाषा हि०, वर्ष १९०१ ।

ज्ञान दर्पण (पद्य)—ले० शाह दीपचद, प्र० जैन मित्र कार्यालय बम्बई, भा० हि०, पृ० ६६, व० १९११, आ० प्रथम ।

ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्र—अनु. संपा० पण्डित रामव्यास पाण्डेय ज्योतिषाचार्य, प्र० जैन सिद्धांत भवन आरा ।

ज्ञान समुच्चय सार—लेखक तारणतरण स्वामी टी० ब्र० शीतलप्रसाद, प्र० सेठ मन्नूलाल, आगासौद, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ५०४, व० १९३५, आ० प्रथम।

ज्ञानसार दि० भाषा जैन पूजा—लेखक धनीराम बैराग; प्र० सौभाराम परशुराम नरवर, भाषा हि०; प० ७, आ० प्रथम।

ज्ञान सार—लेखक पद्मसिंह मुनि, टी. पण्डित त्रिलोकचन्द, प्र० दिग० जैन पुस्तकालय सूरत, भाषा प्रा० सं. हिन्दी; पृष्ठ ४६, व० १९४४ आ० प्रथम, (संस्कृत छाया व भाषा छन्दानुवाद सहित)।

ज्ञान सूर्योदय—लेखक प्र० ललित प्रसाद जैन घुढेरे क यमगंज, भाषा हिन्दी, पृष्ठ ६ , आ० प्रथम।

ज्ञान सूर्योदय (प्रथम भाग) - लै० बाबू सूरजभान वकील, प्र० चाँदमल अजमेरा ग० ब०, भाषा हि०, पृ० ८०, व० १९२९, आ० तृतीय।

ज्ञान सूर्योदय (द्वितीय भाग)— लेखक बाबू सूरजभान वकील, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली भाषा हि०; प० ७९ वर्ष १९२५; आ० प्रथम।

ज्ञान सूर्योदय नाटक लेखक वादिचन्द्र सूरि, अनु० नाथूराम प्रेमी, प्र० जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय बम्बई, भाषा सं० हि०, पृ० १०४, व० १९०९, आ० प्रथम।

ज्ञानानंद भजनाकर—प्र० पंडित मक्खनलाल प्रचारक देहली, भाषा हि०, पृ० ३२, वर्ष १९३८, आ० सातवां।

ज्ञानानन्द रत्नाकर—ले० व प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, भाषा हिन्दी, पृ० ६२, व० १९०२

ज्ञानानन्द रत्नाकर द्वितीय भाग—लेखक व प्र० मुन्शी नाथूराम लमेचू, प्र० सेठ गंगराज श्री कृष्णदास बम्बई, भाषा हि०; पृ० ६७ वर्ष १८९५।

ज्ञानानन्द श्रावकाचार—लेखक रायमल्ल, प्र० म० बोध रत्नाकर कार्यालय सागर, भा० हि०, पृ० २९२, व० १९११, आ० प्रथम।

ज्ञानार्णव—लेखक शुभचन्द्राचार्य, अनु० प० पन्नालाल बाकलीवाल, प्र०

परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, भा० सं० हि०, पृ० ४४७, व० १९२७, आ० प्रथम ।

ज्ञानोक्त प्रमाण—लेखक धर्मदास क्षुल्लक, प्र० स्वयं, भा० हि०, पृ० १२, व० १८८२, आ० प्रथम ।

ज्ञानोदय (प्रथम भाग)—ले० पण्डित पन्नालाल, प्र० स्वय सुजानगढ़; भा० हि०, पृ० २९, व १८९१, आ० द्वितीय ।

ज्ञानोदय (द्वितीय भाग)—लेखक प० पन्नालाल, प्र० स्वय सुजानगढ़, भा० हि०, पृ० ३५, १८९१, आ० द्वितीय ।

जैन धर्म पर प्रकाशित महत्वपूर्ण भाषण [हिंदी]

कुंवर दिग्विजय सिह (इटावा १४-३-१९१०) ।

डा० हरमन जेकोबी (सन् १९१३ ई०) ।

डा० लक्ष्मीचन्द्र जैन (भा० दि० जैन परिषद् के ८वे अधिवेशन मे) ।

डा० वान ग्लेजनेप (सन् १९१३) ।

डा० सतीश चन्द्र विद्याभूषण (२७ दिसम्बर १९१३ ई० काशी स्या. विद्यालय मे) ।

डा० टी० के लड्डू

डा० बी० एल० अत्रेय

पं० जुगलकिशोर मुख्तार (हस्तिनापुर, १६-११-१९२६) ।

प० अम्बादास शास्त्री (सस्कृत-सागर सतर्क सु० त० पाठशाला के ७वें अधिवेशन पर) ।

प० गणेश प्रसाद वर्णी (पपौरा, सन् १९२७ ई०) ।

प० गोपाल दास बरैया (मार्च सन् १९१२)

प० माणिकचन्द्र कौन्देय (इदौर. सन् १९२०) ।

पडिता चन्दाबाई (कानपुर, २-४-१९२१) ।

प्रो० फणिभूषण अधिकारी (काशी, २६-४-१९२५) ।

बा० अजितप्रसाद (दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बई के १२वे अधिवेशन मे)

बा० अमोलक चन्द्र (भिंड, १८-६-१९३३) ।
बा० छत्रपाल (भिंड, १७-६-१९३३) ।
बा० जयभगवान जैन (एटा १८-४-१९३०) ।
बा० पद्मसिंह जैन (बुलन्दशहर, ३०-४-१९३२) ।
बा० प्यारेलाल वकील (बडौत ३-४-१९२७) ।
बा० बहादुरसिंह सिंघी (मार्च सन् १९३२) ।
बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशा (इटावा ८-२-१९३१) ।
बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशां (गोहाना, १५-१०-१९३४) ।
बा० लालचन्द्र एडवोकेट (हस्तिनापुर १०-११-१९३७) ।
बा० ,, ,, (परिषद अधिवेशन सतना)
बैरिष्टर चम्पतराय जी (लखनऊ, ६-२-१९२२) ।
राजकुमार मोहन बल उपनाम बलदेव सिंह जी
रा० सा० द्वारका प्रसाद (मुजफ्फर नगर १-४-१९११) ।
रा० सा० नेमदास (अम्बाला, २५ ५-१९३६) ।
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (३० नवम्बर १९०४ बडौदा)
श्रीमती एनी बेसेन्ट (मद्रास, दिसम्बर १९०१) ।
श्रीमती लेखवती जैन मुजफ्फर नगर, १०- -(१९३५) ।
बा० साहु जुगमन्दर दास (सहारन पुर, ३०-१२-१९३२)
साहु शान्ति प्रसाद (लखनऊ परिषद अधिवेशन, अप्रेल १९४४)
साहु सलेक चन्द्र (कानपुर, १-४-१९२९)
सेठ ज्वाला प्रसाद जी महेन्द्रगढ (देहली, १७-४-१९३२)
सेठ ज्वाला प्रसाद जी महेन्द्रगढ (बडौत, २७-१२-१९३२)
सेठ पद्मराज (खामगाँव, अप्रेल सन् १९१२)
सेठ माणिक चन्द्र हीराचन्द्र (श्रवण बेलगोला, २६-३ १९३०)
सेठ लाल चन्द्र सेठी (कलकत्ता, २६-११-१९२०)
सेठ हीराचन्द्र नेमचन्द्र (इन्दौर, ४-४-१९१४)

सेठ हुकम चन्द्र जी (१० फरवरी १९१० दि० जैन महासभा अधिवेशन सम्मेद शिखर)

सेठ हुकम चन्द्र जी (प लीताराम, सन् १९१३)

स्वामी राम मिश्र शास्त्री (काशी; सन् १९०५)

ला० बनारसीदास एम. ए. (१९०४ ई०)

रा० रा० वासुदेव गोविन्द आपटे—

जैन सामायिक पत्र पत्रिकाएँ

वर्तमान में चालू जैन पत्र पत्रिकाएँ निम्न प्रकार हैं—

अनेकान्त—मासिक; हिन्दी, सपा० प० जुगलकिशोर जी मुख्तार प्र० वीर सेवा मंदिर; सरसावा; ज० सहारनपुर (यू० पी०); जन्म सन् १९ ० ई० वा० मूल्य ४)।

आत्मधर्म—मासिक हिंदी, सपा० रामजी माणेकचन्द दोशी वकील, प्र० आत्म धर्म कार्यालय मोटा आकडिया, काठियावाड जन्म १९४५ ई० वा० मू० ३); गुजराती संस्करण भी निकलता है।

जैन बन्धु—मासिक, हिन्दी, प० ... सभा की ओर से बटेश्वर दयाल बकवेरियाँ, ... मंडी ग्वालियर पुन जन्म १९४७ ई०।

खंडेलवाल जैन हितेच्छु—पाक्षिक, हिन्दी; सप० प० नाथूलाल व पं० भंवर लाल, प्र० श्री भा० दि० जैन खंडेलवाल महासभा के लिये, रंगमहल इन्दौर, जन्म १९२० ई०, वा० मू० ।

जिनवाणी—मासिक, हिंदी, सप० फूलचंद जैन शास्त्री, प्र० जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ, जयपुर जन्म १९४२ ई०, वा० मू० ४)।

जैन गजट—साप्ताहिक, हिंदी; सपा० प० वंशीधर शास्त्री (सोलापुर) प्र० भारत. दि० जैन महासभा के लिये प० बाबूलाल, नई सडक, देहली; जन्म १८९५ ई०, वा० मूल्य ।

जैन गजट—मासिक, अंगरेजी, सपा० बा० अजित प्रसाद एम ए. एल

एल. बी., प्र० भारत इण्डियन जैन एसोसियेशन के लिये, अजिताश्रम लखनऊ, जन्म १६०४ ई०, वा० मू० ३)।

जैन जगत—मासिक, हिन्दी, संपा० हीरासव चवड़े, जमनालाल विशारद आदि, प्र० भारत जैन महा मडल के लिये हीरासाव चवड़े वर्धा, जन्म अप्रैल १६४७ ई०; प्रति अंक मू० ।)।

जैन प्रचारक—मासिक, हिंदी, प्र० भारत० जैन अनाथ रक्षक सोसाइटी जैन अनाथाश्रम, दहली, जन्म १६०६ ई०; वा० मू० ३)

जैन प्रभात—मासिक, हिंदी, सपा० व प्र० ईश्वर चंद्र जैन एम. ए., न० ४० इमली बाजार, इदौर, जन्म १६४५ ई०, वा० मू० २)।

जैन प्रभात—मासिक, हिंदी; संपा० पं० मुन्नालाल सा० शा०, प्र० श्री गणेश दिग० जैन संस्कृत विद्यालय सागर, जन्म २५ मई १६४७ ई०, वा० मूल्य ३)।

जैन बोधक—पाक्षिक, हिंदी, सपा० प० मक्खन लाल व पं० वर्धमान पार्श्वनाथ, प्र० स्व० रावजी सखराम दोशी स्मारक सघ, ५ पूर्व मंगलवार सोलापुर; जन्म सितम्बर सन् १८८४ ई०, वा मू० ३॥),—इसका मराठी संस्करण भी निकलता है।

जैन महिलादर्श—मासिक, हिंदी, संपा० म० र० ब्र० पंडिता चन्दाबाई व व्रज बाला देवी; प्र० भारत दिग० जैन महिला परिषद के लिये मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत; जन्म १६२५ ई०; वा० मूल्य ३।)।

जैन मित्र—साप्ताहिक, हिन्दी; सपा० व प्र० मूलचंद किसनदास कापड़िया सूरत, जन्म १८६६ ई०, वा० मूल्य ५), यह श्री दिग० जैन प्रांतिक सभा बम्बई, का मुख पत्र है।

जैन संदेश—साप्ताहिक, हिंदी, सपा० व प्र० बलभद्र जैन, मोती कटरा आगरा, जन्म १६३६ ई०, वा० मू० ४), यह श्री भारत दिग० जैन संघ मथुरा का मुख पत्र है।

तरुण जैन संघ बुलेटिन—मासिक, हिंदी; प्र० मंत्री तरुण जैन संघ कलकत्ता, जन्म १९४६, अमूल्य।

तेरा पथी युवक संघ बुलेटिन—मासिक, हिंदी, प्र० मंत्री तेरापंथी युवक संघ लाडनूं, प्रति मू० ।)।

तारण बंधु—मासिक, हिंदी, सपा० बाबूलाल डेरिया, प्र० राम लाल पांडे इटारसी, जन्म १९३८ ई०, वा० मू० २।।।=), अखिल भारत तारणपथी नवयुवक मडल का मुख पत्र।

दिगम्बर जैन—मसिक, हिदी गुजाराती मिश्रित, सपा व प्र० मूलचद किसनदास सूरत, जन्म १९०७ ई०, वा० मू० २।।)।

दी जैन एण्डीक्वेरीदी—षाण्मासिक, अंगरेजी; संपा० डा० ए. न उपाध्ये प्रो० हीरालाल आदि, प्र० दी सैन्ट्रल जैना ओरिपटल लायब्रेरी आरा, जन्म १९३४ ई०, वा० मू० ४); यह पत्र श्रीजैन सिद्धान्त भास्कर के साथ सयुक्त निकलता है।

दीजैन होस्टल मेगजीन—त्रैमासिक, हिन्दी अगरेजी, प्र० जैन होस्टल अलाहाबाद।

पडित सूर्योदय—मासिक, हिन्दी, सपा० प० खूब चन्द, चौपाई बम्बई, प्र० फूलचन्द हीराचद शाह सोलापुर, जन्म जनवरी १९४७, वा० मू० २),

प्रगति आणि जिन विजय—साप्ताहिक, मराठी व कन्नड, सपा० भूपाल अप्पा जी चौगुले, प्र० भूपाय देवेन्द्रपा चौगुले, ६१६ मठगली बेलगाव, जन्म १९०३; वा० मू० २।।)

महावीर सदेश—पाक्षिक, हिन्दी; संपा० केशरलाल जैन अजमेर, प्र० प्रबंध कारिणी कमेटी श्री दिग० जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी (जयपुर राज्य), जन्म मई १९४७ ई०।

लोक जीवन—मासिक, हिन्दी, सपा० यशपाय जैन प्र० लोक जीवन कार्यालय ७/३६ दरियागज देहली, जन्म १९४५, वा० मू० ६)।

वीर—साप्ताहिक हिन्दी, सपा० बा० कामता प्रसाद व प० परमेष्ठीदास प्र० वीर कार्यालय, ऋषिभवन फैज बाजार देहली, जन्म १९२५ ई०; वा० मू०

४), भारत दि० जैन परिषद का मुख पत्र है।

वीर लोक शाह—मासिक, हिन्दी, सपा० विजय मोहन जैन, प्र० शिवनाथ मल माहटा जोधपुर, जन्म १९४४ ई०, वा० मू० ३)।

वीर वाणी—पाक्षिक, हिन्दी, संपा० पं० चैनसुखदास न्या० ती०, प्र० पं० भँवर लाल जैन, मनिहारों का रास्ता, जयपुर, जन्म अप्रैल १९४७ ई०। व० मू० ३)।

वैद्य—मासिक; हिन्दी; संपा० विष्णुकान्त जैन वैद्य, प्र० हरिशंकर जैन वैद्य, मुरादाबाद, जन्म, १९२० ई०, वा० मू० ३)।

मानसी—मासिक, हिन्दी; प्र० वर्द्धमान सहित्य मंदिर लखनऊ, जन्म मई १९४७, वा० मू० १५)।

श्री जैन सत्यप्रकाश—मासिक, गुजराती हिन्दी; संपा० चीमनलाल गोकलदास शाह, प्र० श्री जैन धर्म सत्य प्रकाश समिति, घी काँटा रोड, अहमदाबाद, जन्म १९३६ ई०, वा० मू० २)।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर—षाणमासिक, हिन्दी, सम्पादक बा० कामता प्रसाद पं० के भुजबलि शास्त्री आदि, प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा (बिहार), जन्म १९३३ ई०, वा. मू० ४) (जैन एण्टी क्लोरी सहित)।

श्वेताम्बर जैन—मासिक, हिन्दी, प्र० जवाहरलाल लोढ़ा मोती कटरा आगरा; पुन. प्रकाशित जून १९४७।

सनातन जैन—मासिक, हिन्दी; संपा० अक्षयकुमार जैन, प्र० भगतराय जन 'साधु' मुख्तार बुलन्दशहर, जन्म १९२७ ई०; वा० मू० २)।

सगम—मासिक, हिन्दी, सपा० स्वामी कृष्णानन्द व सूरज चन्द्र, प्र० सत्याश्रम वर्धा, जन्म १९४२ ई०, वा० मू० ३)।

सिद्धि—मासिक, हिन्दी, सपा० व प्र० रा० वै० सिद्ध सागर, ललितपुर, जन्म १९३२ ई०।

हितेच्छु—साप्ताहिक, हिंदी, संपा० बा० कैलाशचंद्र जैन, प्र० हितेच्छु कार्यालय, बीरड़ी का रास्ता जयपुर सिटी, जन्म १९४४ ई०; व० मू० ५)।

हिन्दी मार्तण्ड—मासिक, हिन्दी, संपा० मैनावती 'मैना', प्र० विमल

अहिंसा कुञ्ज, तोपखाना अलाहबाद, जन्म अप्रेल १९४७ ई०, वा० मू० ३)।

ज्ञान—मासिक, हिंदी, सपा० सागर चद जैन, प्र० मामन सिह वैद्य प्रेमी देहली, जन्म मई १९४७ ई०, वा० मू० १)।

उपर्युक्त ३९ पत्रो के अतिरिक्त निम्नलिखित ४३ पत्रो के अस्तित्व का और पता चलता है, किन्तु उनके विषय मे जानकारी नही है—

आत्मानद प्रकाश, ओसवाल सुधारक, ओसवाल नवयुवक, कच्छी दशा ओसवाल प्रकाश जैन, जैन जवाहिर, जैन ज्योति, जैन ध्वज, जैन धर्म प्रकाश; जैन पथ प्रदर्शक, जैन प्रवचन, जैन प्रकाश, जैन बन्धु (हिंदी और गुजराती), जैन युग, जैन विकाश, जैन शिक्षण सदेश, जैन ससार (उर्दू), जैन सिद्धात, जैन हेरल्ड, जैसवाल जैन, जीवन ज्योति, जीवन सुधा, झलक, तरुणवा, तारण पंथ दि० खडेलवाल जैन हितेच्छु, धर्मरत्न, परिवर्तन, परिचय पत्रिका बुद्धिसागर, प्रभात, महाराष्ट्रीय जैन (मराठी), रत्नाकर, विवेकाभ्युदय कन्नड, वीर शासन, वीर संदेश, शांति वैभव, शांति सिन्धु, शिक्षण पत्रिका, सिद्ध चक्र; समय धर्म, सत्य प्रकाश, श्रमण स्वदेश, स्थानकवासी जैन।

इन उपर्युक्त ८२ पत्र पत्रिकाओ मे से सभव है कुछ एक बन्द भी हो गये हो और कई एक ऐसे है जो इसी वर्ष चालू हुए है या होने की सूचना है।

जो जैन पत्र पत्रिकाये भूतकाल मे अल्पाधिक समय तक चालू रहकर अब बंद हो चुकी है उनकी सूची निम्न प्रकार है .—

अहिंसा (बनारस), आत्मानन्द, आत्मानन्द जैन पत्रिका; आदर्श, आदर्श जैन, आदर्श जैन चरित्र, आदर्श जैन चरित माला (अम्बाला), आनन्द, उत्कर्ष, ओसवाल, ओसवाल अभ्युदय, कच्छी जैन मित्र, काव्याम्बुधि, कुमार, खडेलवाल जैन, गोग्रास, गोला पूर्व जैन, चन्द्र प्रकाश, चन्द्र सागर, छात्र (मेरठ), जागृति, जाति प्रबोधक (झांसी), जाति प्रबोधक (आगरा), जिन वाणी (बगला, कलकत्ता), जिन वाणी (हि०), जिन विजय (कन्नड), जीमालाल प्रकाश, जैन; जैन आदर्श, जैन सघाससार, जैन एडवकट, जैन कुमार (मेरठ), जैन जगत, जैन जागृति, जैन जीवन, तत्त्व प्रकाशक, जैन तत्त्व प्रवेशक, जैन दर्शक, जैन दिवाकर, जैन धर्म प्रकाश, जैन धर्म ज्ञान दीपक; जैन धर्मोदय, जैन नारी हित

कारी, जैन पत का (कलकत्ता), जैन पताका (अहमदाबाद), जैन पत्रिका, जैन प्रकाश; जैन प्रकाशक, जैन प्रदीप (उर्दू-देव बन्द), जैन प्रभात, जैन प्रभाकर (बनारस), जैन प्रभाकर (लाहौर), जैन प्रभादर्श, जैन प्रबोध, जैन प्रभाव, जैन बन्धु (हिंदी), जैन बधु (मराठी); जैन बधु (कन्नड), जैन भाग्योदय, जैन भास्कर, जैन मार्तण्ड (मराठी) जैन मार्तण्ड (हिंदी), जैन मुनि, जैन युवक, जैन रत्नमाला, जैन रिव्यु जैन वर्तमान, जैन वारविलास (मराठी), जैन विजय, जैन विजय रत्नंग, जैन विद्या, जैन विद्या दानोपदेश प्रकाश (मराठी), जैन विवेक प्रकाश, (श्वेताम्बर- भ्युदय), जैन शासन, जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स हेरल्ड, जैन समाचार (दो), जैन समाज, जैन समाज सुधारक (मद्रास, जैन समालोचक, जैन साहित्य संशोधक जैन सिद्धान्त, जैन सुधारक, जैन सुधारस, जैन हितेच्छु (दो), जैन हितैषी, जैन हित उपदेशक (उर्दू), जैन ज्ञान प्रकाश; जैनी (देहली), जैनोदय, जैसवाल जैन, तरणतारण, तरुण जैन, दशा श्रीमाली हितेच्छु, देश हितैषी, देशभक्त, धर्मादिवाकर, धर्मध्वज, धर्माभ्युदय, नारी हितकारी, नुक्ता, पद्मावती पुरवाल, पद्मावती संदेश, प्यारी पत्रिका, परवार बन्धु, परवार हितैषी, प्रगति (मराठी), प्रजा बधु, प्रभात, प्रभावना, प्रवचन वचनामृत, पल्लीवाल जैन; पुण्य भूमि, पोल पत्रिका, बुद्धि प्रभा; भारत भानु (पूना), भारतभानु (सिरोही), भारत हितैषी, महिला भूषण, मधुकर, मारवाडी ओसवाल, मारवाडी जैन सुधारक, मुनि, रतलाम टाइम्स, रंगीला, वन्दे, जिनवरम (मराठी), विजय धर्म प्रकाश, विनोद, विविध विचार माला, विश्व बन्धु, वीर वाणी, वीर संदेश, वीशा श्री माली हितेच्छु, श्रावक, श्राविका सुबोध, श्री वर्द्धमान, श्वेताम्बर जैन, श्वेताम्बर स्थानकवसी कान्फ्रेन्स प्रकाश, सत्यवादी, सत्य संदेश, सत्योदय सद्धर्म; सद्धर्म भास्कर, सनातन जैन, समालोचना, स्याद्वाद केशरी, स्याद्वाद सुधा, स्याद्वादी सर्वार्थ सिद्धि (कनडी) सर्वोदय, स्त्री सुख दर्पण, सार्वधर्म, सैतवाल जैन; सैतवाल जागृति, हिन्दी जैन, ज्ञान प्रकाश, हिन्दी समाचार, हूमड़ बन्धु, सम्यक्त्वधक कच्छी जैन, कच्छी दशा ओसवाल दर्पण, प्रकाश कच्छ, महावीर (पूना), महावीर (सिरोही), समालोचक।

उर्दू पुस्तकें

अग्रवाल वंसावली—ले० सुमेर चन्द जैन अग्रवाल, प्र० हीरालाल पन्ना लाल जैन देहली, पृ० ४०, व० १६२५।

अटकल पच्चू (ट्रैक्ट हिस्से ५)–ले० व प्र० बा० मामचन्द राय जैनी; देहरादून।

अद्भुत राम चरित्र—ले० पति नैनसुखदास, प्र० ला० होशियार सिंह सुनपत, पृ० ३६, व० १६१५, आ० अव्वल।

अनमोल मोती—ले० शभूनाथ जैन कांधलवी, प्र० जोतीप्रसाद जैन देव बद, पृ० ५२, व० १६१२, आ० अव्वल।

अनमोल रत्नों की कुंजो (हिस्सा अव्वल)—ले० बिशभरदास झंझानवी संपा० अजुध्या प्रसाद जैनी, प्र० जोहरी मल देहली, पृ० ४०, व० १६१७; आ० अव्वल।

अनमोल रत्नों की कुंजी (हिस्सा दोयम)—ले० विशभरदास झंझानवी, पृ० ६४, व० १६१८।

अनापूर्वी—प्र० संपादक "जैन" देहली, पृ० ३४।

अमोलक ऋषि महाराज की सवाने उमरी—ले० विशबरदास, प्र० बा० गुर परशाद जैन तोशाम् (हिसार), पृ० १४४ व० १६२५, आ० अव्वल।

अहिंसा—प्र० जीवदया विभाग जैन महा मडल लखनऊ, व० १६१५।

अहिंसा धर्म याने गास्पल आफ़ वर्धमान—ले० महर्षि शिववरत लाल बर्मन; प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १४४; व० १६३२।

अहिंसा धर्म पर बुजदिली का इल्ज़ाम—ले० बा० शिब लाल मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १६२८।

अहिंसा परचार–अर्थात् गोश्तखोरों के ऐतराजात का दन्दां शिकन जवाब ले० बाबू परमानंद जैन प्र० मा० नन्दलाल, पृ० ७२, आ० अव्वल।

अहिंसा याने तमाम जानवरों से बिरादराना मुहब्बत—प्र० जीव दया विभाग; जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

आदाबे रियाजत याने बाइस परीसह—ले० बा० भोलानाथ दरख्शाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० २४, व० १९२१, आ० अव्वल।

आदीश्वर भगवान श्री रिखबदेव जी महाराज का मुख्तसिर जीवन चरित्र --अनु० गोपी चन्द जंनी 'भानु'; प्र० आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला पृ० ६६; व० १९१६।

आबदार मोती—ले० शिव बरतलाल, प्र० नन्दकिशोर 'अवधूत' लाहौर, पृ० १८६, व० १९२५, आ० अव्वल।

आईनए अफआल दयानन्द (अलमारुफ तर्जुमा दया नद छल कपट दर्पण)—ले० पं० जीया लाल चौधरी, प्र० जोतिषरत्न पवित्र औषधालय फ़र्रुख नगर; पृ० २०८; व० १९२५, आ० अव्वल।

आईनए हमदरदी–ले० ला० पारसदास, प्र० खुद देहली, पृ० ३३४, व० १९१६, आ० अव्वल।

आरज़ूए खैर बाद (मन्ज़ूम)—(मेरी भावना का तर्जुमा)–ले० बा० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मडल देहली, पृ० १६; व० १९२५।

इत्तहादुल्मुखालफीन–ले० चम्पराय जैन बैरिस्टर, पृ० ३९४; व० १९२२ आ० अव्वल।

इन्सानी गिजा—प्र० जीवदया विभाग जैन महा मडल लखनऊ, व० १९१५।

ईश्वर विचार—ले० नत्थन लाल गुड़गाँवे वाले; प्र० खुद देहली, पृ० ४८; व० १९२१।

एडरेस—बा० लाल चन्द्र जैन एडवोकेट; रोहतक; सन् १९३१ ई०।

क्या ईश्वर खालिक़ है—(बतर्ज लावनी)—ले० बा० जोती परशाद;

प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १९२५ ।

कर्म और बन्धन—ले० बा० सुल्तान सिंह जैन वकील, प्र० खुद मेरठ; पृ० २८, आ० अव्वल ।

कलामे पंका—ले० ला० झुन्नुलाल लाल साहब, प्र० जैनमित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १९२५ ।

केवल ज्ञान—ले० हुकम चन्द जैनी, प्र० श्री आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ३८, व० १९१८ ।

खयालाते लताफ (अमितगति आचार्य के सामायिक पाठ का तर्जुमा)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार दरख़शा, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० २४, व० १९२८; (मनजूम)

खुलासा मजाहब—ले० बा० सुमेर चंद जैनी, पृ० २४, व० १९२० ।

खिदमत ते खल्क—ले० रा० ब० पारस दास देहली ।

ग्यारह पति हिस्सा अव्वल
ग्यारह पति हिस्सा दोयम
ग्यारह पति हिस्सा सोयम
} ले० शीतलदास जैन बी० एम०, प्र० खुद पानीपत, पृ० ३७६, व० १९२४-१९२५ ।

ज्ञान गुलशन बहार उर्फ आत्म हित कार—ले० फकीरचन्द जैन देहली, प्र० खुद पृ० ३०, व० १९२१ ।

ज्ञान सूरज उदै (दो हिस्से)—ले० बा० सूरजभान वकील; प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ६४, व० १९२५, आ० अव्वल ।

गाय की फरयाद—प्र० जीव दया विभाग जैन महामंडल लखनऊ; व० १९१५ ।

गुलजारे तखय्युल या रूबाईयात दरख़शाँ (मान तुंग कृत भक्तामर स्तोत्र का तरजुमा)—ले० बा० भोलानाथ दरख़शाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६; व० १९२५, आ० दोयम ।

गुलजारे रूहानी—सपा० मा० विशम्भरदास, प्र० कपूरचन्द हिसार; पृ० ६४, व० १९२९ ।

गुलदस्ता अकीदत—ले० चन्दूलाल जैन 'अख्तर', प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ९६, व० १९३३।

गुलदस्ता जैन धर्म—ले० विशम्भरदास जैन, प्र० खुद, पृ० ७४; व० १९०५।

गुलदस्ता जैन भजन माला—सक० बा० कस्तूरीलाल जैनी; प्र० जैन भजन क्लब बुढ़ाना, पृ० ३४, व० १९०१।

गौहर बेबहा—ले० महर्षि शिवव्रतलाल, प्र० जैन संगठन सभा देहली, पृ० १६, व० १९२६, आ० अव्वल।

चिकागो प्रश्नोत्तर—ले० विजयानन्द सूरि; अनु० व प्र० नत्थूराम जीरा (पंजाब); पृ० २५५; व० १९१५।

जल्वाए कामिल—ले० योगीन्द्र आचार्य, अनु० भोलानाथ मुख्तार दरख्शाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२९; आ० अव्वल।

जल्वाए मज़हब—ले० सुमेरचन्द जैन एकाउन्टेन्ट; प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० २; व० १९२४ आ० सोयम।

जिनेन्द्र मत दर्पन—ले० बा० बनारसीदास एम० ए०; प्र० जैन यंग मैन्स एसोसियेशन इलाहाबाद, पृ० २४।

जैन इतिहास—ले० पंडित प्रभूदयाल जैन तहसीलदार देहलवी, प्र० खुद अम्बाला, पृ० २६६ व० १९०२, आ० अव्वल।

जैन कारम फिलासफी—ले० बा० रिखबदास जैन वकील मेरठी; प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ३२, व० १९२४।

जैन कौम की तरक्की का राज़—ले० बा० दयाचन्द बी. ए., प्र० ला० सन्तराम मगनलाल साहिब अम्बाला, पृ० १६, व० १९१५।

जैन गुलदस्ता रिसाला हिस्सा अव्वल अलमारूफ जुगल विलास—ले० मु० जुगलकिशोर जैन 'मुख्तार', प्र० खुद बड़ौत (मेरठ); पृ० ४८, आ० अव्वल।

जैन तत्व दर्पन-ले० स्वामी रतनचन्द्र जी, प्र० लाला नन्नूलाल रामलाल जनी पटियाला, पृ० ५०८, व० १६१७, आ० अव्वल।

जैन तत्व परकाश—ले० लाला नथूराम; प्र० जैन कुमार सभा जीरा, पृ० ५७, व० १६१६, आ० अव्वल।

जैन दूसरों की नजर में—सक० डी० सी० ओसवाल, प्र० पी० डी० जैन मत्री श्री महावीर जैन लायबरेरी स्यालकोट, पृ० १२, व० १६१६।

जैन धर्म—ले० महर्षि शिवबरतलाल, प्र० जैन मित्रमडल देहली, पृ० १७६, व० १६२८, आ० अव्वल।

जैन धर्म (सी० एस० मेघकुमार के अग्रेजी लेख का तरजुमा)–अनु० विद्यारतन बी० ए०, प्र० लाला गुरदासचन्द्र जैन; पृ० ३६, व० १६२५, आ० अव्वल।

जैन धर्म अजलो—ले० लाला दीवानचद जैनी, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० ५६, व० १६२८।

जैन धर्म की कदामत—लेखक दीवानचंद जैनी, प्र० श्री जैन सम्मति मित्रमडल रावल पिंडी, पृ० २८; व० १६२५, आ० अव्वल।

जैन धर्म की कदामत—लेखक नत्थूराम, प्र० आत्मानद जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० २८, व० १६१७; आ० अव्वल।

जैन धर्म की अजमत—ले० बा० रिखबदास जैन मेरठी, प्र० जैन मित्र डल देहली, पृ० ३२, व० १६२६।

जैन धर्म दीगर मजहब से क्यों आला है—ले० प्रभुराम खत्री, प्र० जैन सन्मति मित्रमडल रावल पिंडी, पृ० ३०, व० १६१४, आ० अव्वल।

जैन धर्म वाले किसकी परस्तिश करते हैं—ले० बा० रिखबदास जैन मेरठी, प्र० जैन मित्रमडल देहली, व० १६२६, आ० अव्वल।

जैन धर्म वो परमातमा—ले० बा० रिखबदास जैन मेरटी प्र० जैन मित्रमडल देहली, पृ० ४८, व० १६२३, आ० दोयम।

जैन ममजहब के ५२ सूत्रों का खुलासा—लेखक ला० सुमेरचन्द जैन

एकाउन्टटेन्ट पटियाला; प्र० खुद, पृ० ६२, व०, १६२७. भा० अव्वल।

जैन मत नास्तिक मत नहीं है और जैन फिलासफा के छः जौहर—(मि० हर्बर्टवारन के अंग्रेजी लेख का तरजुमा)—अनु० चन्दूलाल जैन अख्तर; प्र० प्रेम बर्धिनी जैन सभा नजफगढ, पृ० ३२, व० १६२३, भा० अव्वल।

जैन मत सार या हिन्दु मत इखतसार—ले० ला० सुमेरचन्द जैन, प्र० खुद० पटियाला, पृ० ३२२, व १६१६, भा० अव्वल।

जैन रतन माला के तीसरे और चौथे रतन—ले० ला० नेमचन्द जैन, प्र० खुद देहली, पृ० १६, व० १६२५।

जैन वृतान्त कल्पुद्रुम—ले० शिवबरतलाल बर्मन एम० ए०, प्र० खुद लाहौर, पृ० ४८।

जैन वैराग्य शतक—अनु० मा० बिहारी लाल बी० ए०, प्र० खुद बुलन्दशहर, पृ० २४, व० १६०३।

जैन साधुओं की बरहनगी (बैरिस्टर चम्पतराय की अंग्रेजी किताब का तरजुमा)—अनु० बा० भोलानाथ मुख्तार; प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १८, व० १६३१, भा० अव्वल।

जैनियों को नास्तिक कहना भूल है—ले० हंसराज शास्त्री, अनु० हुकमचन्द जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर; पृ० ३५; व० १६२४।

जैनी आस्तिक है—ले० नत्थूराम, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० ४०, व० १६१५।

जैनी नास्तिक नहीं—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १६, व० १६१६।

जैनी नास्तिक नहीं हैं इसपर विचार—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० खुद बीरा, पृ० ३४।

जैनला—ले० बैरिस्टर चम्पतराय, प्रकाशक हीरालाल पन्ना लाल जैन देहली, मूल्य १)

डूबती नैया—ले० दीवान भज समन्दरी, प्र० जैन सोसाइटी लाहौर,

पृ० ३२, व० १९१३, श्रा० अव्वल।

तड़पदार मौत—ले० शिवबरतलाल बर्मन, प्र० जे० एम० सन्तसिंह एँड सन्स लाहौर, व० १९१६।

जबरदस्ती और खुराक—प्र० जीवदया सभा जैन महा मंडल लखनऊ, व० १९१५।

तर्दीद गोश्त—प्र० भारत जैन महा मंडल, पृ० ४०, श्रा० अव्वल।

दयानन्द कुतर्क तिमिर तरनि अलमारूफ गौहर बेबहा—ले० मुनि लब्धि विजय; प्र० लभूराम जैनी जीरा (फिरोजपुर), पृ० ११२, व० १९१०, श्रा० अव्वल।

दयानन्दी इकरार और इन्कार—ले० बुधमल पाटनी, प्र० भारत धर्म महामंडल लखनऊ, पृ० १०२, व० १९१४।

दिल्लगी का बस्ता अलमारूफ नसीहतों का गुलदस्ता—ले० ला० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० २०, व० १९१६, श्रा० अव्वल।

दुखे हुए दिल की फरियाद—ले० खैरख्वाह कौम, बा० जिनेश्वरदास 'मायल', प्र० श्री जैन उपकारक पुस्तकालय, पृ० ८, व० १९०६, श्रा० अव्वल।

देव गुरु धर्म का स्वरूप—ले० नत्थूराम जैनी प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ७०, व० १९१८, श्रा० अव्वल।

धर्म की जड़ सदा हरा—ले० दीवानचन्द ओसवाल, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ३२, व० १९१७, श्रा० अव्वल।

धर्म वीर अभागा नाटक—प्र० श्री दिगम्बर जैन उपदेशक सोसाइटी देहली, पृ० ७०, व० १ २३, श्रा० अव्वल।

नर्गीती चालें और उनके बेजा रुसूमात के बानी जैन—ले० ला० बिहारीलाल प्र० एस० सी० जैन अमरोहा, पृ० ३२, व० १९ ६।

नायाब गौहर—ले० महर्षि शिवबरतलाल बर्मन, प्र० जैन मित्रमंडल

देहली, पृ० ३२, व०, १६२६, आ० अव्वल।

नेमनाथ जी का ब्याहेला (बहर मसनवी)—ले० व प्र० बा० नवपत-राय जैनी, कैसरगज मेरठ; पृ० १६।

नौतत यानि जैन फिलासफी—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ९२, व० १९२१।

पहला महाव्रत (अहिंसा)—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री श्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट; पृ० १२, व० १९१६।

फरयाद बेघगान–ले० बा० भोलानाथ दरखशां बुलन्दशहरी।

फरायज इन्सानी–ले० बा० शिवलाल जैनी मुख्तार, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १६, व० १९३०।

फरायज इन्सानी या मनुष्य कर्त्तव्य—लेखक व० प्र० सुमेरचन्द जैन एडवोकेट अम्बाला, पृ० १११, व० १९२५; आ० अव्वल।

फैसलेजात व तवारीख मुतलिक श्री जैन दिगम्बर वार्क हस्तिनापुर–सं० प्र० बा० सुल्तानसिंह जैनी वकील मेरठ, पृ० १६, व० १९०६।

ब्रह्मगुलाल चरित्र—देखिये बैराग कौतुहल नाटक।

ब्रह्मचर्य—ले० बा० रिखबदास जैनी वकील मेरठ, प्र० जैन मित्रमंडल देहली, पृ० १०, व० १९२४, आ० अव्वल।

बारह मासा श्री नेमीश्वर भगवान व श्रीराजमती—प्र० श्री जैन धर्म भास्कर सभा रावलपिंडी, पृ० २८; व० १९८८, आ० अव्वल।

बाल बोध—ले० डी० सी० ओसवाल; प्र० मन्त्री श्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट; पृ० १२, व० १९१९।

बीर चारित्र (बतर्ज रामायन राधेश्याम)—ले० हेमराज; प्र० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा होशियारपुर; पृ० १२८; व० १९२४; आ० अव्वल।

बीर नामा (मनजूम)—ले० व० प्र० बा० भोलानाथ मुख्तार दरखशां बुलन्दशहर; पृ० ५२; व० १९१२, आ० अव्वल।

बैराग कौतूहल नाटक (हिस्सा अव्वल)—ले० ला० मंगलराय; प्र० ला०

बिहारीलाल बुलन्दशहरी; पृ० ३०, व० १९०१।

वैराग कौतूहल नाटक (हिस्सा दोयम)—ले० ला० रविचन्द्र; प्र० मा० बिहारी लाल, बुलन्दशहरी पृ० ४०, व० १९०६।

भगवान महावीर और उनका वाज—ले० बा० शिवलाल मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३३, व० १९२७।

भगवान महावीर की तालीम और उसका असर—ले० चम्पतराय जैनी बैरिस्टर, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९४१।

भगवान महावीर के जश्ने वलादत की रूएदाद—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ४८, व० १९२८।

भगवान महावीर के जीवन की झलक—ले० राय बहादुर जुगमन्दरलाल जज, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, व० १९२५, आ० अव्वल।

भगवान श्री अरिष्ट नेमिनाथ—ले० मानिक चन्द जैन; प्र० श्री जैन समिति मित्र मंडल रावलपिंडी, पृ० ३४, व० १९२८।

भजन पंकज पराग—ले० ला० मुन्शीराम; प्र० ला० रखाराम भावड़े, पृ० ३२, आ० अव्वल।

भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक—ले० व प्र० बा० न्यामतसिंह जैनी हिसार; पृ० ८८, व० १९१९, आ० अव्वल।

भोज प्रबन्ध नाटक [हिस्सा अव्वल]—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० २२, व० १९०३, आ० अव्वल।

मजमूए दिलपज़ीर—ले० बा० चन्दूलाल जैन अख्तर, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १९२५।

मरने से डर क्या—ले० जोतीप्रशाद देवबंद, प्र० खुद, पृ० १६, वर्ष १९२०।

मुशायरा मय रिपोर्ट—प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, व० १९३०।

महारानी रिखब सेना—ले० ला० हुकमचन्द जैन, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला, पृ० ४८, व० १९१७, आ० अव्वल।

मांस अहार (हिस्सा अव्वल)—ले० डी० सी० ओसवाल, प्र० मन्त्री महावीर जैन लायब्रेरी स्यालकोट, पृ० १२; व० १९१९।

मांस भक्षण निषेध [हिस्सा दोयम]—ले० बा० नानकचन्द बैरागी, प्र० जैन सभा मालेर कोटला, पृ० ४६, व० १९१३।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा अव्वल]—ले० पं० रिखबदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ५०, व० १८९९।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा दोयम]—ले० पं० रिखबदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी, पृ० ८४, व० १९००।

मिथ्यात नाशक नाटक [हिस्सा सोयम]—ले० पं० रिखबदास, प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्दशहरी; पृ० ११६, व० १९०१।

मुक्ति—ले० प्रिंस हाफ मून, प्र० डा० परशादी लाल देहली, पृ० ३२।

मुकदमा जैन मत समीक्षा—सं० प्र० बा० प्यारेलाल वकील देहली, पृ० ९१, व० १९०५।

मुरक्कअ इबरत—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ४८, व० १९३४।

मूर्त्ति पूजा मंडन—ले० पं० मेहरचन्द, प्र० जैन प्रचारिणी सभा सोनीपत पृ० ८, व० १९०६ आ० दोयम।

मेरी भावना (नज़्म)—ले० ला० मुन्नूलाल जौहरी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ८, व० १९२५ आ० अव्वल।

मेरी भावना—ले० पं० जुगलकिशोर, मुख्तार प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ११, व० १९३६, आ० शशतुम [छठी]।

मोक्ष का रास्ता—ले० मिट्ठनलाल जैन, प्र० खुद देहली, पृ० ४८, व० १९२९।

मोह जाल—ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली; पृ० ८, व० १९२४, आ० अव्वल।

योगसार मारूफ व रम्ज़े अज़ हक़ीक़त—ले० योगीन्द्राचार्य, अनु० मा०

बिहारीलाल, प्र० एस० सी० जैन बुलन्दशहरी, पृ० ३६, व० १९२१, आ० अव्वल ।

रहनुमा उर्फ जैन धर्म दरपन—ले० बा० रिखबदास बी० ए०, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२५ ।

राम चरित्र—ले० ला० भोलानाथ दरखशां, प्र० मा० बिहारीलाल, अमरोहा, पृ० १०४, व० १९०५ ।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी [न० १]—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० १६ ।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी [न० २]—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० २४ ।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी (न० ३)—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद, पृ० २४ ।

रिसाला सुखकारी—मौसूमा मुद्दआ शादी [न० ४]—ले० ला० प्रभूदयाल, प्र० खुद; पृ० १६ ।

रूहानी तरक्की का राज—ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९३५ ।

रूहानी तरक्की का राज —ले० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली, पृ० १६, व० १९३६, आ० दूसरी ।

लावनी कर्ता खंडन का फोटू—ले० ला० जोतीप्रशाद, प्र० खुद; पृ० ८, व० १९०४ ।

लुत्फे रूहानी उर्फ आत्मिक आनन्द—संपा० मा० विशम्भरदास, प्र० ला० गुरप्रशाद जैन तोशाम [हिसार], पृ० ५९, व० १९२३ ।

वर्ण या जात क्या चीज है—ले० बा० रिखबदास वकील, प्र० जैन ट्रैक्ट प्रचारक मंडल कीरतपुर, पृ० १६, व० १९१८, आ० प्रथम ।

वीर अकलंक देव—ले० ला० शेरसिंह नाज, प्र० ला० प्यारे लाल देवीसहाय देहली, पृ० ६४ ।

शास्त्रार्थ नजीबाबाद—प्र० मोहकम लाल जैन देहली, पृ० ६४ ।

शाहरा निजात (यानि जैन धर्म के मुतालिक सवालों जवाब)—अनु० बाबू ... जैन अख्तर, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, व० १९२४, आ० अव्वल ।

शुमाली हिन्द की जैन डायरेक्टरी—संपा० दीपचन्द जैन, प्र० जैन संसार आफिस देहली, पृ० ३०४, व० १९४० ।

सच्चे मजहब की इब्तदाई बातें—ले० डब्लू० जी० डाउट, अनु० पं० भगतराम शर्मा, पृ० २४, व० १९४१ ।

सच्चे मोतियों की लड़ी—ले० श्रीमती पार्वती देवी, संपा० ला० जीवानन्द, प्र० जीवदया फंड रावलपिंडी, पृ० २४, व० १९२१, आ० दोयम ।

सनातन जैन दर्शन प्रकाश (अलमारूफ नौतत्व पदार्थ)—ले० ला० मोहन लाल वकील, पृ० ५३४; व० १९०२ ।

सप्त व्यसन या हफ्त अयूब—ले० सुमेरचन्द जैन एकाउन्टेंट, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १९२५ ।

स्तुति व प्रार्थना—ले० व० प्र० मुन्शी रामप्रसाद 'राम'; पृ० ८, व० १९२४ ।

स्त्री शिक्षा—ले० व प्र० दयाचन्द्र गोयलीय जयपुर; पृ० ५०, व० १९०९ ।

संकट हरन या मुसद्दसे वीर—ले० दिगम्बर प्रशाद मुख्तार, प्र० जौहरी मल जैन सर्राफ देहली; पृ० १६, आ० दोयम ।

सरगुजश्ते कौम (मनजूम)—ले० बा० भोलानाथ मुख्तार; प्र० जैन संगठन सभा देहली, पृ० १६, व० १९२५ ।

स्वामी दयानन्द और वेद—ले० स्वामी कर्मानन्द; प्र० दिगम्बर जैन शास्त्रार्थ संघ अम्बाला छावनी; पृ० ४८, व० १९३६, आ० अव्वल ।

सहरे काजिब—ले० ला० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली पृ० ४०, व० १९२९ ।

सिल्के सद जवाहर[यानि जैन वैराग शतक मनजूम]—ले० प्र० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० ३२, १९२६ ।

सीता जी का बारह मासा—ले० यती नैन सुखदास, अनु० व० प्र० मा० बिहारी लाल बुलन्द शहर, पृ० ३२, व० १८६० ।

सुख कहां—ले० ला० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० मुसद्दीलाल बाबूराम शामली, पृ० ८, व० १६२३ ।

सुख कहाँ—ले० ला० जोतीप्रशाद जैनी, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, पृ० ८; व० १६२४, आ० अव्वल ।

सुबह सादिक अलमारूफ अनवारे हक़ीकत—ले० फकीर माइल, प्र० बा० महाबीर प्रशाद डाक वाले देहली, पृ० ४० ।

सूखा हुआ चमन कैसे हरा हो सकता है यानि हम और हमारा फर्ज—ले० नत्थूराम जैनी, प्र० आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी अम्बाला शहर, पृ० ४०, व० १६२१ ।

हकीकते दुनिया (नज्म)—लेखक बा० भोलानाथ दरखशा, प्र० जैन मित्र मण्डल देहली, पृ० १६, व० १६२७, आ० अव्वल ।

हकीकत माबूद (नज्म)—ले० बा० भोलानाथ दरखशाँ, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १६२८ ।

हनुमान चरित्र (हिस्सा अव्वल)—ले० व प्र० मा० बिहारी लाल बुलन्द-शहरी, पृ० १४८ ।

हनुमान चरित्र (हिस्सा दोयम)—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्द-शहरी, पृ० १०२ ।

हनुमान चरित्र (हिस्सा सोयम)—ले० व प्र० मा० बिहारीलाल बुलन्द-शहरी, पृ० ६२, व० १६०३; आ० अव्वल ।

हमदर्दे मुल्क—ले० दिगम्बर दास जैन, प्र० खुद, पृ० ८०, व० १६२६ ।

हमारा रूहानी रहबर यानि जैन तीर्थंकर श्री महाबीर स्वामी का मुख्तसिर जीवन चरित्र—ले० दीवानचन्द ओसवाल, प्र० जैन ट्रैक्ट सोसाइटी लाहौर, पृ० ३२, व० १६१७ ।

हयाते बीर (नज्म)—ले० दबीरे कौम ला० भोलानाथ मुख्तार,

प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १६२८।

हयाते रिषभ (नज्म)—ले० दबीरे कौम ला० भोलानाथ मुख्तार, प्र० जैन मित्र मंडल देहली, पृ० १६, व० १६३१, आ० अव्वल।

—)o(—

मराठी भाषा की पुस्तकें

अन्य धर्मापेक्षा जैन धर्मातील विशेषता—अनु० श्री आनन्द ऋषि जी, पृ० ३६, व० १९२८।

अमित गति श्रावकाचार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ४१५, व० १९१४।

आत्मोन्नतिचां सरल उपाय—ले० आनन्द ऋषि, पृ० ५१, व० १९२७।

उपसका चार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे; पृ० ६४, व० १९०४।

उपासकाध्ययन (रत्न करड श्रावका चार)—अनु० नाना रामचन्द्र नाग, पृ० २४, व० १९२२।

कुन्दा कुन्दाचार्यांचे चरित्र—ले० तात्या नेमिनाथ पागल, पृ० २७, व० १९०६।

क्रिया मञरी—अनु० कलाप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० १२८, व० १९०८।

गोमट्टसार (कर्म कांड)—अनु० नेमचन्द्र बाल चन्द्र गाधी, पृ० ५२३, व० १९२८।

जैन दर्शन व जैन धर्म—ले० हर्बर्ट वारेन, अनु० आनन्द ऋषि, पृ० ३२, व० १९३८।

जैन धर्मामृत सार (२ भाग)—ले० नेमिचन्द्र सीताराम, पृ० ७६, व० १८२९।

जैन धर्मांचे अहिंसा तत्त्व—अनु० आनन्द ऋषि, पृ० २२ व० १९२९।

जैन धर्मा विषयी अजैन विद्वानाचे अभिप्राय (भाग १)—अनु० आनन्द ऋषि, पृ० ६७; व० १९२८।

जैन धर्मा विषयी अजैन विद्वानाचे अभिप्राय (भाग २)—अनु० आनन्द ऋषि; पृ० ३५; व० १९२८।

जैन धर्मादर्श—ले० रावजी नेमचन्द शहा सोलापुर, पृ० २३२; व० १६१० ।

जैन धर्म शिक्षावली (३ भाग)—ले० नाना राम चन्द्र नाग ।

जैनार्णिका चार—अनु० कलप्पा भरमाप्पा निटवे; पृ० ७५६; व० १६१०

द्रव्य संग्रह—अनु० प० पन्नालाल बाकलीवाल, पृ० ८५, व० १६०० ।

दश भक्तिः—अनु० पं० जिनदास; पृ० ३७०, व० १६२१ ।

द्विज वदन चपेट—ले० अज्ञात, पृ० २४ ।

धर्मशर्माभ्युदय—अनु० रा० रा० कृष्णा जी नारायण; पृ० ७३ ।

नन्दीश्वर भक्ति—अनु० पासू गोपाल फडकुले, पृ० ४२, व० १८६४ ।

पद्म नन्दि पंच विंशातिका—अनु० गाधी वह्नाल चन्द कस्तूर चन्द, पृ० २२१; व० १८६८ ।

प्रतिष्ठा तिलक—अनु० अज्ञात, पृ० ८११, व० १६१४ ।

प्रश्नोत्तर माणिक्य माला—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६४, व० १६०४ ।

पात्र केसरी स्तोत्र—अनु० प जिनदास शास्त्री; पृ० ८८, व० १६२० ।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पांगल ।

भाषण—श्रीमती राजुबाई गुजेटीकर, अध्यक्षा जैन महिला परिषद अधिवेशन सागली, सन् १६२२ ई० ।

महापुराण—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ३२७०, व० १६१८ ।

मराठी जैन पद्यावली—सम्र० नथमल चान्द मल जी, पृ० १५, व० १६२६ ।

महावीर चरित्र—ले० अज्ञात, पृ० १३७, व० १६३१ ।

मेरी भावना—अनु० रेखचन्द तुलजाराम शहा, पृ० १६; व० १६२८ ।

मूल प्रतिक्रमण—अनु० जिनदास शास्त्री, पृ० ४८, व० १८६७ ।

योग प्रदीप—अनु० अज्ञात, पृ० ३४, व० १८६७ ।

रत्न करड श्रावकाचार—अनु० अज्ञात, पृ० ४६ ।

रक्षा बंधन कथा—ले० मुंशी नाथूराम लमेचू, पृ० २४, व० १६१२।

रयणसार—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ३६, व० १६०७।

लघु अभिषेक—अनु० बासू गोपाल फडकुले, पृ० ४३, व० १६०५।

व्यंतरांचा आराधने पासून नुकसान—ले० हीराचन्द नेमचन्द दोशी, पृ० २४, व० १६१७।

वैराग्य शतक—अनु० आनन्द ऋषि जी, पृ० ३५, व० १६२७।

श्रावकाचार—अनु० बाबगौंडा भुजगौंडा पारीख, पृ० ३२८, व० १६४३।

श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र—अनु० जिनदास शास्त्री, पृ० ८८, व० १६२०।

सज्जन चित्त वल्लभ—अनु० रा० रा० बालचन्द कस्तूरचंद, पृ० १०, व० १८६७।

समाधि शतक—अनु० रावजी नेमचद शाह, पृ० १२४, व० १६११।

सागर धर्मामृत—अनु० कलप्पा भरमप्पा निटवे, पृ० ६२८, व० १६१२।

सागार धर्मामृत—अनु० अज्ञात, पृ० ३१३।

सामायिक सार्थ—अनु० आर. एन. शाह, पृ० ४६, व० १८६.।

सुभाषितावलिः सार्थ—अनु० रा० रा० बालचन्द कस्तूर चन्द, पृ० ६८, व० १८६७।

स्वयभू स्तोत्र—अनु० पं० जिनदास शास्त्री, पृ० ३१०, व० १६२०।

—•—

गुजराती भाषा की पुस्तकें

अध्यात्म महावीर—ले० गांधी गोकुलदास नानजी, अनु० हरिलाल जीवराज, पृ० ४८; व० १६३२।

आध्यात्मिक विकास क्रम—ले० पं० सुखलाल संघवी; पृ० ८०, व० १६२४।

अनित्य पञ्चाशत—अनु० हरिलाल जीवराज भाई, पृ० ६६, व० १६४७

अमृत वाणी—ले० कानजी स्वामी, पृ० ३०

अलोचना पाठ सटीक—अनु० भाईलाल कपूरचद, पृ० २४; व० १६०३

आत्म ज्योति (भाग १)—ले० श्रीमद्राजचंद्र, पृ० ५२, व० १६३६ ।

आत्म ज्योति (भाग २)—ले० श्रीमद्राजचन्द्र, पृ० २०८, व० १६३८ ।

आत्म प्रभा—ले० अज्ञात, पृ० ५२; व० १६३७ ।

आत्म सिद्धि—ले० श्रीमद्राज चंद्र, पृ० २१३, व० १६१८ ।

आत्म सिद्धि शास्त्र—ले० श्रीमद्राजचन्द्र, पृ० २५६, व० १६३७ ।

आनन्दघन देवचन्द्र चौबीसी—ले० आनन्दघन जी, पृ० ६४ ।

आपणे आपणी स्थितिमा शुं संतोष राखवो जोइए—संपा० मूलचंद किशनदास, पृ० ४८, व० १६१४ ।

ईश्वर कर्त्ता खंडन—ले० अज्ञात, पृ० ४८, व० १६१० ।

उत्तर हिन्दुस्थान मां जैन धर्म—ले० चीमन लाल जयचन्द शाह; अनु० फूलचन्द हीराचन्द, पृ० ३८७, व० १६३७ ।

कुन्द कुन्दचार्य चरित्र—अनु० मूल चन्द किशन दास कापड़या; पृ० ५३, व० १६१३ ।

खोराक अने तन्दरुस्ति—ले० छगन लाल परमा नन्द दास, पृ० ३२, व० १६१३ ।

ग्रंथ परीक्षण—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० दोशी जीवराज गौतम पृ० १२३, व० १६१५ ।

जैन कौण थई सके—ले० प० जुगल किशोर मुख्तार, अनु० मूल चन्द किशनदास, पृ० १८; व० १६३२ ।

जैन गुर्जर कविओ (प्रथम भाग)—ले० मोहन लाला दुलीचन्द देशाई, पृ० ६५६; व० १६२६ ।

जैन गुर्जर कविओ (द्वितीय भाग)—ले० मोहन लाल दुलीचन्द देशाई, पृ० ७८८, व० १६३१ ।

जैन दर्शन—ले० मुनि न्यान विजय, पृ० ११७, व० १६१८,

जैन दृष्टिए ब्रह्मचर्य विचार—ले० प० सुखलाल व पं० बेचर दास, पृ०

७१, व० १६३१।

जैन धर्मनी माहिती—ले० हीरा चन्द नेमचन्द; अनु० हर जीवन रामचन्द शाह, पृ० ८६, व० १६११।

जैन वस्तीनी वर्तमान दशा—ले० फूलचन्द हरिचन्द, पृ० ६८, व० १६२८।

जैन साहित्यनी संक्षिप्त इतिहास—ले० मोहन लाल दुलीचन्द देसाई, पृ० १०८०, व० १६३३।

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका—ले० पं० गोपाल दास बैरया, अनु० हरि लाल जीवन राज; पृ० २२४, व० १६३८।

जैन ज्ञान महोदधि—संपा० त्रिभुवन दास, पृ० ५२; व० १६२०।

जीव विचार—लेखक दोशी नाथा लाल सौभाग्य चन्द्र, पृ० ४८, व० १६१४।

तत्वार्थ सूत्र—टी० पं० सुखलाल, पृ० १४४, व० १६३०।

त्रेपन क्रिया विवरण—ले० मूल चन्द्र किशन दास कापड़िया, पृ० २०, व० १६१६।

देव कुल पाटक—ले० विजय धर्म सूरि, पृ० २४, व० १६१५।

धर्म प्रबोधिनी—अनु० भाई लाल कपूर चन्द, पृ० ४६, व० १६०६।

पंच कल्याणक पाठ—अनु० मूलचन्द किशन दास, ३१; व० १६११।

पंचमी महात्म्य—अनु० लाल चंद्र भगवान दास, पृ० ४२, व० १६२०।

पंचेन्द्रिय संवाद—ले० जीवन लाल किशन दास, पृ० ४८, व० १६११।

पर्युषण क्षमापण—ले० कानजी स्वामी; पृ० ४८, व० १६३२।

प्रकरण माला—(विविध संग्रह)—पृ० ४३२, व० १६०८।

प्रतिष्ठा कल्प—पृ० ४८।

प्राकृत व्याकरण—ले० पं० बेचरदास, पृ० ४५३, व० १६२५।

प्राचीन दिगम्बर अर्वाचीन श्वेताम्बर—ले० तात्या नेमिनाथ पांगल, पृ० ३६, व० १६११।

पवित्रताने पंथ—ले० मणिलाल नथुभाई दोशी, पृ० १२८, व० १९२७।

बाल बोध जैन धर्म (२ भाग)—अनु० मूल चन्द किशन दास, पृ० २३, व० १९१५।

बुद्ध अने महावीर—अनु० नरसिंह भाई पटेल, पृ० ५८, व० १९२५।

भगवान महावीर—ले० अज्ञात, पृ० १२, व० १९३४।

भट्टारक मीमाँसा—ले० मूलचन्द किशन दास कापड़िया, पृ० ४८, व० १९११।

भद्रबाहु संहिता—अनु० भीमसिंह माणेक, पृ० २२०, व० १९०३।

मनोरमा—अनु० मूल चन्द किशन दास, पृ० १०४, व० १९११।

मुनि दिग्दर्शन—ले० अज्ञात, पृ० १६, व० १९१०।

मोक्ष शास्त्र (तत्त्वार्थ सूत्र)—टी० सेठ राम जी माणेकचन्द दोशी, प्र० जैन स्वाध्याय मदिर ट्रस्ट सोनगढ, पृ० ९००; व० १९४७।

राज्य प्रश्न—ले० अज्ञात, पृ० ३८४; व० १९१७।

रूप सुन्दरी—अनु० मूल चन्द किशन दास कापडिया, पृ० ६६, व० १९१४।

वनस्पति पुरातन महत्त्व—ले० छगनलाल परमानन्द; पृ० ३३।

वैराग्य रत्न माला—ले० अज्ञात, पृ० २४।

श्रावका चार (पद्म नन्दि कृत)—अनु० मगन बहेन, पृ० ४३, व० १९०७

श्राविका सुबोध—अनु मूलचन्द किशन दास, पृ० १२०, व० १९१४।

श्रीमद्राजचंद्र (२ भाग)—ले० सपा० मनसुख लाल किरत चन्द्र; पृ० ८०८; व० १९२५।

श्री महावीर जीवन—ले० सुशील, पृ० १२८, व० १९१४।

विस्तार शील रक्षा—अनु० कुँवर मोती लाल रांका, पृ० ४०; व० १९१६।

शील सुन्दरी रास—ले० शादगाकुला सेवकदास, संपा० मूलचन्द किसनदास, पृ० ३६, व० १९११।

शुँ ईश्वर जगत्कर्त्ता छे—अनु० मूलचन्द किसन दास, पृ० १६, व० १६११ ।

सम्यग्ज्ञान दीपिका—अनु० शाह सोमचन्द अमथालाल कलोल, प्र० स्वाध्याय मंदिर सोनगढ़, पृ० १७६, व० १९४७ ।

समय सार—अनु० कानजी स्वामी, व० १९४६ ।

समय सार—अनु० हिम्मत लाल जेठा लाल शाह, पृ० ६४०, व० १९४० ।

संवेगद्रुम कंदली—लें० विमला चार्य, अनु० अज्ञात, पृ० २१, व० १९१८ ।

समाधि मरण पत्र—ले० पं० गणेश प्रसाद वर्णी, अनु० गोगियालाल छोटे लाल, पृ० ३३ ।

साध्वी सुदर्शना नाटक—ले० मोहन लाल मथुरा दास शाह, पृ० ६८, व० १९३१ ।

सुबोध पद्य रत्नावली—ले० अनु० अज्ञात पृ० ६४, व० १२१ ।

सूरीश्वरअनेसम्राट—लेखक विद्याविजय, पृष्ठ ४९७, व० १९१९ ।

हेम चन्द्राचार्य—लें० धूमकेतु, पृ० २३४, व० १९४० ।

—o—

बंगला भाषा का जैन साहित्य

अनेकान्त वाद—ले० प्रो० सात कौड़ी मुखर्जी; प्र० विश्वकोष ।

आचार्य जिन सेन—ले० शरत्चन्द्र घोषाल एम० ए० बी० एल०। प्र० जिन वाणी ।

जिनेन्द्र मत दर्पण—अनु० उपेन्द्रनाथ दत्त ।

जीव—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य एम० ए० बी० एल०, प्र० जिनवाणी ।

जैन इतिहास समिति—अनु० ललित मोहन मुखोपाध्याय ।

जैन कथा—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य ।

जैन तत्त्वज्ञानओ चारित्र—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद् काशी ।

जैन तत्त्वसार संग्रह—अनु० सपा० ईश्वरचन्द्र शास्त्री ।

जैन मिरत्न—ले० प्रो० चिन्ता हरण चक्रवर्ती काव्य तीर्थ, प्र० भारत वर्ष ।

जैन दर्शनेआत्मवृत्ति निचय—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य संवाद ।

जैन दर्शनने कार्मवाद–ले० हरिसत्य भट्टाचार्य प्र० जिनवानी ।

जैन दर्शने धर्मओ अधर्म–ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका ।

जैन दृष्टिए ईश्वर—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिन वानी ।

जैन दिगेर तीर्थकर—ले० अमृतलाल शील, प्र० मानसी औ मर्म वानी ।

जैन दिगेर दैनिक षटकर्म–ले० प्रो० चिन्ता हरण चक्रवर्ती, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका ।

जैन दिगेर षोडश संस्कार—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० विश्ववानी ।

जैन धर्म—लै० रामदास सेन, प्र० ऐतिहासिक रहस्य पत्रिका ।

जैन धर्म—ले० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद काशी ।

जैन धर्म—अनु० ०पेन्द्रनाथ दत्त (लो०मा० तिलक के लेख का अनुवाद), प्र० बगीय सर्व धर्म परिषद काशी ।

जैन धर्म—ले० प्रो० अमूल्यचरण, प्र० नव्यभारत ।

जैन धर्मेनारीर स्थान–ले० प्रो० सात कोड़ी मुखर्जी, प्र० रूपनन्दा ।

जैन धर्मेर वैशिष्टय–ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० भा० दिग० जैन परिषद बिजनौर ।

जैन न्याय–ले० स्व० हरिहर शास्त्री, प्र० बंगीय साहित्य परिषद ।

जैन पद्म पुराण—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती; प्र० बंगबिहार धर्म परिषद ।

जैनपुराणे वारार्तिकूपाचरित्र—ले० स्व० हरिहर शास्त्री

जैन पराणे श्रीकृष्ण—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० जिनवानी ।

जैन पुरुष काहिनी—ले० स्व० नगेन्द्रनाथवसु, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन मत—ले० रामदास सेन, प्र० ऐतिहासिक रहस्य पत्रिका।

जैन सम्प्रदाय—ले० संपादक उद्बोधन, प्र० उद्बोधन।

जैन सामायिक पाठ स्तोत्र—अनु० उपेन्द्रनाथ दत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

जैन साहित्यो नाम संख्या—ले० विभूति भूषणदत्त, प्र० बंगीय साहित्य परिषद पत्रिका।

जैन सिद्धान्त दिग्दर्शन—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बंगीय सर्व धर्म परिषद काशी।

द्वादशानु प्रेक्षा—ले० शरच्चन्द्र घोशाल, प्र० जिनवानी।

दीपमालिका—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० एजुकेशन गजट।

दीपावली ओ भ्रातृ द्वितीया पर्व—ले० शिवचन्द्र शील; प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

नीति वाक्यामृत—टी० ईश्वरचन्द्र शास्त्री।

परेशनाथ—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती; पं० शिशुमाथी

प्रमाणाथ—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

पार्श्वनाथ चरित्र—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० तत्त्वबोधिनी।

पुरुषार्थ सिद्धि उपाय—अनु० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० बंग विहार अहिंसा धर्म परिषद।

बौद्ध ओजैन साहित्ये कृष्ण चरित्र—ले० रमेशचन्द्र मजुमदार; प्र० पंच पुष्प पत्रिका।

भगवान पार्श्वनाथ—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिनवानी।

भारतीय दर्शन समूहे जैन दर्शनेर स्थान—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य, प्र० जिनवानी।

महामेघवाहन खारवेल—ले० हरिसत्य भट्टाचार्य प्र० जिनवानी।

महावीर – ले० मतिलालराय, प्र० युगगुरु।

रत्नावंधन (उपाख्यान)—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० एजुकेशन गजट।

लिच्छवि जाति—

विजय धर्म सूरि—ले० अमूल्य चरण विद्याभूषण, प्र० 'वाणी'।

श्रावक दिगेर आचार—अनु० हरिचरण मिश्र, प्र० श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता।

स्याद्वाद—ले० प्रो० हरिमोहन भट्टाचार्य, प्र० साहित्य परिषद पत्रिका।

सार्व धर्म—अनु० उपेन्द्रनाथदत्त, प्र० बगीय सर्वधर्म परिषद काशी।

हिन्दुओ जैन काल विभाग—ले० प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, प्र० 'कायस्थ समाज' पत्रिका।
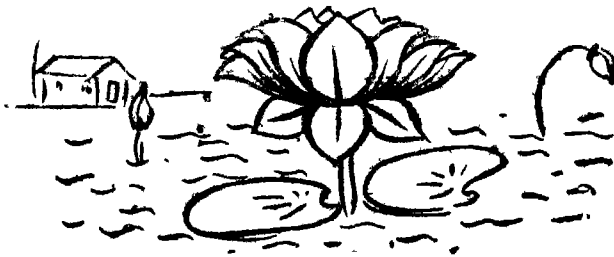
Jaina Literature in English

Abhidhana Chintamani of Hem chandra—Ed. Ram Das Sen

Account of the Jains—C Mackenzie

Account of the Jains in India—Sultan Singh Jaini

Account of the Jain temples on MountAbu—A. Burnes.

A Comparative Study of the Indian sceience of Thought from the Jaina Stand point—Harisatya Bhattacharya.

A complete Digest of Cases with Jain Law—Champat Rai Bar-at-law,

Address at the tenth anniversary of Syadvada Jain Mahavidyalaya—T K Laddu,

Adhyatma Tatwa-aloka—Trad. & Ed. Nyaya Vigaya and Moti Chand Mehta

A Descriptive Catalogue of Sanskrit Mss. in the Library of the Calcutta Sanskrit College-vol, X Jaina Manuscripts—Harishkesha Sastri and Nilamani Chakravarti.

A Dictionary of Jaina Biography—Umrao Singh Tank.

Against Animal Sacrifice—Krishnagiri B. Rao.

A message of Peace to a World full of unrest—Sri Tulse Ramji.

Akbar and Jainism—Ramaswami Ayengar.

A Jaina Account of the End of the Vaghelas

of Gujrat—G. Buhler

A Lecture on Jainism—1902. Benarsi Das M. A.

A Literary Bibliography of Jaina Omnasticon—Dr. John Klatt.

An Alphabetical list of Jain Mss. in the Oriental Library of the A. S B.—

Animal Protection—Hari Ram.

Amitgati's Subhasita Samdoha—R. Sehmidt J. Hertel.

An Insight into Jainism—Champat Rai Bar-at-law,

An Insight into Jainism—Rikhar Das Jaini B A

An Introduction to Jainism—A. B. Lathe.

An Epitome of Jainism—Puran Chandra Nahar & K. C. Ghosha.

Andhra Karnata Jainism—B Sheshagiri Rao

Ancient India—(4 Vols.)—T L Shah.

Anekartha-Sangraha of Hem Chandra—Ed Ts. Zachariae.

A Pandit's Visit to Gaya (1820)—J. Burgess.

Apbhramsa Literature—Prof. Hira Lal Jain

A Peep Behind the Veil of Karma—C R Jain.

Ardha Magadhi Reader—Benarsi Das M A

A Review of the Heart of Jainism—J. L. Jaini Bar-at-law.

Antagada dasao and Anuttara Vavaiya Dasao—Ed. L D Barnett.

Appreciation and Reviews—Pub D. J. Parishad Publishing House, Delhi.

A Short History of the Terapanthi Sect of the Swet order Jains—Chhogmal Choprah.

A Scientific Interpretation of Christianity—C. R. Jain.

Ashta Pahuda or Eight Presents—Trad. Jagat Prasad.

Atmanu-shasana—Trad. J. L. Jaini.

Atma Dharma— C. R. Jain.

Atma Ramayana—C. R. Jain.

Atma-sidhi – C. R. Jain.

A Treatise on Jain law and Usages—Padma Raj Jain.

AuPatika Sutra—Ed. E. Leumann.

Bhadrabahu and Sravan-bel-gola—Lewis Rice.

Bhadrabahu, Chandra Gupta and Sravan-bel gola—J F. Fleet.

Bhavis-yatta-kaha—Ed. Trad C D. Dalal M A.

Bright Ones in Jainism—J. L Jaini.

Bhagwan Mahabir=Kamta Prasad Jain.

Catalago dei manaseritti Gianici di Firenze (Florentine Jain manuscripts)—F. L. Pulle.

Catalogue of English books in the Jain Sidhant Bhavan Arah—Suparswa Das.

Catalogue of Indian Collections in the Museum of Fine Arts Bostan, part IV—'Jaina Paintings and Manuscripts'—Dr. A.K. Coomarswami.

Catalogue of Mss. in the Jain Bhandars, Jaselmere—C D. Dalal.

Chandra-Prabha-charitra of Virnandin—Ed. M. M. Pt. Durga Prasad.

Contribution of Jainism to Philosophy, History and Progress—V. R. Gandhi.

Cosmology Old and New—Prof. G. R. Jain M. Sc.

Christianity Rediscovered—C. R. Jain.

Das Mahanisitha sutta—Dr. Walthur Sehubring.

Das Kalakacharya Kathanakam (German)—Dr. H. Jacobi.

Der Jainismus (German)—Dr. H. V. Glasenepp.

Desi-nama-mala of Hemchandra—Ed. R. Pischel & G. Buhler.

Die indische secte der Jaina (German)—G. Buhler.

Die sekte der Dschains (Jains)—(German)—O. Feistmantel.

Diet and Health—Chhagan Lal Parmanand Das Nanavati,

Digambara Jain Iconography—James Burgess C. I. E.

Digambara Jains—G. Buhler

Discourse Divine—C. R. Jain.

Divinity in Jainism—Harisatya Bhattacharya

Djainisme—Sylavan Levy.

Doctrines of Jainism—Rikhab Das.

Dr. Hermann Jacobi on Jainism—H. Jacobi.

Dravya Sangraha—Ed. & Trad. S C. Ghsal M. A. B. L.

Essai de Bibliographie Jaina (French)—A. Guerinot.

Essays and Papers of Dr. A. N. Upahhye (9,—Dr. A. N. Upadhye.

Extracts from the Journal of Col. Mackenzies. Pandit—J. Burgess.

Faith, Knowledge and Conduct—C. R. Jain.

First Principles of the Jaina philosophy—H. L. Jhaveri.

Four and Twenty Elders—C. R. Jain.

Fragments from an Indian Student's Diary—J. L. Jaini.

Gems of Islam—C. R. Jain.

Gadya-chintamani of Vadibhasimha—Ed. Trd. S. Kuppuswami Sastri.

Geneological Tree illustrating the Chronology of Jain Religion—

Glimpses of a Hidden Science—C. R. Jain.

Gommat Sar (Jiva kand)—Ed. & Trad. J. L. Jaini.

Gommat Sar (Karma Kand Pt. I)—Ed. & Trad. J. L. Jaini.

Gommat Sar (Karma Kand Pt. II)—Ed. & Trad. Br. Sital Prasad and Ajit Prasada.

Hathi-gumpha Inscription of Kharvela—Ed. K. P. Jayaswala.

Heritage of the last Arhat—Dr. Charloti Krauze.

Historical Facts about Jainism—Magan Lal shah.

Historical *Jainism*—Dr. Bool Chand.

History and Literature of Jainism—U. D. Barodia.

History and Religion of the Jains—V. R. Gandhi.

History of Kanarese literaure—E. P. Rice.

How to make your life sublime—B. D Jain.

Humanitarian Outlook—M. K. Devaraj, M. A., B. L.

Immortality and Joy—C. R. Jain

Inscriptions at Sravan Belgola—Lewis Rice.

Inscriptions of Sravan-Bel-gola—R Narsimhachariar.

Inscriptions of Udayagiri khandgiri—Pt Bhagwan Lal Indra ji.

Inscriptions of Udayagiri kaand Jine—Dr. K. P. Jayaswal.

Interpretation of Jaina Ethics—Dr Charlotte Krauze.

Introduction to True Religion—W. G Trott.

Indian Psychology of Perception—Dr J N Sinha, Meerut College

Indian Realism—Dr J N. Sinha, Meerut College.

Jain Bibliography No. 1—R. B Paras Dass

Jaina Bibliography—B. Chhote Lal Jain.

Jain Conceptions—C. R. Jain.

Jain culture—Pub. D. J. Parisad Publishing House Delhi.

Jaina Gem Dictionary—J. L Jaini.

Jaina Historical Studies—.U. S. Tank

Jain Confession—C. R. Jain.

Jaina Monuments of India—T. N. Ram Chandran, M. A.

Jaina Literature in English—Jyoti Prasad Jain, M. A, LL. B.

Jaina Iconography—B C Bhattacharya.

Jaina Iconography—H. D. Sankalia M. A., Ph. D.

Jaina Inscriptions—P. C Nahar.

Jaina Insariptions at Sravan-Bel-Gola—L. Rice

Jaina Itihas Series no. 1 (History of Gwaliar)—Benarsi Das M. A.

Jain Jatakas—Prof A. C. Vidyabhushan.

Jain Jatakas—L. Benarsi Das M. A.

Jaina Law—J. L Jaini, Bar-at-law, Chief Justice Indore.

Jaina literature in Tamil—Prof A. C. Chakravarti, M. A., I. E S.

Jaina Logic—C. R Jain

Jain Penance—C, R Jain.

Jaina Psychology—C R. Jain

Jain Puja—C R Jain.

Jaina References in the Budhist literature—K. P. Jain.

Jain References in Dhamma-Pada. K P. Jain.

Jain Sutras—Ed. & Trad. Dr. Hermann Jacobi.

Jain Universe—

Jain Vairagya shataka—Bihari Lal Jain.

Jainism—C. S. Meghakumar.

Jainism—Champat Rai Barrister.

Jainism as Faith and Religion—Sree Chand Rampuria.

Jainism the Oldest Living Religion—Jyoti Prasad Jain, M. A., LL. B.

Jainism and Karnatak Culture—S. R Sharma.

Jainism—Herbert Warren.

Jainisme—Dr. A Guerinot,

Jainism, 28 Labdhees or Miraculous Powers—Gulal Chand.

Jainism and Dr. H. S. Gour's Hindu Code—J. L. Jaini, Bar-at-law.

Jainism and Dr. H. S. Gour's Hindu Code —C. R Jain, Bar-at-law.

Jainism and World Problems—Dr. Beni Prasad.

Jainism in Indian History—Dr. Bool Chand.

Jainism in Kalingadesa—Dr. Bool Chand.

Jainism or the Early Faith of Asoka—Dr. E. W Thomas F. R. S.

Jainism Not Atheism—H Warren.

Jainism in North India—C J. Shah.

Jainism in Western Garb as a Solution to Life's Great Problems—H. Warren

Jina-Ratna-kosa—Prof. H. D. Valenkar.

Jasahar-chariu—Ed. Prof. Hira Lal Jain. M A., D. lit.

Joindu and His Apbhramsa Works—Dr. A. N. Upadhye.

Judgments in Tirtha cases—

Judgment in Paras Nath Hill Civil Suit—

Kathakosa (of Harisena) or the Treasury of Stories—Ed. & Trad. C. H. Tawney.

Kaleidoscope Indian of Wisdom—Charlote Krause

Kalpa Sutra and Nava Tatwa—J. Stevenson

Karnatak-kavi-charite—R. Narsinghacharya.

Key of Knowledge—Champat Rai Jain Bar-at-law.

Kirtikaumudi of Someswaradeva—Trad. A. Haack.

Kshatra-chudamani of Vadibhasimha—Ed. Trad. Kappuswami Sastri.

Kumar pala Charitra of Hem Chandra—Ed. Shankar

Panduranga.

Kural of Tiruvuluvar-Fragments—E. Ariel.

La doctrine des etres vivants dans la religion Jaina—A. Guerinat.

Laghu-Bodhamrita-sar—Trad. Moti Chand Banswara.

Lecture on Jainism—Benarsi Dass M. A.

Lecture on Jainism—J. L. Jaini.

Life of Hanuman—Pt. Pirbhu Dayal.

Life of Hem Chandracharya—

Life of Mahavira—M. C. Jain.

Life Story of the Jain Savior Parrwa Nath—Maurice Bloomfield.

Life in Ancient India from the Jain Agamas—Prof Jagdish Chandra Jain M A., PH. D.

Lifting of the Veil (Pt. I)—C. R Jain.

Lifting of the Veil Pt. II—C R Jain.

Linganusasana of Hem Chandra—Ed. R. O. Franke.

List of Sanskrit, Jain and Hindi Mss.—Pub. Govt. Press, Allahabad.

Logic for Boys and Girls—C. R. Jain.

Lord Arishta-Nemi—Harisatya Bhatatcharya.

Lord Mahavira—H. Bhattacharya.

Lord Mahavira—Dr. Bool chand

Lord Mahavira and some other Teachers of his time—K. P. Jain

Lord Parswa—H. Bhattacharya.

Lord Rishabha Deva—Champat Rai Jain.

Mahavira, His Life and Teachings—Dr. Bimal Charan Law.

Marriage in Jain Literature—

Mediaeval Jainism—Dr B. A. Saletore.

Mithyatwa Khandan—Prem Chand.

Modern Jainism—Mrs. S Stevenson.

Mount Abu and the Jain Temples of Dailwara—J. U. Yagnik.

My Thoughts—Ratan Lal Jain.

Mantrashastra and Jainism—Dr. A. S. Altekar.

Mind and Its Mystery—Sri Kaluram ji.

Naya Kumar Chariu—Ed. Prof. Hira Lal Jain

Neelkesi—Ed & Trad. Prof A. Chakravarti M. A.

Nijatma-sudhi Bhavana—Trad B. C. Manika Lal.

Niyama-sara—Ed. & Trad. Uggar sain Jain M. A. LL. B

Note and Jaina Mythology—J. Burgess.

Notes on the Sthanakavasis—Seeker.

Nyaya, the Science of Thought—C. R. Jain.

Omniscience—C R Jain.

On the Authenticity of the Jaina Tradition—G. Buhler.

On the literature of the Swetambaras of Gujerat—J. Hertle.

Outlines of Jainism—J. L. Jaini

Pacifism and Jainism—Pt Sukhlal Sanghavi.

Paiyalacchi-nama-mala of Dhanpala—Ed. G Buhler

Pampa Ramayana—Ed Lewis Rice.

Panchastikaya-sara—Ed. & Trad. Prof A. Charavarti M. A.

Paresnath Piggary Case Judgment of Bengal High Court, 1893.

Pariksha mukham—Ed. & Trad Dr. S. C. Vidyabhushan (Bib Ind.)

Parmatma-Prakasha of Jogindu—Trad. L. Rikhab Das B. A.

Pilgrimage to Parasnath by C. Mackenzies Pandit (1820)—J, Burgess.

Practical Dharma—C. R Jain.

Pramana-naya-tatwaloka-alamkara—

Prehistoric Jaina Paintings—Jyoti Prasad Jain M. A., LL. B

Political Thought in Pre-Muslim India—Jyoti Prasad Jain.

Presidential Address—(1924) of Dr Ganga Nath Jha M. M

Presidential Address—(1927) of Dr. B. L. Atreya

Principles of Jainism—Br. Sital Prasad.

Proceedings of the 2525th Mahabir Jayanti celebrations by Jain Mitra Mandal, Delhi.

Pure Thoughts or Samayika Patha—Trad. B. Ajit Prasad M. A, LL. B.

Purushartha-sidhiupaya—Trad. Ajita Prasada M. A., LL. B

Quelques Collections de livers Jainas—A Guerinot.

Ratnakaranda-sravakachar—Trad. Champat Rai Jain.

Reminisciences of Vijaya Dharma Suri—Vijaya Indra Suri.

Repertoire at Ehigraphic Jaina—Guerinot

Rishabhadeva, the Founder of Jainism—C. R Jain

Religion-Its Universal Necessity—Sri Tulsiram ji

Sabda-mani-darpan of kesiraj—Ed. F. Kittel.

Sacred Philosophy—C R Jain.

Samant Bhadra's Date and Dr. Pathak—Pt. Jugal Kishore Mukhtar.

Samayasara—Trad. R. B. Jagmandar Lal Jaini Bar. at-law.

Samayika or the Way to Equanimity—B. L. Garr.

Sanmati Tarka—Trad. A. B. Athavle and A. S. Gohani M. A.

Sapta-bhangi-Nyaya—L. Kanno Mal M. A.

Sapta-bhangi-tarangini of Vimal Das—Ed. P. B. Anantacharya.

Sanyas Dharma—C. R. Jain.

Satrunjaya Mahatmya—James Burgess.

Samadhi (of saint Charitra Sena)—Trad. Kamta Prasad Jain.

Sayings of Lord Mahavira—K. P. Jain.

Sayings of Vijaya Dharma Suri—Charlotte Krause.

Selections from Atma Dharma of Br. Sital Prasad, C. R Jain.

Shraman Bhagwan Mahavir—

Six Dravyas of Jain Philosophy—F R. Lalan.

Sketches of Distinguished Oswal Families—U. S. Tank.

Some Distinguished Jains—U. S. Tank.

Some Historical Jain Kings and Heroes—Kamta Prasad Jain.

Some Notes on Digambara Jain Iconography—J. L. Jain.

Sravan-bel-gola—R Narsimhachar, M. A.

Sravan-bel-gola—C. S. Mallinath.

Sravan-bel-gola, its Importance—Seth Padma Raj.

Studies in Jainism (Pt I)—Dr H Jacobi.

Studies in South Indian Jainism—M. S. Ramaswami Ayengar and B. Sheshagir Rao.

Syadvada-Manjari—Ed. and trad. Prof. Jagdish Chandra M A.

South Indian Jainism—M. S. Ramaswami Ayengar M. A.

Sources of Karnatak History-Vol I—S Srikantha Sastri.

Sitatnvasal Jaina Care Paintings—L Ganesh Sharma.

Sources of the History of Karnataka, Pt I—Sri Kantha Sastry.

Tatwarthadhigama Sutra Ed. & trad. J. L. Jaini.

Tatwarthadhigama Sutra Ed. and trad. J. L. Jaini.

The Address of Dr. Phani Bhushan Adhikari.

The Address of Dr. T. K. Laddu (1914)

The Address of Champat Rai Jain Bar-at-law.

The Address of Dr. R. G, Bhandarkar.

The Change of Heart—C. R. Jain.

The Chicago-Prasnottara—Vijayanand Suri.

The Digambara Saints of India—S. C. Ghosal M. A. B. L.

Teertha Pavapuri—P. C. Nahar.

The Confluence of Opposites C. R. Jain.

The Gospel of Immortality—C. R. Jain.

The Ganita sar-sangraha—Ed. M. Rangacharya M. A

The Heart of Jainism—Mrs. S. Stevenson.

The House-holder's Dharma—C. R. Jain.

The Indian Sect of the Jainas—G. Buhter, trad. J. Burgess.

The Jain Law—C. R. Jain Bar-at-law.

The Jain law of Inheritence and Adoption—J. L. Jaini Bar-at law.

The Jaina Pattavalis—Ed. R. Hocrnle.

The Jain Philosophy—V. R. Gandhi.

The Jaina Philosophy of Non Absolutism—Dr. Satkori Mukerji

The Jains of India—J. L. Jaini.

The Jain Stupa and other Antiquities of Mathura—Dr V A Smith.

The Jain Sutras (S. B E.)—Ed. F. Max Muller.

The Jaina System of Education—Dr. D. C. Dass Gupta

The Jain Theory of Karma—C. R. Jain

The Karma Philosophy—B. F. Karbhari.

The Mystery of Revelation - C. R. Jain,

The Nyayavatar—Ed. S C. Vidyabhushan

The Nyaya Karnika—Trad. Mohan Lal Desai.

The Nudity of Jain Saints—C. R. Jain.

The Origin of the Swetambara Sect—Pub. D. J Parishad, Delhi.

The Place and Importance of Jainism—G. Pertold, Ph. D

The Prabandha Chintamani—Ed. and trad. C. H. Tawney

The Practical Path—C. R. Jain.

The Path—Sri Tulsiramji.

The Priority of Jainism over Budhism—Rustamji

Baror ji Parukh.

The Real Nature of Parmatma—N. S. Agarkar.

The Right Solution—C. R. Jain.

The Self Realization—J. L. Jaini.

The Six Dravyas of Jain Philosohpy—H. Warren.

The Speech of H. H. the Maharaja of Mysore (1925)

The Srawacs or Jains—F. Buchanon Hamilton

The Srawacs or Jains—J Delmaine.

The Study of Jainism—L. Kanno Mal M. A.

The Way to Nirwan—J L. Jaini

The Yoga Philosophy—B F Karbhari.

Tracts of Mathew Mckay—Pub Mahavira Publications, Aliganj Etah.

True Way to Liberation—Dr. Talbot.

Uttaradhyayan Sutra —Ed. J. Charpentier.

Uttaradhyayan Sutra and Sutra kritanga (Jain sutras Pt. II)—Ed. H Jacobi.

Vijaya-dharma Suri—Dr. L P. Tessitori.

Vir Vibhuti—Trad. A B. Bhattacharya.

What India Thinks of the Case of Pt. Arjun Lal Sethi.

What is Jainism—Kanno Mal M. A.

What is Jainasm—C. R. Jain.

Where the Shole Pinches —C. R. Jain.

Whom the Jains Worship—L Rikhab Das B. A.

World Philosophy of the Jains—Dr. H. Von Glasenapp.

World Problems and Jaina Ethics—Dr. Beni Prasad

Booklets and tracts of—The Mahavir Publieation Aliganj, Etah.

2. The Jaina Cultural Institute, Banaras.
3. The Terapanthi Swetambar Sthanakvasi Cong. Calcutta etc. etc.

Journals and Magazines—Several papers in the past.

The Jaina Antiquary (Six monthly)—Pub. by the Central Jaina Oriental library, Arrah (Bihar).

The Jaina Gazette (monthly)—Ed. Ajit Prasad M. A. LL. B., pub. from Ajitashram, Lucknow.

The Jaina Hostel Magazine (monthly)—Pub. by the Jain Hostel, Allahabhad.

Besides the above publications, numerous articles, papers and notes on various aspects of Jainism and Jainology have been published in the different research journals, magazines, Proceedings of oriental and historical conferences, Gazetteers, Archaeological survey Reports etc. both in India and abroad by a number of renowned scholars, Indian as well as European. The references to these can be found in the—(1) Essai de Bibliographica Jaina, a very comprehensive work in French. Dr. A. Guerinot Ph D It deals with references upto 1905 A. D. The work is, however, out of print at present, and an English edition of the same is earnestly needed.

(2) Jain Bibliography no 1., by R. B Lala Paras Das of Delhi. It deals with some 1214 works having Jain references and published upto 1930 A. D., but mentions only the page numbers of the references.

(3) Jaina Bibliography, by B. Chhote Lal Jain,

Calcutta. It deals with references found in literature published between 1905 and 1925 A. D.

(4) Jinaratanakosa—Ed by Prof H. D. Valenkar, and published by the Bhandarkar O R, Institute, Poona. It is an alphabetical register of Jain works and authors, and gives an account of most of the available or known Jain Mss.

Since 1925, much standard literature having useful Jaina references, has been published, but unfortunately no Jaina bibliography relating to it has yet been prepared which is an urgent necessity.

Persons interested in the study or research of Jainism or any branch of Jainology, may refer for the respective information and literature to the following,—

1. All India Digambar Jain Parishad Office, Dariba Kalan Delhi

2. Bhartiya Gyan Pitha Banaras

3. Jain Cultural Research Society, Banaras

4 The Central Jaina Oriental Library (Jain siddhanta Bhavan), Arrah (Bihar)

5 The Central Jaina Publishing House, Ajitashram, Lucknow.

6. The Jain Mitra Mandal, Dharampura, Delhi

7 Vir Sewa Mandir, 21 Daryaganj, Delhi, This last being a best reputed Jaina Research Institute, equipped with an adequate library and run by its founder Director Acharya Pt. Jugal Kishore Mukhtar.

परिशिष्ठ

१. सार्वजनिक जैन पुस्तकालय, शास्त्रभंडार

वे ग्रन्थागार जिनमे जैन धर्म सम्बन्धी विविध विषयक साहित्य, मुद्रित तथा हस्त लिखित, पर्याप्त मात्रा मे सगृहीत है, और जिसका उपयोग सदस्यों एवं स्थानीय व्यक्तियो के अतिरिक्त इतर स्थानो में रहने वाले विद्वान् भी डाक आदि द्वारा कर सकते हैं--

१. ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई।

२. ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, झालरापाटन।

३. जैन सिद्धान्त भवन, आरा (विहार)।

४ श्री वर्द्धमान पब्लिक लायब्रेरी, धर्मपुरा देहली।

५. श्री यशोविजय जैन पुस्तकालय, बेलन गज, आगरा।

६. समन्तभद्र-भारती-भवन, वीरसेवामन्दिर, सरसावा (हाल देहली)।

उपर्युक्त प्रख्यात पुस्तकालयो (जिनमे से प्रथम तीन की मुद्रित ग्रन्थ सूचियें-कैटेलाग-भी प्रकाशित हो चुके हैं) के अतिरिक्त प्राय प्रत्येक नगर व कस्बे में जहाँ जहाँ जैनियो की बस्ती है, एक न एक छोटा बडा जैन पुस्तकालय और पाठनभवन भी मोजूद हैं।

यद्यपि प्रत्येक जैन मन्दिर मे एक शास्त्र भण्डार अवश्य ही होता है। जिसमे अधिकांशत हस्तलिखित ग्रन्थ ही रहते हैं, किन्तु जैन हस्तलिखित ग्रन्थो के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण भडार निम्नलिखित स्थानो मे हैं --जयपुर, देहली, ईडर, नागपुर मूडबिद्री श्रवण बेलगोल, कारंजा, पाटन, जैसलमेर, सूरत, कोल्हापुर अजमेर इत्यादि।

जैन ग्रन्थो की ज्ञात हस्तलिखित प्रतियो का परिचय नीचे लिखे ग्रन्थों से प्राप्त किया जा सकता है —(१) जिन रत्न कोष-प्रो० हरिदामोदर वेलङ्कर

एम० ए० द्वारा प्रणीत तथा भंडार कर प्राच्य मंदिर पूना द्वारा प्रकाशित (गवर्नमेंट ओरियंटल सीरीज, क्लास सी० न०४)

(२)जैन ग्रन्थ सूची—वीर सेवा मन्दिर, सरसावा द्वारा प्रकाशित।

(३) ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, बम्बई की रिपोर्टें

(४) कर्णाटक कविचरिते—आर० नरसिहाचार्य कृत, तथा कर्णाटक जैन कवि के नाम से पं० नाथूराम जी प्रेमी द्वारा अनुवादित।

(५) जैन गुर्जर कविओ (२ भाग—श्री एम० डी० देसाई, बम्बई द्वारा प्रणीत)

जैन साहित्य के इनिहास के लिए (१) हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास पं० नाथूराम प्रेमी कृत तथा जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से प्रकाशित। (२) हिन्दी जैन साहित्य का इनिहास—बा० कामता प्रमाद जैन द्वारा लिखित और भारतीय ज्ञान पीठ, काशी द्वारा प्रकाशित। (३) कर्णाटक जैन कवि। (४) तामिल भाषा का जैन साहित्य (अग्रेजी) प्रो० ए० चक्रवर्ती कृत। (५) जैन साहित्यनोइतिहास (गुजराती)—श्री मोहनलाल देसाई कृत।

२. जैन साहित्यिक संस्थाएं

वे संस्थाएं जिनमें या जिनके द्वारा ग्रन्थ निर्माण, टीका, अनुवाद, सम्पादन, प्रकाशन आदि कार्य होते हैं। इनमे से कई एक मे जैन साहित्य एवं इतिहास सम्बन्धी खोज शोध अनुसन्धानादि कार्य भी होते हैं। निम्नलिखित ऐसी सर्व ही सस्थाएं प्राय सार्वजनिक, निस्स्वार्थ एव सेवाभावी हैं, उनके संचालन में व्यावसायिक दृष्टि नही है—

(१) अम्बादास चवरे दिगम्बर जैनग्रन्थमाला, कारजा।

(२) आगमोदय समिति सीरीज, सूरत।

(३) आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अम्बाला शहर।

(४) आचार्य श्री कुंथ सागर ग्रन्थमाला, सोलापुर ।

(५) आचार्य सूर्यसागर ग्रन्थ माला, जयपुर ।

(६) ऋषभ जैन प्रकाशन संस्था, फल्टन ।

(७) कंकुबाई पाठ्य पुस्तक माला ।

(८) कारंजा जैन पब्लिकेशन सोसाइटी, कारंजा ।

(९) चम्पावती जैन ग्रन्थ माला, अम्बाला छावनी ।

(१०) जीवराज दोशी ग्रन्थ माला, सोलापुर ।

(११) जैन आत्मानन्द सभा सीरीज, भावनगर ।

(१२) जैन कल्चरल सोसाइटी, बनारस ।

(१३) जैन धर्म प्रसारक सभा सीरीज, भावनगर ।

(१४) जैन मित्र मंडल, धर्मपुरा देहली ।

(१५) जैन रिसर्च इंस्टीटयूट, यवत माल ।

(१६) जैन साहित्य सेवा मंडल, सोलापुर ।

(१७) जैन साहित्योद्धारक फंड, अमरावती ।

(१८) जैन स्वाध्याय मन्दिर, सोनगढ़ (काठियावाड़) ।

(१९) जैन सिद्धान्त भवन, आरा ।

(२०) दिगम्बर जैन परिषद पब्लिकेशन हाउस, दरीबाकला, देहली ।

(२१) देवचन्द लाल भाई पुस्तकोद्धार फंड सीरीज, बम्बई व सूरत ।

(२२) परमश्रुत प्रभावक मंडल (श्रीरायचन्द्र जैन शास्त्र माला), बम्बई ।

(२३) भारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशनी संस्था, कलकत्ता (हाल महावीरजी)

(२४) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा ।

(२५) भारतीय ज्ञान पीठ, दुर्गाकुंड, बनारस ।

(२६) माणिकचन्द्र दिगम्बरजैनग्रंथमालासमिति, हीराबाग बम्बई ४ ।

(२७) मुनि श्री अनन्तकीर्ति-ग्रन्थमाला, बम्बई ।

(२८) यशोविजय जैन ग्रन्थ माला, बनारस व भावनगर ।

(२९) वीरग्रंथमाला, सांगली ।

(३०) वीरसेवामन्दिर, ग्रंथमाला और सन्मति-विद्या-प्रकाशमाला, सर-

सावा जि० सहारनपुर (हाल २१ दरियागंज देहली)।

(३१) श्री वर्णी जैन ग्रन्थमाला, बनारस।

(३२) सन्मति ज्ञान प्रचारक जैन समिति, बनारस।

(३३) सरल जैन पाठमाला, जबलपुर।

(३४) सिंधी जैन ग्रन्थ माला, अहमदाबाद व कलकत्ता।

(३५) सेठ फूलचन्द जवरचन्द गोधा चेरिटी फंड, इन्दौर।

(३६) सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, लखनऊ

३. जैन पुस्तक विक्रेता

जो व्यावसायिक दृष्टि से अपने स्वयं के प्रकाशनों तथा अन्य प्रकाशकों और संस्थाओं के जैन प्रकाशनों को भी विक्रियार्थ अपने यहाँ रखते हैं—

(१) जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।

(२) जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई।

(३) जैन साहित्यप्रसारक कार्यालय, बम्बई।

(४) दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चन्दावाडी, सूरत।

(५) दिगम्बर जैन पुस्तकालय, मुजफ्फर नगर।

(६) वर्धमान साहित्य मन्दिर, लखनऊ।

(७) वीर साहित्य मन्दिर लि०, देहली।

(८) सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथी खाना, रतनपोल, अहमदाबाद।

(८) ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल, नं० ३८७२, चर्खेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार, देहली।

४. वर्तमान के ग्रन्थप्रणेतादि साहित्यसेवी विशिष्ट जैनविद्वान

पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार सरसावा, पं० नाथूरामजी प्रेमी बम्बई, पं० सुखलालजी बनारस, मुनिजिनविजयजी बम्बई; पं० बेचरदासजी अहमदाबाद; डा० ए० एन० उपाध्ये कोल्हापुर; रा० ब०, ए० सी० चक्रवर्ती मद्रास; डा० बनारसीदास लाहौर; डा० हीरालाल जैन मुजफ्फरपुर; पं० गणेशप्रसाद जी वर्णी; महात्मा भगवान दीन जी; बा० कामता प्रसाद जी अलीगंज (एटा);

पं० वंशीधर जी न्यायलंकार इन्दौर; पं० माणिक चन्द्र जी न्यायाचार्य फीरोजाबाद; प० मक्खनलाल जी न्यायलंकार मुरेना; प० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ जयपुर, पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री बनारस; पं० महेन्द्रकुमार जी न्यायाचार्य बनारस, प० फूलचन्द जी सिद्धान्त शास्त्री बनारस; प० लालाराम जी शास्त्री; पं० खूबचन्द्र जी बम्बई; श्री सी० जे० शाह् बम्बई; श्री टी० एल० शाह् जी अहमदाबाद, श्री एम० एल० देशाई अहमदाबाद; मुनि कल्याण विजयजी, मुनि पुण्यविजय जी, श्रीकानजीस्वामी, मुनि चौथमल जी; मुनि आत्माराम जी; मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत, पं० वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री सोलापुर, प० परमेष्ठीदास जी ललितपुर, प० दरबारीलाल जी न्यायाचार्य प० पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर; पं० नाथूलाल जी साहित्यसूरि इन्दौर, प० राजेन्द्रकुमार फीरोजाबाद, प० अजितकुमार शास्त्री देहली, डा० कुमारी सुभद्रादेवी, पंडिता चन्दाबाई आरा; प्रो० घासीराम जैन ग्वालियर; प्रो० जगदीश चन्द्र जैन बम्बई; ला० अयोध्याप्रसाद जी गोयलीय डालमियानगर, रामजी मानिक चन्द दोशी सोनगढ; श्री अगरचन्द जी नाहटा बीकानेर, प० के० भुजबलि शास्त्री मूडबिद्री; पं० उग्गरसेन एम० ए० रोहतक; बा० छोटेलाल जी कलकत्ता; डा० बूलचन्द्र जैन बनारस! प० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य आरा; प० परमानन्द शास्त्री देहली श्री हीरासाव चवरे वर्धा; श्री जमनालाल विशारद. श्री दौलतराम मित्र इन्दौर; बा० जयभगवान जी वकील पानीपत, प० सुमेरचन्द दिवाकर सिवनी; श्री यशपाल जैन देहली; प० दलसुख मालवणिया बनारस, प्रो० गो० खुशालचन्द जैन बनारस; मुनि चतुरविजय जी; श्रीमती जी० के० जैन सा० भू०, क्षुल्लक सिद्धसागर जी, मुनि कान्तिसागर जी; पं० भवर लाल न्यायतीर्थ जयपुर; प० हीरालाल शास्त्री, प० परमानन्द सा० आ०; पं० लालबहादुर, शास्त्री प० बलभद्र जैन, प० पन्नालाल सोनी. प० सत्यंधर आयुर्वेदाचार्य; एम० एम० महाजन वकील अकोला, बा० नानक चन्द एडवोकेट रोहतक; डा० ज्योतिप्रसाद जैन एम० ए० एल० बी० लखनऊ, प० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले, शोलापुर; पं० मिलापचन्द कटारिया केकडी ।

५. वर्तमानके जैन साहित्यसेवी प्रसिद्ध अजैन विद्वान

प्रो० हरिसत्य भट्टाचार्य; श्रीशरतचन्द्र घोषाल; डा० कालीपद मित्र, डा० सातकौड़ी मुखरजी; प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्ती, डा० भास्कर आनन्द सालेतोर; प्रो० एच० डी० वेलन्कर, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल, डा० मोतीचन्द्र जी; डा० एच० डी० साकलिया; डा० कालीदास नाग, डा० डी० सी० दास गुप्ता, डा० जे० एन० सिन्हा; प्रो० रामा स्वामी आयगर; प्रो० बी० शेषागिरिराव; श्री पी० के० गोडे; एम० गोविन्द पै०; डा० शामा शास्त्री, श्री किशनदत्त वाजपेयी डा० वेनीमाधवदास, डा० वी० राघवन; श्रीयुत टी० रामचन्द्रन डा० एच० सी० सेठ प्रो० शिवेन्द्र नाथ घोषाल; प्रो० सुरमा मित्र; बा० अ० नारायण मोटेश्वर खरे, के माधवकृष्ण शर्मा; प्रो० विधुशेखर भट्टाचार्य; बी० जी० भट्टाचार्य, अमूल्य चरण सेन विद्याभूषण विभूति भूषणदत्त, प्रबोधचन्द्र बागची; अशोककुमार भट्टाचार्य, एम० एन० देशपाडे; श्री कमलाकान्त उपाध्याय; श्री हरनाथ द्विवेदी, श्रीयुत त्रिवेणीप्रसाद, श्री कंठ जी शास्त्री, डा० एस० एन० दास गुप्ता, प्रो० नलिनी त्रिलोचन शर्मा, प० जगन्नाथ तिवारी, प्रो० एन० वी० शर्मा, डा० सुकुमार रजनदास, श्रीयुत प्रमोदलाल पाल, डा० एस० सी चटर्जी, इत्यादि ।

नोट — उपर्युक्त जैन तथा अजैन जैन साहित्य-सेवी विद्वानोकी सूचीसे यह अभिप्राय नही है कि मात्र नामाङ्कित विद्वज्जन ही जैन साहित्य सेवा कर रहे हैं और जैन धर्म मे अभिरुचि रखते है । उल्लिखित सज्जनो के अतिरिक्त भी अनेक जैन अजैन विद्वान यह कार्य कर रहे हैं । यहा तो केवल उन्ही विद्वानो का नामोल्लेख कर दिया गया हैं जो इस समय तक पर्याप्त प्रसिद्ध हैं और दृष्टि में सर्वाधिक आये हैं अथवा आ रहे हैं । ऐसे और भी लेखक जो प्रमाद या अज्ञानवश छूट गए हो उनके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं ।

———

आवश्यक निवेदन

समस्त जैन लेखकों, प्रकाशको एवं साहित्यिक सस्थाग्रो से निवेदन है कि वे अपने द्वारा लिखित, अनूदित, संपादित, सकलित, मुद्रित, प्रकाशित ग्रन्थो-पुस्तको के सम्बध मे पूरा विवरण नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करे। विवरण मे निम्नलिखित तथ्य होने चाहिये —१ पुस्तक का नाम २ मूल लेखक, अनुवादक, टीकाकार, सपादक, सकलनकर्त्ता आदि के नाम—पूरे पते सहित, ३ प्रकाशक का पूरा नाम एव पता, ४. मुद्रक का नाम एव पता ५ भाषा, ६ विषय, ७ पृष्ठसख्या ८ आवृत्ति एव मुद्रित सख्या, ९. मूल्य १० विशेष विवरण, यदि कुछ हो। इस पुस्तक के द्वितीय सस्करण को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने के लिये यह जानकारी अपेक्षित है। जो महानुभाव अपनी पुस्तको की एक एक प्रति ही भेज देने की कृपा करेगे उनके हम अत्यन्त आभारी होंगे और तब उनके लिये अलग से उक्त विवरण भेजने की जरूरत नही रहेगी।

निवदक

पन्नालाल जैन अग्रवाल

३८७२, मोहल्ला चर्खेवालान गली कन्हैया लाल अत्तार (दिल्ली)

शुद्धि-पत्र

बिन्दु-विसर्गादि की साधारण तथा सहज-बोध-गम्य अशुद्धियों को छोडकर छापेकी शेष अशुद्धियों का शुद्धि-पत्र निम्न प्रकार है:—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	वैशिष्टय	वैशिठ्य
३	२	जन साहित्य	जैन साहित्य
४	१	समयापयुक्त	समयोपयुक्त
,,	१७	सहस्त्र	सहस्र
५	१८	जैन ग्रन्थ नामावली	जैन ग्रन्थावली
६	७	सूचिये मे प्रकाशित	सूचिये प्रकाशित
,,	१३	किन्तु महावीर जी	महावीर जी
,,	१५	प्रशास्ति	प्रशस्ति
,,	१६	तप्यारी	तय्यारी
७	१५	रचियताओं	रचयिताओ
६	१५	प्रतिलेखको	प्रति लेखकों
,,	२१	अक्षण्ण	अक्षुण्ण
,,	२३	तत्तद सस्कृति	तत्तत् सस्कृति
१२	१	विज्ञान	विद्वान्
१३	अन्तिम	किन्तु	जैन
१५	७	स्वातन्त्रय	स्वातन्त्र्य
१७	१३	अपेक्षा-और	अपेक्षा
२०	१३	कर्त्री	कर्त्री,
२१	१७	आवश्यता	आवश्यकता
,,	८	तत्तद समाज	तत्तत् समाज

१४	१७	सहस्त्राब्द	सहस्राब्द
२५	६	उपलब्ध	उपलब्ध
२६	२	चालर्स	चार्ल्स
,,	१६	विल्फ ड्का	विल्फ ड्को
,,	१८	१६ शताब्दी	१६वी शताब्दी
२७	२३	राजकाय	राजकीय
२८	१२	पूज्यनीय	पूजनीय
२८	१७	जाता जाता था	जाता था
,,	अन्तिम	होने कारण	होने के कारण
२६	१	विनय	अविनय
,,	५	अविष्कृत	आविष्कृत
,,	१२	प्रमाणीकता	प्रामाणिकता
,,	२०-२१	नियतानुसार	नियमानुसार
,,	२५	महाक्षयो	महाशयो
३०	१६	१६५०	१६४७
३१	११	१८५७	१८७५
३२	२५	अ गविशेष	अ गविशेष की
३६	५	जैन समाज	दिगम्बर जन समाज
,,	११	इटाया	इटावा
,,	१२	चतन्य	चैतन्य
३८	७	लेखक के	इन पक्ति लेखक के
४६	५	रचनाए सख्या	रचनाए जितनी संख्या
४७	१८	वर्णीमय	वर्णीश्रय
,,	अन्तिम	अधिष्ठातातृत्य	अधिष्ठातृत्व
४८	१६	व्यवसायिक दोनों	व्यवसायिक अव्यवसायिक दोनों

४९	६	सफल	सफल याग
५०	८	रामचन्द्र	रायचन्द्र
५४	२२	प्रगति का बहुत कुछ	प्रगति का सम्बन्ध है उसका बहुत कुछ
"	२२-२	इसी पुस्तक के अन्त मे प्रकाशित स्वतंत्र लेख से	इसी भूमिका के अन्त में (पृष्ठ ६८-७२) दिए हुए तद्विषयक लेखसे,
५५	७	तपा	तथा
५६	१९	संस्थाओं	संस्थाओ
५८	२०-२१	सार्व संस्थाने	सार्वजनिक संस्थाने
५९	११	स्वातन्त्र	स्वातन्त्र्य
६१	२२	जन हितेच्छु	जैनहितेच्छु
६२	२	जन	जैन
६३	१४	सामायिक	सामयिक
६४	११	१३०३	१३००
६५	१४	स्तोत्र स्तुति	(८) स्तोत्र स्तुति
"	२३	शिक्षा	शिक्षा १०३
"	२५	विपय-विभाजन	विषय-विभाजन
६६	२-९	षाठ मासिक	षाण्मासिक
"	४	६६	७६
"	१६	वीर वाणा	वीरवाणी
६७	१५	जिन	इन
"	२३	निर्माण करने के	निर्माण के

६८	१६	दृष्टि में वह उपनिषद्	दृष्टि में उपनिषद्
६९	१२	प्रच्छ्य तत्त्व	प्रत्न तत्त्व
,,	१७	जन धर्म	जैन धर्म
,,	२४	दान देना	योग दान देना
७१	४	स स्करणो प्रकाशन	स स्करणो के प्रकाशन
,,	५-८	प्रमाणिक-प्रमाणीक	प्रामाणिक
,,	६	कमी पूर्ति	कमी पूर्ति
,,	११	देहली	सरसावा (देहली)
,,	१४	जन महाराष्ट्री	जैन महाराष्ट्री
,,	१५	पूर्ववती	पूर्ववर्ती
,,	१६	'वलासवई कहा'	'विलासवई कहा'
,,	१८	ाथमिक	प्राथमिक
,,	फुटनोट	अपलाम	उपनाम
,,	,,	जेना मेटी क्योरी	जैन ए टीक्वेरी
७२	८	मेद स भी	भेद से भी
,,	१३	नियुक्तियों	नियुक्तियाँ
७३	२	कर्नव्य	कर्तृत्व
,,	८	गत दर्शक	गत दशक
७४	फुटनोट	जो इन्दु के मांग सार	जोइन्दु के योगसार
७५	६	उद्गम	उद्गम
,	१६	काम चलान से लिए	काम चलाने के लिए
७६	८	चरणों	चारणों
,,	१७	मेद पक	भेदपरक
७७	२३	अतएवर्ष भारत व	अतएव भारतवर्ष

७८	२३	प्राच्य विद्यों	प्राच्यविदों
७६	१	कैं अत्यन्त विशद	के साथ अत्यन्त विशद
,,	२	व्रि० भू० उक्त	वि० भू० ने उक्त
,,	२२-२३	युक्तयानुशासन	युक्त्यनुशासन
८१	१०	जैनग्रथ नामावली	जैन ग्रथावली
८२	२०-२१	हीरानन्दा ओझा	हीराचन्द ओझा
८३	२०	ज्ञान तिथियो	ज्ञात तिथियो
८६	२३	जनसंघ	जैन संघ
८६	१८	प्राप्ति	प्रगति
,,	अन्तिम	७-२१ दरियागज	२१ दरयागज
९१	१०	लघीस्त्रयम्	लघीयस्त्रयम्
६३	१७	अध्यात्माष्टयाम्	अध्यात्माष्टकम्
९४	१४	पदमानुवाद	पद्यानुवाद
	१५	१६२४	१६१४
९५	७	१६४२	१६२२
	१८	पृ०	पृ० १७
	१९	पृ०	प्रकाशित
९९	२०	छिन्द राडा	छिन्दवाडा
१०१	१३	१९२६।	१६२५, आ० प्रथम
,,	१४	—आ० प्रथम	—
१०२	अन्तिम	९१८	१९१८
१०५	११	पृ० ४९	भा० हि०, पृ० १४९
१०६	२३	१८३२	१८३
१०८	२१	१८८६	१८९८
१०६	६	२६	३९
१०६	११	१८३६	१ ३[illegible]

१०६	२०	१८८६	१८६६
११२	१६	कर्म प्रगति	कर्मप्रकृति
"	१६	भाषा;	भाषा प्रा०;
११३	४-६	ले० उग्रादित्या चार्य प्रथम	ले० ब्र० सुन्दरलाल, प्र० स्वयं मुरादाबाद; भा०। हि०; पृ० ६६, व० १६३८; आ० प्रथम
"	२१-२३	कल्याण लोभना	कल्याणालोयणा
	"	(कल्याण लोचना)	(कल्याणालोचना)
११४	५	प्रा० र०	सा० र०
"	१७, २०	सर्वधर्माचार्य	शर्ववर्माचार्य
"	२३	प्र० २२३६	पृ० २३६
"	२४	स्वामी काद मल;	स्वामी कानमल
११७	१३	कुन्थु स्वामी	कुन्थुस्वामी
"	१४	सुब्रह्मन्य	सुब्रह्मण्य
"	"	नेटसमन	नेटसन
१२४	१६	अक्षात्	अज्ञात
१२६	१०	प्र० भा०	प्रा० भा०
१२७	२	२६; व	२६०; व० १६३६, आ० प्र०
१२८	३	पं० सद्बोध रत्नाकर	प्र० सद्बोधरत्नाकर
१२६	६	जिन शतकार	जिनशतकम्
१३२	अन्तिम	भारतेन्दु हरिश्चन्द	हरिश्चन्द्र
१३७	११	१६६६	१६३६
१४८	१३	देवनन्दि (महाकृति)	अभयनन्दि (महावृत्ति)
"	१५	जोगशिक्षा	जोगीरासा

१४६	६	णोयकुमार चरिउ	णायकुमारचरिउ
,,	८	सं० हिन्दी	प्रा० हिन्दी
,,	२१	पृ० २१३	पृ० २१६
१५२	४	जैन संस्कृत संरक्षक	जैन सस्कृति संरक्षक
,,	,,	भा० हि०	भा० प्रा० हि०
,,	८	भा० प्र० हि०	भा० हि०
३५६	१६	२०६	६
१५७	१८	संग्रह	सग्राहक
१६३	२	२१२ वर्ष १६४६	२०८; वर्ष १६४०
१६७	२४	१८४२	१६४२
१६८	१	बा०	ब्र०
१६६	७	१८२८	१६२२
१७०	१८,२१,२४	भा०सं० हि०	भा० स०
१७३	२२,२३	पन्नालाल, संपा० मनोहरलाल बाकलीवाल	पन्नालाल बाकली वाल; सपा० मनोहरलाल
,,	२४	व० ६१४	व० १६१४
१७४	११	पट्टावली समुच्चय	पट्टावलीसमुच्चय
१७६	१७	१६२	१६१२
१८१	२०	पाठ्यय पूजा संग्रह	पाठ्य पूजा संग्रह
,,	२६	प्रा०	प्र०
१८५	१५	१६३१	१६३३
१८६	१६	ब्याहला बहु	ब्याहली बहू
१६०	७	बोध प्राभृन्म	बोधप्राभतम्
१६३	अन्तिम	पृ० ८०	पृ० २०
१६४	१५	पं०	ग्रं०
१६६	१६	पा०	सपा०

१९९	२०	१९३	१९४३
२०५	४	१८४०	१९४०
२०६	२१	टीत० ए०	टी० ए०
२०९	२	४६२	४३२
,,	अन्तिम	रत्म कवि	रत्न कवि
२१२	६	१८१६	१९१६
,,	१६	८०	८
,,	२५	१६६९	१९१९
२१८	१५	व० १९०	व० १९०८
२२१	अन्तिम	११०	११७
२२६	१	सिद्धान्त सागदि	सिद्धान्तसारादि
२२७	११	भा० पृ० ३२ हि०	भा० हि०, पृ० ३२
२२८	२	१९१५	१९१५, आ० तृतीय
२३६	१	गोपाल सहाय	गोपालसाह
२३७	१६	पूज्य पादाचार्य,	पूज्यपादाचार्य, स० टी० प्रभाचन्द्राचार्य
,,	१७	भाषा स० अ०	भाषा म० हि० अ०
२३८	२१	मम्यक् दीपिका	सम्यक् ज्ञानदीपिका
२३९	८	माहित्य पुस्तक	साहित्य प्रसारक
२३९	२०	पृ० २३८	पृ० २१८
२४०	३	व० १९३८	व० १९३९
,,	६	पं० दरबारी	पं० दरबारीलाल
२४१	६	सलूना पूजन	मलूना पूजन
२४२	८	संपा०	हि० टी०, संपा०
,,	२२	व० १९२६	व० १९४३
,,	२५	सूतत	सूरत

२४६	१६	सिद्धान्त सग्रह	सिद्धान्त सारादिसंग्रह
२४७	२०	सिद्धान्त सरादि	सिद्धान्तसारादि
~४८	९	नाथूराम	नाथूलाल
,,	११	सिर सिर बाल कहा	सिरिसिरि बालकहा
२४९	१३,१५	सुदृष्टि वरगिणी	सुदृष्टितरगिणी
२५०	१०	संपा०	सक०
२५१	१, ७	सूक्ष मुक्तावली	सूक्तमुक्तावली
,,	२२	सोनाह्रीर	सोनागिर
,,	२३	धर्म प्रभावती सभा	धर्मप्रभावनी सभा
,,	,,	साभी लेखक	सांभर लेक
२५२	१०	सृष्टि कतृव्य मीमासा	सृष्टिकर्तृत्वमीमांसा
,,	१६	(भाग)	(दो भाग)
२५३	८	व०	व० १९१६
२५४	५	वधूमल	नन्नूमल
,,	१५	आदि	आदिपुराण
२५५	१७	व०,	व० १९२१
,,	२२	सरल प्रज्ञा पुस्तक माला	प्र० सरल प्रज्ञा पुस्तक माला
२५६	१	तिलोयपण्णुति	तिलोपण्णत्ती
,,	२	त्रैविध देव	त्रैविद्यदेव
,,	१३	त्रैवर्णिकाचार	त्रैवर्णिकाचार
,,	१८	देक्षेन्द्र प्रसाद	देवेन्द्रप्रसाद
२५७	९	कुठेले	बुठेले
२५८	१४	ग्लेबनेय	ग्लेजनेप
२५९	१७	१०–१९३५	१०-५-१९३५
,,	१९	लखनख परिशद	लखनऊ परिषद

२५९	२०	१६२६	१६२१
२६०	३	(पाली तारण)	पाली तारण;
,,	१८	खन्देलवाल जैन हितेच्छु	खण्डेलवाल जैनहितेच्छु
,,	२३,२४	जंम	जन्म
२६१	३	हीरासव चवडे	हीरासाव चवडे
२६२	१०	जैन एण्डी क्वेरीदी	दी जैन एण्टी क्वेरी
२६२	११	जैना ओरिफ्टल	जैन ओरियंटल
,,	२१	अजमेर	अजमेरा
,,	२४	यशपाय	यशपाल
२६३	२	लोकशाह	लोंकाशाह
,,	३	माहटा	नाहटा
२६३	१६	एण्टी क्लोरी	एण्टीक्वेरी
,,	२६	बीरडी	बोरडी
२६४	५	जानकारी	विशेष जानकारी
,	२४	जीमालाल प्रकाश	जीवालाल प्रकाश
,,	२५	जैन सघासार	जैनेतिहाससार
,,	२६	जैन दर्शक	जैनदर्शन
२६६	६	पति	यति
२६७	१	दन्दा शिकत	दन्दाशिकन
२६९	१३	जल्बए मजहब	खुलासाए मजहब
२७०	अन्तिम	जैन ममजहब	जैन मजहब
२७१	१६	पृ०	प्र०
२७३	,,	१६८८	१८६८
२७५	अन्तिम	वरम्जे म्ज हकीकत	ब रम्जे हकीकत
२७७	११	नौत तत्व	नौ तत्त्व
२७८	२	१८६८	१८६६
२७९	१८	१९२८	१६३८

२७९	२०	१९३८	१९२८
	२२	१८२१	१८६९
२८०	४	मैवर्णिकाचार	त्रैवर्णिकाचार
२८१	१५	व० १८६	व० १८६७
२८२	२५	न्यान विजय	न्यायविजय
२८३	६	जन साहित्यणी	जैन साहित्यनो
२८४	२२	श्री महावीर जीवन	श्री महावीर-जीवन विस्तार
,,	२३	विस्तार शीलरक्षा	शीलरक्षा
२८५	१३	व० १२१	व० १६२१
,,	१४	४६७	४१७
२८६	६	जैन दर्शनने कार्मवाद	जैन दर्शने कर्मवाद
,,	२६	वारार्ति कृपा चरित्र	वर्णित कृष्णचरित्र
२८७	११	द्वादशनुप्रेक्षा	द्वादशानुप्रेक्षा
,,	१७	प्रमाणाथ	प्रमाण
289	I5	Vigaya	Vijaya
290	11	Rikhar Dass	Rikhab Das
,,	Last	Swet order	Swetambar
294	9	Kaand jine	Khandgiri
301	16	Ed. and trad. J. L. Jaini	(Bib. Ind. Dr S. C. (Vidya Bhushan)
302	2	Buhter	Buhler
303	23	Jainasm	Jainism
304	27	1214	1294

जैन मित्र मंडल के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन